हिमालय गाथा - 5

लोकवार्ता

सुदर्शन वशिष्ठ

हिमालय गाथा (पाँच)

लोकवार्ता

हिमालय गाथा (पाँच)

लोकवार्ता

सुदर्शन वशिष्ठ

हिम अनंत हिम-कथा अनंता

लोकवार्ता श्रुत साहित्य है जो वैदिक ऋचाओं की भाँति पीढ़ी दर पीढ़ी यात्रा करता है। यह मौखिक परंपरा सदियों से चलती रही। इस दुर्लभ साहित्य का कोई लिखित टेक्स्ट नहीं होता और आज भी नहीं है। यह एक से दूसरे तक निरंतर बहता रहता है और बढ़ता रहता है। एक कथा या गाथा जब आगे बखानी जाती है तो उसमें देशकाल के अनुसार कुछ न कुछ और जोड़ा जाता है। इसे 'फुल्ल-कलियाँ' लगाना कहा जाता है। कथा में स्थान और समय के अनुरूप जोड़-जमा किया जाता है। जैसे एक लोककथा जब यात्रा करती है तो उसके पात्र, परिस्थितियाँ उस स्थान के अनुरूप परिवर्तित होते जाते हैं जहाँ वह सुनाई जा रही है। उदाहरणतः 'लाटी शरजड़ और हिनाडंडुव' जनजातीय क्षेत्र किन्नौर तथा लाहौल-स्पिति में एक-सी प्रचलित है जबकि कुल्लू आकर इनमें भौगोलिक कारणों से परिवर्तन हुआ। इसी प्रकार राजा विक्रमादित्य की कई कथाएँ प्रचलित हैं जिनमें परिवेशजन्य परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन पाए जाते हैं। इन्हीं कथाओं में समाज के विश्वास, आस्थाएँ छिपी रहती हैं।

लोकगीत, लोकनाट्य, लोकगाथा, लोककथा सबमें अपनी माटी की गंध समाई रहती है। यहाँ तक कि देवताओं को भी जनमानस ने अपने अनुरूप ही देखा, जाना और समझा। भरमौर में शिवजी मूँछों वाले हैं। वे गद्दी के वेश में पहाड़ी दर पहाड़ी घूमते हैं। गौरजाँ उन्हें पीछे-पीछे ढूँढ़ती फिरती है। देवताओं की आकृतियाँ, वेशभूषा स्थानीय रूप लिए हुए होती हैं। उन्हें वही पकवान खिलाए जाते हैं जो लोग स्वयं खाते हैं।

अद्भुत है लोक वाङ्मय। यह जितना महान्, जितना गहन है उतना ही तर्कशील और विवेकशील है। इसके रचयिता वे अनाम कवि हैं जिन्होंने कभी अपने नाम नहीं दिए। लोक की रचना जितनी गहन होती है, उतनी ही काव्यमयी रहती है। हालाँकि उन कवियों ने कहीं से छंद विधान नहीं सीखा, किसी काव्यशास्त्र की शिक्षा नहीं ली। वे समय के अनुसार तरह-तरह के छंद रचते गए।

कुल्लू क्षेत्र की 'लामण' का एक छंद है :

'लोमे केलू री बूटड़ी, सदा बे हौरी री हौरी।
जेंडी जोड़ी थी फोटू न म्हारी, तेंडी लोड़ी उमर भौरी।'

—देवदार का वृक्ष सदा हरा-भरा रहता है। हमारी जोड़ी जिस तरह फोटो में है, उम्र-भर वैसी ही रहनी चाहिए।

इन पंक्तियों में जिस सादगी से बड़ी बात कही गई है, वह एक लोककवि ही कह सकता है।

काँगड़ा की एक गाथा 'धोबन' में, धोबन को सौतन रानी द्वारा जहर देकर मारने के बाद जब उसके मृत शरीर की पिटारी नदी में बहती हुई आती है तो धोबी उसी नदी के किनारे कपड़े धो रहा होता है। जब वह पिटारी खोलकर देखता है तो उसे 'सोने की पिटारी में उसके बच्चों की माँ' नजर आती है। सोने की पिटारी में राजा की प्रेयसी नहीं, उसकी पत्नी नहीं, बल्कि बच्चों की माँ दिखना एक अद्भुत वर्णन है।

इसी तरह कई गीतों में नायिका के नीच जाति का होने पर राजा द्वारा उसे अपनी जाति छोड़ने को कहा जाता है। नायिका महलों में जाने के लिए अपनी जाति छोड़ने को राजी नहीं होती। चंबा के 'छिंबी' गीत में राजा उसे अपनी जाति छोड़ने के लिए एक लाख देता है, दो लाख देता है, छिंबी जाति बदलने के लिए तैयार नहीं होती :

'इक लख दिता तिजो दो लख दिता, जाति देयाँ बदलाई
नि बो लैणे लख दो लख, जाति नी बदलाणी।'

इस गीत में नायिका-सौंदर्य-वर्णन भी कम काव्यात्मक नहीं। उसकी दंतपंक्ति खटनालू के खिले फूलों की तरह है। आँखों में जैसे सूरज दमक रहा है। हाथ मेहँदी के पौधे की तरह और होंठ पान के पत्ते हैं।

एक अन्य गीत में नायक निम्न वर्ग की नायिका से प्रेम करता है, उसके साथ एक थाली में दूध-भात खाता है और बाद में जाति पूछता है :

'दुध भत्त खादा इक्की थालियाँ, हुण कजो पूछदा जाति।'

—दूध-भात तो एक थाली में खाया, अब जाति क्यों पूछता है?

राजा द्वारा गद्दण को महलों में ले जाने के बाद, जब वह महलों में होती है तो गद्दी नीचे मुरली बजाता है :

'महलाँ दे हेठ गद्दी भेडाँ जे चारे, मुरलिया रूणक सुणाई
बे मेरेया बाँकेया गद्दिया''' ।'

प्रेमगीत या गाथाओं में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रेमिका अपने वंश, जाति को छोड़ने पर राजी नहीं होती, चाहे उसकी जाति निम्न है, चाहे उसका पति साधारण धोबी, गद्दी या छिंबा है। वास्तव में इन गीतों में राजा का एकतरफा प्रेम और जोर-जबरदस्ती की भावना भी प्रकट होती है।

बाँठड़ा जैसे लोकनाट्य में कलाकारों द्वारा राजा के प्रति बड़ी से बड़ी बात कह

देने की क्षमता है। राजा, हाकिमों की त्रुटियों को इन नाटकों के माध्यम से आम जनता के सामने हँसी-मजाक द्वारा उजागर किया जाता था। हाकिमों के सामने ही उनके कारनामे सुना देना इन नाट्यों की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। बाँठड़ा, करियाला तथा स्वाँग जैसे लोकनाट्यों में हाकिमों पर व्यंग्य करना ही मुख्य विशेषता रही है।

लोकगाथाओं में अद्‌भुत स्मरण शक्ति के सहारे इतनी लंबी-लंबी कथाएँ याद रखी गईं जो महीनों तक सुनाई जाती रही हैं। इससे भी बड़ी बात यह है कि इन कथाओं को सीधे-सीधे न सुनाकर संगीतबद्ध किया गया। पूरे साजबाज के साथ बाकायदा कथा गायन किया जाता रहा है। संभवतः इसी कारण ये लंबे समय तक जिंदा भी रहीं। धार्मिक कथाओं ने जनमानस की आस्था के कारण अपना अस्तित्व बनाए रखा।

इसी तरह लोक में प्रचलित मुहावरे और लोकोक्तियाँ एक सूक्त वाक्य की तरह एक ऐसा सत्य सामने रखती हैं जो न केवल व्यावहारिक ही होता है, बल्कि मार्गदर्शन भी करता है। कठिन समय में ऐसे सूक्त वाक्य बोलकर सांत्वना दी जाती है और एक विश्वास पैदा किया जाता है।

यह संपदा आज के भौतिकवादी, बाजारवादी और मशीनी युग में नष्ट होने के कगार पर है। लोकगायकों, वादकों ने यह कर्म छोड़ दिया। आज किसी को न कथा सुनाने का समय है, न ही किसी के पास सुनने का। आज लोगों के पास स्मरण के लिए बहुत-सी दूसरी चीजें हैं। पुरानी स्मरण परंपरा समाप्त हो गई है। हम अपनी भाषा से भी विमुख हो रहे हैं। ठेठ भाषा को जानने वाले बिरले ही शेष हैं। आज देश में बोली जाने वाली भाषाएँ नष्ट होने के कगार पर हैं। ऐसे में इस दुर्लभ साहित्य का संग्रहण आवश्यक हो जाता है।

—सुदर्शन वशिष्ठ

अनुक्रम

हरण या हरणात्र

हरण या हरणात्र लोकनाट्य काँगड़ा, चंबा, किन्नौर में प्रचलित है। इसे काँगड़ा में हरण, चंबा में हरणात्र, कुल्लू में हौर्न, किन्नौर में होरिंगफो कहा जाता है। इस नाट्य का संबंध हिरण से है क्योंकि सभी जगह हिरण का स्वाँग रचा जाता है। हिरण के स्वाँग से किस ऐतिहासिक या पौराणिक घटना की पुनरावृत्ति की जाती है, यह अज्ञात है, तथापि यह एक विशिष्ट मनोरंजन का साधन है ग्रामवासियों के लिए।

हरण

भगत और रास के बाद काँगड़ा का प्रसिद्ध और आकर्षक लोकनाट्य है हरण जो बच्चों और बड़ों में एक समान खेला जाता है। पौष से मकर संक्रांति या लोहड़ी तक हरण बाँधा जाता है। हरण लोकनाट्य को तैयार करना और खेलना 'हरण बाँधना' कहलाता है। प्रायः इसे छोटे बच्चे तथा युवा लड़के खेलते हैं।

हरण बनाने के लिए किसी लड़के को सफेद और काली ऊन का चितकबरा पट्टू ओढ़ाया जाता है। कई बार किसी जानवर की खाल भी पहना दी जाती है। सिर पर किसी जानवर के सींग बाँधे जाते हैं। सींग न मिलें तो सींगनुमा लकड़ियों को ही बाँध लिया जाता है। हरण बना लड़का घरों में जाकर दरवाजों को टक्करें मारता है। हरण के साथ एक लड़का फटी-पुरानी या हास्यास्पद वेशभूषा पहन मनसुखा या डंडू बनता है जो हँसाने का काम करता है। तीसरा, लड़कियों के कपड़े पहन चंद्रावली या चंद्ररोली बनता है, चौथा नकली दाढ़ी-मूँछें लगा साधु बनता है। इस तरह पाँच छह लड़के ये स्वाँग रचकर घर-घर जाते हैं और अन्न या जो भी मिले, वह इकट्ठा करते हैं। हरण के स्वाँगी रात को घर-घर माँगने निकलते हैं। लोहड़ी की रात हरण का विशेष आयोजन होता है क्योंकि यह इस लोकनाट्य की अंतिम रात होती है।

हरण के स्वाँगी घर-घर जाकर ये गीत गाते हैं :

हरण मंगे तिलचौली दे। लाल गुड़े की रयोड़ी दे।।
दिंदी है दुआंदी है। कोठे हत्थ पुआंदी है।।
कोठे च बड़या चूआ। धड़-धड़ करदा मूआ।।
हरण मोया खेड़िया। टोपा पाया पेड़िया।।
हरणे लाई सिंगे दी। हंडी भज्जी हिंगे दी।।

हरणात्र

चंबा तथा भरमौर की ओर इस लोकनाट्य को हरणात्र कहा जाता है। यहाँ हरण का आयोजन होली दहन के दिन होता है। होली पर सर्दी जाने और वसंत आने के अवसर पर हरण बाँधा जाता है। यहाँ भी हरण का स्वाँग तैयार करने को 'हरण बाँधना' कहा जाता है।

हरणात्र का मुख्य पात्र हरण ऊनी काले डोरे से लपेटकर हिरण की तरह बनाया जाता है। सिर पर सींग बाँधे जाते हैं। एक व्यक्ति गद्दी बनता है। अपनी परंपरागत वेशभूषा में गद्दी ऊनी चोला, काला डोरा, पाजामा और गद्दी टोपा पहनता है। डोरे में तंबाकू, बाँसुरी, आग जलाने के लिए 'रुणका' पत्थर लटकाए रखता है। दाढ़ी-मूँछ लगाए, हाथ में त्रिशूल लिए यह पात्र विदूषक का काम करता है। इसका काम लोगों को हँसाने का है।

दूसरा व्यक्ति गद्दण बनता है जो चोली, लुआँचड़ी, डोरा पहनकर गद्दी की पत्नी की भूमिका निभाता है।

एक पात्र कोट-पैंट, हैट पहने और मुँह पर पाउडर लगाए साहब बनता है। एक साधु बनता है।

एक व्यक्ति फटा-पुराना ऊनी चोला और अस्त-व्यस्त डोरा पहने खप्पर बनता है। टूटे या फटे जूते, फटा पाजामा, सिर पर साफा और मुँह पर मुखौटा लगाए यह व्यक्ति डंडा हाथ में लिए नृत्य करता है। खप्पर एक से अधिक भी हो सकते हैं। कुछ युवक घाघरा-चोली और डोरा बाँध चँदरौली बनते हैं। खप्पर और चँदरौली नृत्य करते हैं।

हरणात्र के साथ ढोली और शहनाई भी चलते हैं जो घर-घर जाकर लोगों का मनोरंजन करते हैं।

हरणात्र में दूसरे गानों के साथ हरण का यह गीत गाया जाता है :

हरण आया हरणोटा, राजे रामे री प्रौली।
हरणा रे सिंगड़ु सुहाणो, जिह्याँ मोती रे दाणे।
डक बजदे डकडोरे, राजे रामे री प्रौली।
हरण आया हरणोटा, मँगदा बकरोटा।
तुरत करे बँजहाणिए, अँसा दूरा जो जाणा।

काँगड़ा की भाँति हरण में एकत्रित अन्न या धन का सहभोज किया जाता है या केवल हलवा बनाकर बाँटा जाता है।

हरण या हौर्न

कुल्लू की ओर इस लोकनाट्य को हरण, हौरण या हौर्न कहा जाता है। यहाँ यह नाट्य दशहरे के अंतिम दिन से एक दिन पहले की मुहल्ला रात्रि में होता है। कुल्लू दशहरा में मुहल्ले की रात सभी देवता नृत्य करते हुए जागते रहते हैं। इस रात्रि रघुनाथ जी के सामने दशहरा मैदान में हेसण नृत्य करती है। हेसण को चंदरौली भी कहा जाता है। इस रात्रि से, जो अश्विन पूर्णिमा से एक दिन पहले पड़ती है, हरण पंद्रह पौष तक खेला जाता है। इन दिनों शुक्ल पक्ष होता है अतः रात्रि को हरण खेलने में सुविधा रहती है।

मुख्य पात्र हरण को सफेद-काले चितकबरे पट्टू से बनाया जाता है। इस पट्टू को पीठ से लटका बाँहों और टाँगों को ढक दिया जाता है। भाँग की लकड़ी के सींग बनाकर लगाए जाते हैं। ये सींग फूलों से सजाकर एक कपड़े से सिर पर बाँध दिए जाते हैं। इस आदमी के पीछे एक दूसरा आदमी जानवर की तरह झुकाया जाता है। वह अपने हाथ अगले पर फैलाकर रखता है ताकि बाहर से देखने पर एक ही आदमी लगे। चितकबरे पट्टू के पीछे पूँछ के लिए एक दुपट्टा बाँध दिया जाता है। इस तरह ये दोनों व्यक्ति एक पूरा हिरण लगते हैं।

कान्ह, इस लोकनाट्य का दूसरा पात्र है। यह व्यक्ति एक नर्तक की वेशभूषा पहनता है, चोला-टोपा, पाजामा। टोपे में फूल या चाँदी की झालरें, कमर में रेशमी पटका। पैरों में पूलें। तीसरा पात्र है बूढ़ी, जो एक व्यक्ति को महिला नर्तकी की वेशभूषा पहनाकर बनाया जाता है। रंगीन पट्टू, चूड़ीदार पाजामा, सिर पर थिपू, गले में माला। ये दोनों नृत्य करते हैं।

हरण के प्रदर्शन के समय साई-बधाई, सुने रा बाधणू, चंदरौली देवा री खौली, दुध-कटोरू और हरण पाहुणी आई गायन के साथ नृत्य किए जाते हैं। इन गीतों के समय हरण एक जगह आगे-पीछे होकर नाचता है। ये नृत्य लास्य से आरंभ होकर धीरे-धीरे द्रुत की ओर बढ़ते हैं।

इन गीतों के समय ढोल, नगारा, काह्ल, रणसिंगा, शहनाई, बाँसुरी आदि वाद्य बजाए जाते हैं।

हरण के प्रथम लोकगीत के बोल इस प्रकार हैं :

साई बधाई लोको साई बधाई, हरण आई लोको हरण आई।
बौरश रोजा री पाहुणी आई, भौर भरोटूए साई आणी बधाई।
पींऊले हौथडू केरिया आई, दूरा पारा पाहुणी आई।

दूसरा गीत :

सूने रा बाधणू भाइयो, रूपे री नौदी।
औज की बीछड़े भाइयो, मिलले कौधी।
घौरा होली साई बधाई, एजले तोधी।
नौचे भली हौरणीए, मिलले कौधी।

अंतिम गीत :

हरण पाहुणी आई बे लोको, हरण पाहुणी आई।
हरण पाहुणी आई सालीए, हरण पाहुणी आई।
बाहर निकल मेरी सालीए, हरण पाहुणी आई।
चीतरे चाधरू आई भौरीया, दूरा पार न आई।
छेके नौचे हरणीए, रात आई भियाई।
किरकिटी तेरी बेहणी, रामशौर तेरा भाई।
हरण पाहुणी मेरी सालीए, साई दे बधाई।

हरण को इन गीतों में स्त्रीलिंग मानकर संबोधित किया गया है।

हरण का दूसरा भाग स्वाँगी का है। इसमें स्वाँगी तैयार होकर समाज में व्याप्त बुराइयों को स्वाँग द्वारा प्रस्तुत करते हैं। पारिवारिक झगड़ों, सरकारी तंत्र की कमजोरियों, हाकिमों के कारनामों को स्वाँग के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इन स्वाँगों की कोई लिखित स्क्रिप्ट नहीं होती, तथापि तत्काल मौके के अनुसार कुशल अभिनेता स्वाँग तैयार कर संवाद बोलते हैं।

होरिंग फो

किन्नौर में यह नाट्य होरिंग फो के नाम से प्रचलित है। होरिंग अर्थात् हिरण और फो अर्थात् पशु। यहाँ एक लड़के के शरीर पर घास लपेट और छाल बाँध पुरुष और दूसरे को स्त्री बनाया जाता है। ये होरिंग फो के साथ गाँव के चक्कर लगाते हैं। कुछ लोग डंडे भी लिए साथ चलते हैं। ये आपस में अश्लील हरकतें भी करते हैं। यह नाट्य यहाँ श्रावण में किया जाता है।

करियाला

करियाला हिमाचल प्रदेश का मूल लोकनाट्य है। इसे करियाला, कराला, कराड़ा कहा जाता है। यह लोकनाट्य शिमला के आसपास, सोलन जिला और सिरमौर में खेला जाता है। इसे खेले जाने के दो प्रमुख प्रयोजन हैं। जब किसी ग्रमीण पर विपत्ति आती है या कुछ माँगना होता है तो वह ग्राम देवता, थान या मंदिर-मैड़ी के पास जाकर मनौती माँगता है। इस मनौती को 'करेल' भी कहते हैं। मनौती या करेल पूरी होने पर वह अपने बंधु-बांधवों के लिए 'करियाला' करवाता है। यूँ तो करियाला नामकरण के लिए कई अटकलें लगाई गई हैं किंतु यह धारणा सटीक प्रतीत होती है। करियाला का आयोजन शादी-ब्याह के अवसर पर भी किया जाता है। ब्याह-शादी के अवसर पर होने वाला करियाला 'बाँठड़ा' कहलाता है। यद्यपि यह मंडी की ओर होने वाले बाँठड़ा से भिन्नता लिए हुए है। करियाला त्यौहारों, देव उत्सवों, जागरे के समय भी खेला जाता है।

करियाला के ठेठ देहाती मूल का होने का प्रमाण यह है कि यह रात्रि को खुले में खेला जाता है। इसके लिए किसी प्रकार के मंच की अपेक्षा नहीं। यह गाँव के बीच किसी खुले स्थान में, जहाँ दर्शक चारों ओर बैठ सकें, खेला जाता है। खुले स्थान के बीच में लगभग दस मीटर स्थान में चारों ओर छोटे-छोटे डंडे गाड़ दिए जाते हैं। इसे रस्सी से बाँधकर निश्चित स्थान तैयार कर लिया जाता है। यह एक प्रकार का मंच है। यदि आसपास कोई घर या कमरा न हो तो दो-तीन चादरें तानकर तैयार होने के लिए ग्रीन रूम बनाया जाता है।

इस मंच को 'खाड़ा' या अखाड़ा कहा जाता है। अखाड़े के बीचोबीच मोटी लकड़ियाँ लगाकर आग जलाई जाती है। इस आग को 'घियाना' कहा जाता है। 'घियाना' आग सेंकने के काम आता है। धूणे या घियाने की आग पवित्र मानी जाती है। यह आग रोशनी का काम भी देती है। अलबत्ता पुराने समय में मशालों से रोशनी की जाती थी। बाद में मिट्टी का तेल बोतल में डाल लैंप बनाए जाने लगे और फिर पैट्रोमेक्स।

करियाला आरंभ होने से पहले सभी बजंतरी अखाड़े के किनारे बैठकर लोकनाट्य की धुन बजाना आरंभ कर देते हैं। वाद्यों में ढोल, नगारा, शहनाई, करनाल, रणसिंघा,

दमामट्टू, बाँसुरी, ढोलक, चिमटा, खंजरी आदि होते हैं। ये वाद्य ग्रामीणों को आमंत्रण देते हैं और लोग जल्दी-जल्दी घरों से अखाड़े की ओर भागते हैं।

नाटक का आरंभ

लोकवाद्यों द्वारा करियाला ताल आरंभ किया जाता है जिसके साथ चँदरौली या चंद्रावली का प्रवेश होता है। चंद्रावली बनने के लिए पुरुष ही महिला पात्र बनता है। चंद्रावली वाद्यों की वंदना के बाद अलाव के चारों नृत्य करती है।

चंद्रावली के साथ कान्ह भी आता है जिसे डाँगरा कान्ह कहते हैं क्योंकि इस कान्ह या कृष्ण ने अपने हाथ में डाँगरा या कुल्हाड़ा लिया होता है। चंद्रावली बधाई व करियाला ताल पर नृत्य करती है जब तक कि दर्शकों की भीड़ में स्वाँगी प्रकट नहीं हो जाते। चंद्रावली नृत्य करती हुई वापस जाती है तो यहाँ-वहाँ से स्वाँगी साधु दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करते हुए मंच की ओर आते हैं। साधु अपना-अपना अभिनय करते हुए वाद्यों को प्रणाम कर अग्नि के फेरे लगाते हैं। साधुओं के दर्शकों के बीच आने से एक अनोखा कुतूहल जागता है।

साधु स्वाँग

साधुओं के स्वाँग में अश्लीलता की हद तक मजाक और दार्शनिकता का पुट विद्यमान रहता है। करियाला में कभी भी कोई लिखित कथानक या स्क्रिप्ट नहीं होती। यह परंपरा से मौखिक वचन के रूप में चलता हुआ नित नई घटनाएँ और कथोपकथन रचता है। अपनी वाकपटुता और अभिनय क्षमता से ये करियालची श्रोतादर्शकों को बाँधे रखते हैं। हिंदी, उर्दू, पंजाबी, पहाड़ी किसी भी भाषा में ये संवाद बोल लेते हैं। किसी एक भाषा या विषय का बंधन नहीं होता। कुशल कलाकार दर्शकों का मिजाज भाँपकर झट विषय बदल लेते हैं। इनका दर्शकों से संवाद भी बराबर बना रहता है। कभी कोई दर्शक कटाक्ष करे, प्रश्न पूछे तो तुरंत उत्तर देना इनकी कुशलता मानी जाती है।

साधु लोग ज्ञान, धर्म, दर्शन, जंत्र-मंत्र की बातें करते हुए मजाक का सहारा लेते हुए दर्शकों तक संदेश पहुँचाते हैं। इनमें एक साधु मूर्ख या मसखरा बना रहता है जिसे डंडु कहते हैं। स्वाँगी समसामयिक विषयों पर आते हुए सामाजिक बुराइयों जैसे छुआछूत, दहेज, ऊँच-नीच से लेकर नेता और जनता की सेवा और सरकार के कार्यक्रमों (कृषि, बागवानी, वन, बिजली, कमेटी, पंचायत) पर भी कटाक्ष करते हैं। ग्राम या समाज का कोई ऐसा विषय नहीं है जो स्वाँगी छोड़ते हों। बहुत बार पौराणिक आख्यानों का सहारा भी लिया जाता है।

साधु या संन्यासी का स्वाँग निम्नांकित अलाप से आरंभ होता है :

आद दैरी बौहरी रो गौरी पुत्तर गणेश।
पंच देव रक्षा करे, जो ब्रह्मा विष्णु महेश।।

या

राम नारायण तुम बड़े तुम से बड़ा न कोय।
भक्ति करो श्री राम की जो पार उतारा होय।।

ढोल-नगारे के बजने के साथ जब साधु अखाड़े में आते हैं तो निम्नांकित संवाद बोलते हैं :

जोगी की नगरिओ बसे भी न कोई रामा
जो भी बसे सो साधु होय।

इसके बाद साधुओं का आपस में संवाद इस प्रकार आगे बढ़ता है :

कहाँ से तुम जोगी आए, कहाँ तुम्हारा धाम
कहाँ तुम्हारी बहन-भांजी, कहाँ धरोगे पाँव।
(मसखरा साधु मजाक करता है : *ए ता फसी गयो।)*
दक्खन से हम जोगी आए, उत्तर हमारा धाम
धरत हमारी बहन-भांजी, यहाँ धरेंगे पाँव।

इस मसखरी के बीच कुछ दर्शन संबंधी संवाद भी बीच-बीच में उठाए जाते हैं :

किस तरफ से आना होता है फकीर का
किस तरफ से जाना होता है फकीर का
क्या वो चीज है जो खाना फकीर का
वो क्या चीज है जो बाना फकीर का
किस के हो तुम मुस्तका
किस के हो बालिका
शाहे पूछता हूँ
जवाब दीजिए सवाल का।

मसखरे साधु और जोगी के बीच का संवाद कुछ इस प्रकार चलता है :

मसखरा : जटाधारी जी प्रणाम।
साधु : जीते रहो बेटा।

मसखरा : कुछ ज्ञान-ध्यान, जप भी है आपका?

साधु : हाँ बेटा, क्यूँ नहीं। हम महाज्ञानी हैं।

मसखरा : तो पूछूँ कोई प्रश्न?

साधु : पूछो बच्चा।

मसखरा : आर बी लंका पार बी लंका, बिचे धुआँधारी।
राम-लखन जेबे गए थे लंका, तो कहाँ थे तपाधारी।

साधु (दूसरा) : आर बी लंका पार बी लंका, बिचे धुआँधारी।
राम-लखन जेबे गए थे लंका, यह थे तिना साथी बगारी।

मसखरा : नहीं, नहीं तपाधारी। आप मजाक कर रहे हैं। कोई और प्रश्न पूछूँ।

साधु : पूछो बच्चा।

मसखरा : माता थी गर्भ में पिता थे कँवारे, था ये उस वक्त घर तुम्हारे।

साधु (दूसरा) : माता थी गर्भ में पिता थे कँवारे, था ये उस वक्त घर तुम्हारे।

मसखरा : न, न साधो। सही बताइए।

साधु : तो सुनो।
माता थी गर्भ में पिता थे कँवारे, पिंता के मस्तक पर थे जन्म हमारे।

मसखरा : धन्य हो। धन्य हो।

साधु : और भी सुनो।
आर बी लंका, पार बी लंका, बिचे धुआँधारी।
राम-लखन जहाँ भी गए, हम थे उनके पुजारी।

मसखरा : एक और प्रश्न महाराज। एक क्या होता है?

साधु (दूसरा) : एक होता है औतरा।

मसखरा : न, न मजाक नी महाराज।

साधु (दूसरा) : एक इकारा, दो द्वार, तीन तित्तर।
चार चोर, पंच प्यारे, छह छित्तर।।

मसखरा : नहीं, नहीं साधो, सही बताओ।

साधु : तो सुनो।
एक ओंकार, दो चाँद सूर्य, तीन त्रिलोक, चार दिशाएँ।
पाँच पांडव, छह कुंता माई, सात द्वीप, आठ काठ, नौ ग्रह।

मसखरा : दस दशांग, सोलहवाँ छूटा।
दरवाजे पर फोड़ा ठूठा, सताइहवें दिन दसिया गूठा।

इस प्रकार डंडु या मसखरा साधु हास्य का भाव दर्शकों में पैदा करता है, तो कोई साधु बीच में दर्शन की बात कर जाता है।

करियाला में कई स्वाँग निकाले जाते हैं जिनमें साहब का स्वाँग, ताऊ-ताई का स्वाँग, लाड़ा-लाड़ी का स्वाँग, जोगी-जोगिन का स्वाँग, नट-नटणी का स्वाँग, लंबरदार, साहूकार, राजपूत, ऊँट, जंगम का स्वाँग तथा 'खबरें' प्रमुख हैं।

इन स्वाँगों के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को सारी जनता के समक्ष रखकर बेनकाब कर दिया जाता है। साहब या मेम साहब और पिलपिली साहब के स्वाँग से अंग्रेजों के समय उनकी अफसरशाही का भंडाफोड़ किया जाता रहा है। वर्तमान स्थितियों से जनता को आगाह करना भी उन स्वाँगों का अभीष्ट रहा है।

चूर्ण वाले के स्वाँग में ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :

चूरन अमल बेद का भारी जिसको खाते कृष्ण मुरारी।
मेरा पाचक है पचनोला जिसको खाते श्याम सलोना।
चूरन साहब लोक जो खाता सारा का सारा हजम हो जाता।
चूरन पुलिस वाले खाते सब कानून हजम कर जाते।
चूरन हाकिम साब जो खाते सब पर दूना टैक्स लगाते।

करियाला में नई-नई बातें नए अविष्कारों और नई तकनीक से भी जुड़ने लगीं। जब रेडियो देहातों में पहुँचा तो खबरें भी सुनाई जाने लगीं।

"सुनने में आता है कि सपाटू नीलम होटल से चार फुलके चटनी फरार कर गई और इतला दी जाती है कि किसी भाई को मिल जाए तो सपाटू चौकी उनको दाखिल कर दो।"

इस सारे संवाद के बीच लोगों को मनोरंजन देने के लिए तथा अगले स्वाँग के लिए तैयार होने के बीच के समय में गायक लोकगीतों की तान छेड़ दर्शकों को बाँधे रखते हैं। इन गीतों में पहाड़ी भजन, गंगी, मोहणा, झूरी आदि गाए जाते हैं। बीच-बीच में नृत्य भी चलता है।

बाँठड़ा

बाँठड़ा का मूल स्थान मंडी तथा इससे लगता बिलासपुर का क्षेत्र है। यह लोकनाट्य राजमहल, मंदिरों से लेकर आम जनता के बीच खेला जाता रहा है। करियाला की भाँति मनौती मनने पर भी बाँठड़ा का आयोजन धूमधाम से किया जाता है। पुराने समय में इस अवसर पर बकरे काटकर भोज भी दिया जाता था।

यूँ तो बाँठड़ा शब्द के अनेक अर्थ दिए गए हैं। किंतु 'बाँठ' से बाँठड़ा होना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। कहते हैं राजा के दरबार में पहले बाँठ होते थे। एक बार ये चोरी-छिपे राजा की कमजोरियों को प्रकट करते हुए नाटक कर रहे थे कि राजा ने देख लिया। राजा ने उन्हें प्रोत्साहित किया, जिसके बाद बाँठड़ा होने लगा, जिसमें राजा के राजपाट के कमजोर पक्ष को अभिनय कौशल से सामने रखा जाने लगा। यह दशहरे से आरंभ होकर दीवाली तक विशिष्ट अवसरों पर खेला जाने लगा।

बाँठड़े का आरंभ

बाँठड़े का आरंभ मंगलाचरण से होता है :

सुमिरो शिव देवा, जगती तारण, संकट हारण, चंद्रधारण, खलजन मारण।
गण रक्षक जनरत सेवा, सुमिरो शिव देवा।

इसके बाद गणपति, सरस्वती की वंदना की जाती है। इस वंदना में 'जंगली महाराज' की पूजा उल्लेखनीय है।

बाँठड़ा खेलने के लिए भी किसी मंच की अपेक्षा नहीं रहती। करियाले की भाँति यह किसी ऐसे स्थान पर खेला जाता है जहाँ से ग्रामीण उसे आसानी से देख सकें। कहीं भी 'थड़ा' या थोड़ी ऊँची जगह बनाकर इसे खेला जा सकता है। इस विषय में सुकेत (सुंदरनगर) में एक कथा भी प्रचलित है। सुकेत के राजा वीरसेन के समय प्रजा अनपढ़ थी। लोगों के पढ़ाने-लिखाने के लिए राजा ने आज्ञा दी तो सभा में नगेंद्र नाम के व्यक्ति ने गायन व संगीत के माध्यम से लोगों को साक्षर बनाने का जिम्मा लिया। राजा ने इस विधि को 'बाणथड़ा' नाम दिया क्योंकि एक ऊँचा थड़ा बनाकर वहाँ से गायन-संगीत द्वारा लोगों को शिक्षा दी जाने लगी थी। यही बाणथड़ा बाद

में 'बाँठड़ा' कहलाया।

पुराने समय में मंगलाचरण के बाद शिव-गौरा, भगत ध्रुव, पूरन भगत, सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र आदि खेल बाँठड़े के विषय रहे। इन सभी विषयों को लोकभाषा में उसी परिवेश में अनुरूप बनाकर लोगों के समक्ष रखा जाता ताकि सभी समझ भी पाएँ और मनोरंजन भी हो।

इसके बाद कुछ लोकगीतों या गाथाओं पर आधारित खेल भी होने लगे जैसे राजा-गद्दण, कुंजो-चंचलो, फूलमु-राँझू आदि।

वर्तमान स्वरूप

धार्मिक भावना के बाद धीरे-धीरे बाँठड़े का स्वरूप बदला और इसमें व्यंग्य के तीखे तेवर आने लगे। आरंभ में मंगलाचरण या 'हरिरंग' (कृष्ण के साथ रासलीला) के बाद विभिन्न स्वाँग निकाले जाते हैं जो लोगों के मनोरंजन के साथ पूरी सामाजिक व्यवस्था की पोल खोलते हैं। मनमोहणी और बुजड़ू, माल पुन्या, ब्रागण, चेला-चेली, साहब-मेम आदि के स्वाँगों के साथ आज अफसर, नेता, तहसीलदार, बीडीओ, एसडीएम के स्वाँग भी खेले जाने लगे हैं।

प्रस्तुत है 'ब्रागण' के स्वाँग की एक झलक :

ब्रागण गाना गाते हुए प्रवेश करती है–

अपने पिया की मैं जोगन बनूँगी, मैं अपने पिया की जोगन बनूँगी।
जोगन बनूँगी बरागन बनूँगी, अपने पिया की मैं जोगन बनूँगी।

सूत्रधार : आप कौन हैं, कहाँ से आई हैं, कहाँ जाना है?

ब्रागण : आप क्यों पूछ रहे हैं? पहले आप बताओ कौन हैं, फिर मैं बताऊँगी।

सूत्रधार : मैं यहाँ का चौकीदार हूँ। यहाँ जो भी आएँ उन्हें पूछता हूँ। यदि कोई चोर-उच्चका आए तो उसे पुलिस के हवाले करता हूँ। आप बताओ कौन हो? इस अँधेरी रात में यहाँ क्यों घूम रही हो?

ब्रागण : मैं ब्रागण हूँ भैया। मेरा पति घर से भाग गया है। उसे ही ढूँढ़ रही हूँ। यदि कहीं देखा है तो बताओ।

सूत्रधार : यहाँ दो साधु आए हैं। उनसे पूछता हूँ।

(साधुओं से पूछता है कि महात्मा जी ये आपकी औरत तो नहीं है?)

साधु : नहीं, नहीं। हमारी औरत नहीं है, हम तो वैरागी हैं।

सूत्रधार : ये तो मना करते हैं, उनकी कोई औरत नहीं है।

ब्रागण : आप मुझे उन साधुओं के पास ले चलो। मैं खुद देखूँगी।

(वह औरत को ले जाकर साधुओं को दूर से दिखाता है।)

ब्रागण : हाँ, हाँ। वह भगवे कपड़े वाला…वही है।

सूत्रधार : महाराज! आप तो कहते हैं मेरी कोई औरत नहीं है। वह औरत कहती है आप उसके पति हैं। चलिए, वह आपको बुला रही है।

जोगी : नो-नो, माई लेडी नो।

सूत्रधार : वह तो अंग्रेजी बोल रहा है।

ब्रागण : ये तो अमेरिका में भी रहते थे।

चेला : गुरु जी! चलो इन्होंने तो पहचान लिया।

(गुरु अब लाहुली में बोलता है।)

चेला : ये तो लाहुली बोल रहे हैं।

ब्रागण : ये लाहुल भी रहे हैं। जब ट्रांसपर हुई थी।

चेला : चलो महाराज! पहचान लिया इसने।

जोगी : केहड़ी ओए! साढी कोई लाड़ी नहीं हैगी। अप्पाँ ते जोगी ने जोगी।

चेला : ये तो पंजाबी बोल रहे हैं।

ब्रागण : ये वहाँ भी तो रहे हैं।

चेला : अब तो पहचान लिया आपकी औरत ने। अब तो जाना ही पड़ेगा।

(चेला जोगी को पकड़कर ब्रागण के पास ले जाता है।)

ब्रागण : आपका मुंडन संस्कार किसने किया? घर से क्यूँ भागे अकेली छोड़कर। गुरु ने क्या शिक्षा दी? मैं पूछूँ तो बताओगे?

जोगी : हाँ, बताऊँगा।

इसी प्रकार साहब-मेम के स्वाँग में अंग्रेजों की नकल के साथ उपहास, चेला-चेली संवाद में हास्य के साथ पौराणिक दर्शन, डाऊ के स्वाँग में सामाजिक अंधविश्वास का भंडाफोड़ दर्शाया जाता है। बहुत-सी लोकगाथाओं को भी बाँठड़ा के माध्यम से अभिनीत किया जाता है।

बुढड़ा

बुढड़ा लोकनाट्य का मूल स्थान मंडी का बल्ह क्षेत्र है किंतु यह मंडी सदर, करसोग तथा चच्योट के कुछ क्षेत्रों में भी प्रचलित है।

बुढड़ा को बाँठड़ा भी कहा जाता है। सामान्यता इसे 'ग्वालू रा बाँठड़ा' कहते हैं। ग्वालू रा बाँठड़ा अर्थात् ग्वालों का बाँठड़ा। इसे पहले ग्वाले खेल-खेल में करते थे। ग्वाले प्रायः असवर्ण होते जो इस नाट्य को खेलते। समय के अनंतर इसे बड़े लोग भी करने लगे जो घर-घर जाकर इसका प्रदर्शन करते, जिसके बदले उन्हें अनाज मिलता। बाँठड़ा पहले केवल सवर्ण ही करते थे अतः बुढड़ा असवर्ण करने लगे।

बाँठड़ा से यह नाट्य भिन्न इसलिए है कि यह बाँठड़ा के स्वाँगों में शामिल नहीं है। बाँठड़ा के स्वाँग हरिरंग, माला, ऊँटवान, साह-साहणी आदि हैं। बुढड़ा उनमें नहीं है। यद्यपि इसे बाँठड़ा भी कहा जाता है।

"चानणी ओची री पार चागा, ग्वालू रा बाँठड़ा भाइयो लागा।"

(ऊँचे शिखर पर चाँदनी छिटकी और यहाँ ग्वालों का बाँठड़ा लगा।)

बाँठड़ा पहले सवर्ण लोग करते थे, बुढड़ा असवर्ण तथापि बाद में यह भेद समाप्त हो गया।

इस नाट्य में मुख्य पात्र अपने पूरे शरीर पर पराल मढ़ लेता है। पराल धान की घास होता है। दाढ़ी-मूँछ लगाने से यह बूढ़ा नजर आता है, अतः इस लोकनाट्य का नाम बुढड़ा हुआ।

मंचन

बुढड़ा के मंचन में पात्र 'भगत' की भाँति हैं। मुख्य पात्र बुढड़ा के अतिरिक्त साधु या जोगी, मसखरा या डंडू तथा चंदरौली हैं।

साधु या जोगी भगवा चोला, धोती पहनें होता है। सिर पर भाँग या सेल की जटाएँ। हाथ में लौकी का कमंडल। जोगी नंगे बदन, शरीर पर भस्म रमाए भी हो सकता है। जोगी गाते हुए प्रवेश करता है :

ऐस कुंटा जोगी विराजे। जोगी री खिदमत केस कराइए।
जोगी मरदा सेल़े पाल़े। सैहर सकेता जो जाइए।
रूँ होर कपाह लयाइए। जोगी जो ल्हेफा भराइए।

जोगी बंजर भूमि में आ विराजे हैं। जोगी की सेवा-सुश्रूषा किससे करवाएँ। जोगी तो शीत-पाले से मर जाएगा। सुकेत शहर जाओ, वहाँ से रूई और कपास लाओ। जोगी के लिए ल्हेफ (लिहाफ) भरवाओ।

चँदरौली का पार्ट पुरुष ही अदा करते हैं। चँदरौली या चंद्रावली बने पुरुष घाघरू और दुपट्टा पहनते हैं। घाघरू के स्थान पर अब सलवार-कमीज भी चलती है। स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाले आभूषण भी ये पुरुष पहनते हैं। चँदरौली एक या दो भी हो सकती हैं। चँदरौली के मंच पर आने के साथ गीत गाया जाता है :

आया हो सुहागणिए फुल्ले माले। मरूआ पंजपतरा फुल्ले डाले।
कुड़ियाँ खेलदी गुड़ीए माले। गब्भरू खेलदे खोड़े चौले।

इस गीत में पाँच पत्तों वाले मरूआ के फूलने, लड़कियों के गुड़िया तथा युवकों के अखरोट, चावल के साथ खेलने का वर्णन है। बंजर भूमि खोदने, उसमें जौ, चने बोने के साथ-साथ हिरण के शिकार का उल्लेख भी गीत में किया जाता है।

डंडू साहब का अभिनय करता है। उल्टा पाजामा-कमीज पहने, चीथड़े लटकाए यह पात्र डरावना-सा मुखौटा पहने रहता है। कभी नंगे सिर कभी टोप पहने डंडू मसखरे की भूमिका करता है। चँदरौली को अपनी पत्नी बताता है। चँदरौली से हँसी-मजाक करते हुए वह गाता है :

घूँघट खोली देणा ओ, सजन मिलदे प्यारे।
आस्से तेरे चाऊए आए हो, आस्से तेरे नैणा दे मारे।

मुख्य पात्र बुढड़ा के पूरे शरीर पर धान के पराल का एक आवरण-सा होता है। बगड़ घास या सेल या मक्की के बालों की दाढ़ी-मूँछ लगाई जाती है। सिर पर बड़ा टोप, हाथों में लंबी उँगलियाँ। पीठ पर किरडू और हाथ में डंडा। नाट्य में हास-परिहास का केंद्र बुढड़ा भी बनाया जाता है।

नाट्य मंचन के समय बुढड़ा, चँदरौली, साधु, डंडू क्रम से आते हैं। पात्रों के आने के साथ-साथ गीत-संगीत से समाँ बाँधा जाता है।

विशेषताएँ

इस लोकनाट्य में संगीत और गीत का महत्त्व है। गीत-संगीत के माध्यम से नाटक-मंचन होता है। स्पष्टतः सीधा संवाद इसमें नदारद है। नाट्य के आरंभ में सभी कलाकार भक्ति गायन करते हैं :

भगती करो भाई, भगती करो रे। सभ मिली के करो भाई भगती करो रे।
भगती करो महामाया ओ तेरे। भगती करो भाई भगती करो रे।
भगती करो सिब संकर तेरे। भगती करो भाई भगती करो।

इस तरह महामाया, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, धरती-आकाश, माँ-बाप, गुरु, वृद्धजनों की भक्ति गाई जाती है। गायक नगाड़ा-शहनाई वादकों के साथ पात्र-प्रवेश के समय गायन करते हैं।

ठोडा

ठोडा युद्ध-कौशल का खेल है। इस पुरातन परंपरा में धनुष-बाण का खेल खेला जाता है जो कई बार वास्तविक युद्ध में भी बदल जाता है। खेल-खेल में भी तीर के घाव तो सहने ही पड़ते हैं। जब धनुष-बाण से खेल होगा, बाण तो चलेंगे ही। यद्यपि खेल के नियमों के अनुसार बाण घुटने से नीचे और टखने से ऊपर पिंडली में लगाना होता है।

ठोडा नुकीली लकड़ी को कहते हैं जो तीर के भीतर घुसाई जाती है। तीर बनाने के लिए नर्गाली की लकड़ी प्रयोग में लाई जाती है। इस लकड़ी को नगाली या किले भी कहते हैं। नगाली बाँस की ही छोटी प्रजाति है जिसकी लकड़ी के बीचोबीच छेद होता है। इस छेद के भीतर नुकीली लकड़ी का टुकड़ा लगाया जाता है जो तीखे तीर का रूप धारण करता है। इसी को ठोडा कहते हैं। आम खेल में यह नुकीला न होकर चपटा होता है जिससे ज्यादा चोट न लगे, हालाँकि दल के नेता का ठोडा आगे से नुकीला होता है। साधारण खेल में भी ठोडा चपटा रहता है जबकि 'कऊड़' में तीखा। कऊड़ खेल में टाँगों में पतला कपड़ा लपेटा जाता है, साधारण खेल में कई तह करके मोटा कपड़ा टाँगों में लपेटते हैं ताकि चोट न लगे।

पृष्ठभूमि

ठोडा खश योद्धाओं का प्रिय खेल है। खश एक पौराणिक जाति है जिसका वर्णन महाभारत तथा अन्य पुराणों में हुआ है। पर्वत निवासी खश आज भी प्रदेश के शिमला, सोलन तथा सिरमौर जिलों में विद्यमान हैं।

खश लोगों में ठोडा खेलने वालों को 'खूँद' कहा जाता है। खूँद पराक्रमी योद्धाओं का नाम है। ठोडा खेल में दोनों दलों के खूँद शाठा और पाशा नाम से पुकारे जाते हैं। शाठे कौरव और पाशे पांडव माने जाते हैं। शाठे-पाशे में आपस में शत्रुता रही है। एक-दूसरे से विवाह नहीं होता। अभी भी सिरमौर के कुछ गाँवों में पुरानी शत्रुता है।

लोक-विश्वास है कि कौरव कुल साठ थे, अतः इन्हें शाठा कहा जाता है, पांडव पाँच थे इसलिए पाशा कहलाए। महाभारत के कौरव-पांडव युद्ध के प्रतीक रूप ठोडा में भी शाठा-पाशा युद्ध होता है। शाठा दल को शाठी या शाठड़ और पाशा दल को

पाशी या पाशड़ कहते हैं। धनुष-बाण से लड़े महाभारत युद्ध की परंपरा को शाठा-पाशा दलों के खूँद आज भी निभाते हैं। इस खेल में दोनों दलों के खिलाड़ियों की संख्या बराबर रहती है। दोनों दलों में दो-दो खिलाड़ियों के बीच युद्ध होता है। प्रत्येक खिलाड़ी अपने प्रतिद्वंद्वी पर ही वार करता है। किसी दूसरे पर नहीं। धनुष अपने-अपने दल के लोगों को ही लाने होते हैं। एक दल में पाँच सौ तक खूँद हो सकते हैं। खेल से पहले प्रतिद्वंद्वियों की जोड़ियाँ तय कर ली जाती हैं।

ठोडा का प्रारंभ

आजकल ठोडा दूसरे खेलों की तरह खेला जाता है। मेलों या अन्य अवसरों पर ठोडा दलों को खेलने के लिए विधिवत बुलाया जाता है। बिशू या बैशाखी के मेलों में इन पर विशेष आयोजन होता है। पुराने समय में ठोडा खेलने के लिए इच्छुक खूँद दूसरे गाँव की बावड़ी या पानी के नालू में झाड़ियों में फेंककर युद्ध का आमंत्रण देते थे या एक गाँव के मुखिया को गाँव की सीमा से आवाज देकर युद्ध के लिए ललकारा जाता। इस ललकार से या जलस्रोत में झाड़ियाँ होने से युद्ध की तैयारी आरंभ कर दी जाती।

ठोडा एक गाँव से दूसरे के साथ खेला जाता है। एक कबीला शाठी कहलाता है, तो दूसरा पाशी। जिन्हें युद्ध के लिए चुनौती दी गई है वे निश्चित तिथि को अपने-अपने हथियार लिए अपने देवता के पास इकट्ठा होते हैं। देवता का आशीर्वाद लेने के बाद ही युद्ध के लिए प्रस्थान किया जाता है। युद्ध तो धनुष-बाण से ही होगा किंतु सभी लोग ढाल-तलवार, गँडासा, डाँगरा या फरसा और बंदूक तक लिए होते हैं। इसके लिए युद्ध-वाद्य ढोल, नगारा, दमामा, रणसिंघा, तुरही, करनाल, शहनाई भी साथ होते हैं जो वीर रस या रौद्र का सृजन करते हैं। देवता के सामने युद्ध-वाद्यों के बीच बंदूकें दागी जाती हैं। देव-वंदना के बाद पूरा काफिला उस गाँव की ओर प्रस्थान करता है जहाँ से युद्ध की चुनौती मिली है। रास्ते में हर गाँव के लोग इस सैन्य बल का स्वागत करते हैं।

खेल का मैदान

ठोडा के लिए खेल का मैदान हरी-भरी दूब से भरा मैदान होता है। यह गाँव के समीप कोई खुली जगह, मंदिर के सामने खुला मैदान हो सकता है।

दूब से भरा मैदान होने से इसे जुबड़ या जूबड़ी कहा जाता है। दूब को जूब कहा जाता है इसलिए, इस जूब से भरे मैदान की वंदना की जाती है :

छिंछड़ी जेई फूले मेरी जुबड़िए।
फूले मेरी जूबड़ीए सूइने रे फूले।

—मेरी जूबड़ी छिछड़ी फूल की तरह खिल। या सोने के फूल की तरह खिल।

सोलन में बड़ा मैदान आज भी 'ठोडा मैदान' के नाम से जाना जाता है। ठियोग, घूंड, धवास, पुड़ग आदि अनेक स्थानों में ठोडा खेला जाता रहा है। मैदान के चारों ओर ग्रामीण दर्शक अपनी परंपरागत वेशभूषा में सुसज्जित होकर खेल देखने बैठते हैं।

युद्ध में प्रतिस्पर्धापूर्ण वार्तालाप के साथ जब धणु और शरी लिए खूँद आमने-सामने डटते हैं तो वाद्यों से भी युद्धसूचक ताल बजाया जाता है। इस ताल को ठडेयर ताल कहते हैं। धींगता, धींगाता धींगाता, धिंग-लय पर घनघोर वाद्य बज उठते हैं।

युद्ध बिलकुल आमने-सामने होता है, छल-कपट से रहित। आमने-सामने खड़े होकर योद्धा प्रतिद्वंद्वी द्वारा पहले वार करने की प्रतीक्षा करते हैं। धनुष में बाण चढ़ाकर घुटना धरती पर लगाकर धनुष को कानों तक खींचकर बाण चलाया जाता है जिसे दूसरा इधर-उधर उछलकर बचाता है। यदि बाण घुटने से ऊपर और टखने के नीचे लगे तो योद्धा धनुष उठाते उछल-उछलकर नाचता है। यदि टाँग की सुथ्थण के बाहर लहू का धब्बा दिखाई दे, तब असली विजय मानी जाती है। बाण चलाने का यही क्रम दोहराया जाता है।

शोरशराबे, हुँकार, ढोल-नगारे के साथ ठोडे का खेल पूरा-पूरा दिन चलता रहता है। रात को सभी योद्धाओं को गाँव में पूरे मान-सम्मान के साथ ठहराया जाता है। गाँव के सभी घरों में इन्हें पूरे आतिथ्य के साथ ठहराते हैं, जिसे 'ठीला', 'खिंडू पाणा', 'भोरे पाणा' कहा जाता है।

ठोडा गीत

ठोडा खेलने को आतुर योद्धा जोशीले गीत गाते हैं। समय-समय पर इन गीतों और ललकारों के माध्यम से युद्ध का जोश बढ़ाया जाता है। अपने-अपने कुल-देवता का नाम लेते हुए योद्धा एक-दूसरे के लहू के प्यासे हो हुँकार भरते हैं। युद्ध के लिए प्रस्थान के समय वे कहते हैं :

ओरू दे मेरो डाँगरौं, डाँगरौं भाई डाँगरौं।
मेरे जाणो जातरौ, जातरौ भाई जातरौ।

—मेरा डाँगरा (कुल्हाड़ा) मुझे दो, मुझे जातरा के लिए जाना है।

युद्ध के मैदान में शाठी योद्धा कहता है : "अट्टे मेरेया ठोडेया!" अर्थात् धन्य

हो मेरे ठोडे। तो पाशी कह उठता है : "गुरु पूजा मेरेया तेरो जुबड़ी दा।" अर्थात् मैदान में तेरा गुरु पहुँच गया है। तो पहला कहता है : "ऊभे लागले लोहू रे गारे" अर्थात् अब लगेंगे खून के ढेर।

पाशी योद्धा इस प्रकार ललकार देते हैं :

शीगू लाई थोई शाठड़ा मूखे सुथिणो
थौड़े मालबे के हो…हो…हो…!
जे रुआ ला डोरी
तो काटी जुबड़ो रो शौरी हो…हो…!
ओंडा पोड़ी जोड़ीदारा मूखे
थौड़े मालवे के हो…हो…!
देवो बिजरो री हाज़री
जोड़ीदारा मूखे थौड़े मालवे के हो…हो…हो…।

—हे शाठी तू जल्दी से सुथ्थण पहन और मेरे साथ ठोडा खेलने के लिए तैयार हो जा। यदि तुझे भय लगता है तो तीर फेंक दें। मेरे जोड़ीदार आकर मेरे साथ ठोडा मल्ल युद्ध कर। हम बिजट (देवता) के चरणों में आए हैं। आ जा मेरे साथ ठोडा मल्ल युद्ध कर।

योद्धा दर्शकों को संबोधित करता कहता है :

ऊबी चोटे आखोही मेरीए झूरिए, ऊवी बीउजे मेरीए बौऊए,
ऊबे बीउजौ मेरेया सौजणा।

—मेरी प्रेयसी, मेरी माँ, मेरे मित्र जरा जागकर इधर देखो।

भगत

भगत एक प्राचीन नाट्य परंपरा है जो हिमाचल के काँगड़ा, हमीरपुर, ऊना तथा बिलासपुर जिलों में प्रचलित है। पुरातन समय से भगत को हरिजन समुदाय के लोगों ने जीवित रखा। यही लोग इस नाट्य के संरक्षक, प्रचारक और प्रसारक रहे।

यह लोकनाट्य पहले श्रीकृष्णलीला या रासलीला तक केंद्रित था। अतः इसे रास भी कहा जाता है। रासलीला का लौकिक रूप भगत में देखा जा सकता है। फिर इसमें स्वाँग का पुट मिला। स्वाँग के द्वारा संवादों को तोड़-मरोड़कर बोलना स्वाँग की विशेषता है। स्वाँग में रासलीला का मंचन गौण रहता है। रासलीला और स्वाँग के बाद भगत मंडलियों द्वारा नाटक भी खेले जाने लगे। वीर अभिमन्यु से लेकर अमर सिंह राठौर और महाराणा प्रताप तक के नाटक भी भगत कलाकारों द्वारा खेले जाते रहे। किंतु अपने मूल रूप में भगत श्रीकृष्णलीला का ही नाट्य रहा है।

जिला काँगड़ा के शाहपुर, ज्वाली, त्रिलोकपुर, बैजनाथ, पंचरूखी, बालकरूपी, ज्वालामुखी, डाडासीबा आदि स्थान भगत के क्षेत्र रहे हैं। जब भगत पूरी-पूरी रात चलने लगी तो एकात्मकता को तोड़ने के लिए बीच-बीच में स्वाँग दिए जाने लगे ताकि दर्शकों को बाँधे रखा जा सके। अधिक समय तक चलाने के लिए तरह-तरह के धार्मिक या दूसरे कथानकों को भी नाट्य में दिखाया जाने लगा।

समय तथा स्थान

भगत के लिए कोई विशेष समय निर्धारित नहीं है। मुख्यतः इसे फसलों के काम से फुर्सत के समय खेला जाता है। दीपावली के बाद स्वच्छ आसमान के नीचे चाँदनी रातों में इसका आनंद ही और है। ऐसे मौसम में लोग दूर-दूर से भगत देखने पहुँचते हैं। ग्रामीण मनौती के रूप में, पुत्र-प्राप्ति पर, विवाहादि मांगलिक कार्य पर भी भगत करवाते थे।

इस नाट्य के लिए भी किसी मंच की आवश्यकता नहीं। गाँव के बीच किसी भी खुले स्थान में भगत हो सकती है। मनौती के समय घर के आँगन में भी भगत हो सकती है। सर्दियों में अलाव जगा दिया जाता है, जो प्रकाश और गर्मी दोनों का काम देता है। घर का कोई कमरा या कहीं भी चादर लगाकर मेकअप रूम बन जाता

है। चाँदनी न हो तो बड़ी बोतल में बाती लगाकर मिट्टी के तेल से जगाकर रोशनी की जाती है। पेट्रोमेक्स का चलन होने पर इनका प्रयोग भी किया जाने लगा। भगत का प्रारंभ तब किया जाता है जब लोग खाना खाकर अपने बैठने के लिए चटाई, दरी, बोरी लेकर आसपास बैठ जाते हैं।

भगत नाट्य अभिनीत करने वालों को 'भगतिए' कहा जाता है। इनमें कोई छोटा लड़का कृष्ण बनता है। एक पुरुष पात्र चंदरौली या चंद्रावली बनता है। कुछ सखियाँ। मनसुख विदूषक है जिसके हाथ में डंडा होता है। इसे डंडू या डंडू कान्ह भी कहते हैं। इस पात्र को रौलू भी कहते हैं। संगीतज्ञों में तबला वादक को तबलची और बाजा बजाने वाले को साज़ी कहते हैं।

प्रमुख भगतिए बैजनाथ, पंचरूखी, बालकरूपी, डाडासीबा आदि स्थानों में रहे हैं। कतनौर (पौंगबाँध) गाँव के बाबा मायाराम, हार चक्कियाँ के बाबा का राँझू नाम भी समर्पित भगतियों में लिया जाता है।

नाट्य प्रारंभ

भगत नाट्य परंपरा को गुग्गा गाथा की भाँति सृष्टि के प्रारंभ से गाया जाता है :

पौण नईं था पाणी नईं था। ताँ क्या था? धुँधूकारा।
कौल फुल्ले बिच्च भगती कीती। योग कमाया सारा।
अणबिद्धा ताल बजाया, राग गाया सारा।
चिड़ियाँ दा नईं था चमकारा, आदमी माणस नईं था हुकाँरा।
ताँ क्या था बाबा आद, कनैं सच्चा निरंकारा।

यह पद्य गुग्गा गाथा तथा कुछ अन्य गाथाओं के आरंभ की भाँति है जिसमें सृष्टि के प्रारंभ में हवा-पानी की अनुपस्थिति में अंधकार की बात की गई है। कमल फूल में भक्ति करने और योग कमाने के बाद अनगाया राग अलापा गया। उस समय जगत में आदि पुरुष और सच्चा निरंकार ही था।

भगत का प्रारंभ स्तुति के साथ होता है। सभी भगतिए गणेश वंदना करते हैं :

पहलै गणपति मानिए, पाछे करिए काज।
सभा बगानी बैठ कर, पत रखे महाराज।

इसके बाद गणेश की आरती गाई जाती है जिसमें श्री ज्वाला माता की भेंट प्रभावी रहती है।

आरती के बाद चेतावनी भी होती है कि जो कोई मन में प्रेम-भाव रखेगा, वह प्रेम का फल पाएगा और जो मन में कपट रखेगा, वह अपनी करनी का फल पाएगा।

गणेश आरती के बाद एक छोटे बालक को कृष्ण की वेशभूषा में बिठाया जाता है। हाथ में मुरली लिए, धोती-पटका-मुकुट पहने श्रीकृष्ण की स्तुति चंदरौली तथा साखियाँ आकर करती हैं। स्तुति-गीतों के बीच कृष्ण भी नृत्य करते हैं।

श्रीकृष्ण चंदरौली तथा सखियों को जल भरने से रोकते हैं :

जे तू जमुना जल भरने आई, तेरा गागर देंऊ गिरा।
अपणे अपणे परसाने पर खूआ लऔ खुदवा।
खूआ लऔ लगवा सखी जी··· तुझे जल भरने न दूँगा मैं।

सखियों को पानी भरने न देने पर वे श्रीकृष्ण के मित्र को मनसुखा कहकर पुकारती हैं।

कृष्ण-वेश में मनसुखा कौन है, यह स्पष्ट नहीं है। यद्यपि मनसुखे के मुँह पर लाल-पीले रंग होते हैं। लंबा टोप, गले में जनेऊ, धोती और हाथ में बाँस का डंडा। मुरली के स्थान पर हाथ में बाँस का डंडा होने से इसे डंडू कान्ह भी कहा जाता है। मनसुखा ही भगत का केंद्र है जो सखियों से संवाद स्थापित कर हँसता और हँसाता है।

मनसुखे का मंच पर आगमन तबला-वादन के बाद होता है। भगत का मुखिया गाता है :

धगे ताँ गिण नग तिर किट गिदि गिन्ना
धगे गिट गड़ान दूणा गिन्ना।
धगे किट गड़ान धा दर करतान
तक धाति न धाति न धा धा धा।

मनसुखा इस धुन पर नृत्य करता है। फिर वह सखियों से मजाक करता है। इस मजाक का एक संवाद इस प्रकार है :

सखियाँ : म्हारा पाणी भराई दे, असाँ तिज्जो खुश करगियाँ।
मनसुखा : कियाँ खुस करगियाँ मिंजो तुसाँ?
सखियाँ : असाँ तिज्जो बरफी पेड़ा कनैं मक्खण दिंगियाँ।
मनसुखा : (कृष्ण के पास जाकर) ठाकर जी मत्था टेकणा।
कृष्ण : खुस रहो मनसुखिया।
मनसुखा : असाँ खुस रहिए जा न रहिए, तुसाँ मौजाँ लौ ठाकर जी।
एह लो प्रसाद सखियाँ भेजिया।
(प्रसाद दिखाकर खुद खा लेता है।)

कृष्ण : एह तें ठगी कीती मनसुखिया।
मनसुखा : ता तुसाँ नी ठगियाँ करदे तुआँ सौ ठगियाँ कितियाँ, असाँ जे इक करी दिती ता क्या होया?
कृष्ण : असाँ क्या ठगियाँ कितियाँ।
मनसुखा : इक होए ताँ गिणा।

मनसुखे और सखी के बीच एक और हास्य संवाद :

सखी : मनसुखया।
मनसुखा : हाँ मेरिये किसमिस।
सखी : असाँ लुटिया गईयाँ।
मनसुखा : तुहाड़े पुच्छआड़े दियाँ बसूटियाँ पुटियाँ गईयाँ।
सखी : नीं असाँ लुटियाँ गईयाँ।
मनसुखा : अच्छा कुन्हीं तम्हरियाँ जुतियाँ चुकि लईयाँ।
सखी : म्हारा नकसान होई गिया।
मनसुखा : ताहीं फिरा दियाँ बणी ने साहन।
सखी : म्हारें डाका पई गिया।
मनसुखा : (हँसता है) मेरा करा मिठा मुँह।
सखी : कैंह?
मनसुखा : तेरे घरें होया काका। है न?

इस प्रकार कृष्ण और सखियों के साथ हँसी-मजाक से मनसुखा सबको हँसाता है। इस संवाद में अश्लीलता का पुट भी कभी स्वाभाविक तौर पर आ जाता है।

भगत में इन संवादों के अतिरिक्त श्रीकृष्ण का चंद्राबल को वेश बदलकर हरना आदि दृश्य भी होते हैं। श्रीकृष्ण सखी का गायन शैली में संवाद भी चलता है, नृत्य भी होता है।

सखी : बंसी का बजाना छोड़ जो अजी नंद मेहर के लाल।
कृष्ण : बंसी का बजाना कैसे छोड़ूँ? अरी प्यारी सखी मैं आज।

भगतिए अपनी गुप्त भाषा में भी संवाद करते थे। इसके कुछ नमूने इस प्रकार हैं :

अमो कालख धारिए होपर दे : हम भगतिए हैं।
अमो लोबा लोबदे आँ : हम रात को कार्यक्रम करते हैं।
शौत माणक जीक दे आँ : बहुत लोग हमारा कार्यक्रम देखने आते हैं।

मैरी सैह कालखी चामदे आँ : हम शाम से सुबह तक कार्यक्रम देते हैं।

हमो ननके होपरदे : हम छोटी जाति के लोग हैं।

एवा मम च रमत करपते हैं : हम भगत का काम करते हैं।

धोरमे लेवरने जीकते हैं : यह काम पेट के लिए करते और धन कमाते हैं।

भगत के प्रथम भाग में श्रीकृष्ण लीला के विभिन्न प्रसंग, मनसुखे और सखियों द्वारा हास्य नाटिकाएँ की जाती हैं।

भगत के दूसरे भाग में स्वाँग निकाले जाते हैं। इन स्वाँगों में गद्दी-गद्दण, भोल, रौलू और रंगा का स्वाँग, बुजडु का स्वाँग, पांडवों का स्वाँग प्रमुख हैं। कई बार धार्मिक ऐतिहासिक नाटक भी खेले जाते हैं।

ये स्वाँग सुबह का उजाला फैलने तक चले रहते हैं। पांडवों के स्वाँग के बाद भगत करवाने वाले एक बकरा लाकर पांडवों के स्वाँग के आगे खड़ा करते हैं। बकरा पानी छिड़कने पर यदि पीठ झाड़े तो मनोकामना पूरी हुई मानी जाती है। अंत में अरदास गाई जाती है :

धूप दीप तेरी आरती, उतरे सकल सरूर।
प्रेम राधा किच्छ न करदी, तेरी गोकल मिलणी के दूर।

आरती का अंत इस प्रकार है :

नाम निरंजन सच्चा निरंकारा। धुँधूकारा, पौण-पाणी, जल-थल,
कौल फुल्ल ब्रह्मा देवता, विष्णु देवता, जल-थल, धरती माता।
गास मंडल, सूर्य देवता, चंद्र देवता।
नौ लक्ख तारा, ध्रुव तारा, ध्रुव भगत, मायाराम भगत
तुमरी गत कोई न जाणे, नानक दास भई अरदास।

कई जगह अंत में सरस्वती-वंदना की जाती है। सरस्वती को मोर पर बिठा आरती गाई जाती है :

कौण देव ने पैदा कीती, कौण देव ने मन्नी जी।
तू है मेरी देवा आद भवानी जी।
कौण देव तेरी करे रसोइया, कौण भरे जल पाणी जी।
तू है मेरी देवा आद भवानी जी।
आदि शक्ति ने पैदा कीती, तीन लोक ने मन्नी जी।
ब्रह्मा विष्णु करे रसोइया, इंद्र भरे जल पाणी जी।।

अंत में हलवा बनाकर सबको प्रसाद स्वरूप बाँटा जाता है।

रासलीला

भगत के साथ रास भी काँगड़ा, हमीरपुर, ऊना, बिलासपुर में प्रचलित नाट्य है। रासलीला करने वालों को 'रासधारिए' कहा जाता है। यद्यपि अब रासधारिए नहीं के बराबर रह गए हैं।

पुराने समय में वृंदावन, मथुरा, जम्मू, राजस्थान आदि स्थानों से रासधारिए आते थे। रासधारियों की नाट्य मंडलियाँ जगह-जगह रासलीला रचातीं। इन रासधारियों की प्रेरणा से काँगड़ा आदि क्षेत्रों में भी रासलीला की मंडलियाँ बनीं। कुछ लोग बाकायदा अपने बाल बढ़ाने लगे ताकि रासलीला के समय नकली बाल न लगाने पड़ें। जब-जब बाहर से रासधारिए नहीं आते, स्थानीय रासधारिए अपनी कला का प्रदर्शन करते। स्थानीय कलाकार बाहर के कलाकारों की भाँति संवाद बोलने के साथ-साथ स्थानीय बोली का प्रयोग करते।

रासलीला के कम होने पर भगत नाट्य में ही रास का समावेश किया जाने लगा।

पुराने समय में मरासी और गोसाईं डेरे डालते हुए रासलीला करते हुए चलते थे। संभवतः इसीलिए इन्हें और इनके मुखिए को डेरेदार कहते। मरासी और गोसाईं रामलीला के लिए प्रसिद्ध थे। अब कई गोसाईं और मरासी गृहस्थ बन दूसरे काम-धंधों में लग गए हैं। अतः रासलीला का प्रचलन नहीं के बराबर रहा है।

मंच तथा प्रदर्शन

दूसरे नाट्यों की तरह रासलीला के लिए भी किसी मंच विशेष की आवश्यकता नहीं। खुला प्रांगण, ऊँचा चबूतरा या नीची जगह, जहाँ से भी दर्शक सुविधा से देख पाएँ, रासलीला खेली जा सकती है। कोई कपड़ा लटकाकर पीछे तैयार होने के लिए स्थान बना लिया जाता है। रासधारिए आवश्यकतानुसार रंग-बिरंगे परिधान पहन, घास की दाढ़ी-मूँछ लगाए, या धूल से बदन चमकाए मंच पर आते हैं।

मूक अभिनय और कथा को आगे बढ़ाने के लिए गायक तथा वादक आवश्यक हैं। वाद्य यंत्रों में ढोलक, तबला, हारमोनियम, छैनियाँ, थाली आदि प्रयोग किए जाते हैं।

—

रासलीला का आरंभ

सभी नाट्यों की भाँति रासलीला का आरंभ भी आरती से होता है :

भादों महीने न्हेरियाँ रातीं जन्मेया कृष्ण मुरारी।
जाँ जन्मेया ता दीपक बलेया चौनीं चौकेया होईयाँ लौईं।
मथुरा नगरी खुसियाँ होइयाँ गोकुल आई बहार।
काली नाग नत्थे मेरा कान्हा, जमनाजी बिचकार।
घर बसुए के जायेया पुतर, बधाइयाँ मेरे श्याम जी।

प्रथम दृश्य में कृष्ण-राधिका को मंच पर लाया जाता है। राधा-कृष्ण प्रायः छोटे बालकों को बनाया जाता है। कृष्ण-राधा को सजाकर कलाकार हाथ जोड़े खड़े हो जाते हैं और पुरुष तथा महिला बना पुरुष नृत्य करता है। इस समय निम्नांकित गीत गाया जाता है :

सात जन्म राजे कंसे मारे, आठवें दी बारी आई।
उआरेते उतरी देवकी भैण, पारा ते जसोधा माई।
दोनों भैणा गले मिली, रोई रोई अंखियाँ डुलाई।
मेरी हुंगी कन्या तेरे हुंगा बालक उन्हाँ लेगें बदलाई।

इस गीत में कृष्ण-जन्म की घटना का वर्णन किया जाता है।

इस दृश्य के बाद वास्तविक रासलीला आरंभ होती है। गोपियाँ गीत गाती हुईं, नृत्य करती हुई मटके लेकर आती हैं। श्रीकृष्ण, राधा और गोपियाँ नृत्य द्वारा रासलीला का प्रदर्शन करते हैं। बीच-बीच में गीत-संगीत चलता है।

भगत की भाँति इसमें मनसुखा आकर गोपियों से छेड़छाड़ करता हुआ हास्यरस का संचार करता है।

रासलीला में सास-बहू का नाट्य, कृष्ण-गोपियों की छेड़छाड़ तथा श्रीकृष्ण के जीवन के विभिन्न दृश्यों को दिखाया जाता है।

रासलीला में प्रयुक्त गीत स्थानीय बोली का पुट लिए हुए होते हैं। कुछ गीत मूल रूप से वही रहे होंगे जो वृंदावन या मथुरा से आए रासधारियों ने गाए। अतः इन गीतों को विभिन्न अवसरों विवाह, उपनयन संसार, जन्मदिन पर भी समान रूप से गाया जाता है।

उदाहरणतः विवाह के अवसर पर यह गीत गाया जाता है :

राती दे हंडणे तू छोड़ी दे श्यामा, हुण ता होया घर बारू। श्याम...
राती दे हंडणे ते क्या फल पाया, देही दा नूर गुआया। श्याम...

इस प्रकार एक दूसरा गीत है :

हसी-हसी पुच्छे राणी रुकमणी बात
कंगणा कहाँ बो भनाया ओ महाराज! भजो गोविंद भजो श्री हरिराम...
भादों महीने गोरिए पुन्नी रखड़ूनी
कंगणा वहाँ बो भनाया महाराज! भजो गोविंद भजो श्री हरिराम...
हसी-हसी पुच्छे राणी रुकमणी बात
हत्थड़ू कहाँ रँगाए ओ महाराज!
जमना कनारे गोरियें मेंहदी रे बूटे।
मेंहदी वहाँ रचाई ओ महाराज! भजो गोविंद भजो श्री हरिराम...

रासलीला का ही एक गाना अब नृत्यों के समय गाया जाता है :

बहियाँ न मरोड़याँ कृष्णा, बंगड़ूआ न तोड़ेयाँ,
मेरे घर सौहरा सयाणा, दिलो जान कृष्णा।
सौहरे तेरे तो मैं पलंग डुलाई देऊँ हुक्का पिलाई देऊ,
तिज्जो घर जाणे न देऊँ, दिलो जान अड़िए।
बहियाँ न मरोड़ेयाँ अड़ेया बंगड़ुआ न तोड़ेयाँ,
घरे मेरे गुजर जुआन, दिलो जान कृष्णा।
गुजरे दा तेरे दा ब्याह कराई देऊँ, नोईं गुजरी ल्याई देऊँ,
तिज्जो घरें जाणे न देऊँ दिलो जान अड़िए।

रामलीला

हिमाचल के निचले क्षेत्रों में रामलीला मैदानों की भाँति मनाई जाती है। स्थान-स्थान पर दशहरे से पूर्व रामलीला नाट्य खेला जाता है जो दशहरे को समाप्त होता है। गाँवों में रामलीला दशहरे के बाद भी चलती रहती है।

पहले समय में रामलीला के कलाकार कई दिन पहले गाँव में डेरा डाल देते। गाँव के बाहर उपयुक्त स्थान देख चार बाँस गाड़ किसी चबूतरे पर मंच बना लिया जाता है और रामलीला आरंभ। रामलीला पूरी-पूरी रात चलती और समय के अनुसार उसे प्रकरणों में बाँट दिखाया जाता। रामचरितमानस की चौपाइयों के गायन के साथ आपसी संवाद भी रामलीला में जोश भरते हैं। राम-जन्म से रावण-वध तक की शृंखला में रोज प्रसंग खेले जाते हैं।

रामचरितमानस के अतिरिक्त पहाड़ी लोक-रामायण भी ग्राम्य क्षेत्रों में प्रचलित हैं।

रामलीला के लिए व्यावसायिक टोलियों के साथ हर वर्ष किसी गाँव या शहर में रामलीला करने वाले उपयुक्त पात्रों की तलाश में रहते हैं। राम के लिए सुंदर आकर्षक युवक, रावण के लिए पहलवाननुमा आदमी, हनुमान के लिए तगड़ा और फुर्तीला व्यक्ति, ये सभी पात्र ढूँढ़कर चुने जाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो कई वर्षों से हनुमान या रावण बनते आ रहे हैं।

रामलीला के अंतिम दिन सीता-राम-लक्ष्मण की हनुमान सहित झाँकी निकाली जाती है। प्रायः राम ही रावण के पुतले पर तीर चलाते हैं और रावण, मेघनाद, कुंभकरण के पुतले जलाए जाते हैं।

रामलीला आज भी गाँव तथा शहर में लोकप्रिय है।

स्वाँग

स्वाँग की प्राचीन परंपरा प्रदेश के विभिन्न भागों में प्रचलित है। कई स्वाँगी अपने जीवन में स्वाँग उतारने के लिए लोकप्रिय रहे हैं। स्वाँग का सीधा अर्थ हूबहू नकल उतारना है। स्वाँग केवल हास्य के लिए ही किया जाए, ऐसा भी नहीं है, किसी धार्मिक ऐतिहासिक पात्र का भी स्वाँग निकाला जा सकता है जिससे हास्य के स्थान पर एक श्रद्धा की भावना जागृत होती है।

बहुरूपिए

प्रदेश के निचले क्षेत्र में बहुरूपिए होते थे। अब इनकी संख्या नहीं के बराबर हैं। अलबत्ता कोई मसखरा अब भी हनुमान या लंगूर बनकर गाँव-गाँव निकलता है। बहुरूपिए रोज नया रूप धरकर घर-घर जाते और भिक्षा ग्रहण करते। कभी साधु, कभी शिव, कभी दुर्गा, कभी बहरा, अंधा या पागल बनकर भिक्षा माँगना इनका कार्य था। जब ये पागल या अपंग बनकर घूमते तो इन्हें पहचानना आसान नहीं था कि ये फलाँ बहुरूपिया है।

होलियों के स्वाँग

सुजानपुर तथा पालमपुर के होली मेले में तीन दिन तक विभिन्न पार्टियों या इलाकों द्वारा स्वाँग निकाले जाते। रामायण, महाभारत, कृष्णलीला आदि के प्रसंगों से एक से एक बढ़िया स्वाँग निकाला जाता है जिसमें बच्चों से लेकर बड़ों तक भाग लेते हैं। आकर्षक वेशभूषा, साज-सज्जा के साथ ये एक सजीव दृश्य प्रस्तुत करते हैं जिसके आगे मेले में पहुँचे ग्रामीण श्रद्धा के साथ नतमस्तक हो भेंट चढ़ाते हैं। होली के अवसर पर निकलने वाले स्वाँगों की परंपरा अभी भी जारी है।

स्वाँगटेगीह

गीह का अर्थ है गीत, अतः यह गीत सहित स्वाँग है जो सिरमौर के साथ-साथ शिमला तथा सोलन में भी प्रचलित है। दीवाली, बूढ़ी दीवाली तथा चड़ेउली जैसे त्योहारों पर यह स्वाँग खेला जाता है। अलाव के चारों ओर लोग जानवरों के मुखौटे

पहनकर नृत्य करते हैं। पारंपरिक वाद्य जैसे हुड़क, दमामा, नगारा इस नृत्य पर बजाए जाते हैं। सभी मुखौटेधारी गोलाकार नाचते हुए उछल-कूद मचाते हैं। गाँव की स्त्रियाँ उन्हें अखरोट देती हैं। यह प्रयास रहता है कि अखरोट शेर के मुखौटे में ही डाला जाए। नृत्य करते हुए यह लोकगीत भी गाया जाता है :

कैइये शूको राजेया गिरियो रा पाणी,
घोड़े पीयो हाथीए गिरियो रा पाणी।

—गिरी नदी का पानी कैसे सूख गया है? इसे घोड़े और हाथियों ने पिया है।

झमाकड़ा

काँगड़ा जनपद (हमीरपुर सहित) में विवाह के अवसर पर 'झमाकड़ा' स्त्रियों द्वारा निकाला जाने वाला स्वाँग है। विवाह में दूल्हे या दुल्हन को उबटन लगाए जाने के समय दूल्हे के आगे मिट्टी के पात्र में आग डाल, उसमें सरसों डाली जाती है। सफेद सरसों के तिड़कने और जलने का धुआँ दूल्हे को दिया जाता है।

इसके बाद आटे या कपड़े का एक पुतला बनाकर उसे नचाया जाता है। इस पुतले को दूल्हे का नाना समझकर हाथ में उठा-उठाकर नचाने के साथ स्त्रियाँ स्वयं भी नृत्य करती हैं। इस नृत्य में दूल्हे की दादियाँ, चाचियाँ, ताइयाँ एक ओर तथा मामियाँ, मासियाँ, नानियाँ एक तरफ होकर नाचती हुई गाती हैं :

नंगा नानू आया हो झमाकड़या, लाल गोच्छा लाया ओ झमाकड़या।
डमाकड़या! घघरिया हेठ लकाया हो झमाकड़या,
दादुए जो सरमा आई हो झमाकड़या।
झमाकड़या! पतलूआँ चटदा आया हो झमाकड़या'''

—विवाह में नानू नंगा ही आ गया है, उसे घघरी के नीचे छिपाया गया है, वह पत्तलें चाटने आया है। आदि।

नाचने-गाने के बहाने के लिए नानू का सहारा लिया जाता है :

झमाकड़ा बोलदा नचणे जो, नचणे जो।
उठी जाणे जो नी बसणे जो, झमाकड़ा बोलदा नचणे जो।
लाड़े दिए मामिए तेरा मन बोलदा, नचणे जो नचाणे जो।
उठी जाणे जी नी बसणे जो, झमाकड़ा वे झमाकड़ा बोलदा नचणे जो।

इस तरह ताई-चाचियाँ मामी या मासी को नाचने के लिए प्रेरित करती हैं। जैसे झमाकड़ा उन्हें नाचने के लिए कह रहा हो। उनका मन बस नाचने को है।

बारात के जाने पर भी घर में बची स्त्रियाँ कई तरह के स्वाँग कर नाट्य खेलती हैं। चूँकि ऐसे समय मर्द कोई नहीं होता अतः इस नाट्य में बहुत ही खुलापन रहता है। कई स्त्रियाँ मर्दों के स्वाँग कर तरह-तरह के नाट्यों का खुलकर प्रदर्शन करती हैं।

चँदरौली

रास, भगत, हरण, करियाला आदि सभी लोकनाट्यों में चँदरौली या चंद्रावली की भूमिका प्रमुख है। चँदरौली के नृत्य के बिना ये नाट्य अधूरा है किंतु चँदरौली एक स्वतंत्र स्वाँग के रूप में भी प्रचलित है।

चँदरौली लोकनाट्य काँगड़ा, हमीरपुर, ऊना, मंडी, बिलासपुर में होता है। झीवर लोग इस नाट्य को खेलते हैं। ये नाट्य मंडलियाँ गाँव-गाँव जाकर इस नाट्य को करती हैं। छोटी मंडलियाँ तो घर-घर जाकर भी नृत्य-नाट्य करती हैं। ढोलक, डमरू, तबला, थाली, छैणे और हारमोनियम जैसे वाद्यों के साथ यह नाट्य होता है। कई बार भगत-रास का मसखरा इसमें रौलू बनकर हास्य रस का संचार करता है।

रौलू या विदूषक उलटी-सीधी वेशभूषा में अपने संवादों से हास्य-व्यंग्य के साथ चँदरौली के साथ अभिनय करता है। चँदरौली का काम नृत्य करना है। इस नृत्य में गायक दल विशेष गायन करते हैं जिसे 'चरकटी' कहा जाता है। तेज लय के गीतों के साथ द्रुत नृत्य। चरकटी गीतों के आरंभ में यह पद्य गाया जाता है :

चरकटीए सत बेटे जाए पंज पटारिया पाए राम जी।
पंज पटारिया पाए, दो गंगा नहाए, राम जी चरकटी नी बोलदी।

चरकटी गीतों की एक लंबी परंपरा है जिसमें दोहावली के रूप में कई प्रसंग आते हैं :

इत घरा नी जाणा इत हिलम हिल्ला,
भाभीए देवर मारेया चोरटा बिल्ला। राम जी···
इत घरा नी जाणा जित छोटी जोए
छिक्के हथ्थ नी पुजदा गल घुटुए रोए। राम जी···
इत घरा नी जाणा जित लंबी जोए।
नो गज का घाघरा फेर भी नंगी होए। राम जी···

बिरशू-ठिरशू

वैशाखी का त्योहार प्रदेश में बहुत मनाया जाता है, किंतु कुछ अलग ढंग से। वैशाखी के दिन लोकनाट्य खेले जाते हैं। इन नाट्यों में बिरशू, ठिरशू, निरशू, बिशू, बसोआ प्रमुख हैं।

इन नाट्यों को किसी खुले स्थान या देव मंदिर के सामने खेला जाता है। लोग भोजन के उपरांत नाट्य स्थल पर पहुँच जाते हैं। यहाँ प्रकाश के लिए मशालें जगाई जाती हैं।

मंच के एक ओर वादक दल बैठता है जिनमें ढोल, नगारा, ढेंकलू, धौंसा, दमामा, करनाल, रणसिंगा, शहनाई वादक होते हैं। नाटी के या नृत्य के बाद स्वाँग निकाले जाते हैं। पौराणिक विषयों से लेकर आधुनिक विषयों तक स्वाँगी स्वाँग निकालते हैं। साहूकार, शराबी, लंबी पत्नी, छोटा पति आदि झलकियों से ग्रामीणों का मनोरंजन किया जाता है।

शौयरी, सैर या शैरी पर स्वाँग

वैशाखी की भाँति सायर, शौयरी या सैर की संक्रांति को भी स्वाँग निकाले जाते हैं। आश्विन के प्रथम प्रविष्टे को लड़के-लड़कियाँ गाँव में घर-घर जाकर जूब (दूर्वा) बाँटते हैं। इसी दिन अखरोट बाँटे और खेले जाते हैं।

रात्रि को गाँव में स्वाँग निकलते हैं। इन स्वाँगों में साहब का स्वाँग, अध्यापक का स्वाँग के साथ गाँव की समस्याओं को लेकर भी स्वाँग निकाले जाते हैं। बीच-बीच में नृत्य भी चलता है।

स्वाँग एक तुरंत किया जाने वाला नाट्य है जिसमें किसी तामझाम की अपेक्षा नहीं रहती। कलाकार भी अधिक संख्या में नहीं चाहिए। अतः कम कलाकारों द्वारा कम समय में तैयार किया यह नाट्य लोगों का भरपूर मनोरंजन करता है।

किसी भी स्वाँग या नाट्य का कोई लिखित रूप नहीं है। समय की आवश्यकता के अनुसार संवाद बनते हैं, बदलते हैं। इस प्रकार यह समय के साथ चलने वाला नाट्य है जो समसामयिक समस्याओं को सामने लाता है।

निरसू

कुल्लू के बाहरी सिराज (निरमंड क्षेत्र) में निरसू एक मुख्य लोकनाट्य है। बैशाखी की भाँति रबी की फसल तैयार होने पर बैशाख में निरसू मनाया जाता है। हरण की भाँति निरसू भी स्वाँगों का खेल है। किंतु यह केवल अपने गाँव में ही खेला जाता है। एक गाँव के कलाकार दूसरे गाँव में नहीं जाते। इसके कलाकार नियत नहीं हैं। कोई भी कलाकार स्वाँग के लिए तैयार हो सकता है।

निरसू के दिन देवताओं के यहाँ मेला लगता है। मेले में नाटी की जाती है।

सायं लोग गाँव के किसी खुले स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं। निरसू के लिए किसी मंच की आवश्यकता नहीं होती। सब लोग आसपास बैठ जाते हैं, बीच में निरसू होता है। पुराने समय में मिट्टी के तेल की मशालें चारों ओर जगाई जाती थीं। अब बिजली से रोशनी की जाती है।

कलाकारों को नाट्य में सहायता तथा उत्साह देने के लिए देवता के बाजगी अपने साज-बाज लेकर आते हैं। इन वाद्यों में डमरू के आकार की ढेकुली, ढोल से छोटे आकार की ढाँकुड़ी और चपटे आकार की धौउँसी प्रयोग में लाई जाती है। इस साज-बाज के साथ गाने गाए जाते हैं जिन्हें छाड़ी कहते हैं।

निरसू के आरंभ में फकीर मंगलाचरण करते हैं। मंगलाचरण के साथ देवता के रथ को भी नचाया जाता है।

मंगलाचरण के बाद एक-एक कर स्वाँग प्रस्तुत किए जाते हैं। इन स्वाँगों में पौराणिक-ऐतिहासिक प्रसंगों से लेकर समसामयिक संदर्भों में भी स्वाँग रचे जाते हैं। समाज की कुरीतियों को सामने लाने के लिए स्वाँग किए जाते हैं। कोई स्वाँग लंबी पत्नी का होता है तो कोई दहेज प्रथा का। साहूकारी प्रथा, साधु-संतों का स्वाँग, चोरी-चकारी, नट, मल्ल, संत-वैरागी जैसे विषयों को लेकर मनोरंजन के साथ एक संदेश भी दिया जाता है। रामायण, महाभारत के साथ ऐतिहासिक घटनाओं पर भी नाट्य किया जाता है। लंबी स्त्री के साथ लंबे आदमी का स्वाँग भी निकलता है। लंबे आदमी का स्वाँग 'नौताड़' सुबह के समय अंतिम स्वाँग होता है। सुबह 'दशी' गाई जाती है जिसमें 'कुपू' चिड़िया के बोलने का उल्लेख होता है :

एशकी बौर्षे कुपू चेलू न बाशो।
कि मारो लूणिए कि देशा न नाशो।

वैशाख के महीने में कुपू चिड़िया आती है। इसकी आवाज सुनना अच्छा माना जाता है। उपर्युक्त दशी में उल्लेख है कि इस वर्ष कुपू नहीं बोली। उसे या तो नमक लाने वालों ने मार दिया है या वह हमारे देश से भाग गई है।

निरसू और बिरशू के अवसर पर 'छींजा' गीत भी गाए जाते हैं। सभी स्त्रियाँ रात्रि के समय काम-काज से निवृत्त हो ये गीत गाती हैं। चैत्र से लेकर वैशाख संक्रांति तक ये गीत गाए जाते हैं। भजन से प्रारंभ होकर छींजा गीत में प्रवासी कंत, सास-बहू, बहन-भाई से संबंधित गीत गाए जाते हैं।

वर्षा ऋतु तक प्रियतम की वापसी न होने संबंधी एक गीत के बोल :

काड़ीए बादड़िए मूइए, बरखांदो मेहा वे।
कींह बरखै लोकड़िए मुइए, बागुरे बारूरा वे।
कांता दासावरिआ पिया, धौरे कीले न आया वे।

सास-बहू की स्थिति का गीत :

शाशुड़ी मेरी गौ बीरा आग बड़ागा।
नौड़ना सोंघड़ी बीदड़ी जमाका।

देवनाट्य या देऊखेल

देवनाट्य का मूल स्थान कुल्लू है। इस क्षेत्र में देव समारोहों में देवताओं के रथ (पालकी) सजाए जाते हैं। देवता की सवारी कंधों पर उठाकर देवता के प्रांगण में रखी जाती है। इस सवारी के साथ ढोल, नगारे, धौंस, दमामा, तुरही, करनाल, रणसिंगे, थाली, घंटी आदि वाद्य बजते हैं।

देवता का रथ देव समारोह पर सजाया जाता है। इस धार्मिक अनुष्ठान में देवता के प्रांगण में सभी ग्रामीण इकट्ठा होते हैं। फागुन, चैत्र और सावन ऐसे अनुष्ठानों के विशेष महीने हैं।

रथ देवता के प्रांगण में आने पर देवनाट्य आरंभ होता है। इसे देवखेल या देऊखेल कहते हैं।

देवता का प्रतिनिधि गूर कहलाता है। देवता गूर के माध्यम से प्रजा से बात करता है अतः गूर द्वारा किया गया नृत्य देवता द्वारा किया नृत्य माना जाता है। एक देवता के एक से अधिक गूर भी होते हैं। वरिष्ठ गूर को मलेधा गूर कहते हैं। देऊखेल के समय सभी गूर एक पंक्ति में बैठ जाते हैं। उनके हाथों में एक धड़छ (बड़ी कछड़ी) होता है जिसमें धूप जलाई जाती है और एक घोंडी (घंटी)। सामने काँसे की थाली में अक्षत रखे जाते हैं। जब लोग प्रश्न पूछते हैं या पुच्छ माँगते हैं तो गूर उनके हाथ में अक्षत देता है।

पंक्ति में बैठे सभी गूर देवता का आवाहन करते हैं तो उनका शरीर काँप उठता है। उनके काँपने से सिर की टोपी नीचे गिर जाती है और लंबे बाल बिखर जाते हैं। अब उनके भीतर देवता प्रवेश किया जाता है। गूर चोले को कमर में लपेट बाजू बाहर निकाल लेते हैं और खड़े हो जाते हैं।

ऐसे समय सभी वाद्य यंत्र अपनी विशेष धुन में बज उठते हैं। बाएँ हाथ में धड़छ और दाएँ में घोंडी लिए वे धड़छ हिलाते और घंटी बजाते हैं। अब वाद्य की धुन में सबसे आगे पुरुष नृत्य करते चलते हैं। इनके पीछे देवता के गूर। सबसे पीछे देवता। इस प्रकार मंदिर के तीन, पाँच या सात चक्कर लगाए जाते हैं। इस नृत्य को 'हुलकी' कहते हैं।

वापसी पर देव-प्रांगण के बीच सभी गूर अपनी वरिष्ठता के क्रम में खड़े होते

हैं। एक ओर वाद्य-वृंद। देवता के शस्त्र पृथ्वी में गाड़ दिए जाते हैं। वाद्यों की धुन पर सबसे पहले मलेघा अर्थात् वरिष्ठ गूर धीरे-धीरे नृत्य करता आगे बढ़ता है। धड़छ, घोंडी हाथ में लिए वह गंभीरता से नृत्य करता है, चारों दिशाओं में नमन के बाद वह धड़छ, घोंडी कारदार को देकर पृथ्वी में गाड़े शस्त्रों को बारी-बारी उठाकर नृत्य करता है। शस्त्रों के साथ इस नृत्य को 'लोहा खेलणा' भी कहा जाता है। गुर्ज, कटार, संगल उठा-उठाकर नृत्य करता है। इसी प्रकार शेष गूर भी आकार नृत्य करते हैं। सभी गूर इकट्ठे शस्त्र उठाकर नाचते हैं।

इस नृत्य और नाट्य में गूर कुछ बोलते नहीं अपितु मूक होकर भी अपनी परंपरा को सबके सामने दोहराते हैं। गूर का यह नृत्य देवताओं का नृत्य माना जाता है।

राक्षस नाट्य

देव नाट्य की भाँति राक्षस या राखस नाट्य भी पौष-माघ में खेला जाता है। पौष-माघ भूत, पिशाच, राक्षसों के महीने माने जाते हैं। इन दिनों देवता अपने स्थानों से ब्रह्मा की सभा में चले जाते हैं और पीछे राक्षसों का साम्राज्य हो जाता है। अतः इन दिनों 'राखस खेल' खेला जाता है। कुल्लू-किन्नौर के क्षेत्रों में अश्लील गानों के साथ इस खेल का आरंभ होता है। मुखौटे पहने लोग पौष-माघ तथा फागुन के आरंभ तक ये अश्लील गानों का नाटक खेलते हैं।

पंद्रह पौष को रात्रि शैली और मसौला या मशालें लेकर ढोल-नगाड़े के साथ गाँव की परिक्रमा की जाती है। इस समय जी भरकर गालियाँ दी जाती हैं, अश्लील वाक्य बोले जाते हैं ताकि राक्षस भाग जाएँ। गाँव की सीमा पर खड़े हो पड़ोसी गाँव वालों को गालियाँ निकाली जाती हैं। इस गाली-गलौच के बाद एक बड़े तालाब के पास राक्षस नाट्य आरंभ होता है जिसमें कुछ लोग राक्षस बनते हैं, कुछ मनुष्य। राक्षस अश्लील हरकतें करते हैं। पंद्रह पौष के बाद भी यह खेल फागुन तक खेला जाता है।

नग्गर, जगतसुख आदि गाँवों में पौष की अमावस्या के चार दिन बाद 'गनेड़' आरंभ होता है जिसमें मशालें लिए लोग गूण का खेल खेलते हैं और सींगों का स्वाँग होता है। गूण, धान के पराल का एक रस्सा होता है जिसे ग्रामीण खींचते हैं। एक गाँव के लोग एक ओर लगेंगे तो दूसरे के दूसरी ओर। सींगों का खेल एक मेड़े की याद में है जो जगतसुख में वीरता से लड़ा था।

फागुन में जगह-जगह फागली आरंभ होने पर मुखौटे धारण कर नृत्य किया जाता है। मुखौटाधारी नर्तक राक्षस समझे जाते हैं। इन उत्सवों में रावल नामक घास के कपड़े पहने जाते हैं। रावल के कपड़े, मुखौटे पहने नर्तक राक्षसों की भाँति उछल-कूद

मचाते हैं। ये अपनी गठड़ी से आभूषण, शीशे आदि दिखाकर महिलाओं को रिझाते हैं। इन राक्षसों को कई जगह टुंडी राक्षस भी माना जाता है।

फागुन में फागली के बाद ये राक्षस खेल बंद हो जाते हैं, क्योंकि अब देवता वापस लौटते हैं और गूरों के माध्यम से पूरे वर्ष के लिए भविष्यवाणियाँ करते हैं।

मंच की माँग और नृत्य-परंपरा

नृत्य योग है, नर्तक योगी। योगी अपनी साधना में ध्यानस्थ हो जाता है। ठीक उसी प्रकार नृत्य में तल्लीन नर्तक समाधि की स्थिति में चला जाता है। आनंद की प्राप्ति दोनों का अभीष्ट है। दोनों ही अपने में डूब जाते हैं। नृत्य और गायन मन की मुक्त अवस्थाएँ हैं जो तनावरहित मनुष्य के लिए ही संभव हैं। तनावग्रस्त व्यक्ति न नृत्य कर सकता है न ही ध्यान लगा सकता है।

हिमाचली नृत्य की यह विशेषता है कि नर्तक अपने आनंद के लिए नाचता है। अपनी कला या करतबों से दूसरों को रिझाना उसका अभीष्ट नहीं। वह नहीं देखता कि उसे अगले साथी के साथ कदम से कदम मिलाना है या उसकी भुजा परेड की भाँति सबके साथ सीध में उठती है। उसे तो नृत्य करना है अपने अंतर के इंगित पर।

पहाड़ी और ठंडा क्षेत्र होने के कारण हिमाचल के नृत्य मंथर गति के हैं। नर्तक मंद गति से मदमस्त रात-रात-भर नाचते रहते हैं। इस कारण वे कभी थकते नहीं। कुछ घंटों के नृत्य के बाद ही उनका लहू गरमा पाता है। मेले तथा देव-उत्सवों के समय एक आदमी जब नाचना आरंभ करता है तो पूरा का पूरा गाँव उसके साथ लड़ी या माला में गुँथ जाता है और सारा गाँव नाच उठता है। कुल्लू, महासू, सिरमौर में ऐसे नृत्य रात-रात-भर चलते रहते हैं। किन्नौर की नर्तकियाँ अपने आभूषणों के भार के कारण तेजी से नाच ही नहीं सकतीं। इसी प्रकार गद्‌दी नर्तक अपने ऊनी चोले, टोपे और डोरे के कारण फुदक नहीं सकते। गद्‌दी नर्तक गोल घूमते हुए घंटे-भर में एक चक्कर पूरा करते हैं। मेलों के अवसर पर उन्हें टमक के करीब बस शीं-शीं करते और एक जगह पर घंटों हिलते हुए देखा जा सकता है।

इन स्वाभाविक नृत्यों को मंच की माँग प्रदूषित करती है। मंच की माँग है कि छब्बीस जनवरी को बस दस-बारह मिनटों में ही अपने सभी करतब दिखाने हैं। जितनी देर में नर्तक अभी खुलकर नाचने का मन भी नहीं बना पाएगा, उतना समय उसे पूरे प्रदर्शन के लिए दिया जाता है। फलतः नृत्य की मूल आत्मा दब जाती है। प्रदर्शन हड़बड़ाहट-भरा और भोंड़ा होता है। जिस लास्य भाव से कलाई मोड़नी है, स्वतः जिस अदा से झुकना है,उससे कई गुना स्पीड से कार्टून की तरह घूम जाने से नृत्य का स्वरूप ही बदल जाता है। जो अंग-संचालन शालीनता से किया जाना

है, वह भद्दा और अश्लील भी हो जाता है कभी-कभी। नर्तक मंच से वापस आने पर हँसने की मुद्रा में चौड़ा किया मुँह बड़ी कठिनाई से यथास्थान लाते हैं।

दूसरा बड़ा संकट पारंपरिक वेशभूषा का है। प्रायः यहाँ की वेशभूषा महँगी है। एक-एक कुल्लूई पट्टू या किन्नरी शाल हजारों में पड़ती है। उस पर आभूषण। एक किन्नौरी नर्तकी के आभूषणों का भार आठ किलो से दस किलो तक होता है। इस कारण वेशभूषा ने साधारण कुरते-पाजामे, पटके और टोपी का स्थान भी ले लिया है। यह प्रथा स्कूली बच्चों से आरंभ हो गई है। या फिर स्कूल-कॉलेज में भड़कीली गोटे किनारी वाली नकली वेशभूषा बनवा ली जाती है। कई बार चूड़ीदार पाजामा, कुरता और टोपी पहने नर्तकों को देखकर लगता है जैसे किसी होटल के बेयरों ने एकाएक नाचना शुरू कर दिया हो।

कई बार ऐसी सांस्कृतिक झलकियों को देखते हुए लगता है कि हम सांस्कृतिक विरासत में कंगाल हैं। यदि सांस्कृतिक समृद्धता है तो हम उसे सही ढंग से पेश नहीं कर पा रहे हैं।

वास्तव में हिमाचली नृत्य अभी प्रयोग के दौर से गुजर रहा है। सांस्कृतिक विविधता होने के कारण नृत्यों के प्रकार अनेक हैं। अलग-अलग रूपों की भरमार है, फिर भी यह एक पहचान अभी नहीं बन पाई है।

वास्तव में लोकनृत्य समाज के दिल की धड़कन है। यह मात्र मनोरंजन का साधन ही नहीं है अपितु संस्कृति के अनेक अज्ञात पहलुओं को उजागर करता है। आज संस्कृति का अर्थ संकुचित हो गया है और किसी भी देश की सांस्कृतिक पहचान उसके लोकनृत्यों से ही होने लगी है। सांस्कृतिक समझौतों में एक देश के लोकनृत्य ही दूसरे देश में जाते हैं। इसी तरह राष्ट्रीय स्तर पर अंतर्राज्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान योजना बनी है जिसके अंतर्गत एक प्रदेश के सांस्कृतिक दल दूसरे प्रदेश में भ्रमण पर जाते हैं। देश में स्थापित सांस्कृतिक केंद्रों ने उत्सवों की परंपरा आरंभ की है जिसका मुख्य आकर्षण भी सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।

हिमाचल प्रदेश में अधिकांश नृत्य विभिन्न उत्सवों से जुड़े हैं। ये उत्सव प्रायः धार्मिक प्रकृति के होते हैं जिनमें स्थानीय देवता की उपस्थिति अनिवार्य रहती है।

लोकनाट्य में भी नृत्य एक आवश्यक अंग है। मंडी में बाँठड़ा, सिरमौर में ठोडा, काँगड़ा में भगत तथा रास, कुल्लू में हरण, महासू में करियाला लोकनाट्य खेले जाते हैं जिनमें नृत्य का समावेश भी रहता है। भरमौर में 'नुआला' शिवपूजा का धार्मिक पर्व है जिसमें ऐंचली नृत्य में शिवगाथा गाई जाती है। इसी प्रकार कुल्लू में 'देऊखेल' होता है, जिसमें देवता के गूर संगल, कटार आदि के साथ नृत्य करते हैं।

लोकनृत्यों में अधिकांश का नामकरण स्थान के नाम से हैं, जैसे चंबयाली,

मंडयाली, चुराही, पंगवाली, कुल्लूवी, किन्नौरी। नृत्य में कहीं अकेली महिलाएँ, कहीं अकेले पुरुष और कहीं महिला-पुरुष इकट्ठे नृत्य करते हैं। महिला-पुरुष के इकट्ठे नृत्य का चलन इन दिनों अधिक हुआ है। चंबयाली तथा मंडयाली केवल चंबा व मंडी शहर के ही नृत्य हैं जिनमें महिलाएँ भाग लेती हैं। डंडारस भरमौर का गद्दी (पुरुष) नृत्य है। घुरेही गद्दी महिला नृत्य। झमाकड़ा (काँगड़ा) में भी महिलाएँ ही नाचती हैं जो एक विवाह नृत्य है। गिद्धा तथा पढ़ुआ भी ऐसे ही नृत्य हैं।

नाटी एक समूह नृत्य है जो मंडी, महासू, कुल्लू, किन्नौर, सिरमौर में समान रूप से प्रचलित है। नाटी में सबसे आगे नाचने वाला 'धुरी' कहलाता है जो प्रतिष्ठित, वरिष्ठ, आयु में अग्रज होता है। उसके पीछे वरिष्ठता के क्रम से लोग नाचते हैं। ढीली, फेटी, दोहरी, लाहौली, बुशैहरी, घुघती, लालहड़ी, भागली आदि नाटी के प्रकार हैं। ये नाम नृत्य में अंग-संचालन के अनुरूप हैं। स्थान के अनुसार कुल्लूई, किन्नौरी, सिराजी, चुहारी, महासूवी आदि नाटी नाम रखे गए हैं। तलवार नृत्य, मुंजरा नृत्य, बुढड़ा नृत्य, लुड्डी नृत्य अन्य प्रकार हैं। छम्म, बुछैन, क्याँग, लामा नृत्य किन्नौर के विशिष्ट नृत्य हैं। मुंजरा महासू का नृत्य है।

प्रदेश में नृत्य तो अनेक हैं पर उनमें विविधता है। विलक्षणता भी है। इस अनूठे खजाने को कैसे माला में जोड़ा जाए, यही चुनौती है।

भौगोलिक वर्गीकरण

भौगोलिक परिस्थितियाँ मनुष्य के जीवन-दर्शन और जीवन-पद्धति पर प्रभाव डालती हैं। यह प्रभाव मनोरंजन के साधनों पर भी पड़ता है। इन परिस्थितियों के प्रभाववश लोकनृत्य एक संकुचित दायरे में भी सिमट सकता है और एक खुलेपन के साथ भी निखर सकता है। अतः इस दृष्टि से लोकनृत्य को तीन क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है।

1. निचला क्षेत्र

प्रदेश का निचला क्षेत्र जो मैदानों से जुड़ा है, बाहरी आक्रमणों के लिए खुला रहा। काँगड़ा, हमीरपुर, ऊना, बिलासपुर—ये सभी क्षेत्र मैदानों से संबद्ध होने के कारण बाहरी प्रभाव से मुक्त नहीं रह सके। इन क्षेत्रों में समय-समय पर बाहर से आकर लोग बसते रहे। काँगड़ा सदा मुगल, मुस्लिम व सिक्ख आक्रमणकारियों से आतंकित रहा। बार-बार हुए आक्रमणों से यहाँ जातिप्रथा कड़ी हुई। महिलाएँ पर्दे में रहने लगीं। जनजीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। अतः इन क्षेत्रों के लोकनृत्य भी इससे प्रभावित हुए। उदाहरणतः महिलाओं के लिए लोकनृत्य वर्जित हुआ। वे केवल अपने बीच या छिपकर नृत्य करने लगीं। विवाह उत्सव पर झमाकड़ा या बारात के प्रस्थान पर महिलाओं द्वारा नृत्य-नाट्य इसका उदाहरण है। युद्धों ने नृत्य-गीत में बाधा उत्पन्न की।

इन क्षेत्रों के मैदानों के साथ सीधे खुले होने के कारण वहाँ का प्रभाव भी पड़ा। हरियाणा, राजस्थान, पंजाब और पाकिस्तान अधिकृत पंजाब तक का प्रभाव यहाँ पड़ा जो विवाह-गीतों, गिद्धा आदि में स्पष्ट देखा जा सकता है। यह नृत्य काँगड़ा से सोलन तक के क्षेत्र में एक-से पाए जाते हैं, केवल स्थानीय बोली में मामूली विभिन्नता है।

2. ऊपरी क्षेत्र

ऊपरी क्षेत्र हमलावरों से बचा रहा, अतः बाहरी प्रभाव से अछूता रहा। यहाँ संस्कृति अपने मूल रूप में संरक्षित रहने के साथ-साथ विकसित होती रही। शिमला,

सिरमौर, कुल्लू, मंडी के क्षेत्रों के लोकनृत्यों में एक खुलापन रहा। पुरुष तथा महिलाएँ समान रूप से नृत्य में भाग लेती रहीं। अपने परंपरागत वाद्यों और आकर्षक वेशभूषा के साथ लोकनृत्यों की एक विशिष्ट परंपरा बनी रही। इन क्षेत्रों में लोकनृत्य 'नाटी' के नाम प्रचलित है जो पग-संचालन में विविधता के कारण कई प्रकार का है।

3. जनजातीय क्षेत्र

किन्नौर, लाहौल-स्पिति, चंबा के पांगी तथा भरमौर जनजातीय क्षेत्र हैं। किन्नौर, लाहौल-स्पिति में बौद्ध धर्म प्रभावी है अतः यहाँ लामा नृत्य के साथ नाटी भी प्रचलित है। लाहौल क्षेत्र भी किन्नौर की भाँति है। भरमौर के गद्दी तथा पांगी के पंगवाल अपने अलग लोकनृत्यों के लिए प्रसिद्ध हैं। इन सभी क्षेत्रों की अपनी-अपनी वेशभूषा है, अपने-अपने वाद्य हैं।

विभिन्न अंचलों के नृत्य

लोकनृत्य हिमाचल की संस्कृति में रचे-बसे हैं। यहाँ का जीवन जितना कठिन, कठोर है, लोकनृत्य उतने ही मधुर, आकर्षक और सरल हैं। यहाँ लोग बचपन से ही लोकनृत्यों में पारंगत हो जाते हैं। विभिन्न संस्कारों में लोकनृत्य भी एक संस्कार है जो बाल्यकाल के साथ विकसित होता है। ये नृत्य किसी को सिखाए नहीं जाते अपितु स्वतः ही महिला-पुरुष अन्य संस्कारों के साथ-साथ सीखते हैं। लोकनृत्य व गायन में आयु-सीमा का कोई प्रतिबंध नहीं है। सभी बालक, युवा और वृद्ध समान रूप से नाचते और गाते हैं।

मेले या पर्व पर, उत्सव या त्योहार पर लोकगीत और नृत्य मनोरंजन के साधन बनते हैं। किसी भी सामूहिक उत्सव, विवाहादि मंगल कार्य पर लोक-संगीत तथा लोकगीत के साथ नृत्य का होना स्वाभाविक है। फसल बुआई-कटाई जैसे श्रम के बाद मदमस्त होकर नाचना थकान को मिटाता है।

हिमाचल के लोकनृत्य (विशेषकर नाटी) आपसी सद्भाव, मेल-मिलाप के परिचायक हैं। एक के साथ एक मिलकर सभी ग्रामीण एक माला के रूप में गुँथकर जब नृत्य करते हैं तो देखते ही बनता है। नाटी में हाथ से हाथ मिलाए जब नृत्य होता है तो कभी धीमे-धीमे, कभी तेज, कभी उछलकर तो कभी बैठकर नृत्य चलता है। धीमी गति में मदमस्त नाचते हुए लोग पूरी-पूरी रात नृत्य करते बिता देते हैं।

हिमाचल के ऊपरी क्षेत्र में नाटी एक लोकप्रिय नृत्य है। नाटी एक समूह नृत्य है जिसमें महिला-पुरुष इकट्ठे या अलग-अलग नाचते हैं। व्यक्तिगत नृत्य भी हैं जिनमें पुरुष अकेले ही नृत्य करता है। इन सभी नृत्यों में लोकगीत तथा संगीत का होना आवश्यक है। अलग से गायक न होने पर नर्तक स्वयं ही नृत्य करता हुआ गाता है।

निचले भागों में नाटी नृत्य न होकर पुरुष व महिलाओं के अलग-अलग नृत्य हैं। महिलाएँ प्रायः पुरुषों से अलग पर्दे में नृत्य करती हैं। समय बदलने पर यद्यपि अब महिला-नृत्य भी सामने आ रहे हैं। पुराने समय में इन क्षेत्रों में महिला द्वारा नृत्य अच्छी सभ्यता का प्रतीक नहीं माना जाता था।

कुल्लू नाटी

कुल्लू नाटी प्रदेश का आकर्षक और मनमोहक लोकनृत्य है। यह नृत्य देवता के उत्सव पर, धार्मिक अनुष्ठान पर, मेलों में तथा विवाहादि उत्सव पर प्रस्तुत किया जाता है। कुल्लू नाटी मंडी के अधिकांश क्षेत्र तथा भीतरी व बाहरी सिराज में समान रूप से प्रचलित है।

मेले या उत्सवों के अवसर पर सभी लोग अपनी विशिष्ट पारंपरिक वेशभूषा में सुसज्जित होकर आते हैं। नर्तक सिर पर काली ऊनी टोपी पहनते हैं जिसे गोलाकार मोड़ा होता है। टोपी पर कलगी व फूलों का हार। पहले समय में नर्गिस के फूलों के हार के साथ चाँदी की एक आकर्षक झालर भी लगाई जाती थी। घुटनों तक लंबा सफेद ऊनी चोला, जिसके नीचे सफेद चूड़ीदार पाजामा। चोले को बाँधने के लिए कमर पर ऊनी या रेशमी चमकदार दुपट्टा। इस परिधान के ऊपर बाएँ कंधे पर एक आकर्षक ऊनी चादर रखी जाती है जिसे नीचे दाईं ओर कमर में बाँधा जाता है। महिलाएँ रंगीन कुल्लूई डिजाइनों से सुसज्जित पट्टू पहनती हैं। सिर पर रंगीन कपड़े का थीपू और चूड़ीदार सलवार। गले में बड़ा-सा चाँदी का चंद्रहार विशेष आकर्षण रहता है। नाक में नथ या लौंग। पहले सिर पर टोपी भी पहनी जाती थी जिसकी जगह अब थीपू ही प्रयोग में लाया जाता है। पहले कानों में भी ऊपर तक चाँदी के गहने पहने जाते थे। पैरों में पुरुष-महिलाएँ पूलें पहनते थे। अब कपड़े के बूट ज्यादा प्रयोग में लाए जाते हैं।

नाटी के प्रकार

कुल्लू नाटी प्रायः एक धीमी गति का नाच है जिसे नर्तक पूरी-पूरी रात नाचते हैं। धीमी नाटी के गीत भी धीमी लय में चलते हैं। वाद्य भी धीरे-धीरे बजाते हैं। इस धीमी नाटी को 'ढीली नाटी' कहा जाता है। प्रायः लोकनृत्य का आरंभ ढीली नाटी से ही किया जाता है। मंच पर प्रदर्शित होने वाले नृत्यों में अब नाटी के प्रकार बदलते हुए शनैः शनैः नृत्य की गति को बढ़ाया जाता है जो आज की नृत्य की माँग के अनुरूप है, परंपरागत नहीं। इस नाटी में बाईं टाँग से दो कदम आगे-आगे लिए जाते हैं, फिर बाईं टाँग पीछे करते हुए दाईं टाँग से पीछे हटते हैं।

कदम के आगे-पीछे करने, नृत्य करते हुए झुकने, पंक्तिबद्ध होने, पंक्तियों में बँटने के क्रम पर ही नाटी में फेटी नाटी, रूँझका, दोहरी नाटी आदि प्रकार बनते हैं। इसमें ढीली, फेटी, रूँझका, लुडी, लालड़ी, दोहरी, बुशहरी, बाँठड़ा, खड़ियाल आदि नाटी के प्रकार हैं जो अंग-संचालन के साथ बदलते हैं। नाटी का लीडर जब नाचते हुए 'शाबाशे' करता है तो नाटी का प्रकार सभी नर्तक बदल देते हैं।

लालड़ी नाटी में प्रायः संवाद चलता है। लाम्बर नृत्य में आगे-पीछे होते हुए ताली बजाते हैं।

खड़ायत नृत्य अब लोकनृत्य के पहले किया जाता है जिसमें वाद्यों की ताल पर दो नर्तक तलवारें हिलाते हैं। तेजी से लड़ाई की मुद्रा में नृत्य कर तलवारें नीचे रख दी जाती हैं।

अब नाटी में महिला-पुरुष साथ-साथ नाचते हैं। पहले पुरुष, फिर महिला—इस क्रम में अपने से तीसरे नर्तक का हाथ थामे वे माला में नृत्य करते हैं। नृत्य करते हुए ही पुरुष अलग और महिलाएँ अलग होकर नाचती हैं। सभी गोलाकार बैठकर या दोनों गोले बनाकर बीच में एक पुरुष और एक महिला नृत्य करते हैं। गोलाकार खड़े हो नृत्य करते हुए कंधों पर उठाकर ऊँचा पिरामिड भी अब बनाया जाता है।

वाद्यों में बड़ा ढोल, नगाड़े, काहल, रणसिंघा और शहनाई होते हैं। शहनाई वादक केवल एक होता है जो अकेला ही गाने के बाद धुन को दोहराता है।

देवताओं के उत्सव या काहिका के समय 'हुलकी' बजाई जाती है और नृत्य किया जाता है। फागली में मुखौटा लगाकर भी नर्तक नृत्य करते हैं।

महासू या शिमला नाटी

कुल्लू की भाँति महासू नाटी भी अंग-संचालन, कदम आगे-पीछे रखने के कारण कई प्रकार की है—ढीली, फूकी, लंबी, ताउड़ी, कड़माऊ आदि। नर्तकों की वेशभूषा चूड़ीदार पाजामा, चोगा, पगड़ी होती थी जो अब बास्कट, चूड़ीदार पाजामा, कुरता और बुशहरी टोपी में बदल गई है। यहाँ भी अब महिला व पुरुष एक साथ नृत्य करने लगे हैं।

ढोल, नगाड़ा, ढोलक, खंजरी, करनाल, रणसिंघा जैसे वाद्यों के साथ नाटी नाची जाती है जो सभी लोगों को एक माला में पिरोती है। कई अवसरों पर पूरा गाँव एक माला में बँधकर एक-दूसरे का हाथ पकड़े नाचता है। अधिकतर नाटियों में केवल पुरुष भाग लेते हैं।

ढीली नाटी धीमी लय और गति का नाच है जिसमें पग-संचालन की अपेक्षा पूरे शरीर की थिरकन को महत्त्व दिया जाता है। फूकी नाटी गोल दायरे में नाचा जाने वाला नृत्य है। माला नृत्य में सभी महिला-पुरुष, बूढ़े-बच्चे नाचते हैं। माला के मध्य में गायक खंजरी बजाते हुए नृत्य करते हैं।

लाहौला भगावला नृत्य में पुरुष ही नाचते हैं। एक पंक्ति में खड़े हो नर्तक दो कदम पीछे हटकर नीचे झुकते हैं, फिर एक कदम आगे चलते हैं।

छट्टी लोकनृत्य एक धीमी गति का नृत्य है जिसमें एक हाथ में रूमाल, दूसरे

में खंडा या तलवार लेकर नृत्य होता है। गोल दायरे में सधे हुए कदमों से यह नृत्य चलता है जिसमें तुरिण स्त्रियाँ गीत गाती हैं।

बिशु या बिरशू के अवसर पर पुरुष हाथों में तलवार, डाँगरू या डंडे लेकर बिना किसी अनुशासन के मदमस्त हो नाचते हैं। ये लोग लोकवाद्यों के साथ मंदिर के मैदान या एक गाँव से दूसरे तक जाते हैं। ऐसा ही नृत्य ठोडा के समय धनुष-बाण उठाकर, डाँगरा-तलवार उठाकर किया जाता है।

तुरिण नृत्य

पुराने समय में यहाँ गायन तथा नृत्य का काम तुरिण या ढाकी महिलाएँ करती थीं। तूरी वादक कलाकार थे। गायन-वादन में पारंगत ये लोग देवता के पास, ठाकुर या जमींदारों के घरों में नाचते-गाते थे। नए-नए गीत गाकर तथा नृत्य के द्वारा ये त्योहार, विवाहादि के अवसर पर अनाज इकट्ठा करते थे।

मुँजरा

मुँजरा शिमला तथा सिरमौर में समान रूप से लोकप्रिय है। इसमें केवल पुरुष ही नृत्य करते हैं। गायक-नर्तक गोलाकार बैठकर खंजरी-ढोलक बजाते हुए गाते हैं। एक तरफ से जब गाते हैं तो दूसरी ओर उन्हीं पंक्तियों को दोहराया जाता है। गायन के बीच कोई नर्तक धीरे-धीरे उठता है और पूरे अंग-संचालन के साथ नृत्य करता है। यह नृत्य देव-समागम, देव-उत्सव, शिवरात्रि आदि के अवसर पर किया जाता है।

सिरमौरी लोकनृत्य

सिरमौर में लोकनृत्यों में, वहाँ के लोकनर्तकों में एक अलग प्रकार का अंग-संचालन है जो उनकी विशिष्ट वेशभूषा के साथ अलग नजर आता है। यहाँ अधिकतर पुरुष-नृत्य ही हैं। अब महिलाएँ भी नाटी में सम्मिलित हो रही हैं।

सिरमौर के लोकनर्तक ऊनी या सूती अँगरखा, चूड़ीदार पाजामा पहनते हैं। कमर को बाँधने के लिए गाची लगाई जाती है। सिर पर ऊँची टोपी। महिलाएँ सिर में धाटू लगाती हैं। कोट, रेजटा या घाघरी की तरह का परिधान भी पहना जाता है।

मुँजरा तथा गीह

मुँजरा नृत्य महासू की ही भाँति ढोलक, खंजरी के साथ नाचा जाता है। गीह में नर्तक गायक-वादकों के बीच नृत्य करता है। इस नृत्य में शरीर का एक-एक अंग थिरकन के साथ नृत्य करता है। धीरे-धीरे उठते हुए कंधे, कमर, छाती सभी को एक हरकत दी जाती है। यह नृत्य बीशू, देवता के उत्सव, विवाहादि पर किया जाता है।

थाली नृत्य

थाली या परात लेकर नाटी या नृत्य करना—यह शिमला से लगते सिरमौर तथा जौनसार बाबर का एक करामाती नृत्य है। सभी नर्तक दो घेरों में बैठ जब गायन करते हैं तो दो नर्तक उठकर नाचते हुए उँगलियों पर थाली या परात गोल-गोल घुमाकर नाचते हैं। कभी-कभी ये थाली घुमाते हुए एक-दूसरे की ओर फेंकते हैं और उँगली पर थामते हैं।

सिरमौर की नाटी में हुड़क, दमामा आदि वाद्यों के साथ थिरकते हुए विशेष लय में नृत्य किया जाता है। इसमें रासनृत्य दीवाली की रात किया जाता है।

काँगड़ा के लोकनृत्य

काँगड़ा क्षेत्र में (जिसमें हमीरपुर, ऊना भी शामिल हैं) ऊपरी क्षेत्रों की भाँति नाटी या खुले नृत्य की परंपरा नहीं रही। महिलाओं के लिए तो नृत्य वर्जित था, अलबत्ता वे पुरुष समाज से छिपकर झमाकड़ा, गिद्धा आदि नृत्य करती थीं।

नृत्य की पुरातन परंपरा में इस ओर चंदरौली नृत्य प्रमुख रहा है जो झीवर जाति के लोग लोकनाट्य के अवसर पर किया करते थे। एक पुरुष पात्र चंदरौली बन नृत्य करता है। भगत लोकनाट्य के समय भी कृष्ण, गोपियाँ, सखियाँ नृत्य करती थीं। इस प्रकार रासनृत्य रासलीला में पारंगत मरासियों द्वारा किया जाता था।

झमाकड़ा

विवाह के अवसर पर दूल्हे या दुल्हन को उबटन लगाते हुए झमाकड़ा नृत्य महिलाओं द्वारा किया जाता था जिसे अब कुछ संस्थानों के प्रयास से लोकनृत्य में परिवर्तित किया गया है। इसमें आटे का नानू बनाकर नचाया जाता है और महिलाएँ गाती और नाचती हैं।

गिद्धा

पंजाब के गिद्धा की भाँति यहाँ भी स्त्रियाँ गोलाई में नाचती हैं। ढोलक और तालियों के साथ यही नृत्य विवाहादि के अवसर पर किया जाता है।

झमाकड़ा, गिद्धा अब बिलासपुर तथा सोलन तक प्रचलित हुआ है। मंडी में भी गिद्धा नृत्य स्त्रियों द्वारा किया जाने लगा है। सोलन में पड़वा भी इसी प्रकार का नृत्य है जो विवाह के अवसर पर किया जाता है।

मंडी के ऊपरी क्षेत्र में कुल्लू की भाँति नाटी प्रचलित लोकनृत्य है। निचले क्षेत्र में गिद्धा नृत्य महिलाओं द्वारा किया जाता है। मंडी में बाँठड़ा, स्वाँग आदि के अवसर

पर भी लोकनृत्य किया जाता है। लुडी नृत्य भी प्रसिद्ध नृत्य है।

चंबा के लोकनृत्य जनजातीय क्षेत्र चुराह, भरमौर, पांगी से प्रभावित हैं। चुराही लोकनृत्य, पंगवाली नृत्य तथा गद्दियों का डंडारस (पुरुष) व घुरेई (महिला) नृत्य प्रमुख हैं।

इन निचले क्षेत्रों में कुछ धार्मिक लोकनृत्य भी प्रचलित हैं। शिव-स्तुति, माता की भेंटों के गायन के समय भावावेश में कुछ लोग नृत्य कर उठते हैं। विवाहादि के अवसर पर नगारे, शहनाई पर और मेलों में टमक बजाते हुए भी पुरुषों द्वारा नृत्य किया जाता है, जो मस्ती का नाच है जिसमें कोई नियम या अनुशासन नहीं होता।

लोकवाद्य

हिमाचल प्रदेश में लोकवाद्यों का विशेष महत्त्व है। देव-उत्सव, विवाहादि संस्कार और यहाँ तक कि मृत्यु के समय सस्वर रोने के साथ वाद्यों पर भी शोक धुन बजाई जाती है। बड़े-बूढ़ों की शव-यात्रा बाजे-गाजे के साथ निकलती है। बहुत-से पुरातन वाद्य देव-समान पूजे जाते हैं।

कुल्लू, महासू, किन्नौर, लाहौल-स्पिति, सिरमौर में देवता के वाद्य देव-मंदिर या भंडार में सुरक्षित रखे जाते हैं। कई देवताओं के वाद्य चाँदी के बनाए गए हैं। चाँदी के रणसिंघे, चाँदी-मढ़े ढोल आज भी विद्यमान हैं।

देव-मंदिरों में पुराने ढोल लटके रहते हैं जिन्हें विशेष उत्सवों के समय विशेष व्यक्तियों द्वारा बजाया जाता है। ऐसे बड़े-बड़े ढोल कुल्लू के कई मंदिरों में रखे हुए हैं जिन्हें 'भेखल' की लकड़ी से निर्मित माना जाता है। कुल्लू, मंडी के ऊपरी क्षेत्रों में कई पुरातन ढोल मंदिरों में लटके हुए हैं। ऐसे ढोल निचले क्षेत्रों में गुग्गा के मंदिरों में भी होते हैं जिन्हें आरती के समय बजाया जाता है और उनके बजने मात्र से ही कई पुरुष-औरतें 'खेल' उठती हैं।

मंदिरों में रखे वाद्यों का प्रयोग देव-उत्सव के समय किया जाता है। देवता की सवारी जब पालकी या रथ में निकाली जाती है तो देवता का पूरा बाजा आगे-आगे चलता है। देवता को जगाने के लिए, रथ सजाने के समय बाजा बजता है। देवता के गूर जब 'देऊखेल' करते हैं तब बाजा अपनी विशेष धुन में बजता है। देवता की आरती, स्तुति के लिए, देवता के गूर को चैतन्य करने के लिए बाजा अपने-अपने तरीके से बजाया जाता है। ग्रामीण बाजे की धुन से समझ जाते हैं कि अब देवता जाग रहा है, अब सो रहा है। कई उत्सवों पर आधी रात या ब्रह्ममुहूर्त में बजंतरी गाँव के चारों ओर बाजा बजाते हुए चक्कर लगाते हैं।

इस पूरे वाद्य का प्रयोग लोकनृत्य, नाटी, मुजरा आदि के समय किया जाता है। वाद्य में ढोल, शहनाई, रणसिंघा, तुरही, ढौंस, करनाल, काहल, छंछाल, घंटी या थाली आदि होते हैं। ऊपरी क्षेत्रों में केवल एक शहनाई बजती है जबकि निचले क्षेत्रों में नगारे के साथ दो शहनाइयाँ बजती हैं।

बाजा बजाने वालों को 'बजंतरी' कहा जाता है। शहनाई वादक को हेस्सी या

तुरही कहते हैं। इन लोगों का जातिगत व्यवसाय वादक का है। देवता या ग्रामीणों की ओर से इन्हें अन्न-धन दिया जाता है। ये लोग अपनी कला की दीक्षा अपने बच्चों को देते हैं जिससे परंपरा बनी रहे।

प्रदेश के निचले क्षेत्रों में ऐसे वाद्य जो अब बनाने में महँगे पड़ते हैं, घरों में रखे जाते हैं। मंगल उत्सव के समय ये घर-घर से माँगकर लाए जाते हैं। नगारे, ढोल, रणसिंघा, तुरही आदि वाद्य जिन्हें बनवाने में पर्याप्त राशि लगती है, संपन्न लोग बनवाकर घरों में रख लेते हैं।

विवाह उत्सव, यज्ञोपवीत संस्कार आदि का आरंभ नगारा पूजन से होता है। मेले तथा छिंजों में बीस-बीस टमक एक पंक्ति में बाँधे जाते हैं। दस-बारह ढोल वाले ढोल बजाते हैं। मेले का आरंभ इन वाद्यों के पूजन से होता है।

छोटे वाद्य जैसे शहनाई, छोटी ढोलकें, इकतारा, धंतारा, रूबाना, सारंगी आदि बजंतरी अपने घरों में रखते हैं। शहनाई वादक को 'शहनाई' कहा जाता है जो पैतृक वंश-परंपरा के अनुसार शहनाई वादन करता है। इसी तरह ढोल, नगारा बजाने वाले भी वंश-परंपरा से चले आ रहे हैं। यद्यपि समय के प्रभाव से इस व्यवसाय पर असर पड़ा है।

भगत, रास, हरण, हरणातर, करियाला, बाँठड़ा में लोकवाद्यों का प्रयोग किया जाता है जो अलग विशिष्टता लिए हुए हैं।

गाँव में हारमोनियम का प्रयोग भी बहुत प्रचलित है। गाँव की महफिलों में हारमोनियम के बिना गायन संभव नहीं। इस प्रकार अब विवाहादि में अंग्रेजी बाजा या बैंड बाजा भी प्रचलित हुआ है। देसी बाजे के साथ अंग्रेजी बाजा भी प्रयोग में लाया जाता है। ऐसी बैंड पार्टियाँ गाँव-गाँव में बन गई हैं। इसके साथ बीण बाजा (बैगपाईपर) भी समान रूप से प्रयुक्त होता है। अंग्रेजी बाजे ने पारंपरिक देसी नगारा-शहनाई को पीछे धकेला है। कई बार विवाह में नगारा केवल पूजन के लिए मँगवाया जाता है।

सुषिर वाद्य

हिमाचल के निचले क्षेत्रों में बाँस बहुतायत में पाए जाते हैं। बाँस वृक्षों के बीच हवा चलने से बहुत बार मधुर ध्वनि पैदा होती है। हवा के स्वर बाँस-रंध्रों से गुजरने पर यह ध्वनियाँ पैदा करते हैं।

इसी प्रकार की एक कथा भरतकोष में मिलती है। इंद्र ने एक बार उद्यान में घूमते हुए बाँस के वृक्षों से निकलते ऐसे ही स्वर सुने। इंद्र ने इस स्वर से हर्षित होकर इससे सुषिर नामक वाद्य के निर्माण का आदेश दिया। गंधर्वों ने फिर इस वाद्य का निर्माण किया।

वायु के किसी तंत्र से गुजरने से विभिन्न स्वर उत्पन्न होते हैं। स्वर की भिन्नता के कारण ही हर पक्षी, पशु, मनुष्य के स्वर में भिन्नता है। कोयल मनोहारी कंठ से गाती है तो भैंस का स्वर उपहासास्पद माना जाता है। वायु के प्रवेश को नियंत्रित करने से स्वर-साधकों ने कई रागों का निर्माण किया है।

बाँसुरी

बाँसुरी हिमाचल प्रदेश के लगभग सभी क्षेत्रों में समान रूप से प्रचलित है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, बाँसुरी वह है जो बाँस से बनती है। बाँस से बनी बाँसुरी सर्वाधिक प्रचलित है जो हर ग्वाला, गड़रिया आसानी से प्राप्त कर सकता है। बाँसुरी का स्वर मेलों, चरागाहों, ऊँची पहाड़ियों, गहन घाटियों में सहज सुनाई पड़ता है।

बाँसुरी को बंसरी, मुरली, विंडशरी कहा जाता है। यह ग्वाले का साथ निभाती है, गद्दी के डोरे में सजी रहती है। दिन हो या साँझ, बाँसुरी का स्वर सबके मन में गहरे उतरता है।

चरागाहों से उठकर जब बाँसुरी ने अपनी गायकी मंगल वादन, लोक गायन-नृत्य और शास्त्रीय गायकी में प्रवेश किया तो बाँस की लकड़ी से हटकर पीतल, चाँदी की बाँसुरियाँ भी बनीं। बाँसुरी सामान्यतः दस से पंद्रह अंगुल लंबी होती है जिसमें सात छेद होते हैं। पहला छेद हवा निकलने के लिए और छह स्वर निकालने के लिए। इसे अधरों पर सटाकर दोनों हाथों की उँगलियों से स्वर मिलाए जाते हैं।

वैदिक काल में इसे 'वेणु' कहते थे जिसका निर्माण बाँस से होता था। सामगान

में वेणु तथा वीणा महत्त्वपूर्ण वाद्य थे।

अलगोजा या गणगोजू बाँसुरी का एक सीधा-सादा रूप है जो प्रायः बच्चे प्रयोग में लाते हैं। इसे सीधा मुँह से फूँक मारकर बजाया जाता है। मुँह के पास एक गुटका लगा होता है जिससे हवा नियंत्रित की जाती है। गुटके के साथ हवा निकलने के लिए छेद होता है। इसमें भी बाँसुरी की भाँति छह छेद होते हैं। यह बाँसुरी की अपेक्षा बजाने में आसान है क्योंकि हवा सीधे मुँह से डाली जाती है।

शंख

शंख एक बहुत प्राचीन सुषिर वाद्य है। यह समुद्र से पहाड़ तक की यात्रा का प्रतीक है। कोई संन्यासी समुद्र किनारे बिखरे अनेक शंखों से उठा लाया होगा एक शंख जो पहाड़ के किसी घर में पूजा सामग्री की तरह प्रतिष्ठित होता है। विष्णु के बाएँ हाथ में सुशोभित यह वाद्य वंदनीय भी है।

शंखनाद जहाँ प्राचीन समय में युद्ध का सूचक था, अब पूजन का सूचक है। प्रातः समय शंखनाद पूजा-अर्चना और मंगल का सूचक है जब इसमें स्वर का प्रवाह अंदर और बाहर को किया जाता है। मृत्यु के समय शंखनाद में केवल सीधी और इकहरी हवा फूँकनी होती है।

शंख-ध्वनि को पवित्र माना जाता है और इससे रोग-भूतप्रेतादि दूर भागते हैं, ऐसा विश्वास है।

शहनाई

शहनाई एक मंगल वाद्य है जिसका प्रयोग देव-पूजन, विवाहादि मंगल संस्कार तथा नृत्य के समय होता है। काँगड़ा, मंडी, चंबा, बिलासपुर, किन्नौर व लाहौल-स्पिति में इस वाद्य को शहनाई, कुल्लू में छनाल, शिमला तथा सोलन में तुरही कहते हैं। इसे बजाने वालों को तुरही, हेस्सी या शहनाई कहा जाता है। ये लोग वंश-परंपरा के अनुसार शहनाई बजाने में प्रवीण होते हैं।

चंदन या चाँदी की बनी शहनाई डेढ़-दो फुट लंबी होती है जिसका अग्रभाग धतूरे के फूल के आकार का होता है। इसमें बाँसुरी की भाँति छह या आठ-नौ छेद होते हैं। मुँह की ओर 'पी पी' होती है जो चाँदी की बनी होती है। 'पी पी' में पाला घास का बना सरकंडा लगा होता है जिसे 'पंपिका' कहते हैं। पंपिका को स्वर निकालने के लिए थूक से गीला कर लगाना होता है।

चंबा की शहनाई मोटा स्वर निकालती है, शिमला, कुल्लू की ओर पतला। काँगड़ा की ओर दो शहनाई एक साथ बजाते हैं जबकि अन्य स्थानों में अकेला एक शहनाई बजाता है।

शहनाई वादन आसान नहीं है। बाँसुरी की तरह सभी लोग शहनाई नहीं बजा सकते। इसके लिए परिश्रम और साधना की आवश्यकता है। हिमाचल प्रदेश में शहनाई वादन एक मांगलिक पर्व का द्योतक है।

नरसिंगा

नरसिंगा को रणसिंगा, रणसिंघा, नृसिंगा कहा जाता है। यह वाद्य भी मंगल पर्व, देव-स्तुति, विवाहादि तथा नृत्य के समय बजाया जाता है।

अंग्रेजी के 'एस' के आकार का यह सुषिर वाद्य ताँबे, पीतल या चाँदी का बना होता है। दो भागों में विभक्त यह वाद्य स्वर बाहर तथा भीतर निकालने पर दूर तक जाने वाली आवाज करता है। देवता के वाद्यों में रणसिंघा प्रमुख वाद्य है। विवाह के अवसर पर तथा लोकनृत्य के समय इसे थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद बजाया जाता है।

करनाल

करनाल या करनाहल को लाहौल-स्पिति व किन्नौर में नरकाल कहा जाता है। लगभग छह फुट लंबी करनाल की चौड़ाई धीरे-धीरे बढ़ती जाती है और अंत में शहनाई की भाँति धतूरे के फूल की तरह हो जाती है। लंबाई के कारण इसके दो भाग होते हैं, जिनमें तीन गाँठे होती हैं। इसे बजाने के लिए भीतर-बाहर फूँक मारनी पड़ती है जिससे दो तरह की ध्वनि निकलती है।

इससे भौं-भौं सी आवाज निकलती है। लोकनृत्य के समय भौंपू-भौंपू की आवाज भी आती है। प्रायः दो करनालें एक साथ बजाई जाती हैं। लोकनृत्य के समय रणसिंघा की भाँति इसे बीच-बीच में बजाया जाता है। देव-उत्सव के समय लोगों को बुलाने के लिए करनाल बजाई जाती है।

चंबा की ओर इसी प्रकार के वाद्य को काहल कहा जाता है। इसके भी दो भाग होते हैं। यह ताँबे की बनाई जाती है और लोकनृत्य के समय बजाया जाता है। इससे भौं-भौं ध्वनि निकलती है।

बौद्धविहारों में बजने वाली काहल को 'थुनछेन' कहा जाता है। यह पर्याप्त लंबी और आकर्षक नक्काशी वाली होती है। पूजा के समय इन लंबे वाद्यों को धरती पर रखकर बजाया जाता है।

बीण

बिलासपुर, हमीरपुर, काँगड़ा जिलों में 'बीण' भी एक वाद्य है। लौकी से बनी बीण में एक नली से फूँक भरी जाती है जिससे नीचे के भाग में बनी नली के छिद्रों

से स्वर निकलते हैं। इसे बंगाली लोग सर्प पकड़ने तथा नचाने के लिए प्रयोग में लाते हैं।

सींग

भैंस के सींग से बना यह वाद्य साधु लोग बजाते हैं। हाथी की सूँड़ की तरह यह लंबी ध्वनि निकालता है।

इसी तरह सर्पाकार 'नागफनी', तारयुक्त 'चंग' चंबा-भरमौर के सुषिर वाद्य हैं।

ताल वाद्य

संगीत की लय को पूरे व्याकरण में बाँधने का काम ताल वाद्य करते हैं। इन्हें अवनद्ध या आनद्ध वाद्य भी कहते हैं। ये वाद्य भीतर से खोखले और बाहर से चमड़े से मढ़े होते हैं। संभवतः इसीलिए इन्हें आनद्ध वाद्य भी कहते हैं जिसका अर्थ है बँधा हुआ। संभवतः 'बँधा हुआ' दोनों ही अर्थों में प्रयोग होता है, स्वयं वाद्य के चमड़े से बँधे होने और लय को बाँधने के लिए भी।

प्रायः ये वाद्य लकड़ी से बनाए जाते हैं। मोटे पेड़ या तने को खोखला कर दोनों ओर चमड़ा मढ़कर इन्हें कसा जाता है। ऐसे वाद्य वैदिक काल से प्रयुक्त होते रहे हैं। हिमाचल में इनकी संख्या अधिक है।

प्रत्येक देव-मंदिर में, सामुदायिक स्थानों में, घरों में, ये वाद्य मिलते हैं। ढोल, नगारे, टमक, ढोलक, हुड़क, दमामटू, नगारटू, मंदलू आदि ऐसे ही वाद्य हैं। इन वाद्यों के कई प्रकार हैं। बहुत बार गायन, नृत्य में केवल ताल वाद्य ही प्रयोग किया जाता है। युद्ध, पूजा, संदेश देने के लिए भी यही एक वाद्य काम आता है।

नगारा

नगारा प्रदेश का एक महत्त्वपूर्ण वाद्य है। इसे नगारा, नगाड़ा, नगारटू कहा जाता है। यह युद्धसूचक वाद्य होने के साथ मंगल धुन तथा देव-स्तुति में भी प्रयुक्त होता है।

नगारा का आकार त्रिशंकु की तरह होता है जिसके पीतल या ताँबे के खोल के ऊपर भैंस, गाय या बैल का चमड़ा मढ़ा जाता है। पूड़े को मढ़ने के लिए चमड़े की ही रस्सी प्रयोग में लाई जाती है।

प्रदेश के निचले क्षेत्र—काँगड़ा, हमीरपुर, मंडी, बिलासपुर में दो नगाड़े साथ-साथ बजाए जाते हैं। एक मोटी आवाज निकालता है, एक पतली। लकड़ी से बजने वाले नगाड़ों के संयुक्त वादन को 'नौती' कहा जाता है। जब विवाहादि के अवसर पर बारात जाती है तो दोनों नगाड़े एक आदमी की पीठ पर रखे जाते हैं जबकि दूसरा व्यक्ति बजाता हुआ चलता है। महासू, कुल्लू, किन्नौर की ओर नगाड़ा ढोल की संगत के लिए बजाया जाता है जबकि निचले क्षेत्रों में नगाड़े के साथ एक या दो

शहनाइयाँ बजती हैं। नगारा बजाने वाले को नगारची कहा जाता है।

टमक

टमक एक बड़ा नगाड़ा है जिसका प्रयोग एक मोटी और गहरी आवाज के लिए किया जाता है। इस बड़े नगाड़े को भैंसे की खाल से मढ़ा जाता है। इसका प्रयोग मुख्यतः छिंज (मेला जिसमें कुश्तियाँ होती हैं) में किया जाता है। छिंज में कई टमक एक पंक्ति में खूँटे गाड़कर धरती के कुछ ऊपर बाँधे जाते हैं। इन्हें मोटी लकड़ियों द्वारा कई लोग एक साथ बजाते हैं और नाचते हैं। इन्हें ताल देने के लिए ढोली ढोल बजाते हैं। मस्ती से झूम-झूमकर नाचतें हुए नर्तक जोर-जोर से टमक पीटते हैं जिसकी आवाज दूर तक गूँज पैदा करती है।

दमामटू

दमामटू या दमामा छोटा नगाड़ा होता है। पीतल के खोल में बैल का चमड़ा मढ़ा जाता है जिससे इसकी गूँज नगारे से ऊँची हो जाती है। इसे बजाने के लिए दो छड़ियों का प्रयोग किया जाता है।

वाम

त्रिशंकु आकार का यह वाद्य जोरदार आवाज पैदा करता है। कुल्लू की ओर इसे देवता के उत्सव में बजाया जाता है।

किंदरी

यह एक छोटे आकार का नगाड़ा है जिसे बकरी के चमड़े से मढ़ा जाता है। यह वाद्य किन्नौर में प्रचलित है।

ढोलक

ढोलक एक बहुत लोकप्रिय और प्रचलित वाद्य है। इसका चलन प्रदेश के निचले क्षेत्रों में अधिक है। प्रायः हर घर में एक ढोलक रखी रहती है जो पुरुष तथा महिला दोनों द्वारा समान रूप से प्रयोग में लाई जाती है। यह देश-भर में प्रयोग की जाने वाली ढोलक के समान होती है। लकड़ी के एक खोल में दोनों ओर समान व्यास रखकर इसे चमड़े से मढ़ा जाता है। चमड़े को कसकर बाँधने के लिए रस्सियों का प्रयोग किया जाता है। कसने के लिए पीतल या लोहे के गोल छल्ले लगाए जाते हैं जिन्हें कसने से ढोलक की ध्वनि नियंत्रित की जाती है।

इस वाद्य का प्रयोग रात को की जाने वाली महफिलों, जगरातों में किया जाता है।

भजन-कीर्तन और महिला गायन में भी इसका प्रयोग होता है। संस्कार गीतों विशेषकर विवाहादि के अवसर पर, भजन-कीर्तन में केवल ढोलक-चिमटा ही वाद्य होते हैं।

ढोल

ढोल प्रदेश के ऊपरी क्षेत्रों--कुल्लू, किन्नौर, सिरमौर में अधिक प्रचलित है। इसका प्रयोग देव-वाद्यों के साथ तथा नाटी के समय किया जाता है।

इसका खोल पीतल का होता है। लगभग डेढ़-पौने दो फुट के खोल को बकरी के चमड़े से मढ़ा जाता है। चमड़े को रस्सी या चमड़े से ही आठ छेद बनाकर कसा जाता है। ढोल का दाहिना पुड़ लकड़ी से बजाया जाता है जो गंभीर ध्वनि पैदा करता है। दूसरी ओर हाथ से बजाते हैं।

नाटी में ढोल का प्रयोग विशेष महत्त्व रखता है। ढोल से ही सारे गीत व शहनाई आदि वाद्य नियंत्रित होते हैं। ढोल बजाने वाले को ढोली कहते हैं।

बड़े आकार की ढोलक को भी ढोल कहा जाता है। ढोलक के आकार-प्रकार के बड़े ढोल मेले तथा छिंजों में कुश्ती के समय विशेष तान से बजाए जाते हैं। ये दो लकड़ियों से बजाया जाने वाला वाद्य है, जिसमें एक ओर मोटी, दूसरी ओर पतली लकड़ी का प्रयोग किया जाता है।

दराघ

सामान्य ढोल से बड़े आकार के ढोल को दराघ कहते हैं जिसका प्रयोग देव पूजन के समय देऊखेल, हुलकी में किया जाता है। दोनों ओर बकरे के चमड़े से मढ़ा यह ढोल एक ओर से बजाया जाता है।

ढाढ

कुल्लू की ओर देव-मंदिरों में बड़े-बड़े ढोल रखे मिलते हैं जिन्हें ढाढ कहा जाता है। इन्हें हर कोई नहीं बजा सकता अपितु व्यक्ति विशेष ही बजा सकता है। इस व्यक्ति को ढाढी कहते हैं।

कहा जाता है ये 'भेखल' नाम की लकड़ी के बने होते हैं। भेड़ के चमड़े से बाँधे गए ये ढोल अभी भी पुराने मंदिरों में विद्यमान हैं।

फड़ी

यह भी देव-वाद्य है। देवता का रथ सजने पर इस वाद्य की भी पूजा की जाती है। लगभग चार फुट लंबा मृदंग की तरह का यह वाद्य भेखल का बना होता है। बकरी की खाल मढ़कर इसे रस्सी या सुतड़ी से बाँधा जाता है। इसका वादन खंडा

नृत्य तथा देवता के पर्व के अवसर पर किया जाता है।

ढौंस

भेखल की लकड़ी से बना यह वाद्य भी देव-वाद्य के रूप में पूजित है। कहा जाता है कि देवता की आत्मा इस वाद्य में रहती है तभी इसे बजाने से देवता के गूर को प्रेरणा मिलती है। लगभग डेढ़ फुट लंबा यह वाद्य चमड़े से मढ़ा होता है जिसके सात छेदों में ऊपर लाल कपड़ा तथा डोरी बाँधे जाते हैं। इस वाद्य की प्रतिष्ठा करते समय इसमें देवता का प्रवेश करवाया जाता है।

पौहल

शिवभूमि भरमौर का यह वाद्य शिव द्वारा निर्मित माना जाता है। डमरू के आकार-प्रकार का पौहल, जिसे लाहौल-स्पिति की ओर पौहन कहते हैं, पीतल या ताँबे के ढोल का बना होता है जिसके ऊपर भेड़ या बकरी का चमड़ा मढ़ा जाता है। डमरू की भाँति इसके दोनों पुड़ों का व्यास अधिक होता है जो मध्य भाग से तंग होता जाता है। इस वाद्य से गंभीर ध्वनि अँगूठे से घर्षण कर पैदा की जाती है।

डोउरू

डमरू को ही डोउरू कहा जाता है। डमरू को पतली छड़ी से बजाया जाता है। गुग्गा नवमी के दिनों इस वाद्य का प्रयोग किया जाता है। मंडी, शिमला, सोलन, सिरमौर में इसका प्रचलन अधिक है।

गुझू

यह भी डोउरू या डमरू की भाँति एक वाद्य है जिसे मंडी, शिमला जिले के कुछ भागों में प्रयोग में लाया जाता है।

हुड़क

यह सिरमौर का प्रसिद्ध वाद्य है जो डमरू के आकार का किंतु उससे बड़ा पौहल के समान होता है। इसके बीच का भाग दोनों पुड़ों से आता हुआ पतला होता जाता है। बीच के पतले भाग को हाथ से पकड़ने के काम लाया जाता है। इसे दाएँ हाथ से बजाया जाता है। लोकनृत्य के समय यह वाद्य अपनी विशिष्ट धुन निकालता है।

ढाकुली

हुड़क की तरह का यह वाद्य भी सिरमौर में प्रचलित है। हुड़क से लंबा यह वाद्य लकड़ी से बजाया जाता है।

डफाल

डफाल या डफली एक-डेढ़ हाथ के लगभग लकड़ी के गोलाकार खोल में बकरी या चमड़ा मढ़कर बनाया जाता है। एक ओर खाली और खुला छोड़ इसे केवल दूसरी ओर हथेली व उँगलियों से बजाया जाता है। इस वाद्य का प्रयोग लाहौल-स्पिति में लोकनृत्य के समय, कुल्लू में होली के समय और चंबा, मंडी के ऊपरी इलाकों में शवयात्रा के समय किया जाता है।

खंजरी

डफाल के आकार में छोटी खंजरी एक सस्ता वाद्य है जिसका प्रयोग चंबा, सिरमौर, शिमला, सोलन क्षेत्रों में गायन और नृत्य के समय किया जाता है। लगभग छह इंच के व्यास की गोल खंजरी में एक ओर चमड़ा मढ़ा होता है। इसमें ताँबे या लोहे के सिक्के छन-छन ध्वनि के लिए लगाए जाते हैं।

मंदलू

मंदलू घड़ा वाद्य है जिसके मुँह पर चमड़ा मढ़ा जाता है। चमड़ा बजाने से घड़े से गंभीर ध्वनि निकलती है। मंदलू का प्रयोग काँगड़ा, हमीरपुर क्षेत्रों में लोकनाट्य के समय किया जाता है।

घन वाद्य

घंटी

यह एक आम पूजा-वाद्य है जो देश-भर में सामान्य रूप से प्रचलित है। पूजा स्थलों पर बँधी बड़े आकार की घंटियों के अतिरिक्त छोटी घंटियाँ पूजा-अर्चना के समय बजाई जाती हैं। कुछ गाथाओं के गायन के अवसर पर भी घंटी बजाने का चलन है। सामान्यतः यह पूजा-वाद्य है।

लोहे, पीतल या काँसे की बनी त्रिशंकु आकार की घंटी के ऊपर पकड़ने के लिए हत्थे के साथ भीतर एक दंड लटका रहता है जो हिलने पर आसपास की धातु से टकराने पर ध्वनि पैदा करता है।

मंदिरों में बड़ी-बड़ी घंटियों के साथ छोटी-छोटी अनेक घंटियाँ लटकी रहती हैं जो पूजा के समय प्रातः व सायंकाल बजाई जाती हैं।

भाणा

स्कूल की घंटी की तरह काँसे की गोल थाली में सिरे पर छेद कर तार से बाँध पकड़ने के लिए सिरा बनाया जाता है। इसे लकड़ी से बजाया जाता है। यह वाद्य देवता के प्रस्थान के साथ अन्य वाद्यों के साथ तथा स्वतंत्र रूप से बजाया जाता है। इसे घंटी, भाणा, ताली कहते हैं। यह भी एक प्रकार से पूजा-वाद्य है और कुल्लू, महासू, सिरमौर में प्रयोग में लाया जाता है।

घड़याल

चंबा की ओर गाथा गायन के समय घड़याल बजाया जाता है। घड़े के ऊपर काँसे की थाली रखकर उसे छड़ी से बजाया जाता है। लोकनृत्यों तथा वाद्य वादन के समय इससे खंजरी की तरह की ध्वनि पैदा होती है।

यह वाद्य एक प्राचीन और सरल वाद्य है जिसे तैयार करने के लिए किसी प्रकार का अतिरिक्त श्रम नहीं करना पड़ता। घड़ा और थाली हर घर में मौजूद रहती है।

कटोरी

काँसे की दो छोटी कटोरियों को पतली छड़ियों से बजाकर ध्वनि उत्पन्न की जाती

है। किन्नौर, लाहौल-स्पिति में यह पूजा-वाद्य है।

कणसी

डोरी से बँधे दो कटोरीनुमा वाद्यों को तर्जनी तथा अँगूठे से पकड़कर बजाया जाता है। पीतल पर काँसे से निर्मित यह वाद्य लगभग दो इंच मुँह वाला होता है।

छंछाला

महासू, किन्नौर में लोकनृत्य के समय तथा कुल्लू की ओर पूजन के समय इसे बजाया जाता है। बौद्ध मंदिरों में भी पूजा के समय इसे बजाया जाता है। अष्टधातु से निर्मित यह वाद्य लगभग छह इंच व्यास की थाली के बीच से उभार देकर बनाया जाता है। उभार के बीच छेद कर एक डोरी बाँधी जाती है ताकि उसे हाथ में बाँध पकड़ा जा सके। ऐसे दो वाद्यों को दोनों हाथों में पकड़ आपस में टकराकर बजाया जाता है।

चिमटा

चिमटा भी थाली या घड़े की भाँति एक सुगम वाद्य है, तथापि यह आम चिमटे से बड़े आकार का होता है जिसमें बीच-बीच में छन-छन की ध्वनि उत्पन्न करने के लिए छोटे रिंग लगे रहते हैं। यह भजन-कीर्तन के समय बजाया जाता है।

तत वाद्य

तुंबा

यह हिमाचल प्रदेश के निचले क्षेत्रों–काँगड़ा, हमीरपुर, ऊना, चंबा में प्रचलित है। इसे इकतारा भी कहा जाता है। एकतंत्री वीणा की तरह यह एक प्राचीन तत वाद्य है।

तुंबे का तार कद्दू के खोल पर बँधा रहता है। कद्दू के ऊपर भेड़ की खाल मढ़कर तार को पुड़ के सिरे से गुजार दूसरे सिरे पर बाँधा जाता है। तार को कसकर अपने स्वर के अनुसार किया जाता है और तर्जनी से बजाया जाता है।

धंतारा

धंतारे को दोतारा या दवातारा या दपात्रा भी कहा जाता है। इसमें कद्दू के ऊपर के दो तार गुजारे जाते हैं। दोतारे या धंतारे का प्रयोग काँगड़ा, हमीरपुर, ऊना तथा महासू में किया जाता है।

धनोटू

सारंगी की तरह का यह वाद्य गज से बजाया जाता है। गज एक धनुषाकार लकड़ी से बनाया जाता है जिसके दोनों सिरों को बकरी या भेड़ के चमड़े की नादों से कसकर बाँधा जाता है। इसे इकतारे पर घर्षण से बजाया जाता है। कुल्लू तथा मंडी के बाहरी सिराज में इसे गाथाओं तथा गीतों के गायन के समय बजाया जाता है।

सारंगी

सारंगी एक प्राचीन वाद्य है। इसका आधा भाग खाल से मढ़ा रहता है जिसके ऊपर छाती पर छेद कर फुल्लियाँ ठोंकी जाती हैं। इनमें पीतल के तार लगाए जाते हैं जिन पर गज के घर्षण से ध्वनि पैदा होती है।

इस वाद्य का प्रयोग हमीरपुर, ऊना, बिलासपुर में लोकनाट्य में किया जाता है।

सारंदा

नाथ या जोगी समुदाय के लोगों द्वारा सारंदा वाद्य का प्रयोग किया जाता है। प्रमुखतः इसे गुग्गा गाथा के गायन के समय प्रयोग में लाया जाता है। इस वाद्य में सत्ताईस तार होते हैं जिन्हें गज से घर्षण कर बजाया जाता है।

रूबाना

खंजरी-रूबाना का प्रयोग भरमौर में ऐंचली तथा मुसादे के समय किया जाता है। रूबाने में एक खोखली लकड़ी से डाँड और तुंबा बनाया जाता है। प्रायः चीड़ या खुमानी की लकड़ी इसे बनाने में प्रयुक्त होती है। तुंबे वाले चपटे भाग से लेकर दूसरे छोर तक खूँटियाँ लगाई जाती हैं। चपटे छोर में एक घोड़ी होती है जो दूसरे सिरे की घोड़ी से भेड़ की आँतों के छह तारों से जुड़ती है। इससे छह तारों से ध्वनि निकाली जाती है। ध्वनि निकालने के लिए भाँग की लकड़ी का टुकड़ा प्रयोग में लाते हैं। इस लकड़ी के टुकड़े को अँगूठे तथा दो उँगलियों से पकड़ तारों को छेड़कर ध्वनि निकाली जाती है।

सांस्कृतिक धरोहर : विवाह गीत

वैदिक परंपरा द्वारा हमारे देश में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न संस्कार नियत किए गए हैं। पौराणिक ऋषियों द्वारा निर्धारित जीवन के चार आश्रमों के प्रतिपादन के साथ गृहस्थों के लिए अनेकानेक परंपराएँ कायम की हैं। महाभारत में भीष्म जी द्वारा पाँच प्रकार के विवाहों—ब्राह्म, क्षात्र, गांधर्व, आसुर तथा राक्षस का वर्णन किया गया है। स्मृतियों में आठ प्रकार के विवाह बताए गए हैं।

इस वैदिक परंपरा के साथ-साथ समय-समय पर लोक-परंपरा की धारा बहती रही है। लोक-परंपरा या लोकाचार वैदिक कर्मकांड के साथ-साथ समान रूप से प्रचलित रहा। वैदिक ऋचाओं की तरह लोक-परंपरा भी श्रुत और स्मृत रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रही। वैदिक साहित्य तो बाद में लिखित रूप में भी उपलब्ध हुआ किंतु लोक-परंपरा मंत्र की तरह एक से दूसरे को स्वतः ही मिलती रही। एक ओर तो पुरोहित वर्ग कर्मकांड के माध्यम से वैदिक परंपरा का निर्वाह करते रहे तो दूसरी ओर साधारण जन लोकाचार के माध्यम से आगे बढ़ते रहे। जिन मंत्रों का उच्चारण आम बोलचाल की भाषा में सभी द्वारा किया जाता, समय के अनंतर वह कुल पुरोहित के माध्यम से होने लगा। कर्मकांड का अधिष्ठाता मात्र क्रिया करने वाला रह गया। संभवतः इसी कारण लोकधारा ने लौकिक परंपरा के माध्यम से अपनी और आज की बोली से उस परंपरा को गीतों की लड़ी में पिरोया।

इस लोकाचार में लोकगीतों की प्रमुख भूमिका है। लोकगीतों के माध्यम से संस्कृति की स्पष्ट झलक मिलती है। जहाँ लोककवि सरल और सहज काव्य की रचना करते हैं, वहाँ गीत बनकर यह और भी कालजयी हो जाता है। भावात्मकता, गेयता और सरलता की विशिष्टताओं के साथ लोकगीत निश्छल भाव से संस्कृति का उद्‌घाटन करते हैं।

बालक के जन्म, नामकरण, यज्ञोपवीत संस्कार आदि के बाद विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों का अलग महत्त्व है। ये गीत विवाह की एक-एक रस्म को प्रदर्शित करते हैं। हर रस्म का अलग एक गीत है जो इस पूरे संस्कार को क्रमबद्ध तरीके से अपने ढंग से आगे बढ़ाता है। विवाह का अवसर मनुष्य के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण और परिवर्तनकारी घटना है। इस संस्कार को किसी भी अन्य संस्कार से

कहीं विस्तृत ढंग से मनाया जाता है क्योंकि इसी के बाद मनुष्य सही सामाजिक जीवन में प्रवेश करता है। इसमें रवार, कुड़माई, टिक्का-तमोल, बुटणा, साँद आदि से लेकर सेहराबंदी, मिलणी, तेल-तलाई, जयमाला, लग्न, वेदी, सिरगुंदी, विदाई आदि अनेक रस्में हैं जो निभाई जाती हैं। हर रस्म के साथ अलग लोकगीत जुड़े हैं।

विवाह गीत जिस सांस्कृतिक धरोहर को समोए हुए हैं, वह इन्हें किसी भौगोलिक सीमा में नहीं बाँधती। इनका क्षेत्र व्यापक है। किन्हीं अनजान कवियों ने पौराणिक, ऐतिहासिक, लौकिक और धार्मिक संदर्भ लेकर इन्हें अपने समाज के परिप्रेक्ष्य में ढाला है। सीता-राम, राधा-कृष्ण, रुक्मिणी-कृष्ण, लक्ष्मी-ब्रह्मा, शिव-पार्वती, पांडव-द्रौपदी सावित्री, तुलसी, कामदेव आदि की गाथाओं का स्मरण कर अपने विवाह गीतों में नायक-नायिका को उनसे जोड़ा है। इसमें एक आदर्श की भावना भी है और धार्मिक वंदना भी।

विवाह गीत लगभग पूरे प्रदेश में मात्र बोली की थोड़ी भिन्नता के साथ प्रचलित हैं। बल्कि ये साथ लगते प्रदेशों और उनसे आगे तक बहुत समानता लिए हुए फैले हुए हैं। यहाँ तक कि इनकी लय और गीतों के साथ किए जाने वाले नृत्य या अंग-संचालन भी एक पूरे भू-भाग में समान हैं। बारात की तैयारी पर दूल्हे के सौंदर्य तथा व्यक्तित्व की प्रशंसा में गाए जाने वाले गीत तथा लड़की की विदाई पर वियोग गीत प्रदेश तथा प्रदेश के साथ लगते प्रांतों में दूर-दूर तक समान रूप से प्रचलित हैं।

विवाह उत्सव उल्लास और सौभाग्य का उत्सव है, 'सुहाग' सौभाग्य का अपभ्रंश रूप है। वर-वधू के लिए 'सुख-सुहाग' की कामना की जाती है। विवाह के अवसर पर तीन लोकगीत प्रमुख हैं जो ध्यान आकर्षित करते हैं : सुहाग, बधोआ तथा गालियाँ।

'सुहाग' मंगल का सूचक है। सुहाग गीतों में अटल सुहाग की कामना की जाती है। इन गीतों में मंथर गति से गंभीर स्वरों का आरोह-अवरोह होता है। प्रायः इन्हें सयाणी स्त्रियों द्वारा गाया जाता है और गायन में गंभीर मंत्रोच्चारण की तरह किसी पौराणिक प्रसंग का स्मरण किया जाता है। ये गीत हँसी-खुशी के वातावरण को एक गंभीरता ही प्रदान करते हैं।

एक सुहाग गीत 'राम राम हृदये बसयो, जीवन जन्म सुधारेया' के साथ आरंभ होकर राजा भीष्म की पुत्री रुक्मिणी के विवाह प्रसंग पर आ जाता है। इस प्रसंग से अधिक हृदयग्राही है इसे वर्तमान संदर्भ से जोड़ना। जब कृष्ण रुक्मिणी को रथ पर बिठाकर ले जाने लगे तो माँ ने बेटी से कहा, तू निरंतर यहाँ रहना। पिता ने कहा, कभी महीने में आया करना। भाई ने कहा कि छठी, पंजाप या अन्य संस्कार हो, तब आना। भावज ने कहा, तेरी अब आवश्यकता ही नहीं है यहाँ आने की।

इस बात को सुनकर माँ रोने लगी, पिता का कंठ अवरुद्ध हो गया, भाई सिसकने लगा किंतु भाभी प्रसन्न हुई।

इस प्रकार एक अन्य सुहाग गीत में लड़की के जन्म, बड़े होने, वर की तलाश और विवाह के प्रसंग का वर्णन आता है। सुंदर वर ढूँढ़ने और पाने के प्रसंग में पुनः रुक्मिणी और कृष्ण के विवाह का उल्लेख आता है।

एक बहुप्रचलित सुहाग गीत में माँ अपनी बेटी को ससुराल जाने से रोकती है। वह अन्न, धन और जागीर धी को देने की बात करती है किंतु बेटी कहती है कि 'ये सब तू अपने पुत्रों को देना, मैं चरखे में काती जा रही पूनियाँ और दही के मटके छोड़कर जा रही हूँ।'

'बधोआ' बधाई गीत है। मंगल संस्कार के समय बधाई इस गीत के माध्यम से दी जाती है। इस लोकगीत में 'बधोआ' या बधाई गीत को व्यक्तिपरक संज्ञा देकर संबोधित किया जाता है कि हे बधाई गीत! तू किस देश से आया है? बधाई गीत कहता है, मैंने देश-विदेश सब छोड़ा है, मैं नगरकोट से आया हूँ। बधाई गीत को संबोधित किया जाता है कि हमने घर का मार्ग साफ करा दिया है, आँगन को लीप दिया है, इसलिए तू हमारे घर आया है। यह हमारे लिए शुभ घड़ी है।

विवाह के इंद्रधनुषी रंगों में गालियों का अपना ही महत्त्व है। अवसर की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता को देख किस प्रकार गालियाँ और बुरे बोल भी मन-भावन लगते हैं, इसका वर्णन बिहारी ने भी अपनी कविता में किया है। विवाह में गाली की एक पुरातन परंपरा है। विवाह में बारात के आगमन और उन्हें दिए जाने वाले भोज के समय गालियों का दौर चलता है। बारात के आगमन से पहले ही महिलाएँ और नारियाँ घर के भीतर या ऊपरी मंजिल की खिड़कियों, दरवाजों में बैठ जाती हैं। बारात के बैठने, हाथ-पैर धुलाने, खाने की पत्तलें बिछाने, दाल-भात परोसने खाना खाने, खाकर उठने, सभी क्रियाकलापों के समय गालियों की बौछारें चलती रहती हैं। इनमें बारातियों के निकट संबंधियों की अच्छी खबर ली जाती है। जो अधिक खा रहा हो वह भी और जो सलीके से थोड़ा-थोड़ा खा रहा हो, वह भी गालियों से बच नहीं सकता।

'झमाकड़ा' गाए जाने के समय भी गालियाँ गाई जाती हैं। ये गालियाँ बारातियों के प्रति ही हों, ऐसा नहीं है। दूल्हे के निकट संबंधी भी आपस में गालियाँ गाते हैं। जब वधू वरगृह में आती है तो गृह-प्रवेश के साथ ही गालियाँ गाने का प्रसंग आरंभ हो जाता है। लाड़ी यानी बहू के वर से भी लंबे होने और नादान वर को चूड़ियाँ बजा-बजाकर डराने के साथ-साथ अपनी रिश्तेदार औरतों को साथ न लाने पर उलाहना दिया जाता है।

विवाह उत्सव के प्रारंभ के साथ गीत-गायन भी आरंभ हो जाता है। समूहत या शुभ मुहूर्त, साँद या शांति पाठ, बुटणा या उबटन लगाना, सिरगुंदी के साथ गीत गाए जाते हैं।

उबटन लगाने के लिए शुभ मुहूर्त निकाला जाता है। वर के घर से वधू के लिए उबटन भेजा जाता है। इस समय पर वर तथा वधू पक्ष दोनों में ही महिला वर्ग द्वारा आँगन में चरखा काता जाता है और वर-वधू के शरीर पर उबटन लगाया जाता है। कुल पुरोहित के उबटन लेकर आने पर गालियाँ गाई जाती हैं। इसके पश्चात् उबटन लगाने की परंपरा में गीत गाया जाता है जिसमें कहा जाता है कि यह उबटन चावल के आटे का बना है। उबटन दो महिलाओं द्वारा मला जा रहा है। वर की सगी ताई और चाची उबटन लगा रही हैं, आदि-आदि।

वर या वधू के स्नान के बाद स्त्रियाँ गाती हैं कि ये आँगन में कीचड़ कैसे हुआ? किसने पानी गिराया है? उत्तर मिलता है, बाप का पुत्र लाड़ला है, उसी ने यह पानी गिराया है। स्नान के बाद पूजन की प्रक्रिया भी लोकगीत से आरंभ होती है : सूरजकुंड में वर या वधू ने स्नान किया है। नहा-धोकर गुड़-घी खाया है, अब लंबी पूजा कर गणपति पूजना।

बहू के ससुराल-गृह में आगमन पर सभी परंपराएँ गीतों के साथ निभाई जाती हैं। वधू का गृह-प्रवेश या अंदेरा मुँहदिखाई या मुँहघड़ाई, गुणे खेलना या पैर-बँदाई, पीपल-पूजन, जल-पूजन के साथ सभी संबंधियों की विदाई तक ये गीत गाए जाते हैं।

वधू के गृह-प्रवेश के समय स्त्रियाँ उल्लास व हर्ष से नववधू का स्वागत करती हैं : आम की डाली पर कोयल बोल रही है। सास कहती है, प्यारी बहू! यह घर तेरा है। यह घर ही नहीं, यह वर भी तेरा है। पतिगृह में आने पर घर के बड़े-बूढ़ों से एक प्रकार के परिचय के साथ बहू द्वारा पाँव छूने की रस्म की जाती है। इन गीतों में वधू को उपदेशात्मक शैली में समझाया जाता है कि हे बहू! तुम बड़ों के पाँव छूती जाओ और आशीर्वाद लेती जाओ। दादा ससुर, दादी ससुर, सास-ससुर, जेठ-जेठानी, ननद-ननदोई तथा पति के पाँव छूकर इनका आशीष ले सेवा भाव की सीख इस गीत में दी जाती है।

बहू घर में आ गई है। अब उसे ही गृहस्थी का भार सँभालना है। अतः नवेली दुल्हन से घर का प्रत्येक काम करवाने से पूर्व पूजन करवाया जाता है। बहू के आगमन के दूसरे दिन पीपल-पूजन होता है जिसमें दूल्हे के सिर का सेहरा उतारकर दुल्हन या दूल्हे की बहन की झोली में डाल दिया जाता है। पीपल-पूजन के साथ महिलाएँ गाती हैं : ये पीपल पूजने के लिए कौन आई है? पीपल पूजने के लिए नई

दुल्हन आई है। साथ में अपनी सास तथा ननद को लाई है।

विवाह कार्य संपन्न होने पर दुल्हन को पानी भरने के लिए गाँव के कुएँ या बावली पर ले जाया जाता है। किंतु जब दुल्हन पानी भरने लगती है तो मेंढक उसे पानी भरने नहीं देता है। गीत में कहा जाता है : ये मेंढक पानी भरने नहीं दे रहा है। कहता है, पहले दुल्हन की माता को लाओ, तब पानी भरने दूँगा। दुल्हन की माता नहीं है तो उसकी भाभी को लाओ, उसकी ताई या चाची को ही लाओ, तब पानी भरने दूँगा।

विवाह के अवसर पर चाहे चुलबुल करती गालियाँ हों, या हृदयग्राही विदाई, चाहे चुहलबाजी का झमाकड़ा हो, या सुहाग जैसे धीर-गंभीर गीत, ये उस सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक हैं जो लोक-परंपरा के रूप में सदियों से समाज का प्रतिबिंब होकर जीवित चले आ रहे हैं। ये हमारे मानस की उन कोमल अनुभूतियों के प्रतीक हैं जो हमें सामाजिक बंधनों में बाँधे हुए हैं और हमारे जीवन को संस्कारमय बनाते हैं।

काँगड़ा क्षेत्र

जन्म गीत

काले महीने दियाँ न्हेरियाँ रात्तीं जन्मेया कृष्ण मुरारी
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम··· ।
पुच्छी लै मेरेयाँ संग्गीयाँ साथियाँ, जान बचाई घरें आया
छिक्केयाँ तोड़ी, भाँडे भी भन्ने, बिन्नुआँ ता दित्ता रूढ़ाई
काले महीने दियाँ न्हेरियाँ रात्तीं जन्मेया कृष्ण मुरारी
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम··· ।
पुच्छी लै मेरेया संग्गियाँ साथियाँ, जान बचाई घरें आया
जाँ जन्मेया जाँ दीवक बलेया, चौन्हीं चौकेयाँ हो रेह्याँ लोईं
काले महीने दियाँ न्हेरियाँ रात्तीं जन्मेया कृष्ण मुरारी।
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम··· ।
पुच्छी लै मेरेया संग्गियाँ साथियाँ, जान बचाई घरें आया
बाँह मरोड़ी मेरी मटकी तोड़ी, बिन्नुआँ ता दिता रूढ़ाई
काले महीने दियाँ न्हेरियाँ रात्तीं, जन्मेया कृष्ण मुरारी
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम··· ।
न्हौता ता धोता पाट पलेटेया, कुच्छड़ लेया ए दाइया
पंज रुपैये मैं दाइया जो देसाँ, पुत्तर पियारा माइया

जाँ जन्मेया जाँ दीवक बलेया, चौन्हीं चौकेयाँ हो रेह्याँ लौईं
काले महीने दियाँ न्हेरियाँ रात्तीं जन्मेया कृष्ण मुरारी
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम''' ।
घोल पतासा मैं गुड़सत देंदियाँ, सूने दी लावाँ कटोरी
चन्नण कट्टी मैं पंघूड़ा घड़ावाँ, रेशमी लावाँ डोराँ
जाँ जन्मेया जाँ दीवक बलैया, चौन्हीं चौकेयाँ हो रेह्याँ लौईं
काले महीने दियाँ न्हेरियाँ रात्ती जन्मेया कृष्ण मुरारी
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम''' ।
औंदे ताँ जाँदे बासुदेव झटांदे, झुटेयाँ देन खलाइयाँ
औंदी ताँ जाँदी माई देवकी खलांदी, झुट्टेयाँ देन खलाइयाँ
जाँ जन्मेया जाँ दीवक बलैयाँ, चौन्हीं चौकेया होई रेह्याँ लौईं
पुच्छी लै मेरेयाँ संग्गियाँ साथियाँ, जान बचाई घरैं आया।
स्याम''' ।

यज्ञोपवीत के समय गुरु-दीक्षा

मंतर दिनयों मेरे गुरुआ जी
मंतर दिनयों मेरे गुरुआ।
तम्हारे ताँ मंतरा गुरुआ जी
मैं ब्राह्मण होया।
अग्गर दिनयों मेरी माए जी
तम्हारे ताँ अग्गरे माए जी
मैं ब्राह्मण होया।
लडुआ भिच्छिया सगोती भिच्छिया
भगत भिच्छिया जनेउ एं।
भिच्छिया दिनयों मेरी दादिए जी
भिच्छिया दिनयों दादी ए।

विवाह गीत

समूहत (शुभ मुहूर्त) गीत

किसिए दा प्रोहत सः लाडला जी
कन्ने लोहे दी मुरकी।
किसिए दा बामण सः लाडला जी

कन्ने सूने दी मुरकी।
कुड़माँ दा प्रोहत सः लाडला
कन्ने लोहे दी मुरकी।
न छड्डी अम्माँ न छड्डी भैणा
न छड्डी जजमानणी
कन्ने लोहे दी मुरकी।
म्हारा प्रोहत सः लाडला
कन्ने सूने दी मुरकी।

उबटन गीत

बाय बा कि बुटणा चोलाँ दा
मलेदियाँ दो जणियाँ
ताइयाँ चाचियाँ सक्कियाँ भैणा।
बाय बा कि बुटणा कटोरे दा
बाय बा कि बुटणा चोलाँ दा
मलेदियाँ दो जणियाँ
बुटणे मलेदियाँ दो जणियाँ
ताइयाँ चाचियाँ सक्कियाँ भैणा।

स्नान गीत

अंगणे चिक्कड़ कुनी कीता जी
कुनी डोलेया पाणी
बुढे दा पुत्तर सः लाडला जी
जिनी डोलेया पाणी

स्नान के उपरांत गणेश-पूजन

न्होई धोई गुड़ घीउ खादा
गणपत पूजेया लम्मीयाँ बाहीं
सूरज कुंडे लाड़े न्हौंण कीता
न्होई धोई गुड़ घीउ खादा
गणपत पूजेया लम्मीयाँ बाहीं।

गाली गीत (वधू पक्ष)

बारात-आगमन पर

बाजेयाँ वाले आए चन्हरिया
बाजेयाँ वाले आए।
बाजेयाँ वालेयाँ दे हत्थ तोते चन्हरिया
छूहीं हार परोते।
लाड़े दे बुढे दे गल पाए चन्हरिया
छूहीं हार परोते।

बारात द्वारा हाथ-पैर धोने पर

प्रभुआ! पैराँ धो मेरा कामा मरहट्टा
धोएँगा तत्ते मारेगी लत्तें
धोएँगा ठंडे मारेगी डंडे
चक्कियाँ पीह मेरा कामा मरहट्टा।

पत्तल बिछने पर

प्रभुआ! छिड़क-छिड़ककर चौका दिया
मैं बुझया चरनामृत लिया
हरो हरि भई बड़ी खरी
सोना देईये तब न लईये
रूपय्ये देईये तब न लईये
जब लईये तब जोरू दा दान
तेरा पुन्न मेरा कल्याण
हरो हरि भई बड़ी खरी।

भात परोसने पर

पत्तल पिरो भत्त आया...आया जी
मंगतू अपणियाँ जोरू जो कहंदा माया...माया जी।
पत्तल पिरो भत्त आसी...आसी जी
मंगतू अपणियाँ जोरू जो कहंदा मासी...मासी जी।

भात खाने पर

(1)

पियूली पियूली दाल चणयाँ दी बणी
भत्त खाणा बणया जोरू देणा बणी
पियूली पियूली दाल...

(2)

प्रभुआ! थोड़ा-थोड़ा खाणा
सुणया जी थोड़ा-थोड़ा खाणा
हैजे दी बमारी है
समाँ बड़ा भारी है
थोड़ा-थोड़ा खाणा।
बोत ज्यादा खाएगा पेट फट जाएगा
थोड़ा-थोड़ा खाणा।
आलू दी तरकारी है गोभी दी भुआरी है
थोड़ा-थोड़ा खाणा।

खाकर उठने पर

उठी गै बचारे क्या बोलिए
डाँगें सोठें मारे क्या बोलिए।

जाने पर

जा बो जा! पिट्ठी डोडे पा ओ पा
डोडेयाँ रखनेयाँ धारियाँ
सुखसांत दिनेयों लाड़ियाँ।

गाली गीत (वर पक्ष)

(1)

लाड़ी ऐडी ऐडी ऐडी
साढे मुंडे ते भी केडी
साढा मुंडा बालक याणा
लाड़िया आपू ही समझाणा
लाड़ी बंगड़ियाँ छणकावे
साढे मुंडे जो डरावे।

(2)
लाड़िए लड़िकिड़ए तू अपणिया अम्मा कैहनी लई आई
तेरी अम्माँ मेरा बापू जोड़ी खूब बणाई।
लाड़िए लड़िकिड़ए तू अपणिया चाचिया कैहनी लई आई
तेरी चाची मेरा चाचा जोड़ी खूब बणाई।

झमाकड़ा

झमाकड़ा वो, मेरा मन बोलदा नचणे जो, नचाणे जो
नई रेहणे जो···झमाकड़ा वो···उड़डी जाणे जो
लाड़े दिए मामिए, वो मेरा मन बोलदा
नचणे जो नचाणे जो नई रेहणे जो···झमाकड़ा वो···
लाड़े दिए मासिए, वो मेरा मन बोलदा नचणे जो
नचाणे जो नई रेहणे जो···झमाकड़ा वो···

सुहाग

(1)
राम-राम हृदयें बसेया, जीवन जन्म सुधारेया।
भीषमें दे घरें पंज पुत्तर, कन्या इक है रुकमणी ए
भाई कहे धीया द्वारका देणी ए, बोआ कहे वर अबल है
अजी माई कहे सिसुपाल राजा है, रुकमणी वर कृष्ण है।
कोण सुणें मेरे दिले दीया बाता, कोण लेई जावे मेरिया पोथिया,
परतेणी सुणें मेरे दिले दीया बाता, परोत लेई जावे मेरिया पोथिया।
माये गरुड़ चढ़या माए डिगी मराँ, सिसुपाल राजे ने नीं वराँ।
ताक बैठी के मैं अरजाँ करदी, इक पल घड़ी आई जाणाँ।
आई के दरस दिखाई जाणाँ।
राम राम हृदये बसेया जीवन जन्म सुधारेया।
अम्बका पूजण चली राणी रुकमणी,
सठाँ सहेलियाँ दी रंग लड़ी।
बाँई ते पकड़ी रथे ध्याली, पोण पखेरू उड़ी गए।
द्वारका जाई करी होम करदे, पाठ करदे होम करदे,
हींग लाजाँ फेरीयाँ।
राम-राम हृदयें बसेया जीवन जन्म सुधारेया।
माता कहे धीए नित नित ओयाँ, बोआ कहे महीनें ओयाँ,

अजी भाई कहे धीये छठिया पंजापें भावो कहे तेरा कम्म क्या।
राम-राम हृदयें बसेया जीवन जन्म सुधारेया।
माई ताँ रोंदी दी भिजी जाँदी साड़ी, बोआ रोए दिल मार के
अजी भाई ताँ रोंदे दा भिजया रूमाल, भावो दे मने च चा होया।
राम-राम हृदय बसेया जीवन जन्म सुधारेया।

(2)

चार चकूटे मैं फिरी आया, वर नजरी न आयो राम।
चार चकूँटें च साधु तपस्वी, बैठी धूणीआँ लगाइयाँ राम।
मैं तुसाँ जो आख्या कुड़ी देआ बाबला वर ढूँडणा जाणा राम।
जुग जुग जीआँ नी तपस्वी भैणे वर गँदला पायो राम।
लग्ना दे बेलें श्यामे रूप बदलया रुकमण छम छम रोई राम।
बेदी दे बेलें श्यामें रूप बदलया
रुमकण खिड़ी-खिड़ी हस्सी राम
मैं तुसाँ जो आख्या कुड़ी देआ चाचा वर ढूँडण जाणा राम।

विदाई गीत

चरखे दीयाँ पूणियाँ चरखे ने रहीयाँ
देहिएँ दी रहिये छलैन, माए चलेआँ जाणा
अन्न भी दिंहगी धीए धन भी दिंहगी
होर ताँ दिंहगी जागीर धीए नी ओ जाणा
अन्न ताँ धन माए पुतराँ जो देणाँ नूआँ जो देणी जागीर
माए चलेयाँ जाणा।
अन्न भी दिंहणी धीए धन भी दिंहगी
कनें दिंहणी जागीर धीए नी ओ जाणा
अन्न ताँ धन ताई पुत्तराँ ने लैणा
नूहुआँ लेणी जागीर चलेआँ जाणा
चरखे दियाँ पूणिआँ माए चरखे नें रहीयाँ
देहिए दी रेहीये छलैन माए चलेआँ जाणा।

बधोआ

(1)

ए बधोआ! किधर देसे दा आया ए
मैं ताँ देस छोड़या परदेस छोडया नगर कोटे ते आई

एह घर पुत्तराँ भरेया, एह घर पुत्तरियाँ भरेया
बाबल फिरिया नीं जाँदा ए।
एह घर नूहुएँ भरेया एह घर धीयाँ भरेया
अबड़ फिरीया नीं जाँदा ए
नूहुआँ पेके गईयाँ धीयाँ सौहरें गईयाँ
अबड़ फिरिया नीं जाँदा ए
डब्बा गेहणेया भरेया डब्बा सुच्चेयाँ भरेया
ढक्कन खुड़ेया नीं जाँदा ए
बुंदे पाई लेया सुच्चे बरती लेया
ढक्कन खुड़यो सुखाला ए।

(2)

एह बधोवा रंग रसिया, अज्ज साड़ें गोहरें पेया
असाँ गोहर सताई सुट्टेया, सताई छडया अज्ज स्हाडें सुभ घड़ी
असाँ सुभ दिन मनाई छडया, अज्ज स्हाडें सुभ घड़ी।
एह बधोआ रंग रस्सियाँ, अज स्हाडें परौली आया
असाँ परोल सताई छोडी अज्ज साड़ें सुभ घड़ी।
एह बधोआ साड़ें आंगणें आया, अज साडें अंगणें आया
असाँ अंगण लपाई छोडेया अज स्हाडें सुभ घड़ी।

मंडी क्षेत्र

जन्म गीत

भादों महीने न्हारी जे राती, जन्मे ओ कृष्ण मुरारी ओ मेरे रामा,
सुणेया ओ भाईया नारदा, जन्मे ओ कृष्ण मुरारी ओ मेरे रामा।
जिस दिन जन्मेया दीपक बलेया,
चहूँ दिसे होईयाँ लोईयाँ ओ मेरे रामा,
सुणेया ओ भाईया नारदा, चहूँ दिसे होईयाँ लोईयाँ ओ मेरे रामा।
घोल पताशा गलसुत देंदी,
सोएने दी ओ कटोरी ओ मेरे रामा,
सुणेया ओ भाईया नारदा ओ, सोएने दी ओ कटोरी ओ मेरे रामा।
अगर चनण दा पलंघोड़ा जे घड़ेया,
रेशम दी लाई डोरी ओ मेरे रामा,
सुणेया ओ भाईया नारदा, रेशम दी लाई डोरी ओ मेरे रामा।

नंद बाबे दा बेटा, पलंघोड़े जे चढ़ेया,
झल्वारे देंदी ओ जशोदा ओ मेरे रामा,
सुणेया ओ भाईया नारदा, झल्वारे देंदी ओ जशोधा ओ मेरे रामा।
भादों महीने न्हारी जे राती⋯

बधाई गीत

बाँके नसींबाँ वाली आई कि आज मेरे बजियाँ बधाईयाँ।
एढ़े नसींबाँ वाली आई कि आज मेरे बजियाँ बधाईयाँ।
बजियाँ बधाईयाँ गुरांदे नगारे, बाँके नसीबाँ वाली आई कि⋯
दादे दा पोत्रा पालण झूले
झल्वार देंदी दादी माईयाँ कि आज मेरे बजियाँ बधाईयाँ।
अपणे ताऊ चाचे रा भतीजा पालण झूले।
झूटे देवे चाची ताईयाँ कि आज मेरे बजियाँ बधाईयाँ।
अपणे बाबे रा बेटा पालन झूले
झल्वारे देवे सक्की माईयाँ कि आज मेरे बजियाँ बधाईयाँ।
बाँके नसीबाँ वाली आई कि आज मेरे बजियाँ बधाईयाँ।

सेहरा गीत

सेहरा तेरा गुलनार लाड़ेया
चंद होर तारे मढ़ी दिते गाँधिए।
हाथा बे नलेर कटार लाड़ेया
चाँदिये रा बरक लगाया गाँधिए।
सेहरा तेरा गुलनार लाड़ेया।
काजल ता बहया तेरी हाखी भाभिए
रूप तेरा कृष्ण मुरार लाड़ेया
संग बराती चले नची गाई के
परखदी हाखियाँ हजार लाड़ेया।
रुक्मण ल्याओणी हुण तुध ब्याही के
रूप तेरा कृष्ण मुरार लाड़ेया।
सेहरा तेरा गुलनार लाड़ेया।

वर-प्रतिष्ठा

तू ताँ प्होयाँ लाड़ेया

रतड़ें कुंगुए, तू जोराओर होंयाँ लाड़ेया।
लख बरेखे, तेरी दादी नानी सोहागणी देंदड़ी शीशा
तू जोराओर होयाँ लाड़ेया।
तू ताँ प्होयाँ लाड़ेया
हरी दरूभे, तू जोराओर होयाँ लाड़ेया।
लख बरेखे, तेरी आमा सुहागणी देंदड़ी शीशा
तू ताँ प्होयाँ लाड़ेया डुनड़ी, मठुनड़ी ए
जोराओर होयाँ लाड़ेया
तू ता प्होयाँ लाड़ेया।

धीया पाहोणी

धीया पाहोणी दिन चार बाबा
त्राम्बेया धरत मढ़ाई के हुण मोतिये चौक परवाओ,
बाबा धीया पाहोणी।
मोतिए चौक परोई के हुण सतपुरी बेद गड़ाओ,
बाबा धीया पाहोणी।

शिमला क्षेत्र

यज्ञोपवीत गीत

बालै कृष्णै जोगौ दे लोवै
ए जोगे कृष्णे कुणीए धारै
बालै कृष्णे जोगौ दे लावे
ए जोंगौ लौबी कृष्णो गुरूए धारै
बाले कृष्णै भगुए दे लावे
ए भगुए कृष्णे गुरूए धारे
बालै कृष्णे धागे दे लावै
ए धागा कृष्णा कुणीए धारै
एकी हाथे झोले फाउडै
दूज्जे हाथे टोर
बड़ू चालौ कांशी पूरौ लै
आमीया लाडौ रोए।
रोए न रोए बड़ूरी आमीया

बड़ू आओ पंडतौ।
नोखौ जोग्टू आओ हरी कृष्ण
बिछया देओ मोरी माँई
बिछया माँगी न जाणो हरी कृष्ण
बिछया देओ मोरी माँई
बिछया माँगी न जाणो हरी कृष्ण
नोखों जोगटू आओ हरी कृष्ण
बिछया देओ बाबू हरी कृष्णा
बिछया माँगी न जाणो हरी कृष्णा।

उबटन गीत

तेलौ लाए तेलीया
तेलौ कुणिए सँजोए।
तेलौ लाए तेलीया
तेलौ मामुए सँजोए।
जुगे जीवै मामे तेरे
जिने तेरे तेलौ सँजोए।
तेलौ लाए तेलीए
तेलौ कुणी सँजोए।
तेलौ लाए तेलीय
तेलौ मामीए सँजोए।
मामीए सुहागणे तेले मामीए सँजोए
तेलौ लाए...सँजोए,
मामीए सुहागणे तेले मामीए सँजोए
तेलौ लाए...सँजोए,
तेलौ लाए तेलीए,
तेलौ आमीए सँजोए।
आमा सुहागणे
तेलौ आमीए सँजोए।
बाएवा कटोरा बोटणे दा
बाएवा मलीदिए कोए अणीए
बाएवा कटोरा बोटणे दा

बाएवा मलीदिए पांजै अणीए
आणे मंढोलड़ी गांगों रो पाणे
गागै पाणी ए गरेते इदै शनान कराए,
आणो मंढोलड़ी केमटू रे डोले
केमटू री डूलीए गरेते इदै शनान कराए,
आण कटोरा दूध दई रा,
कृष्ण मली-मली नहलाइए।

मेहँदी गीत

मेहँदी कटोरे, नौ गज डोरे
बेटे रे हाथौ दे सँजोए।
बाबू रे आँगणे, खड़े होए आमेया
हाथै करे मेहँदी कटोरे।
कुण सुहागणे माला गंदाए?
कोणे भरे मेहँदी कटोरे?
सिया सुहागणे माला गंदाए
सै ई भरौ मेहँदी कटोरे।
मेंहदी कटोरे नौ गज डोरे,
बेटे रे हाथौ दे सँजोए।
बाबू रे आँगणे खड़े होए,
हाथै करे मेहँदी कटोरे।
कुण सुहागणे माला गंदाए,
कोणै भरे मेहँदी कटोरे?
भाभी सुहागणे माला गंदाए
सै ई भरौ मेहँदी कटोरे।

फेरे लेते समय

राँग रसी लाई,
पहली मंगल गाई,
गोपी गोकल कानवाला
श्री कृष्ण व्याहणे आइये।
रवी तो पूजे लावाँ
कृष्ण हरीवर व्याइये।

रंग रसी लाई,
दूसरी तो इंद्रपुरीए
इंद्रा तौ ब्रह्मा जी ने लगण गिणीए
किने वेद पढ़ने को आइये।
बेटी ले दाण पुन माँगीये,
गंगा जी ने नई बनारसी
कुरूक्षेत्र नहाणे आइये।
रवी तो पूजे लावाँ दूसरी,
राधा रुकमणी व्याइये।
रंग रसी लाए,
तीसरी मंगल गाइये,
गोपो गुकुल कनवाला
श्री कृष्ण व्याइये।
रवी तो पूजे लावाँ तीसरी
राधा रुकमणी व्याइये।
रंग रसी लाए,
चौथी तो लगण गठाइये,
श्री कृष्ण जी को अंदर लायो,
राधा रुकमणी व्याइये।

विदाई गीत

आज तेरे बेटे लौडड़े जी
आज होए भरी जवानीए
रोए न रोए बाल्ली बेटीए
जाणा पड़ो शाऊरी रे घरैं
आजौ...लौडड़ै
आज होए देउली दू दूरौ
रोए न रोए बाली बेटीए
जाणा पडौ शाउरी रे घरौ दूरै
समणी तो छूटे गोई साथणी जी
छूटे गोआ बाबू रा घरौ दूरै
छूटे गोई घुंडी रा खेलौ

छूटे गौई साथणी
रोए न रोए बाली बेटीए जी
जाणा पडौ शाऊरी रे घरौ
खड़े टेकौ डोलैं झमाणी ओ जी
बाबू मेरे मिलणे आए ओ
मिलो तो मिलौ मेरे बाबू माँ जी
जाणा पडौ शाऊरी रे घरौ।

बिलासपुर क्षेत्र

मोहणा

आया मरना ओ मोहणा आया मरना
तेरे भाईयाँ रीया कित्तिया आया मरना।
रोया करदी ओ मोहणा रोया करदी
तेरी बालक बलेसरू रोया करदी।
खाई लै फुलकु ओ मोहणा खाई लै फुलकु
अपणी अम्मा रेआँ हत्था रा खाई लै फुलकु।
मैं नी खाणा ओ लोको मैं नी खाणा
मेरी घड़ी पल मरने री मैं नी खाणा।
किनी रैहणा वो मोहणा, किनी रैहणा
तेरे रंगलुए बंगलुए किनी रैहणा?
मेरे रंगलुए बंगलुए भाईयें रैहणा।
गड्डे थम्बड़े मोहणा, गड्डे थम्बड़े।
बेड़िया रे रेतड़ा च गड्डे थम्बड़े।
चढ़ी जा तख्ते ओ मोहणा, चढ़ी जा तख्ते
दम दम दित्तिया चढ़ी जा तख्ते।
बारा बजी गए ओ मोहणा, बारा बजी गए,
इस राजे रीया घड़िया बारा बजी गए।

फरंगु

इस वे फरंगुये कैहर कमाया,
शिमले दी सड़क सपाटूये मलाई

देश दोहाइयाँ दे रहे लोको
डाड्ड़ा राज फरंगुये दा।
इस वे फरंगुये कैहर कमाया
महलाँ दी इट चबारे नूँ लाई
देश दोहाइयाँ...
इसा वो सस्सु कैहर कमाया
खाणे रीया वेला नूँ चरखा ढलाया
देश दोहाइयाँ...
इसा वो सौकणी कैहर कमाया
सौणे रीया वेला नूँ गो धूम मचाया
देश दोहाइयाँ...

गंभरी

खाणा-पीणा नंद लेणी नी गंभरिये,
खाणा-पीणा नंद लेणी हो।
खसम मरे कोई होर घर करिये,
द्युोर मेरे कियाँ जिणा ओ गंभरिये,
खाणा-पीणा नंद लेणी हो।
कपड़े फटे ताँ दर्जी ते सधावाँ,
दिल जे फटे कियाँ सीणा ओ गंभरिये,
खाणा-पीणा नंद लेणी हो।

बाह्मणा रा छोरू

बाह्मणा रेया छोहरूआ,
बोलो परदेसी मुलखे, माऊँआ सुणी जा,
परदेसी बोलो तेरे, तूँ तो बेईमान रे बाबुआ।
बाह्मणा रेया छोहरूआ,
इशा लागा बुरा माऊँआ, रोऊ ज्यूआ दे,
तू बोलो दोहरू जरूर बे मिल्या।
बाह्मणा रेया छोहरूआ,
हामे बोलो परदेसी, तेरे मुलखे,
तुमे बोलो छोहरू दया बे राखणा।
बाह्मणा रेया छोहरूआ,

हाँ बोलो भरिए बंदूके, माऊँआ बे बैरी फिरदे,
जाने बोलो मेरिए, नींवे बोलो नींवे हाँडणा।
बाह्मणा रेया छोहरूआ,
हाँ बोलो घासा री लुणाई, माऊँआ बे मेरा न्यूँदा,
माऊआ बोलो आओला, न रहोला बे माखता।

लोका

लोका रीया छोरिए ज्यू, ज्यूए ते बी उकाई ओ,
जिना पिच्छे छड्डे ओ घर वार जी लोका।
जिने गल्लें बरजाँ, तेरियाँ गल्लाँ कीतियाँ,
जिने गल्लें हुई गै दिल दूर जी लोका।
देख्या करयाँ दूरा ते ताँ, सद्याँ कर्याँ काहजो,
कालज् दे पौंदे ओ काले, दाग जी लोका।
चिट्टे तेरे कपड़े नीला तेरा कड़लू,
उडी जाँदी गिरा ताँ गवार जी लोका।
होर होर पंछी ओ हंसा, चुग ता चुगादें,
तेरी चुग झूरदी नमाणी, नमाणेया ओ हंसा,
केहड़ी जे बेला तै लेया बनवास।
होर होर पंछी ओ हंसा, बचडू ता खल्हांदे,
तेरे बचडू रूड़दे नमाणे, नमाणेया ओ हंसा
केहड़ी जे बेला तैलेया बनवास।

कुल्लू क्षेत्र

पराशर वंदना

म्हारे देऊआ तू ऋषिया परासड़ा,
तेरी जय जयकारा हो।
तू दाता म्हारा, तू सा स्वामी, तू पालनहार हो,
तेरी जय जयकारा हो।
डूँगा-डूँगा सौर तेरा, मंदर पुराणा, लाई देणा बेड़ा पार हो,
तेरी जय जयकारा हो।
सतीजुग, त्रेताजुग, द्वापर सारा, कलिजुगा तैईनी पाया तेरा सार हो,
तेरी जय जयकारा हो।

पर्वत व्यास रिखी, व्यास कुंड तीर्था, जुगे री सा याद तेरी अंत नी हो,
तेरी जय जयकारा हो।
सेभी रा भला केरी, सुख देई मालका, दुःख केरी दूर, शुणा सेभी री पुकार हो
तेरी जय जयकारा हो।

नाग वंदना

नाग बोलो देवा, देवा रा बे राजा,
तारा बोलो देवीरा मन चाँदा भाईया,
सारा बोलो पोहाड़ो दा लोका ला गाया।
शिव बोलो शंकरो रा प्यारा ए ही ख्वाजा,
माऊ बोलो नागा, नागा देवा रा वे राजा।
मीठे बोलो बथेरा बड़े बोलो जवानों में छाया
लोगो रे संकट काटणे देवा बोलो रे आया।
देऊँ ताखे बर-वस्त्र ओरो धोजा,
नागा बोलो धोरती गोईणी रा राजा।
सोबे प्रजा कठी होवो, बोलो कठे रावल,
सबी के देवो तुमे बोलो राखे रे चावल।
नागा बोलो लोको दा गाया,
नागा बोलो लोके मनाया।

झीऊँचलीए

दो व्यक्ति : झीऊँचलीए झीऊँचलीए
सभी : झीऊँचलीए झीऊँचलीए
दो व्यक्ति : चौले उठिया कुलू बे जाणा
सभी : झीऊँचलीए झीऊँचलीए
कुलू जाया की नोऊँचा खाणा, झीऊँ...
कुलू जाया घिऊ-खिचडू खाणा, झीऊँ...
घीऊ-खिचडू नी गोला-न जाणा, झीऊँ...
गौला तेरे मूँ ता घुँघरू लाणा, झीऊँ...
कुलू देशा सा पौटू रा बाणा, झीऊँ...
गौला धुँघरू पौटू भी लाणा, झीऊँ...
डेंगा थिपू जोंघा बूटडू लाणा, झीऊँ...
थिपू पौटू की पलवा पाणा, झीऊँ...

कुलू जाया मूँ शाहुरा लाणा, झीऊँ...
तेरे शाहुरे की सेलरा लाणा, झीऊँ...
एजे दूईए घौर बसाणा, झीऊँ...
नूआँ घोर चूटा फूटा पराणा, झीऊँ...
तेरी तेइएँ चूटा फूटा सजाणा, झीऊँ...
घौरा नाईएँ पूछू सियाणा, झीऊँ...
कोने शुणू नाई लेखा-न पाणा, झीऊँ...
मशेरना नाईं कदी सियाणा, झीऊँ...
याणा नाईं ए लोभा-न लाणा, झीऊँ...
एजे माँदी आसा हौथ मलाणा, झीऊँ...
जुगा जानी-बे सोंग बणाणा झीऊँचलीए झीऊँचलीए।

लामण

साजने हाथडू जेणे गलाबा रे फूला।
राची मिला सुपने, धैड़ी मेरी आखीए झूला।
झूरी री हाखटी जिशी खुआरे री गूटी।
निमती कौर नजरा, सारी तें दुनियाँ लूटी।
शीली बोलो घासणीए, ताँदी फूको आगो।
बिना भावरा भावटा, जिशा अलणे कोदू रा शागो।
सापो रे मुंडकी पोरू देए ले काटी।
हाऊँ बोणू दीउट्ठ, तू बोणी दीए री बाती।
खाई दपौहरी खाऊ औधला सीडू।
झूरीसा बाल्हारी घुगती, लोभी जोता रा चीडू।
फूल फूलू डोलरा, बोणा-न भूँबले पौके।
लोभी चाकरू लौड़फड़ा हुआ झूरी चाकरी कौखे।
मास नी रौहू पिंडा-न हेरिदा, हाड़कू हेरिदे रौहे।
पिंडा रा बोणू चाँलू जेंडा पौटू लेमकू लौहे।
छाहटी छोलदे चूटी जेरी शेलो-री डोरी।
दिनडू गिणदे घौशी गूठी री पोरी।
थाले पछियाई माँदरी, ऊझे पछियाई सेली।
याद लागी एंदी लोभीरी, निंद्र कीझीबे एली।
जूठी शौली रा चिहटू भौकदा-भौकदा हीठा।

संग थी बोन्हू उमर भौरी-बे, धाउड़ी बौता-न रहीठा।
चीला रीए बूटीए, लाम्बे दे लाम्बे झ़लारे।
ओरो दे गो हाथड़ू, मेरे आणे नौइए पारे।

चतुष्पद

1. *जौऊ पौके पिउँले, हौरे गेहूँ री सेरी।*
   तेरे दोहे-लामणे, मोंझा बौता भलेरी।
2. *भेटी फूली कूसमी, बेऊड़ी फूली जूही।*
   दसा देई बोलणे, मिली रौहणा दूही।
3. *फूली कौरो फूलटू, डाली फुललो शांछी।*
   तौ बिना एरा फिरो, जेरा घायलो पांछी।
4. *गाड़ बौहे गाड़ीए, ढोंके न आंदी कूला!*
   बाड़ी शूकी जिंदड़ी, हौरे तंबाकू फूला।
5. *हौला बाया हाल़ीए, कुजिया रोए लाखा।*
   ईशा फिरा ओड़दा, जिशा पाणीए पाँखा।

दोहा : *मोंझ़ मदरशा फेर फिरदी शाढ़े री बूटी।*
जेबे शुणें तेरे दोहे-लामण हौथा री कलमा छूटी।

सौहा नौच़ले देउआ रे देऊलू, बोणा नौचले गूणी।
मूँ सी लाणे दोहे-बाह्मणू, कोनड़ू लाया शूणी।
शोझा निकती बादल़ी, भुइण निकता तारा।
सूरजा बिछड़ी चंदर, संग बिछड़ू म्हारा।
फूली कोरला फुलटू, डाली फुलला कुजा।
हिये भीतरी मूरतो, होर नि सुखदा दुजा।
बिजिए मेरी गोणिए, जग मग दिशो तारे।
हामे न बोलो बिछड़े, बिछड़े करम म्हारे।

प्रणय भाव

बिंदरा बोणा-न भूजी खोड़ा रा बूटा।
आमा बापू ताईं पिहर पेउका भाई रा सौउदा झूठा।
चूटी रा किरड़ू, दूर बाई रा पाणी।
आमा बापू रे फाहड़ा-न लोड़ी मौत, भाई लोड़ी चौकदा जमाणी।
उथड़ी कोठी-न फेर फिरदे खिड़कू लागे।

बेटा न्हौठा दूरा-री नोकरी, दाह लागी कौकड़ी आगे।
बेढ़े हेठे जाइरू, बेढ़े धामे मजूरी।
आमा-बापू री मोहमा, भाई भियारू री झू री।
साजा लागा शौइरी, जाच लागली खौ़ला।
आमा-बापू रे चरण-बंदने, भाई रे मिलणा गौ़ला।
साजा निभू थी माघारा, छेके सा शौइरी आई।
आमा-बापू हुए जुंखडू-जुंखडू, हाऊँ सा मिलदी आई।
हौथ कजौशला हुआ माण्हू-रा, बौल दे पेऊकी देऊआ।
भाई-भरयारू रा झूरी-लोभ, आमा-बापू री सेऊआ।
यार मित्र खाणे पीणे रे लालची, गर्ज डाँहदे नाती।
आमा-बापू लोभा-शोभाबे, भाई दुखा-सुखा बे साथी।

संयोग

गेहूँ गौगरे, पीउँले जौऊरी काशी।
चंद्रा सेंही नजरी तेरी, सूरजा सेंही पियाशी।
फूल फूलू फूलणू झूरीए, भौर फूलला पा़ला।
ज्हारा-ज्हारा रे हौखडू तेरे लाखे री दोंदे री माला।
मखमला रे थिपुरा भलका, लोमे देई जुटु रे फेरे।
किहाँ भलेरने झूरिए मूँता लाल गलोटड़ तेरे।
गेहूँ जोंदरे ऊबण जौऊ जोंदरे सौरी।
लोभी गलाबा रा डोल्हरा, झूरी सा बोदी री तौरी।
खाई दपौहरी खाऊ औधला सीडू।
झूरी सा बोला बाल्हा री चाकरी लोभी जोतारा चीडू।
बून्हे बोलणा सोमसी ऊझे खड़ा जमोटा।
होरी री झूरी पीउँली-झीउँली, मेरा सा माँजुआ लोटा।
लोमे केलू री बूटड़ी सदा बे हौरी री हौरी।
जेंडी जोड़ी थी फोटू-न म्हारी, तेंडी लोड़ी उमर भौरी।
उथड़ी धारा-न केलूरे बूटडू घोणे।
जौसा झूरी ताईं लौड़-फड़ाहुए, सके लोड़ी दुहरू बोणे।

वियोग

बीझे सौरगा बादल निकता हौरा।
आपू न्हौठा फरंगी री नोकरी झूरी डाही जौलदी घौरा।

फूल निभू फूलिया, भौर फूलला जौरा।
लोभी न्हौठा दूर नोकरी, दुखा रा कोटडू घौरा।
नीलीए चीड़ीए, कोल्ह बुणू पाणी रे छोभे।
लोभी न्हौठा दूरा-पारा बे कुणी रे रौहली लोभे।
भलेया माण्हुआ, भलेया जुआना।
राती नी पौड़दी निंद्र, दिहाड़ी नी रुचदा खाणा।
हेठे धीरे शहरा, ऊझे भेखली धारा।
लोभी चौलू दूरा पारा बे, गौल लागा भौरिदा म्हारा।
जोता राम गाश शौहिया निभू, हौछू-रा गाश नी शौहू।
पीछे फीरिया लागे भालदे, हाजी की सेंइसा रौहू।
जाते री चीड़ीए, कुणी पापीए बलागी।
छेके फीरे चीड़ीए घौरावे, रात पौड़दी लागी।
तौउए बी तौउए घौडुए लोहे रे तौउए।
जुण झूरी लोड़ी नजरी पाँधे, सौ न्हौठी धारा रे लौउए।
जूनी बीजू नी फूटे भागे री हीकडू भोनदी जूनी।
याणे बाले-बे मौरना हुआ चीड़ी सो डालेरी रूणी।
बालू सूनारा फूली गोई नशोभी।
पिहू-न छूटू याणी झूरी-न छूटी रा लोभी।
बून्हे माहुल, पीछे पोई करेरी।
लोभी भोले-बे हुई मौत, याद किहाँ बिसरी तेरी।
बूटी बी बूटी भूजल खोड़े री बूटी।
कुणी जुगा रा पाप खोडुआ झूरी दिले री छूटी।
हौरे गेहूँ री जौचड़ी, पींउली फिरी री शाई।
छेके फिर-ड़े धौरा-बे चीड़आ, जुआनी सा निबरी आई।

—लामण, कुल्लू का एक सशक्त लोककाव्य है। हृदयग्राही भावों के साथ इसमें उत्कृष्ट काव्य के दर्शन होते हैं। दोहा, चतुष्पद और छंदों के प्रयोग से यह लयात्मक काव्य है। नायक अथवा नायिका की प्रशंसा, संयोग-वियोग सभी का चित्रण इसमें मिलता है।

महासू क्षेत्र

मास्ती (महासती) कुजी

ताला रीगे माच्छले न गणे शीणे
काला बारा अंबिआ न पाशड़े दीणे
चुली री पठाए मेरे सौड़ छाँओं
मीठो आहो ठणको मुँ नाँदो शिआओ
छोंटिआ कुजिआ तु नेडड़े आए
कौंला मुँदे हाथडुआ मशणों लाए
लाआ कुजे मशणो न लागा ले रूँदे
और कमाँए मेरे कियणे हूँदे
जोटी एकी आदमी पजारली जाओ
देवा तेस कुला रा न उबे छराओ
ओतरी देओ कुला रो न गाड़ा लो रोशा
मेरा नाँई अंबि खे न दाई न दोशा
ओतरो देओ कुला रा न लागा लो रूँदो
भाता रो चावला न अंबे न हूँदो
देवा देआ कुला रा न आखरा चोड़े
भाटा करा माऊला न ओरका लोड़े
जोटिआ एकी आदमी भटेवड़ी जाओ
भाटा तेस शंकरा न ओरू बदाओ
आशा भाटा शंकरा न लांबिआ लाए
मातेआ अंबिका तू बोला लो काए
खोला भाटा शंकरेआ चुड़कु साँचा
मरणा रा जीवणा रा आखरा बाँचा
एकी आशा चुड़कुआ खड़िआ खड़ो
आशा दूजा चुड़कुआ मास्ते मड़ो
बेटे गोए खंडिया रे खड़िआरए
भाटा ताँऊ शंकरा रे पतरे दए
धरेमा देआ कुजिआ न दाईणा हाथा
जबे अंबे मरालो तो जलू ले साथा
छोंटिआ कुजिआ बू शूदे न छला

आगी गाशे पाशड़े तू लाए न बला
छोंटिआ कुजिआ न्यारू ला ताँऊ
जेबा मड़ा लाँगा तेबा मानू न हाँऊ
जलना नाई मरना खे कासी रो डंरा
जिणो तेरा सूँचिआ लो तियणों करा
जौंआ पापी बोरी रे आशे टियाले
दाया भाया गड़ा रा न खाओ बियाले
गड़ा दिणे नगरा दे फूके टियाले
डाकी, बाड़ी सोई आणो जोखटी जाले
गड़ा जाणी नगरा दे हुए नजाणा
बोठी बियाली डूबा अंबि रा प्राणा
जोटी एकी आदमी न माँदला जाओ
डाकी बाड़ी सोई तुम्हा ओरू बलाओ
डाकिया कशे माँऊआ नगारा रे जोटे
भीतरा करा खबरा न सचे के खोटे
सचे खोटे बाड़िआ न पूछि का तेरा
मड़ा साथी मास्ते न जलणे मेरा
कुणता त्हारा शौरा मड़ाईका कोले
पारा भलाड़ी खे थे छाड़ने जोले
कोल्टु आशा भागमते लांबिआ लाए
मातेआ अम्बिका न बोला ला काए
कोल्टुआ भागमते फूको न बोला
सौजा बोला सूरती का घरा रा ओला
कोल्टु देआ भागमते फूके टियाले
जलाले भलाडुआ बियाईणा त्हारे
माची भलाडू आशा चूटा ली घड़ी
दारू रा आणा बुगचा न केवला री घड़ी
माची भलाडू आशा शरू रे छाँडा
बादा ठणायका री भरवी पाँडा
माची भलाडू पूजा खड़िआ रआ
मुआं साथी जींवदे तू कासरे दआ
हाक भी भूरो देआ लो न झाड़ा नी घड़ी

खूँदा री खुँदटी न ठाणा का जली
सौजा लेरा सुरती न जुगा रा ओला
ठाठो के चाइतो तू आमू का बोला
ठाठो न चाइतो हाँऊ सुखा रे जलू
माची भलाडू रे न उजले करू
सौजो लेरा सूरती न जुगा री बाई
चाला भलाड़ी खे तू दूआ ले गाई
गाई मेरा बाश्टू रा हुआ न भागा
तेरे बोला बोटे न शांकिणा डागा
गाबी तेरा बाश्टू रा मुँएँ का जेड़ा
अंबि साथी जलू ले न पशा रो पेड़ो
देवरा बोलू रामचंदा सूँची का तेरा
मड़ा साथे मास्ते न जलने मेरा
रेशमा कीमू खापा रा न गाड़ा ला रेजा
बोल बी मेरी भावजा तू बामा ले केजा
एजो न चोगे बामणों एजो रआ लो ताँखे
चोगो सेजो बामू जिंदे सूना रे माखे
जूगा गाशे बामवेगे चड़के राणे
ठाणा से झूरा ठड़ा न बाबी रो पाणे
जुगा गाशे टाँडुएगे चड़के कूजे
हले मेरी लौकी रे जला ले दूजे
नागा री लाए ढोली दे न कुजिआ लाता
हौली मेरी लौकी री जलिओ साथा
निओ मेरी जुगटू न थापला पारा
आंडा पुजारली रा दिंबदा झलारा
मेरी निओ जुगटू कलोटी री धारा
डाढे घीशा घुणसो न बादे भलाड़ा
निओं मेरो जुगटु न खोड़ा री छाँई
देखो मेरा माईचा न आश की नाँई
ओरू बोदो शरेआ थगे रा बापा
केछे-केछे लाई कूँगू कथरी रा छापा
एक बी छापो लाणो न नागा री ढ़ोली

दूजो छापा लाणों बनाड़ा री खोली
आंगतु बाड़ी जंगला न खड़िआ ऊजा
कसके चाणी पलगे न कसखे जूगाँ
अंबी खे चाणो पलगे न कूजी खे जूगा
इणो चाणो जुगटू न आफी लो हाँडा
फेरा दिया करूँ चौऊ घूरा दे घाँडा
इणी धाणी बाड़िआ बड़ेटु खे तेरा
काठे लाए आगला खूबे हिया दे मेरा
कुजीरा लिआ जुगटु दे किंबली काली
अंबि री लिया पलगी दे मुशा बराली
डाल बी करा देवठी का ठोड़ी का सुए
गडा री बादी नेगणी का रामा-रामा हुए
जुगा गाशे टाँडुएगे चड़के राणे
ठाणा रे झूरा ठड़ा न बाबी रो पाणे
बिवले चाणे पलगे न साँगड़े बाटा।
डाकी रा ढोली रा न लागा ला साटा
सोलह लाए साणी आ कुजे खदारे
पाँचा लाओ पांडुआ न अंबे भडारे
ओड़े का दूस मासा डेएगा घरा
आग न कोई लांदो फिरंगी रा डरा
जेती तुआ शेवरेआ घरा खी भागा
जेती हौला देवरा न लाइओ आगा
सास बी रींगो सरगा मास भोगा ले आगा
हाड़ा राँ लांगा जुड़कू न माटी रा भागा।

—जिला शिमला के ठाणा गाँव में कुजी नाम की महिला सती हो गई। उस महासती के नाम पर यह गाथा प्रचलित है।

रूपांतर/कुछ अंश (महासती कुजी)

बाठणीए कुजीए छोए ल छोए,
राशीऐ ढेऊ कुल्लु री कपड़े धोए।
कुल्लु री ताँव राशीए छाडू नै छाडू,
भोकतै मेरै माची रै बाकरै खाडू।

तेरै देऔ माचे मौगे मोले,
राशी आणु कुल्लु दू सस्तै हौले।
सोजो कौरे शांबलौं लोटै दो घिऊ,
हाथो किया डिंगटा रोटी रो शिको।
जौवे पुजा देउली खै बाकटुऐ छिको,
छिकै ले मेरी छिकणीऐ देंदे का बौरौ।
राशीऐ ढेऊ कुल्लु खी आऊला घौरौ,
भांगौं ले कुजे अेऔ दू ऐजा ही बौरौ।
कौबै अंबे आणौ खाडू बाकरे रे शशै
दाई भाई बादे कौरी अंबी रे आशो।
राष आणे कुल्लु दू मंहतो रै रोहडू,
राष लाऐ चारणै खी देवा री बागी।

माँई और रूपु

पारवै चलातै दू देणे रूपुऐ षेड़ौ
माँई चारो बाकरी चारै रूपआ भेड़ौ।
माऐं जाणौं ले के बाशौ ले भेड़ौ
छिछड़ै री छाँइऐं रूपु सौऊलौ सिंकौ।
माँई रो मुंदु जिणो हारषो जेओ निरूकौ।
रूपुऐ फारशे पाऐ गोरू दे चौरणे तू नेहड़े आऐ।
माँई रे ओ रूपु रे हौले बोले बताऐ
कोठी गाड़ौरी जातरौ कौरे रूपुआ आऐ।
तेरी जातरो मांईऐ मौऐं जाणी नै जाणु
तेरी हौली सतड़ी मुखी छाड़े बदाणु।
डाठु घोऐ छोइऐ सावणे मुंदु जौमे दूधै
कोठी गाड़ो री जातरौ होली मौंगले बुधै।
डे जलेया कोलटुआ मेरी पड़ांजे
घिऊ दिऊ ले गईड़ो ताखी गुड़ गड़ाजे।
डेवदा था डेवदा माँईए तओं रा डौरो
जाणदा नै परैणढा रूपु ठीडौ रा घौरो।
पैरौ गौडे आरटे चुलटे भामटे फेड़ू
घौर हौलो रूपु रो सेजो जींदै डाफिऐ छेड़ू।

डे गो कोलटुआ माँई री गड़ांजे
घिऊ देऊ धौइडो गुड़ गड़ाजे।
मुंगले रै रूपुए ला दुरौ दू शाऐ
मांई रो कोलटू केथौ कारूओ गो आए।
हाँव छाड़ा माँईऐ तामुखी बदाणु
बापा बोलु मुंगला मते छुपु ला ताँव
कोठी गाड़ौ री जातरौ किया डेवदाँ हाँव।
बापै देणी मुंगले तेरै शांगली फौऐ
कोठी गाड़ौ री जातरौ रूपुआ नैरौ न कोऐ।
बापु नैरौ मुंगला नौवै धौरौ री पाँडो
आव हेरे नै हुजतौ ठौगे नाई लोगु री राँडो।
पुड़गौ रै नवीऐ चाते पौंद्रौ कोणे
बापे तैणे मुंगले गंठीए गौणे।
कोठी गाड़ौ री जातरौ देणा रूपुऐ फेरा
बादी जाणौ ली घैणी चंई था बौटा मेरा।
नाचदै खेलदै मेरे शांगे शलाणे
बोलौ तूऐ धणी केओ सौ कोठी गाड़ौ रो पाणे।
रूपु ठींडौ रे चिशड़े कोईऐ नै जाणे
चादरू री छाबौं दे मांईये पानी रे लौटड़े आणे।
आजकी रातीऐ रूपुआ ईंदा रोऐ
तेरे घेड़ै खी दाणा देऊ खेती रै जौए।
आमा बोलु अमिया तेरे लाड़कु घिऔ
लाड़कु तू छोटे खा भाई आपड़ै बापौ।
जेती आऔ लै ताँव माँगदै घिऊ गादीऐ नै टापौ।
अमीया गे अमीया का लागदो तेरो?
गेहूँ बापु री खेचीए घिऊ जैड़ा रो मेरौ।
बोठे रोऐ ला रूपुआ ठीडा मेरै बापू री ढाँफी
जबै देईयो नै कौरौ ले तौबे आऊँ ले आफी।
बादी डेगी छनाड़ी ऊबी खोड़ू रै बौणै
मुखी सीटै नै आमैं रे बुझै बाथू रै डणै।
रश्टा आंगशे देणे कोलटी रै हाथै
मांई लागे बाठणौ रूपु ठीडो रै हाथै।

शिगे शिगे रूपुआ ठीडा नऐ टपाऔ
आओ मेरै साचे झुंगौ झेबौ लै ताँव।
आणे दे माची तेरै खाली नै छाडू
मौड़ौ देऊ माचो खी बाकरै खाडू।
घारौ लागी पुड़गो री खौड़ै क्याले
ऊबे कौरे रूपुआ ठींडा घुघुऐ घैने।
घुघुऐ नै करदा ताव छेवड़े बुत्ते
आफी कई नैं हाँडड़े तेरे का बागणे चुटे।
पुड़गौ रै माणछौ ताँव खादिऐ खाले
नदे आई बै हालवै ऊबै बौलै छालै।
बादे तैणै मुंगले कुछ भी नै बोलो
करे हेड़ो रूपुरी तैणे शादी रो धाँधो।
माँई हुई आणीयो बरषौ दुई
भाई री लागी बापू री माव री कसूँसी।
ठीडा बोलू रूपुआ तेरी दाड़ी री बांदी
काल थिऐ पोरषे हाव माईयौ जांदे।
रूपु तेस ठींडौ रै पेटौ दी लाणी
छाड़ौ तींओ माँई खी एकी बोदाणी।
मांईऐ तीऐं कोले बैदूरौ दू शाओ
कोले मेरी गौड़ी रो कैई जोगो आओ।
बोलू ला बोलने जाईयौ नै डौरे
तामू आवो को बोद दो रूपु गो मौरे।
माँऐ आऐ बाठणौ बै धारी ऐ धारौ
भाई तीओं बाठणो दे बावतौ जे लागौ।
रूपु ते ठींडौ रे पौजले हालौ
पौजली देणे हाली दे माँईये फालौ।

—यह माँई नाम की लड़की और 'रूपु' नाम के लड़के की प्रेम-गाथा है। पति के मरने पर वह सती हो जाती है। यह गाथा जुब्बल-कोटखाई में प्रचलित है।

लाड़ी शांवणिए

लाड़ी शांवणिए किंदी तेरो गराँओं, किंदी तेरी दोगरी,
बालै खौशटुआ राएपुरै गरांओ, नीरासू दोगरी।

लाड़ी शांवणिए किया तेराड़ो नाओं, कुण होंदी जातीए,
बाले खौशटुआ रूपदासी मेरो नाओं, जाती री ब्राह्मणी।
लाड़ी शांवणिए तेरे नाकौ री तीली, कैणी बाँकी शोभाली,
बाले खौशटुआ, अबे देखणी दिल्ली, देखे हेरौ शिमलौ।
लाड़ी शांवणिए, नारकौली ना मिली, सारै हांडौ शौहरा।
बालै खौशटुआ, हुंदी बोली सबाटू, ऊबी बोली शिमला,
लाड़ी शांवणिए, शांगो केणखे काटू तेरिए तैंइएँ।
बालै खौशटुआ, डाली भाषौदा काओ, बूरा नहीं मानणा,
लाड़ी शांवणिए, लागौ हाखी रा चाओ, तेरी इणा लींवरी।

हीरा-कमला

केडली हुइए रेडी जातरै, हीरा कमला, रेडी जातरै,
मेले लै आओ तेरी खातरै, हीरा कमला, तेरी खातरै।
बाबू रे क्वाटरै चाय गौरमा, हीरा कमला, चाय गौरमा,
ओरू कोरे हथडू लाणा धौरमा, हीरा कमला, लाणा धौरमा।
नाटिए नाचदै लागे शौरमा, हीरा कमला, लागे शौरमा।
बाबू रे क्वाटरै खुली खिड़की, हीरा कमला, खुली खिड़की,
भौरीए जवानिए देशे रिड़की, हीरा कमला, देशे रिड़की।
चाली थी खौडू लै आणी शूहणी, हीरा कमला, आणी शूहणी,
घौर कै भूली गाऔ दूहणी, हीरा कमला गाओ दूहणी।

नीलिमा

नीलिमा-नीलिमा भई नीलिमा-नीलिमा।
नीलिमा बौड़ी बाँकी, भई नीलिमा बौड़ी बाँकी,
भई शिमलै कोठी टाँकी, भई शिमलै कोठी टाँकी।
भई शिमलै कोठी मोरौ, भई शिमलै कोठी मोरौ,
भई नीलिमा बौड़ी चोरौ, भई नीलिमा बौड़ी चोरौ।
नीलिमा भौजौ रामौ, भई नीलिमा भौजौ रामौ,
शिमले कोठी कामौ, भई शिमले कोठी कामौ।
पाणी री लागी बरूरौ भई पाणी री लागी बरूरौ,
तेरो पेवकौ बौड़ौ दूरौ, तेरो पेवकौ बौड़ौ दूरौ।

—यह एक बहुत ही प्रचलित गीत है।

सिरमौर क्षेत्र

झूरी

(प्रणय गीत)

खाय जाणी झूरिये कोरी कूजी री दौंई,
दिलडू लाणा तेरी गोईली थी ताँदी बाँठिणी कौंई।
तेरी उजली बाकरी, उजली गोओ,
चूटों नी भावटा दाड़िये हामे शोके लाओ।
लाये नी झूरिये बोला रेखो दी मेखो,
पापटी दुनियाँ ला तेंई दूरकै दी देखो।
घोर छाड़े घोर आँगनी घोरो पाछला डोबा,
राजे री छाँड़ी नौकरी तेरे नोयणो दा लोभा।
ठींडो री टूपिये बोलो तोड़ेके शे लाये,
बाँठणिये रे नौयणाये माँउये शे खाये।
लाई नी झूरिये एबे लाणा रौ बाणा,
भोले सीते रा भावटा गिरी किरियों लाणा।

हो सोयणा

हो सोयणा, पीपली रा बूटो, हो सोयणा।
जांगली आणो दुर्गासिंघो, कुर्मो रे बूटो, हो सोयणा।
बूटो आणला कुर्मो रे, आणो सरजो रा सूटो, हो सोयणा।
बूटो न आणे राबड़ो बाटो हाँडदे चूटो, हो सोयणा।
थाणी गाशे कूलंगो लागी ढोलो दी गीओ, हो सोयणा।
हो गीओ दी पोड़ी नाचदी तेसी सादिए री घीओ, हो सोयणा।
हो, ढोवदी नाचे सोयनया, लागो कलिए गे पोता, हो सोयणा।
हो, खौशटा आणो रोगवाहणो, ताँखे हाथो खे छोता, हो सोयणा।
हो, ऊबा गांवटा कूलगो रा, हूंदे कूलगो रे फोरे, हो सोयणा।
बोलो रीतो भाजीओ कोटदी ऐबे डेवणा रे घोरे, हो सोयणा।
हो, कैई तो कोरे सोयनया तू जीआी खे झेहड़ा हो सोयणा।
हो, रेलू कुमीया सुखदे भाजे कोलिया रे शैड़ा हो सोयणा।

गारडा संगती रामा

धान कुटी बोलो ऊखले मूसले, उड़ो पौणिए कानू गे,
गारडा संगती रामा, जांगलो दा मूआँ।
ऊबे जाणा गे हामेलो खे गारडा, पड़ा बौरफो जानू गे,
गारडा संगती रामा जांगलो दा मूआँ।
हामेलो खे बोलो जांदिए गारडा साथी बोहणे बानू रे,
गारडा संगती रामा जांगलो दा मूआँ।
टीरो दी जाणी हामेलो गारडा, फूलो किमटी बूटी रे,
गारडा संगती रामा जांगलो दा मूआँ।
हामेलो खे जाणी जांदिए गाडी, गोए हाशणो चूटी गे,
गारडा संगती रामा जांगलो दा मूआँ।
टीरो दा जाणी हामेलो गारडा, दीता लुधिए घेरा रे,
गारडा संगती रामा जांगलो दा मूआँ।
एरे होए बोलो मौतौ लोकुओ, इंदा कुएँ नी मेरा रे,
गारडा संगती रामा जांगलो दा मूआँ।

रतनिए

ऊँबे, ऊँबे, ऊँबे...
बिलो शाणियो घीयो रतिनए।
हसणे खे बोलणा खेलणे खे, म्हारा बालका रा जीओ रतनिए।
एके हाथो दे झाड़ना, एके हाथे छाबटी, रतनिए।
छोटे-छोटे तेरे हाथड़ू, काली लंबड़ी आखुटी, रतनिए।
फूली करोला फूलणु, डाली फूलोली धाई रतनिए।
तेरे रोजके रूशणे, हामा किचलो घाई रतनिए।
डंगे धारा रे बाथुआ, लाल लंबड़े सिल्ले रतनिए।
मरी जावें भला बीछड़े पंछी होई रो मीले, रतनिए।

लोक में रचे-बसे लोकगीत

भरमौर के लोकगीतों की अपनी एक अलग पहचान है। विरह-प्रधान होने के कारण इन गीतों में जो एक कसक, वेदना है वह यहाँ की मोहक और मन को छू लेने वाली धुनों से और भी मुखर हो उठती है। गद्दी पुहाल को सदा चलते रहना है। उधर इनकी पत्नियाँ, परिवार अकेले रहते हैं। वियोग के क्षणों में किसी बहाने से बुलाना, न आने के बहाने और परदेश में पति के कारण वेदना इन गीतों में व्यक्त हुई है।

भरमौर के विवाह गीतों में काँगड़ा का प्रभाव है। भरमौर के गद्दी तथा परिवार सर्दियों में काँगड़ा की पालमपुर घाटी में रहते हैं। इस ओर भी युवक विवाह के बाद फौज में जाते हैं जहाँ वर्ष में एक बार छुट्टी मिलती है। अतः प्रवासी पति के बुलाने के लिए बहाने ढूँढ़े जाते हैं :

लिखि-लिखि चिट्ठियाँ मैं भेजाँ, हाँ मैं भेजाँ
माता तम्हारी बीमार ढोला, घरे आई जाणा।
लिखि-लिखि चिट्ठियाँ मैं भेजाँ, हाँ मैं भेजाँ।
भैण तम्हारी बीमार ढोला, घरे आई जाणा।

विवाह गीत, जिन्हें ब्याह-शादियों में या वैसे भी बैठकर औरतें गाती हैं, 'द्रुभड़ी' या 'द्रुएँ' कहा जाता है।

एक द्रुएँ गीत में दामाद अपनी विवाहिता को घर बुलाता है। सास बहाने लगाती है। कभी वह कहती है कि लड़की तो पाँव से नंगी है, कभी कहती है कमर से नंगी है, कभी कहती है सिर से। दामाद उसे जूते, घाघरा, चादर आदि देने का वचन देता है।

घुरैही वे लोकगीत हैं जो विवाह या अन्य अवसरों पर महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं और इनमें एक घेरे में नृत्य भी किया जाता है। कुछ महिलाएँ गाती हैं, शेष उन्हीं पंक्तियों को दोहराती हैं। विवाहादि अवसरों पर गद्दी भी गोलाकार धीमा नृत्य करते हैं जिसे डंडारस कहा जाता है।

सर्दियों के बाद गाए जाने वाले घुरैही गीतों में धार्मिक, शृंगारिक सभी प्रकार के होते हैं। घुरैही में 'सियाहरण' का प्रसंग बड़ा लोकप्रिय है :

राम ते लछमण चौपड़ खेले, सिया राणी कढंदी कसीदा हो।
इक बाजी बहिया, दूरी बाणे लाया पाणी केरी लँगदी प्यासा हो।।

कुण होला सुणदा, कुण होला गुणदा, कुण प्याला ठंडा पाणी हो।
सिआ होली सुणदी, सिओ होली गुणदी, सिया पियाली ठंडा पाणी हो।।
अते कठी भोला मेरा सीस घड़ोलू, कठी भोला नारियल बिन्ना हो।
घड़े री घड़याणी तेरा सीस घड़ोलू, कीलाणियाँ नारियल बिन्ना हो।।

—सियाहरण के इस गीत में राम-लक्ष्मण द्वारा चौपड़ खेलना, राम को प्यास लगना, सीता द्वारा घड़े में पानी भरती बार नाक की लौंग का गुम जाना, स्वर्णमृग देखना और राम द्वारा वन-वन मृग ढूँढ़ना आदि घटनाओं का वर्णन है।

अंचली या एंचली गीत

अंचली एक धार्मिक लोकगीत है जो 'नवाला' या 'नुआला' के अवसर पर चार पुरुष गायकों द्वारा गाया जाता है। ढोलक, नगारा और कुंभ पर रखी थाली बजाकर ये गीत गाए जाते हैं। नुआला शिव-पूजा का उत्सव है। किसी अभीष्ट की प्राप्ति के लिए शिव जी को नुआला की मनौती माँगी जाती है। आटे द्वारा मंडप बनाकर खानों में तिल, चावल, बबरू रखे जाते हैं। भेड़ की बलि दी जाती है जिसका सिर पूजा के लिए रात-भर रखा जाता है।

सारी रात चलने वाले इस उत्सव में शिव-स्तुति का गायन होता है जिसे 'शिवीण' कहते हैं। राम-कथा को 'रामीण' कहते हैं।

शिवीण लंबा गीत है जो दक्षिण देश से सिद्ध योगी के आगमन से आरंभ होता है। इसमें पूरी पूजन-विधि के वर्णन के साथ दक्षिण देश में ही मालिन द्वारा हार गूँथने का वर्णन है। शिव बाग में मालिन से मिलते हैं। भँवरे द्वारा बाग उजाड़ने पर शिव जी भँवरे को कैद कर लेते हैं और मालिन के कहने पर छोड़ देते हैं।

शिव-विवाह का वर्णन विस्तार से इस गीत में किया गया है :

गौरा पुछंदी 'माता रणसिंगा बजंदा कै आया'
माता बोली 'धिए तेरा बैहु लगना जो आया'
गौरा बोली 'तैं कोढ़ी कलंकी रे लड़े लाहे'
रोई रोई रोजना लाई
'मौलिया तुज्जो भाणजीरा दोष लगला
तैं भंगी सराबीरे लड़े लाई'
ताँ मौला बोले 'रूँए मत भाणजिए
तुजो दाज सुआज भरी देला'
ताँ फिरी गौरा बोली 'भेड़ बकरी दाज नहीं लैणी
मैं हुंदी गदेटी ताँ भेड़-बकरी चारी लैंदी।'

चंबा में दरबारी गायकी भी प्रसिद्ध है जो केवल चंबा शहर में ही गाई जाती है। पहले पंजाब से गायक राजदरबार में आया करते थे जो पंजाबी में गाते थे। आज भी ये गीत पंजाबी-मिश्रित चंबयाली में गाए जाते हैं जो पक्के रागों पर आधारित हैं :

बागीं खिड़ रहे दो केल़, रब्ब बिच्छड़याँ नूँ मेले
तैनूँ फट पबे तलवार दा
कदेआ फुलाँ वाली सेज ते कदेआ मौज बहार दी।

वास्तव में लोकगीतों की आत्मा बसती है उन गीतों में जो गद्दी अपनी बाँसुरी की टेर पर पहाड़ी दर पहाड़ी गाता फिरता है या जो गीत चरागाहों में, घाटियों में गाए जाते हैं, जिनमें समाज के दिलों की धड़कन बसती है।

ऐसे गीतों को 'फाटेहड़' कहा जाता है। जो गीत ऊँचे शिखरों, गहन घाटियों में मदमस्त होकर गाए जाते हैं, वही मन की गहराइयों से निकलते हैं। सुरा (शराब) के नशे में डूबकर गाए जाने वाले गीतों में शृंगार हो या प्रेम, विरह या वेदना, चाहे अश्लीलता का पुट हो, ये गीत सब के मनों में बसे रहते हैं।

इन गीतों में अनाम गीतकारों ने गहन चिंतन के बाद आश्चर्यजनक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जो काव्य की ऊँचाइयों को छूते हैं।

छिंबी

छिंबी हो छिंबी पाणी जो गई हो
तेरड़े सौंह छिंबी पाणी जो गई हो।
दंद कदेई ऐस्सा छिंबी दे जियाँ खिड़े खटनालू
दंद हेरी मत भुलै राजा जी हाऊँ ता जाति री छिंबी।।
हाखी कदेई ऐस्सा छिंबी दी जियाँ सुरजे री लोई
हाखी हेरी मत भुलै राजा जी हाऊँ ता जाति री छिंबी।।
हाथ कदेई ऐस्सा छिंबी दे जियाँ हलुए री डाली
हाथ हेरी मत भुलै राजा जी हाऊँ ताँ जाति री छिंबी।।
होठ कदेई ऐस्सा छिंबी दे जियाँ पाना रे पट्ठे
होठ हेरी मत भुलै राजा जी हाऊँ ता जाति री छिंबी।।
इक लख दिता तिजो दो लख दिता जाति देयाँ बदलाई
निबो लैणे लख दो लख जाति नी बदलाणी।।

—पानी भरने के लिए जा रही छिंबी के सौंदर्य का वर्णन इस लोकगीत का मर्म है। छिंबी की दंत-पंक्ति ऐसी है जैसे खटनालू के फूल खिले हों। उसकी आँखें सूरज की रोशनी की तरह दमक रही हैं। हाथ ऐसे कि जैसे हलुए (मेहँदी का पौधा) की

डाली हो। होंठ जैसे पान के पत्ते।

छिंबी अपने अंगों की प्रशंसा पर बार-बार कहती है कि हे राजा! मेरे अंगों को देखकर इस बात को मत भूल कि मैं जाति की छिंबी हूँ। अंत में राजा कहता है कि मैंने तुझे एक लाख दिया, दो लाख दिया। तू अपनी जाति बदल दे। छिंबी का उत्तर है कि मुझे नहीं चाहिए तुम्हारे लाख दो लाख, मैंने जाति नहीं बदलवानी।

राजा तेरे गोरखेयाँ ने लुटेया पहाड़
लुटेया पहाड़ गोरी दे मत्थ दा सिंगार।
तीसा लुटेया बैरा लुटया भाँदल की हार
चाँजु की चुरैहणा लुटियाँ लुटी बाँकी नार।।
सोना लुटया चाँदी लुटेया लुटेया बाजार
सेजाँ सुत्तियाँ कामनी लुटियाँ लुटी बाँकी नार।।
होठाँ दी मैं हटड़ी बणादियाँ दंदाँ दा बाजार
जुल्फाँ दी मैं त्रकड़ी बणादियाँ नैणा दा बाजार।।
नीले पीले बाँस मँगानिया बँगला पुआनियाँ
बँगले दे बिच बही के सजणा तेरा जस गानियाँ।।

–राजा तेरे गोरखों ने पहाड़ लूट लिया। पहाड़, जो गोरी के माथे के श्रृंगार की भाँति था। तीसा लूटा, बैरागढ़ भी लूटा, भाँदल की हार भी लूटी। चाँजु की चुरैहणियाँ लूट लीं। सोना लूटा, चाँदी लूटा, पूरा बाजार का बाजार लूट लिया। सेज पर सोई हुई सुंदरियाँ लूट लीं।

होंठों की मैं हटड़ी (छोटी दुकान) बनाती हूँ, दाँतों का बाजार। अपनी केशराशि का तराजू, नयनों का व्यापार। नीले-पीले रंग के बाँस मँगवाकर बँगला बनवाती हूँ। बँगले में बैठकर हे साजन! तुम्हारे वंश के गुण गाती हूँ।

ऐतिहासिक घटना के साथ-साथ इस गीत में कवि ने अपनी कल्पनाशक्ति का भी परिचय दिया है।

ब्रह्मी

चिट्टी चादर बछाणें पाणी ब्रह्मीये
ढकणे के लैणा हो।
तेरी दोहड़ बछाणें पाणी ब्रह्मीये
तेरी बाँही रा सराहणा हो।
तेरी कणकाँ रा होया दाणा दाणा ब्रह्मीये
घरे, किहयाँ जाणा हो

तेरी चादरा री होई लीरा लीरा ब्रह्मीये
घरे किहूयाँ जाणा हो।
रेढ़ी-रेढ़ी ताँ घरा जो नबेड़ी ब्रह्मीये
अबे कुनी छेड़ी हो।
तेरी मेरी ताँ ढिकलू री जोड़ी ब्रह्मीये
कुनी बेरिये बछौड़ी हो।

—नायिका (ब्रह्मी) को संबोधित इस गीत में विभिन्नता के साथ-साथ शृंगार का मिश्रण अद्भुत है। नायक कहता है कि सफेद चादर तो बिस्तर पर बिछा लेंगे किंतु ओढ़ने को क्या लेंगे? दोहड़ू (पट्टू) बिछा लेंगे, सिरहाना तेरी बाँह का ही लेना होगा। पहाड़ी दर पहाड़ी तुझे घर भगाया, अब फिर किसने छेड़ दिया।

तेरी कणक दाना-दाना होकर बिखर गई, अब घर कैसे जाएँ? तेरी चादर टुकड़ा-टुकड़ा हो गई, अब घर कैसे जाएँ। तेरी-मेरी ढिकलू (बकरी की तरह जानवर, जो सदा हिरन की भाँति जोड़ी में रहता है) की जोड़ी है। यह किस बैरी ने बिछोड़ दी।

गुड़क चमक भाउआ मेघा हो
बरह चंबियाली रे देसा हो।
किहाँ गुड़काँ किहाँ चमका हो
अंबर भरोरा घणे तारे हो।
कुत्थुए री आई काली बादली हो
कुत्थुएरा बरसेया मेघा हो।
छातिए री आई काली बादली
नैणा रा बरसेया मेघा हो।
रक्त थिया भाऊआ वक्त थिया
लागू थिए तब कोई हो।
रक्त नि रेया भाऊआ वक्त नि रैया
बात नि पुछदा कोई हो।

—हे मेरे भाई मेघ! घुमड़-घुमड़कर चंबे की रानी के देश में बरस। बादल कहता है, मैं कैसे घुमड़-घुमड़कर चमकूँ, अंबर तो तारों से भरा है। ये काली बदली कहाँ से आई? कहाँ से मेघ बरसा? ये काली बदली छाती से आई, आँखों से मेघ बरसा। इस प्रश्नोत्तर में चंबा की रानी की कथा है जो चंबा में पानी लाने के लिए बलि हुई।

गीतकार आगे की पंक्तियों में दार्शनिक हो कहता है :

—जब शरीर में रक्त था, लाली थी, तभी वक्त (समय) भी था। सब लोग उस समय चाहते थे। अब जब न लाली रही, न समय रहा, कोई बात नहीं पूछता।

नैणो

चिट्टे दंद खोड़े रा दंदासा हो मेरिये नैणो।
नैणो नैणो हाँकाँ कुनी लाईयाँ हो मेरेया मेटा
नैणो बैठी धारगले री बाईं हो मेरेया मेटा।।
बुरे हुदे गाड़ जंगलाती हो मेरिये नैणो।
खुस्सी लेंदे हाथा री दराटी हो मेरेया मेटा।।
चिट्टे दंद खोड़े रा दंदासा हो मेरिये नैणो।
कुनी पाया दंदडू रा हासी हो मेरेया मेटा।।

—मोतियों-से सफेद दाँत हैं और उन पर अखरोट का दंदासा लगा रखा है। मेरे मेट! नैणों-नैणों करके आवाज कौन लगा रहा है? नैणों तो धारगले की बावड़ी में बैठी हुई है।

जंगलात के गार्ड बहुत बुरे होते हैं। वे हाथ से दराँती छीन लेते हैं। मोतियों से सफेद दाँत हैं जिन पर अखरोट का दंदासा लगा रखा है (जिससे होंठ सुर्ख लाल हो गए हैं)। किसने मेरे दाँतों की हँसी उड़ाई है?

सुरा केरे मघडू जो छेड़े रोआ करी गल्ला लाणी हों।
ओ सज्जण महणु घरे आए रिझ घड़ोलुआ।
त्रुड़ा मंजोलू ढिल्ली बाण दुँही जिहणा कियाँ सोणा हो।
किल्हे-किल्हे मेरिए जानी दुँही जिहणा किया सोणा हो।
गल्ला लाणी गल्ला लाणी मेरी जानी।

—इस हृदयग्राही गीत में साजन के घर आने की बात है। सुर (सुरा) या मघडू (छोटा घड़ा) तैयार कर रो-रोकर बातें करनी हैं। साजन घर आए हैं। ए घड़ोलु जल्दी पककर तैयार हो जा। चारपाई टूटी हुई है, चारपाई का बाण ढीला है। इस पर दो जने कैसे सोएँगे! अकेले-अकेले कैसे सोएँगे! आपसी बातचीत भी करनी है।

त्रुटि ता मेरे ठिकणू री काछी बैरिया भाले हो
मुक्की ता मेरे खल्हडू री खरच बैरिया भाले हो
मुक्कु ता मेरे बिबडू रा पाणी बैरिया भाले हो
लिहसी जंघा जोत कियाँ लाणा बैरिया भाले हो

—कठिन जोत को लाँघने की मानसिकता इस गीत में है। दो साथी या प्रेमी जोत

लाँघने के लिए सफर करते हैं। जोत में एक-दूसरे का सहारा अवश्य चाहिए।

एक कहता है (या कहती है) कि मेरे छिकणु (पीठ के बोझे) की काछी (रस्सी) टूट गई है, मेरी प्रतीक्षा करना। मेरी खल्हडू (खाल का झोला) का अनाज समाप्त हो गया है, मेरी प्रतीक्षा करना। बीमारी से कमजोर मेरी टाँगें जोत कैसे लाँघ पाएँगी, वैरी! मेरी प्रतीक्षा करना।

ऊची-ऊची रेढ़ी

ऊची-ऊची रेढ़ी हो बंसरी बजांदा बो बैरिया।
बजदी सुणी मुरली हो रोई रोई भिजो बो बैरिया।।
हत्था तेरे छतरी हो जाति दा तू खतरी बो बैरिया।
घरे रे बहाने हो मिली करी जायाँ बो बैरिया।।
हत्था बो नरेलू हो चिलम तमाकू बो बैरिया।
अग्गी रे बहाने हो मिली करी जायाँ बो बैरिया।।
हत्था तेरे दराटी हो घरे तेरे चाची बो बैरिया।
धाए दे बहाने हो मिली करी जायाँ बो बैरिया।।

—यह गीत ऊँची पहाड़ी पर बाँसुरी बजाते हुए जाते प्रेमी को समर्पित है। ऊँची पहाड़ी पर प्रेमी बाँसुरी बजा रहा है। मुरली बजाते हुए सुनकर प्रेमिका रो-रोकर भीगी जा रही है। तुम्हारे हाथ में छतरी है, जाति के तुम खत्री हो, घर आने के बहाने मिलकर जाना। तुम्हारे हाथ में दराँती है, घर में तुम्हारी चाची है। घास के बहाने मिलकर जाना बैरी!

मैहले दियाँ जातराँ लोढ़ी रा पाणी।
किह्ला मत पींदा ढोला सराबिया।।
पहला डेरा लाया सरेई दे घराटा हो।
दूजा डेरा लाया चेरिये री कोठी हो।
त्रीजा डेरा लाणा लोढ़िये दे नाले हो।
सीसे दा गलास मोतिया सराब।
किह्ला मत पींदा ढोला सराबिया।।

—यह गीत मैहले की जातरा (धार्मिक यात्रा) या मेले पर जाने के निमित्त है। मैहले को जातरा है और वहाँ बहते लोढ़ी नाले का पानी है। इस पानी को तू अकेले मत पीना मेरे प्रियतम!

पहला डेरा (पड़ाव) सरेई के घराट में लगा, दूसरा डेरा चेरिये की कोठी में और तीसरा लोढ़ी के नाले में। शीशे का गिलास है, मोतिया शराब है। मेरे प्रियतम! इसे अकेले मत पीना।

पांगी के लोकगीत

पांगी में बिल्कुल नए लोकगीत सुनने को मिले। नए यानी कुछ ही समय पहले बने हुए। चंबा की तरह ये गीत सदियों पुराने नहीं हैं। साज-बाज भी ज्यादा प्रयोग में नहीं लाए जाते। बस एक बाँसुरी और एक ढोल। इन्हीं साजों पर लोग अपने-अपने ढंग से मदमस्त नाचते हैं। कोई सुव्यवस्थित या निश्चित स्टेप्स के साथ नृत्य नहीं होता।

एक ताजा गीत, जो हमने सुना, उसमें पांगी में तैनात सरकारी कर्मचारियों की मनोस्थिति का सुंदर चित्रण हुआ है :

पांगी दे बाबू उदास बाबू उदास
जहाजाँ दिया सैलाँ तोपंदे।
पांगी दे बाबू उदास बाबू उदास
बीबी बच्चे साथ तोपंदे।
पांगी दे बाबू उदास बाबू उदास
जीरा कनैं ठांगी तोपंदे।
पांगी दे बाबू उदास बाबू उदास
सात सोआ सीए तोपंदे।

—पांगी के बाबू उदास हैं। वे जहाज की सैर ढूँढ़ते हैं। अर्थात् घर जाने के लिए उतावले रहते हैं। पांगी के बाबू उदास हैं, वे अपनी बीवी, बच्चे साथ चाहते हैं। वे जीरा और ठांगी ढूँढ़ते हैं। वे उदास हैं, क्योंकि वे सात सौ सी.ए. चाहते हैं। (पांगी में कर्मचारियों को सी.ए. अर्थात् प्रतिपूर्ति भत्ता अधिक मिलता है)। इस गीत में सरकारी बाबुओं की मानसिकता का एक सटीक चित्रण किया गया है।

पांगी में मन रम जाने का एक गीत भी बहुत प्रचलित है :

पांगी दे देशा तिलमिल पाणी मेरा मन लगा पांगी हो
पांगी पक्की ठांगी लौहल पक्का जीरा मेरा मन लगा पांगी हो।
पांगी रे देशा भोटली रा नाचा।
मेरा मन लगा पांगी हो।

पांगी रे देशा भले-भले माहणू
मेरा मन लगा पांगी हो।
पांगी रे देशा एलौं शराबा
मेरा मन लगा पांगी हो।
पांगी दे देशा जहाजाँ दी सैलाँ
मेरा मन लागा पांगी हो।

—गीत में पांगी की विशेषताओं का गुणगान है। पांगी में मन रमता है क्योंकि वहाँ झिलमिल पानी है, ठांगी है, भोटली का नाच है, यहाँ के आदमी भले हैं। यहाँ स्थानीय शराब है और सबसे बड़ी बात जहाज की सैर उपलब्ध है। सर्दियों में पांगी के लिए विशेष हेलीकॉप्टर सेवा लगाई जाती है जिसका उल्लेख गीतों में बार-बार हुआ है।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के पहले दौरे की चर्चा पांगी के लोकगीतों में आज भी की जाती है। जब किलाड़ में श्रीमती इंदिरा गांधी आईं तो दो-दो फ्लाइटें इकट्ठी चलीं। इंदिरा गांधी के गले में ठांगी की माला डाली गई। पैरों में पांगी की पूलें डाली गईं। लोगों ने कुछ माँगे रखीं जो सभी 'पास' हो गईं। पहली माँग चैहणी से सुरंग निकालने की थी। दूसरी ग्रिफ की सड़क, तीसरी घर-घर में बिजली।

इंदिरा गांधी को धोखे से मारने की पंक्तियाँ भी बाद में जोड़ी गईं। किस प्रकार प्रधानमंत्री को धोखे से मारा, जिससे पब्लिक रोने लगी :

कठी चली हो कठी चली
दो-दो फ्लाइटाँ कठी चली।।
पहला टूरा हो, पहला टूरा
पांगी किलाड़ा पहला टूरा।।
गले पाई हो गले पाई
ठांगी केरी माता गले पाई।।
सजी गई हो सजी गई
ठांगी केरी माला सजी गई।।
पैरे लाए हो पैरे लाए
पांगी केरी पूलाँ पैरे लाए।।
सजी गए हो सजी गए
पांगी केरे पूलाँ सजी गए।।
पहली माँगा हो पहली माँगा
चैहणी के सुरंगा पहली माँगा।।

पास किया हो पास किया
चैहणी के सुरंगा पास किया।।
दूजी माँगा हो दूजी माँगा
ग्रिफ दी सड़का दूजी माँगा।।
तीजी माँगा हो तीजी माँगा
घर घर बिजली तीजी माँगा।।
पास किया हो पास. किया
घर घर बिजली पास किया।।
धोखे मारी हो धोखे मारी
इंदिरा गांधी धोखे मारी।।
रूणा लगी हो रूणा लगी
सारी बो पब्लिका रूणा लगी।।
लोहा लगे हो लोहा लगे
इन्हा बो गद्दारा लोहा लगे।।
धोखे मारी हो धोखे मारी
भारत माता धोखे मारी।।

'प्यारी भोटली' को संबोधित एक मधुर गीत भोटली (लाहुली कन्या) और मधु गार्ड की प्रेम-कथा का गीत है, जिसमें भोटली के लिए जोत पास पर एक सुंदर बँगला बनवाने, उसकी खिड़कियों में शीशे लगवाने की बात कही गई है। थकी टाँगों से जोत न लाँघकर पालकी मँगवाने का आश्वासन दिया जाता है। मधु गार्ड को भोटली के बिना संसार सूना लगता है तो भोटली प्रेमी के लिए अपने माँ-बाप को छोड़ देती है :

प्यारी भोटलिये जोता पर बँगलू पुआणा हो
मधु गाडा हो बँगलू जो ताकी लुआणी हो
प्यारी भोटलिये ताकी जो शीशे लुआणे हो।।
मधु गाडा हो लिसी जंगे जोता कियाँ लाणा हो
प्यारी भोटलिये जोता हेठ पालकी मगेला हो।।
प्यारी भोटलिए तेरे बिना मुलख नमाणा हो
मधु गाडा हो तेरे पिछे छडे अम्मा बापू हो।।

दीनेनाथा नीलमें व्योपारी हो

दीनेनाथ नीलमें व्योपारी हो दीनेनाथा हो।
अंदरूणी नीलमें री खाना हो दीनेनाथा हो।।
अम्माँ बापू खलड़ी खिलयादें हो दीनेनाथा हो।
मत कर नीलमें व्योपारा हो दीनेनाथा हो।
दीनेनाथा मंजणेंरी नेई हो दीनेनाथा हो।
खानपुर पैहरा लगोरा हो दीनेनाथा हो।
पंज किलो नीलम चुराया हो दीनेनाथा हो।
पुले पुर पैहरा लगोरा हो दीनेनाथा हो
पुले जोड़ी पुलिसा हो दीनेनाथा हो।
बुरा हुंदा नीलमें व्यापारा हो दीने नाथा हो।।

लोकगीत शुगली

लड़की : दुआरे अगे फुलेया गुलाबा हो।
देयाँ मेरा गल्ले रा जुबाबा हो।।
लड़का : कियाँ बो देणाँ गल्लेरा जुबाबा हो।
आज मेरी हालत खराबा हो।।
लड़की : जोताँ पर बदले री लैसा हो।
प्यारू मेरा दूर परदेसा हो।।
लड़का : किजो बो देंदी प्यारीये तू लेयेरा हो।
छपी बो छपी फोटो मेरी हेरा हो।।
लड़की : जियाँ सुका सपड़ेरा घासा हो।
तियाँ सुका जिंदड़िरा मासा हो।।
लड़का : दिले हो दिले गम मत केरा हो।
गमे हो गमे होले गम गोड़े हो।।
लड़की : नाले बों नाले उड़रिये भँवीरी हो।
तेरे पिछे पकड़ी फकीरी हो।।
लड़का : नाले बो नाले उड़रिये कागा हो।
मेरा कि कसूर तेरे भागा हो।।
लड़की : नाले नाले कड़ुआ पतीसा हो।
क्या तेरा नाम जगदीसा हो।।

लड़का : निकी बो निकी बरखा लगोरी हो।
प्यारी मेरी छतरी तड़ोरी हो।।

लड़की : हाथे लाई सोने री चैना हो।
तेरा मेरा दिले रा परेमा हो।।

लड़का : सुकी बो सपड़ा ता सैल्ली डाली हो।
तैं ताँ मेरी छाती छड़ी जाली हो।।

लड़की : चिट्ठी लिखणी ते पैन छोटा हो।
यारी रखणी ते दिल मोटा हो।।

लड़का : जिस बो नाले कैएमलि पकोरी हो।
उस बो नाले भाल रख मेरी हो।।

लड़की : बंदा मेरा शिमले वकीला हो।
तेरा मेरा झगड़ा तसीला हो।।

लड़का : जोता पुर पछी लेई ढेली हो।
आगे परमात्मा बेली हो।।

बुस्रींग का गीत

थो वा ला थो सुम थो वा ला थो सुम
दे दे थो ना जंग भे दे दे थो ना जंग।
यर कोन चोग ड़े हुर मो यर कोन चोग ड़े हुर मो
दे दे थो ना जंग भे, दे दे थो ना जंग।
थो वा ला थो सुम थो वा ला थो सुम
दे दे थो ना जंग भे, दे दे थो ना जंग।
मा खांग ड़े केस ताग मा खांग ड़े केस ताग
दे दे थो ना जग भे, दे दे थो ना जंग।
थो वा ला थो सुम थो वाला थो सुम
दे दे थो ना जंग भे, दे दे थो ना जग।
मा जिंग ड़े युर गो मा जिंग ड़े युर गो
दे दे यो ना जंग भे, दे दे थो ना जंग।
मा वा ला मा सुम मा वा ला मा सुम
दे दे मा ना जंग भे, दे दे मा ना जंग।
मा खांग ड़े थेम पा मा खांग ड़े थेम पा
दे दे मा ना जग भे, दे दे मा ना जंग।
मा वाला मा सुम मा वाला मा सुम
दे दे मा ना जंग भे, दे दे मा ना जंग।
बु स्रींग ड़े मीन मा बुस्रींग ड़े मीन मा
दे दे मा ना जंग भे, दे दे मा ना जग।
मा वा ला मा सुम मा वा ला मा सुम
दे दे मा ना जग भे, दे दे मा ना जंग।
मा जिंग ड़े लोन दब मा जिंग ड़े लोन दब
दे दे मा ना जग भे, दे दे मा ना जग।
बोम पा ला बोम सुम बोम पा ला बोम सुम
दे दे बोस ना जग भे, दे दे बोम ना जंग।
मा खांग ड़े का वा मा खांग ड़े का वा
दे दे बोम ना जग भे, दे दे बोम ना जग।

बोम पा ला बोम सुम बोम पा ला बोम सुम
दे दे बोम ना जग भे, दे दे बीम ना जंग।
बुस्रींग ड़े पुंग पा बुस्रींग ड़े पुंग पा
दे दे बोम ना जग भे, दे दे बोम ना जग।
बोम पा ला बोम सुम बोम पा ला बोम सुम
दे दे बोम ना जंग भे, दे दे बोम ना जग।
गोख्यी ड़े छे वा गोख्यी ड़े छे वा
दे दे बोम ना जंग भे, दे दे बोम ना जग।
ठा वा ला ठा सुम ठा वा ला ठा सुम।

—यह गीत तोद घाटी की सभी लड़कियाँ कुँवारी रहने पर उनकी माताओं द्वारा बनाया गया है। इस गीत के बाद मेले में अन्य गाँवों के लड़कों से उनकी शादियाँ होने लगीं।

घंटाड़ गोम्पा का नव निर्माण

ए तांदी घुषाड़े री साला बीगूड़ी ओ
ए तांदी घुषाड़ा ए ढुणा चूणा कीती ओ
ए लांबा गूरु ए शदी कारी आणी ओ
ए लांबा गूरु ए पोथी ना हेरी ओ
ए पोथी अंदूरा ए गूरू घंटाड़ा डोश्रे ओ
ए गूरु घंटाड़ा ए नवें गोम्पा मगूँदे ओ
ए त्रिजी कोठी ए ढुणा चूणा कीती ओ
ए त्रिजी लंभूरा ए केलांगा कोठी ओ
ए नेगी हरी चाँदा ए पूछेणे लागी ओ
ए त्रिजी लंभूरा ए किजी कामे आए ओ
ए त्रिजी लंभूरा ए जूबाबा दीती ओ
ए तांदी घुषाड़े री साला बीगूड़ी ओ
ए गूरु घंटाड़े री डोश्रा ना होये ओ
ए गूरु घंटाड़ा ए नवें गोम्पा मगूँदे ओ
ए लोड़ी सैबा ए बिणी ब्रीजा लोड़ी ओ
ए नेगी हरी चांदा कागूता लीखी ओ
एयो कगूता ए ट्रशी तांबेला ताएँ ओ
ए जोड़ी माणू ए लादूके नू त्यारी ओ

ए जोड़ी माणू ए लादूका भेजी ओ
ए जोड़ी माणू ए ट्रशी तांबेला घारे ओ
ए गूरु ट्रशी तांबेला पूछेणे लागी ओ
ए जोड़ी माणू ए किजी कामे आए ओ
एयो कगूता ए कगूते री ताएँ आए ओ
एयो कगूता ए हरी चाँदे लिखी ओ
ए गूरु ट्रशी तांबेला लवे जोगू त्यारी ओ
ए जोड़ी जबाशी ए संगेयाना त्यारी ओ
ए हांडी फेरी ए कोलोंगा कोठी ओ
ए शेमा ठकूरा ए जलाकूंदे आए ओ
ए गूरु ट्रशी तांबेला घंटाड़े आए ओ
ए गूरु ट्रशी तांबेला हूकूमा दीनी ओ
ए गूरु घंटाड़े री नवें गोम्पा त्यारी ओ
ए जिमीं भूमि ए हरे द्रूबा फेरी ओ
ए तांदी घुषाड़े री साला फेरी ओ
ए तांदी घुषाड़ा ए शागूणा कीती ओ।

—इस गीत में घंटाड़ गोम्पा या गुरु घंटाल गोम्पा के नवनिर्माण की कथा कही गई है।

कोलोड़ ठाकुर का विवाह

कोलोंगे री ठकूरा नवेंया उमूरा
कोलोंगे री ठकूरा नवें बारा मगूँदे
ठारी ना बीणी लोटे री ग्रांवें
जोड़ी ए माणू बरा मांगुणे अये जी
हांडी ए फेरी लोटे री ग्राँवें
जोड़ी ए माणू ज्ञमाजो रे घारे
सैणा ए ज्ञमाजो आदूरे राखी
सैणा ए ज्ञमाजो पूछूणे लागी
जोड़ी ए माणू किजी कामे आए
जिया मेरे सैबा बरा मांगुणे अये जी
कोलोंगे री ठकूरा नवेंया उमूरा
कोलोंगे री ठकूरा बरा मांगुणे अये जी

तेंढूणे दीवा बरा मांगुणे अये जी
दीवा जगाटी बरा मांगुणे अये जी
सैणा ज्ञमाजो समायोणी पेये जी
समायोणी पेये मने राजी भुये जी
सैणा ए ज्ञमाजो शागूणा किया जी
त्रिजी ओ बरूषे ब्याहोटु कीती
दीवा जगाटी ए रोलूणे लागी जी
माई बाबू शिखा बूधी दीती
रोये मातू दीवा सूठारी ब्याहये
कोलोंगे री ठारी सूठारी बोले
बसो ए जगाटी कोलोंगे री ठारी।

—इस गीत में कोलोड़ ठाकुर के विवाह का वर्णन है।

ठाकुर-गद्दी विवाह

ए तौंसे री ध्याड़ी तूंदेरी पोरी ए
ए तीलोका नाथेरी दरूशाने आई ए
ए लोको दूनीया ए जातूरे आई ए
ए तौंसे री ध्याड़ी तिलोकूनाथे जात्रे ए
ए घीवे साँजोटी ए तिलोकूनाथा चाढ़ी ए
ए शावे ना कोरो ए शवे डांडौता कीती ए
ए बायाड़ी पधूरे द्रुमुसू ना छेड़ी ए
ए नौवे पत्ता नंगाड़ा पताड़ा घुमेला ए
ए गंदेटू पूतूरा झागूड़ा कीती ए
ए बेढ़े अंदूरा झागूड़ा कीती ए
ए तूमारा ए मतूमारे सामाणा लड़ूंदे ए
ए तूंदेरी राणा ए चंबे जोगू त्यारी ए
ए अंदूरा निरोड़ा ठालूणे लागी ए
ए तौंसे री ध्याड़ी ए पिता पाणी रे डारे ए
ए शैरी ना पांदे दो गाला कराणा ए।

—इस गीत में त्रिलोकीनाथ जातरा के अवसर पर साजिराम ठाकुर के विवाह का वर्णन है।

गुंधल ठाकुर द्वारा पलायन

गूंधूले री ठकूरा ए बिबू ताना पेया ओ
एकी बिबूता ए राजे री खरी ओ
ए दूजी बिबूता ए रैती रे ताएँ
ए त्रिजी बिबूता ए बेढ़े आंदूरे
ए बेढ़े अंदूरा ए चोचो रे खरी ए
ए गुंधूले री ठकूरा ए परूदेशा त्यारी
ए गुंधूले री ठकूरा ए लदूके जो त्यारी
एकी ना ध्याड़ी ए दलूंगे री पधूरे
ए दूजी ना ध्याड़ी ए केलांगा कोठी
ए त्रीजी ना ध्याड़ी ए जिसूपे री कोठी
ए चौथी ना ध्याड़ी ए पड़ासेवा पहूँचे
ए पाँजू ना ध्याड़ी ए जोता लाँघा ए
ए बरूलाचा जोता ए टपी कारी गेये
ए हाँडी ना फेरी ए लदूके ना पहूँचे
ए लदूके री राजा ए पूछूणे लागी
ए पखाला ना माणू ए कुना मुलुके आए
ए जिया मेरे सैबा ए देशा फेरूणे आए
ए लदूके री राजा ए गिली फीरी पूछे
ए सचा बोले माणू ए तेणी जाती क्याड़े
ए मेंढूणे जती सैबा हेठा नीचारे
ए सचा बोले माणू ए तेणी जाती क्याड़े
ए मेंढूण जती सैबा गुंधूले री राणा
ए गुंधूले री राणा ए कीजी कामे आए
ए जिया मेरे सैबा ए राजे री खरी ए
ए दूजी बिबूता ए रैती रे ताएँ
ए त्रिजी बिबूता ए बेढ़े आंदूरे
ए जिया मेरे सैबा ए देशा फेरूणे आए
ए लदूके री राजा ए शदी कारी लेये
ए बेढ़े अंदूरा ए दोये गाला कराणा
ए गुंधूले री ठकूरा ए घरे जोगू जाणा।

—गुंधल के ठाकुर के लद्दाख पलायन और वापसी पर आधारित यह गीत लाहौल में गाया जाता है।

राघौ बंधुओं की मृत्यु

ए खबूला गायी बणेयाना छूटी
ए बिणी-बिणी चौंरा बणेयाना छूटी
ए निमूड़ा सरूगा बादूड़ा फेरी
ए पापी ए सरूगा गूड़ंदे लागी
ए पापी ए अमूरा हींवाणी लागी
ए रघूवा भगूमाना भाई रे जोड़े
ए रघूवा भगूमाना गाई रे पेके
ए बिणी-बीणी चौंरा बणेयाना छूटी
ए बाबू बुद्धू ठालूणे लागी
ए रघूवा भगूमाना मनूणेरी ना ए
ए सैंजेरी लाड़ी ठालूणे लागी
ए रघूवा भगूमाना मनूणेरी ना ए
ए ग्राईं रे सैणा ठालूणे लागी
ए रघूवा भगूमाना मनूणेरी ना ए
ए देया ओ लाड़ी बिणी जूटा पूला
ए रघूवा भगूमाना गाई रे पेके
ए आणी रे रवाड़े तामाकू पीए
ए दासू रे गोटे गाई बाशूंदे लागी
ए सारी ए परूबाता द्रूणा त्रूटी आए
ए रघूवा भगूमाना हींवाणी गेई
ए द्वारा अगोरू चूली रे बूटे
ए कागा पंडीता बाशूंदे लागी
ए कागा पंडीता बूरी खाबुरा शूणी
ए बाबू बुद्धू बूरी खाबुरा शूणी
ए सैंजेरी लाड़ी रोलूणे लागी
ए ग्राईं किरातिंगा कने-काने ढुणूंदे
ए रघूवा भगूमाना हींवाणी गेई।

—यह गीत, राघव और भगूमान दो भाइयों के बारे में है जो माता-पिता और सयानों के लाख समझाने पर भी भीषण हिमपात में पशुओं को ढूँढ़ने वन में चले गए और हिमस्खलन में दबकर मर गए।

एक किन्नर शोक-गीत 'छण्टयामिक गीथड़'

रोंढ़ो तोइयाँ, खोल्लो दुवारे।
रोंढ़ो तोइयाँ पशिङ्प रागा।
रोंढ़ो तोइयाँ गोरा गोरशिरा।
दई था गिरे रोमाराजा चिट्ठी।
किथा चालराई अङ्देनची।
जे स्कीय।
पे बीते दो फाने जोगङ्मया।
फाने जुगे रा शु किरपेनम्या।
किथा चालरई देन दी जेस्की।
फिरने शुरे खाने गोठङ्।
दई था गिरे रोमराजा चिट्ठी।

—ड्योढ़ी, दरवाजा, दीवार, घर-बार सभी सुन और सह रहे हैं। यह न सोचना यह मेरे ऊपर ही बिजली गिरी। यह शोक-गीत मृत्यु के बाद क्रिया-कर्म में गाया जाता है।

छितकुल माथी-माता साहिबा

खागो दरबारो, योच बतोले खुनड़।
योच बतोले खुनड़।।
योच बतोले खुनड़, थुच बतोले याम छाड़।
थुच बतो ले याम छाड़।।
थुच बतो ले याम छाड़, माता जानयामु।
माता जानया तो।।
जी माता देवी, गीसीब गीसीब याशो।
गीसीब गीसीब याशो।।
गीसीब गीसीब याशो, बायड़ देन हिलया दो।
बायड़ू देन हिलया दो।।

बायड़ू देन हिलया दो, शीरड़ो में बारो।
शीरड़ो में ली बारो, दानड़ थोमया तोश।
दानड़ थोमया तोश।।
दानड़ थोमया तोश, सोतीड़ पुरया तोश।
सोतीड़ पुरया तोश।।
सोतीड़ पुरया तोक, माईलयो मुखड़सी।
माईलयो मुखड़सी।।
माता साबीस लोतोश, आड़ लागदार कामदार।
आड़ लागदार कामदार।।
आड़ लागदार कामदार, माली शे माथास।
माली शे माथास।।
माली शे माथास, ग बाइरड़ दवा तौक।
ग बाइरड़ दवा तौक।।
ग बाइरड़ दवा तौक, ई हुक्म ली के तौक।
ई हुक्म ली के तौक।।
बाइरड़ ची तवा चोस, शुम जीताकू छाड़ास।
शुभ नीजाकू छाड़ास।।
छेरन दो लागी, माता साबु माली।
माता साबु माली।।
माता साबीस लोतोश, ग बनडुक बीतौक।
ग बनडुक बीतौक।।
ग बनडुक बीतौक, दारयोश कामरू।
दारयोश कामरू।।
ओरजी ची लानो, शुभ नीजाकु छाड़ा।
शुम नीजाकु छाड़ा।।
शुम नीजाकीस लोतो की बनडुक था बीज।
की बनडुक था बीज।।
की बनडुक था बीज, पीरड़ दवादोटू लोशो।
पीरड़ दवादोदू लोशो।।
पीरड़ दवादो दु लोशो, मोने न संगला।
मोने न संगला।।
परेग नाई माश कोचोश, जी माता देबी।

जी माता देबी।।
माता देबीस लोतोश, आड़ राई तास पोरजा।
आड़ राई तास पोरजा।।
आड़ राई तास पोरजा, कादर फिक्र जाम मा ज्ञा।
कादर फिक्र जाम मा ज्ञा।।
कादर फिक्र जाम मा ज्ञा, सोतीड़ गस पुरया तौक।
सोतीड़ गस पुरया तौक।।
सोतीड़ गस पुरया तौक, पीरंग गस थोमया तौक।
पीरंग गस थोमया तौक।।
दो शौड़ शौड़ बनना, राक छाम माटियू देन।
राक छाम माटियू देन।।
दो शौड़ शौड़ बनना, सीला सो बोसे रीड़।
सीला सो बोसे रीड़।।
दोआ शौड़ शौड़, बनना दारयोश कामरू।
दारयोश कामरू।।
दारयोश कामरू मोने न संगला।
मोने न संगला।।

—छितकुल गाँव की देवी माथी के पति बद्रीनाथ माने जाते हैं। माता देवी ने कामरू में महामारी से लोगों को छुटकारा दिलाया।

बसोआ (चंबा)

सभनाँ ता सभनाँ जो सादे आए,
हो हँऊ ता बचारी बिना सादे है।
आया बसोआ माए पंजे-सत्ते
मेरे बापू जो सादे भेजे हो।
बापू ता तेरा कूड़िए विरध स्याणा,
हो उप्पुए उणा उप्पू जाणा हो।
आया बसोआ माए नेड़े-भेड़े,
मेरे भाईए जो सादे भेजे हो।
भाईया ता तेरा चंबे चाकरीया,
हो अप्पू ये ईणा अप्पू जाणा हो।
अम्माँ वो मेरिए निदरदिए,
तिजो मेरी नरद न आई हो।
अम्माँ वो मेरिए निदरदिए,
मेरे भाइए जो सादे भेजे हो।
भाऊआ ता तेरा कुड़िए निक्का याणा,
हो अप्पूए ईणा अप्पू जाणा हो।
पिंदड़ी ता पिंदड़ी अम्मा अप्पू खायाँ,
हो पिंदड़ी रे पठ्ठे मिंजो भेजे हो।
गुड़-गुड़ाणी अम्मा अप्पू पिएँ,
हो गुड़े रा पाणी मिंजो भेजे हो।

बारामासा

प्रथम चिंता इक हरि तेरे नाम, प्रभु तेरे नाम की,
दूसरे उपजेगी और चिंता मेरे श्याम की।
आया महिना चैत, मालती हाथ, बास न औंदी,
पिया गया परदेस, सगन मनावंदी।

आया महिना बसाख, अंगण पक्की दाख, जीवड़ा उदास, जिवड़े नू डोलदी,
मन बिच करदी विचार, मुख ते ना बोलदी।
आया महिना जेठ, अंबुए दे हेठ, पंखुआ मैं झोलदी,
पिया गया परदेस, जिवड़े नू डोलदी।
आया महिना हाड़, अंगण खड़ी नार, हत्थे तलवार, देख्याँ किसे मारदी,
जोबन भरया सरीर, देख्याँ किसे मारदी।
आया महिना सौज, मिट्ठी-मिट्ठी पौण, पींग्हा मैं पावंदी,
सब सखीयाँ दे घर कंत, मैं ना पिया पाउंदी।
आया महिना भादों, घनीयर घोर, बिजली दा जोर, लसक डरावणी,
पिया बिन होंदी सूनी सेज डरावणी।
आया महिना अस्सू, सुण मेरी सस्सू, पुत तेरा घरे नाहीं,
जिस संग करदी संगार, ओ ही पिया घर नाहीं।
आया महिना कत्तक, दयाली मैं पुजदी, कि गिट्ठा मैं बालदी,
पिया गए परदेस, मैं घड़ी-पल न्यूहालदीं।
आया महिना पोह, कि पाले पौंदे चौगुणे, कि चनण गिट्ठा बालदी,
सेकेंगा सोहणा जेहा स्याम, कि हवा ते बचावंदी।
आया महिना माघ, पालेंया दे नाग, कि गिट्ठा मैं पूजदी,
पिया गया परदेस कि सगन मैं पूजदी।
आया महिना फौगण, पिया बिच मगन कि फगुआ मैं खेलदी,
उड़दे अबीर-गुलाल, कि पंजो रंग डोलदी।

काँगड़ा

चैत्र मास का गीत (ढोलरू) काँगड़ा

पहला ता ना लैणा नारायण दा
जिन्ही दुनिया बसाई ए
दुआ ता ना लैणा माई-बाप दा
जिन्हा दस्या संसार ए
तिजा ता नाँ लेइए गुरु आपणा
झड़हदे काया दे पाप नाँ
सब्बे ता ऋतु नें रामा फिरि रहिया
मानस फिरि ना औए नाँ

आया ता चैत वैशाख
जे कोई सुणैं भाग मान नाँ
इंदड़ा गिया घर अप्पणे
आई सो दी बहार नाँ
तुलसी डाली ता गोरिए ना लेइए
तुलसी जाति दी बमनेटी
मरूआ डाली ता गोरिए ना लेइए
मरूआ जाति दा कदरेटा ए
कौल्लेह् दे फुल्ले ता गोरिए न लेइए
कौल्ला फुल्ल ठौकरें प्यारा
सीता चल्ली ए पाणिए
हत्थें लिया सीस गढ़ोलू
पुच्छणा लेई राजे राम चंदे
सीता रहियो बढ़दी बहार।

बारामासा (काँगड़ा)

चैत न तू जाई ढोला,
बाँदी ऐ बहार,
बसाख सै दुप्पटे मैं सींदी वे हाँ।
जेठ न तू जाई ढोला धुप्पाँ जोरे-जोर,
हाड़े च हाँखीं दुक्खण तेरियाँ
सौण न तू जायाँ ढोला बद्दल घनघोर
भाद्रूऐं रातीं न्हेरियाँ।

सूज न तू जाई ढोला पितर सराध,
कात्ती बिच बलन दयालियाँ वे हाँ।
मग्घर न तू जाई ढोला ल्हेफ भराँ,
पौहे बिच सेजाँ बच्छानियाँ वे हाँ।
माघ न तू जाई ढौला लोहड़िया तिहार,
फौगणे च नाराँ खेलण होलियाँ।

बारामासा (काँगड़ा)

बसाख बसंबर वासुदेव, फुल वामन हरमन हारे।

पद्मनाभ परमेसर सिमरूँ, परसराम बलकारे जी।।
हरि नाम हृदयधारी लीजो जब लगे प्रभु के सरनम्
हरिभक्त अरे हरि भजन बिना,
तुद बिन भवसागर किस विध तरनम्।।

जेठ जपो जगदीश सदा प्रभु
यम के त्रास निवरणम्।
नाम लेत सब पाप कटत हैं
हुण क्या गाफल करणम्।
भक्त बच्छल भगबान भजो
सब संकट दोष निवरणम्।
हरि भक्त अरे हरि भजन बिना।।

हाड़ हरि का नाम जपो
पुन हृदय हरि जी धारो
अलख निरंजन निराकार नरसिंह
ध्यान बिच धारो जी
भक्त प्रह्लाद की मुक्ति करे
जब लगे प्रभु के चरणम्।
हरि भक्त अरे हरि भजन बिना।।

सौण श्याम सलोनों सिमरो
सुभ जुग के सुखदाई।
मोर मुकुट पट चीर बराजे
बलिभद्र के भाई जी।
मुरली के घनघोर सुनी
मृग, पंछी छिपी रहे हरि चरणम्।
हरि भक्त अरे हरि भजन बिना।।

छहमासा (काँगड़ा)

चैत्र दे म्हीने श्यामा,
मैं ताँ चैत्र फुल्ल चुगनियाँ।
हत्थ छाबड़ी गलें फुल्ल माला,
मैं हरी जी दा नाँ ध्यानियाँ।

बसाख दे म्हीने श्यामा,

मैं बसाखड़ी नुहाणा जानियाँ।
हत्थ गढ़ूआ मूँहडे पर धोती,
मैं हरी जी दा ना ध्यानियाँ।
जेठ दे म्हीने श्यामा,
मैं ताँ जेठे ते झूंड नी पानियाँ।
मेरा हस्सणू-खेलणू बड़ा हँसोला,
मैं झूंड नी पानियाँ।
हाड़ दे म्हीने श्यामा,
दोयो खिड़ी रईयाँ चंबे डालियाँ।
इक उआर खड़ी ऐ दूई पार खड़ी ऐ,
दोयो राम का नाँ ध्यांदियाँ।
सौण दे म्हीने श्यामा,
मैं ताँ भूरी म्हैस मंगानियाँ,
मेरी भूरि मैंह् बड़ी ऐ दोहदण,
किसीए जो चूरी नी पानियाँ।
भादूँ म्हीने श्यामा,
मैं ता मिठड़ा दही जमानियाँ।
मेरे श्याम चले परदेसाँ जो,
मैं ताँ जांदेयाँ सौगण मनानियाँ।

सतमासा (काँगड़ा)

चढ़िया म्हीना चैत्र, चैत्र फुल लाया जी,
जिन्हाँ दे कंत परदेस, उन्हाँ नी लाया जी।
चढ़िया म्हीना बसाख, अंगणे पक्की दाख,
दाखाँ प्यारियाँ पक्कियाँ,
जिन्हाँ दे कंत परदेस उन्हाँ नी चक्खियाँ।
चढ़िया म्हीना जेठ, जेठे ज्वाला जगमगी,
सुकी जांदे नदियाँ दे नीर,
सुकण सरीर दर्द नमाणी ऐ।
चढ़िया म्हीना हाड़, हंडी पुकारे,
जोबन चढ़िया
हत्थें तलुआर कुसी मत मारदी।
चढ़िया म्हीना सौण, सौहणें रहण धनी,

सुन्नी थी हरी जी दी सेज, राधा तड़फदी।
चढ़िया म्हीना काला,
कि कालियाँ रातीं न्हेरियाँ।
जिन्हा दे कंत परदेस,
उन्हाँ सोचाँ घेरियाँ।
चढ़िया म्हीना अस्सु,
सुणिआँ मेरिए ससु।
मैं करदी सोलह संगार,
सीस गुंदाया।

होली गीत (काँगड़ा)

जे मैं पूजी चलियाँ
ससु नुह्आँ दोआँ
जे मैं पूजी चलियाँ
दराणी-जठाणी दोआँ
राले वालियाँ बंगाँ
लई बणजारा आया
तिन्ने ससे सुहागणी
चूड़ा चढ़ाया
तिन्ना नणदा लड़ीकिएँ
घरे बिच झगड़ा पाया
नणदे गाल देआँ गाल
लगे तेरे वीरे पाया
मैं घुमाई मेरिए नणदे।।

(2)

काह्ना न डारयो रे
मुझ पै रंग जाने दे।
इतणा ढिठाई मोंह सों
घानाई न किया कर
सगरी चुनरी मोरी
रंग में कियो भंग
काह्ना न डारयो रे

मुझ पै रंग जाने दे।

बुधीश्चंद्र तुम ढीठ निडर हो,
बरजो न सईयाँ करवट जाहूँ
सगरी चुनरी मोरी रंग
रंग में कियो भंग
काह्ना न डारयो रे
मुझ पै रंग जाने दे।

(3)

रंग भर ले आई
केसर रंग ले आई
ग्वारन ब्रज में रे
रंग भर ले आई।

जसाधो बरजो कह्नैया लाला
तैं मोरी गेंद चुराई
ग्वारन रंग भर ले आई।

(4)

चैत्र महीने होली जे आई
मैं ताँ किस संग खेलाँ रे होली
मेरे श्यामा घरें नी आए जी
मैं ताँ किस संग खेलाँ रे होली।

तुरही वे नगारा लई गले बिच पाया
तुरहियाँ नरसिंगे कन्ने लई आया
हुण असाँ खेलणी होली-होली।
मैं ताँ किस संग खेलाँ रे होली।।

कहाँ से आए मेरे काह्न-कन्हैया
मेरे छैला…
कहाँ से आई राधा प्यारी
मेरे रामा…

मैं ताँ किस संग खेलाँ रे होली
बागाँ ते आया मेरा काह्न-कन्हैया
महलाँ ते आई राधा प्यारी
अनी छैला…

भरी पिचकारी मेरे मुँह पै मारी
बेसर भिजी गई सारी।
मैं ताँ किस संग खेलाँ रे होली।।

(5)

आ श्यामा!
तेरे ते रंग पाँ होलियाँ दा
बदला मैं अज लेआँ।
मोहन श्याम मुरारी ऐ
भरी पिचकारी श्यामा मारी ऐ
ओहयो जेहा रंग स्हाँझो लाणा
होलियाँ दा बदला मैं अज लेआँ
सब सखियाँ मिली सारी ऐ
राधा रुक्मण प्यारी ऐ
लुट-लुट मक्खण अज खाणा
होलियाँ दा बदला अज मैं लेआँ।
आ श्यामा तेरे ते रंग पाँ।।

(6)

फूले बसंत पिया घर नाहीं
मैं किस संग खेलूँगी होरी।
पहला बसंत सदा सिव कहिए,
पारबतिया रंग ला लै,
अज पिया अपणे को मना लै।
होर बसंत श्री कृष्ण कहिए,
रुकमणिया रंग ला लै,
अज पिया अपणे को मना लै।
होर बसंत श्री रामचंद्र कहिए,
सीता गोरी रंग ला लै,
अज पिया अपणे की मना लै।
होर बसंत गणपति कहिए
रिद्धि-सिद्धि रंग ला लै
अज पिया अपणे को मना लै।

भेंट (काँगड़ा)

किला काँगड़ा कालीधार, मैया जी तैं बैकुंठ बणाया।
किनी ताँ मैया तेरा भवन बणाया, किनी ताँ कलस चढ़ाया।
पंजें पांडवें मैया भवन बणाया, कृष्णे जे कलस चढ़ाया।
नंगी-नंगी पैरी मैया अकबर आया, सूने दा छत्तर चढ़ाया।
सूहा-सूहा सालू मैया सीस विराजे, गोटयाँ बणत बधाई।
सूहा-सूहा चोला मैया अंग विराजे, तारेयाँ बणत बणाई।
मत्थे मेरे मैया बिंदली विराजे, सुरमें बणत बणाई।
नक्के तेरे मैया बेसर विराजे, पतरूयें झलमल लाई।
पैरे तेरे मैया झाँझराँ विराजें, बिछुएँ रणझुण लाई।
हत्थे रकेबी मैया जलेबी, तिजो भोग लगाया।
ध्यानू भगत मैया तेरा जस गावे चरणे सीस नवाया।
मैया जी तैं बैकुंठ बणाया।

बारा ताँ बरियाँ (काँगड़ा क्षेत्र)

बारा ताँ बरियाँ सस्सू ब्याहे कीते होइयाँ,
पुत्तर तेरा नजरी नी आया ऐ?
काहली न होयाँ नूहें बौरी न होयाँ,
पुत्तर मेरा बागाँ जो आया ऐ।
कुथु बछाँ सस्सू कंदे दे पलंगे,
कुथु बछाँ अपणी मंजी ऐ?
ओबरिया बछायाँ नूहें कंदे दे पलंगे,
उच्चिया पसारी तेरी मंजी ऐ।
अग्गे किआँ दिंदी सस्सू सुक्के-मुक्के टुकड़े,
अज्ज किआँ ध्योये दी चूरी ऐ?
अग्गैं ताँ था नूहें सौहरे दा खट्टेया,
अज्ज तेरे कंदे दा खट्टेया ऐ।

पहला ग्राह पाया राजे दिया बेटिया,
ओठाँ जो तिरमिरी आई ऐ।
दूजा ग्राह पाया राजे दिया बेटिया,
राजे दी बेटी गेई मरी ऐ।
बारें ताँ बरें माए! मैं घरैं आया,
नूह तेरी नजरी नी आई ऐ!
निंद्रा दी काह्ली पुत्तरा! चिंता दी मारी,
राजे दी बेटी गेई सेई ऐ।
उठदा कंद जी बागाँ जो जांदा,
तूते दी छिटी ल्याया बड्डी ऐ।
इक छिटी मारी कंदें दूई छिटीं गूरी,
राजे दी बेटी न्यों जागी ऐ।
दूई छिटी मारी कंदे त्री छिटी गूरी,
राजे दी बेटी न्यों जागी ऐ।
चुकेया ऐ हत्थ कंदे मुहें पर फेरया,
राजे दी बेटी रेही ऐ मरी ऐ।
चन्नणा कटाया कंदे चिखिया चणाई,
नारी जो दाग दुआया ऐ।
हड्डियाँ बटोलियाँ कंदे बटुए च पाईयाँ,
गंगा-जमना रढाईयाँ ऐ।
कन्न ताँ छेदे कने मुद्राँ जे पाईयाँ,
कीता ऐ जोगियाँ दो भेस ऐ।
मरि-मरि जायाँ माए मुंढा दिए बैरनी,
मूइया जो मार दुआई ऐ।
जोगी मैं होया माए बैरागी मैं होया,
तेरे मैं देसे माए कदि बी नी औंगा,
मूइया जो मार दुआई ऐ।

—यह एक मर्मस्पर्शी गीत है। बारह वर्ष बाद पुत्र घर आ रहा है। माँ ईर्ष्यावश बहू को मीठी चूरी में जहर डाल मार देती है। पुत्र घर पहुँच पत्नी को ढूँढ़ता है। माँ उसे बताती है कि बहू सो गई है। पुत्र शहतूत की सोटी से उसे सोई समझ मारता है। वास्तविकता जानने पर वह जोगी हो जाता है।

रूपांतर

बारही बरसी मैं घर आया
मैं घर आया,
नजरी नी आई नूँः तेरी।
नजरी नी आई नूँः तेरी।
चुकिया घड़ोलू सिरे पर धरेया
पाणिए लेओणे गई ओ।
पाणिए लेओणे गई ओ पुतरा,
पाणिए लेओणे गई ओ।
इक्की बाँई तोपी अम्मा, दुइया बाँई तोपी,
मैं हंडी-हंडी तोपी, नजरी नी आई नूँः तेरी।
नजरी नी आई नूँः तेरी ओ अम्माँ,
नजरी नी आई नूँः तेरी।
इक्की हत्थे द्राटी ओ दूए हत्थे रस्सी,
हो दूए हत्थे रस्सी, पारलिया धारा गई ओ।
घाए लेओणे गई ओ पुतरा,
पारलिया धारा गई ओ।
इक्की धारे तोपी अम्मा दुइया धारे तोपी,
मैं हंडी-हंडी तोपी, नजरी नी आई नूँः तेरी।
नजरी नी आई नूँः तेरी ओ अम्मा,
नजरी नी आई नूँः तेरी।
इक्की हत्थे डोरी ओ दूए हत्थे डोरी,
सिरे गुंदाणा गई ओ।
नाईयाँ दे बेहड़े गई ओ पुतरा,
नाईयाँ दे बेहड़े गई ओ।
इक्की बेहड़े तोपी दूए बेहड़े तोपी।
मैं हंडी-हंडी तोपी, नजरी नी आई नूँः तेरी,
नजरी नी आई नूँः तेरी अम्मा,
नजरी नी आई नूँः तेरी।
हत्था लेया चाबियाँ दा गुच्छा,
कोठे उपर गई ओ।
नत्थाँ जो पाणाँ गई ओ पुतरा,

कोठे ऊपर गई ओ।
इक्की कोठे तोपी अम्मा दूए कोठे तोपी,
मैं हंडी-हंडी तोपी, नजरी नी आई नूँः तेरी।
नजरी ता आई लाश ओसदी ओ अम्मा,
नजरी ता आई लाश ओसदी।
दुःख मत करता, तू गम मत करदा,
राजे दी बेटी बियाःहणी,
राजे दी बेटी बियाःहणी ओ पुतरा,
राजे दी बेटी बियाःहणी।
तैं बुरी कित्ती अम्मा, तैं बुरी कित्ती ओ,
हंसा दी जोड़ी बछोड़ी, तैं बुरी कित्ती ओ।
इक थी सै तैं अम्मा जैहर देई मारी,
दुजिया जो नदिया रूढ़ायाँ।
देयाँ ताँ मेरी झोलिया, देयाँ मेरा तुंबा,
जोगिए मैं हुण होई जाणा,
जोगिए मैं हुण होई जाणा ओ अम्मा,
जोगिए मैं हुण होई जाणा।

चंबे चाकरी (काँगड़ा)

जे तू चलेया चंबे चाकरी
ओ मेरे गले दे हारे लैंदा जायाँ, छैला ओ
जे तिजो लग्गे मेरी बेदणा,
गले लाई कने सौयाँ, नैणा देआ लोभिया।
जे तू चलेया चंबे चाकरी,
ओ मेरे सरे दे सालुए लैंदा जायाँ, छैला ओ
जे ओत्थू पौऐ बर्फ ताँ
तंबू ताणी करी बौह्याँ, नैणा देआ लोभिया।
जे तू चलेया चंबे चाकरी
ओ मेरे नक्के दे बालुए लैंदा जायाँ, छैला ओ
जे तिज्जो लग्गै मेरी बेदणा,
तू सब्बी जो दिखायाँ, नैणा देआ लोभिया।
जे तू चलेया चंबे चाकरी

ओ मेरे गरी ताँ छुहारे लैंदा जायाँ, छैला ओ
जे तिज्जो लग्गै कंता भुखड़ी,
बही करी खायाँ, नैणा देआ लोभिया।
जे तू चलेया चंबे चाकरी
ओ मेरे हत्थे दे चूड़े लैंदा जायाँ, छैला ओ
जे तिज्जो लग्गे मेरी बेदणा,
ताहलू हिक्का कने लायाँ, नैणा देआ लोभिया।

गद्दण (काँगड़ा)

बाड़िया दें बणें राजा हेड़े जे चढ़ेया,
गद्दण तमासे जो आई ओ,
चार सपाही राजें दड़-बड़ भेजे,
गद्दण चुकी डोलें पाई ओ,
मेरेया बाँकिआ राजेआ।
छोड़-छोड़ राजा मेरे सालुए दा लड़,
मैं ताँ नार पराई ओ,
मेरेया बाँकिया राजेआ।
भुईयाँ दा सौणा गद्दणी छोड़ी-छोड़ी देणा,
पलघाँ दे सौणे जो आ बो!
मेरिए बाँकिए गद्दणी।
पलघाँ दा सौणा तुसाँ राजेयाँ जो बणदा,
जी राणियाँ जी बणदा,
भुईयाँ दा सौणा असाँ जो,
मेरेया बाँकया राजेआ।
लूँहडे दा खाणा गद्दणी छोड़ी-छोड़ी देणा,
सूने दे थालाँ च खा बो,
मेरिए बाँकिए गद्दणी।
थालाँ दा खाणा राजेआँ राणिआँ जो बणदा,
लूँहडे च खाणा असाँ दा,
मेरेया बाँकया राजेआ।
ऊन्नी दा चोला गद्दणी छोड़ी-छोड़ी देणा,
रेशमी पोशाकाँ पा बो,

मेरिए बाँकिए गद्दणी।
रेशमी पोशाकाँ राजेयाँ राणियाँ जो बणियाँ,
ऊन्नी दा चोला असाँ जो,
मेरेया बाँकया राजेआ।
इक दिन राजा गद्दणी छली-छली पुच्छदा,
गद्दी पिआरा कि मैं बो,
मेरिए बाँकिए गद्दणी।
थोड़ी-थोड़ी ममता राजा तुसाँ दी बि लगदी,
गद्दीए दे नायें लगदी छुरी ओ,
मेरेया बाँकया राजेआ।
थोड़ी-थोड़ी बुरी राजा छेलुआँ दी लगदी,
राजा भेडुआँ दी लगदी,
गद्दिए दें नायें बजदी छुरी ओ,
मेरेया हरीसिंघा राजेया।
महलाँ दे हेठ गद्दी भेड़ाँ जे चारै,
मुरलिया रूणक सुणाई बो,
मेरेया बाँकया गद्दिया।

—यह गीत हरि सिंह और गद्दण के प्रेम के बारे में है। राजा एक गद्दण को देख उसे उठवा लेता है, किंतु गद्दण को अपना लाणा-बाणा, अपना गद्दी ही सुहाता है। गद्दी का महलों के नीचे भेड़ें चराना हृदयग्राही है।

इंदरदेई (काँगड़ा)

कुथू ते उगमी काली बादली,
ओ मुंडया पृथीसिंहा!
कुथू ते उगमया ठंडा नीर वे हाँ।
छातिया ते उगमी काली बादली,
ओ कुड़िए इंदरदईए!
नैणा ते उगमया ठंडा नीर वे हाँ।
कुन्हीं ताँ रगी तेरी पागड़ी,
ओ मुंढया पृथीसिंहा!
कुन्हीं तो कढया रूमाल वे हाँ।
भाबो ताँ रंगियो मेरी पगड़ी,
ओ कुड़िए इंदर देईए!

नारा ताँ कढया रूमाल वे हाँ।
बिज ताँ कड़कै तेरिया भाबिया,
ओ मुंडया पृथीसिंहा!
नारा जो डस्सै काला नाग वे हाँ।
बिज ताँ हुंदी स्याढ़ी कुलज,
नि कुड़िए इंदरदईए!
नाग ताँ कुले दा परोहत वे हाँ।

इक बेड़ी (काँगड़ा)

होरनी ताँ पतणा इक-इक बेड़ी ओ,
चंबे दे पतणे दो बेड़ियाँ।
भला ओ मलाहया जी,
पहलैं पूरें लंघी जाणा ऐ।।
तेरे ताएँ अम्माँ बी छोड़ी,
ओ बापू बी छोड़या,
भाईयाँ दी छोड़ियाँ दो जोड़ियाँ
असाँ ओ मलाहया जी,
पहलैं पूरे लंघी जाणा ऐ।।
तेरे ताँ ताई ओ ससु बी छोड़ी,
ओ सौहरा बी छोड़या,
देराँ दीयाँ छोड़याँ ओ दो जोड़ियाँ,
ओ जानी दो भला ओ मलाहया,
पहलैं पूरे लंघी जाणा ऐ।।

मेला नंदपुर दा (काँगड़ा)

ओ मेला नंदपुर दा ओ,
मेले जो जाणा जरूर।
मेले ताँ जाणा सौगी चले मेरा देर।। मेला...
मेले ताँ जाणा ओ, घघरूए चुके मेरा देर।
मेले ताँ जाणा ओ, सौगी चले मेरा देर।। मेला...
अट्ठाँ गजाँ दी घघरी सियांदी,
दस्साँ गजाँ दा फेर।
मेले ताँ जाणाँ, सौगी चले मेरा देर।। मेला...

भला मियाँ (काँगड़ा)

भला मियाँ मनेजरा ओ ऽ ऽ
राहे च बँगलू तेरा, तेरी सोह...
पल भर बौहणा दे।
भला मियाँ मनेजरा ओ ऽ ऽ
मालतिया दिया छौआँ, तेरी सोह...
छिन भर बौहण दे।
भला मियाँ मनेजरा ओ ऽ ऽ
डुंड-बड़ी दें टयालें, तेरी सोह...
पल भर बौहणा दे।
भला मियाँ मनेजरा ओ ऽ ऽ
कामलुऐ दिया बाईं, तेरी सोह...
दो घुट पीणा दे।
भला मियाँ मनेजरा ओ ऽ ऽ
कुछड़ बालक याणा, तेरी सोह...
दुध पियाणा दे।
भला मियाँ मनेजरा ओ ऽ ऽ
जेठ महीने दीयाँ धूप्पाँ
छतरिया ताणी दे।

भागसुए दीया धारा (काँगड़ा)

भागसुए दीया धारा ओ गद्दणी।
भेडाँ चारणा जाणा ओ।
पैराँ दी मैं नंगी ओ दयोरा।
गोदिया बालक याणा ओ।
पैराँ जो मैं मोचडू लई दिंहगा,
बालक मैं ही खल्हाणा ओ।
भागसुए दीया धारा ओ गद्दणी।
भागसुए दीया धारा ओ गद्दणी।
घाए बडण जाणा ओ।
अंगे दी मैं नंगी बो देयोरा।
गोदिया बालक याणा ओ।

अंगे जो मैं चोलणी लई दिंहगा,
बालक मैं ही खल्हाणा ओ।
भागसुए दीया धारा ओ गद्दणी,
लकडुआँ हुज्जणा जाणा ओ।
सरे दी मैं नंगी ओ दयोरा।
गोदिया बालक याणा ओ।
सरे जो मैं सलुआ लई दिंहगा,
बालक मैं ही खल्हाणा ओ।

राजे दीए बेड़िए (काँगड़ा-चंबा)

राजे दीए बेड़िए नि सौकणी तू मेरिए,
तेरे पर डुली रिहा मियाँ जसरोटिया।
चिट्टी नि चादरी मच्छी कंडे सीतिए,
तेरे पर डुली रिहा मियाँ जसरोटिया।
कुन्हीं चादर दित्तिए कुन्हीं चादर सीतिए,
कुण लेई आया बडड़ा प्यार ऐ।
अम्मा चादर दित्तिए, भाबों चादर सीतिए,
भाई लई आया बडड़ा प्यार ऐ।
पूणी नि ओ मुकदी तंद नि ओ टुटदी,
सस नि ओ बोलदी पाणिएँ जो जाणा ऐ।
डुब्ब बो घड़ोलुआ सरे देया बैरिया,
सज्जण निहालदे निंबुआँ दे बाग ऐ।
इकमन बोलदा डुब्बी मराँ, इकमन बोलदा बालड़ी बरेस ऐ,
इक वक्ख खाई लेया जले दीया जलकिया,
इक वक्ख फस्सी रेया सपड़े दे हेठ ऐ।
अम्मा स्याढ़ी रोंदी बापू स्याहाढ़ा झूरदा,
भाई स्हाँझो तोपदा नदिया दे फेराँ ऐ।

गल्ल सुणी जायाँ दयोरा (काँगड़ा)

कूजाँ जाई पईयाँ बरोट, चिट्टे दंद गुलाबी होंठ,
गल्लाँ करन पंजाबी लोक, इक गल्ल सुणी जायाँ दयोरा।
मेरेया बाँकेया दयोरा।

कूँजाँ जाई पईयाँ नदौण, ठंडे पाणी निरमल न्होण,
इक घुट पी जायाँ दयोरा, मेरेया बाँकेया दयोरा।

कूँजा पाई पईयाँ गुलेर, भाबी मँगदी नक्के दी बेर,
इक लक्ख दई जायाँ दयोरा, मेरेया बाँकेया दयोरा।

कूँजा जाई पईयाँ कलेसर, भावी मँगदी तोले दी बेसर
तुरत घढ़ाई देआँ दयोरा, मेरेया बाँकेया दयोरा।

कूँजा जाई पईयाँ पपरोलें, भावी रोंदी डुगड़े खोलें,
इक गल्ल सुणी जाया दयोरा, मेरेया बाँकेया दयोरा।

कूँजा जाई पईयाँ मंडिया, चिट्टे चौल रिझदे हंडिया,
दुधभत खाई जायाँ दयोरा, मेरेया बाँकेया दयोरा।

कूँजा जाई पईयाँ पत्तणे, मेरा दिल नि लगदा कत्तणे,
चरखे भन्नी देयाँ दयोरा, मेरेया बाँकेया दयोरा।

कूँजा जाई पईयाँ सुकेत, इक कुच्छड़ दुआ पेट,
त्रीया खेहले बालू रेत, मेरेया बाँकेया दयोरा।
इक गल्ल सुणी जायाँ दयोरा।

ललारिया (काँगड़ा)

आयाँ बो ललारिया, बो बौह्याँ बो पछारिया,
वो बौहणे जो दिंदी तिज्जो पंद,
तेरी सौं, बौहणे जो दिंदी तिज्जो पंद,
ओ पंद ओ ललारिया ओ।

हरी बो पुरे दा कुसंभा बो मँगानिया,
ओ झोलणियाँ ओ देणा गूढ़ा रंग,
तेरी सौं, झोलणियाँ जो देणा गूढ़ा रंग,
ओ रंग बो ललारिया ओ।

रंग लाई ताँ पैहनी गोरी अंगण खड़ोतिए,
ओ बिजली लसके अंग-अंग,
तेरी सौं, बिजली लसके अंग-अंग,
ओ अंग बो ललारिया ओ।

कुंजो-चंचलो (चंबा)

कपड़ेआँ धोआँ कने रोआँ कुञ्जुआ,
मुखों बोल जुबानी ओ। मेरिए जिंदे। (टेक)
असाँ चली जाणा परदेस चैंचलो,
रख गूठी नसाणी ओ। मेरिए जिंदे।
गूठिया ताँ तेरिया नि मैं पांदी,
चंबे सुन्ना भत्हेरे ओ। मेरिए जिंदे।
छातिया ने छाती मत लांदी चैंचलो,
छाती बटणा दी जोड़ी ओ। मेरिए जिंदे।
बटणा रा बसोस मत करें कुञ्जुआ,
बंबे बटण भत्हेरे ओ। मेरिए जिंदे।
मुँहें कने मुँहें मत लांदी चैंचलो,
तिज्जो खाँसी बमारी ओ। मेरिए जिंदे।
खाँसिया दा डर मत करैं कुञ्जुआ,
चंबे बैद भत्हेरे ओ। मेरिए जिंदे।
कलकिया राती चली जाणा चैंचलो,
कम पई गिया भारी ओ। मेरिए जिंदे।
कलकिया राती न जायाँ कुञ्जुआ,
लंघी औयाँ दुआरिया ओ। मेरिए जिंदे।
राती-बराती में न औंदा चैंचलो,
तेरे घरें ताँ बंदूकाँ ओ। मेरिए जिंदे।

फुलमू-राँझू (चंबा)

गुआडुऐं पच्छुआडुऐं तू कजो झाकदी,
झाकाँ कजो मारदी।
दो हत्थ बुटणे दे ला फुलमू,
गल्लाँ होई बीतियाँ।
बूटणा लगान तेरियाँ सक्की भाभियाँ,
तेरीयाँ ताईयाँ-चाचियाँ।
जिन्हाँ जो ब्याहे दा चा ओ राँझू,
गल्लाँ होई बीतियाँ।
मैं ताँ होया मजबूर फुलमू,

तिज्जो ते दूर फुलमू।
पंडताँ कित्ता मेरा नास,
गल्लाँ होई बीतियाँ।
जिन्नी ताँ बाह्मणे तेरा ब्याह रखेया,
ओ ब्याह गिणेया।
उसदी नि पाए परमेसर पूरी,
गल्लाँ होई बीतियाँ।
बाह्मणाँ दा दोष नि किछ फुलमू,
ऐह ताँ कर्मा दा लिखया होयै।
कर्मा दा लिखयाँ नि मिटै फुलमू,
गल्लाँ होई बीतियाँ।
जाणदी परीता करी दुख भोगणा,
जानी दुख भोगणा।
भुल्ली नि पांदी मैं परीत,
गल्लाँ होई बीतियाँ।
इक्की पासें राँझू ब्याहणा चलेया,
ब्याहणा चलेया।
दुए पासें फुलमू दी लाश चली,
गल्लाँ होई बीतियाँ।
ठप्पा-ठप्पा क्हारो मेरी पालकिया,
मेरी पालकिया।
फुलमू जो दाग मैं देयाँ,
गल्लाँ होई बीतियाँ।

कूसू-मूसण (बिलासपुर)

मूसूए री मूसण, मूसूए ते काली,
ओ तिन मंगे कपड़े, रपइए चाली।
मूसूए री मूसण, मूसूए ते छोटी,
दो मंगे सबजी ताँ चुपड़ी री रोटी।
मूसूए री मूसण, मूसूए ते मोटी,
ओ इक मंगे थान, बणाणे ओ कोटी।
मूसूए री मूसण, चल्ली री दिल्ली,
दो मंगे गजरू ताँ नक्का ओ तिल्ली।

देवकू (मंडी)

हाथा लैंदी लोटकु देबकुए,
काच्छा पांदी धोति,
चल मुईए न्हाओणे ओ जाणा, ओ देबकुए।
चल मुईए न्होओणे जाणा।
गोरे-गोरे हाथडू देबकुए,
लूचियाँ पकाँदी।
खाणेबाला नजरी नी आउंदा, ओ देबकुए।
खाणे बाला नजरी नी आउंदा।
तीरूयै चबारूयै देबकु
झाँकी-झाँकी देखदी।
जींदु प्यारा नजरी नी आउंदा, ओ देबकुए।
जींदु प्यारा नजरी नी आउंदा।
थोड़ी-थोड़ी बुरी देबकुए,
जिंदुए री आउंदी,
गाहिए री बगी जांदी छुरी, ओ देबकुए।
गाहिए री बगी जांदी छुरी,
हाखियाँ ता तेरी देबकु,
अंबाँ रीयाँ फाड़ियाँ,
गूठियाँ रौंगाँ दिया फड़ियाँ, ओ देबकुए।
गूठिया रौंगा दियाँ फाड़ियाँ।

ब्राह्मणी (कुल्लू)

निर्मंडा रीए बाह्मणिए ओ।
पया बरखा रा छाला भलिए,
निर्मंडा रीए बाह्मणिए।
ढाठू सग्या एसा बाह्मणिया रा,
पया बरखा रा छाला भलिए,
निर्मंडा रीए बाह्मणिए।
भुख लगी एसा बाह्मणिया जो,
खाई लैणा गरिया रा गोला भलिए,
निर्मंडा रीए बाह्मणिए।

हो मेरी गांगिए (महासू)

पाता पाना रो हो मेरी गांगिए, पाता पानो रा हो।
पता नैहीं लगदा प्यारिए, बेईमानी रा हो।
फूली खौड़का हो मेरी गांगिए, फूली खौड़का हो,
दिल धौड़का हो मेरी गांगिए, दिल धौड़का हो।
पारे जांगलै, हो मेरी गांगिए, घासा लई जा हो,
दुई मिंटा लै, हो मेरे छोरूआ, पैन देई जा हो।
लोटौ घीआ रा हो मेरी गांगिए, लोटौ घीआ रा हो,
पाता नैई चालदा हो मेरी गांगिए, तेरे जीया रा हो।
फूली छिछड़ी हो मेरी गांगिए, फूली छिछड़ी हो,
जोड़ी बिछड़ी हो मेरी गांगिए, जोड़ी बिछड़ी हो।
हाथै खिलणा हो मेरी गांगिए, हाथै खिलणा हो,
जिंदगी रहे, हो मेरी गांगिए, फेरी मिलणा हो।

कूँजड़ी (चंबा)

उड़-उड़ कूँजड़िऐ, वर्षा दे धियाड़े ओ।
मेरे रामा जिंदया दे मेले हो,
वे मना याणी मेरी जान।
उड़-उड़ कूँजड़िऐ, पर तेरे सूने बो मढ़ावाँ।
रूपे दीयाँ चूँजाँ हे,
वे मना याणी मेरी जान।
उड़-उड़ कूँजड़िऐ, चिकनी बुंदा मेघ बरसे।
पर मेरे सिजे हो,
ओ मेरे रामा याणी मेरी जान।
उड़-उड़ कूँजड़िऐ, उच्चे पीपल पींगाँ पेईयाँ।
रल-मिल सखियाँ झूटन गईयाँ हो,
हो मेरे रामा याणी मेरी जान।
उड़-उड़ कूँजड़िऐ, जिंदे रेहले फिरी मेलिले।
मुआ मिलदा न कोई हो,
वे मना याणी मेरी जान।

बही लैणा (काँगड़ा)

बही लैणा, पल भर बही लैणा,
छिन भर बही लैणा, बही लैणा ओ।
बही लैणा मेरेया बजीरा, अड़या भुरजपत्ते दीया छौवाँ।
पल भर किआ बौहणा, छिन भर किआ बौहणा,
किआ बौहणा मेरिए सुभद्रो आईयाँ चंबे दीयाँ ताराँ।
रोटी खाई लेआँ, दुधभत खाई लेआँ,
खाई लेआँ मेरेया बजीरा, बाह्मण लांहगी रसोईया।
रोटी किआ खाणी, दुधभत किआ खाणा,
किआ खाणा मेरिए सुभद्रो अड़िए जाति दी कुण हुंदी?
अज मैं सच दस्साँ, हुण मैं सच दस्साँ
सच दस्साँ मेरेया बजीरा, अड़ेया जाति दी मैं चम्यारी।
अज तूँ मरी जायाँ, हुण तूँ मरी जायाँ,
मरी जायाँ मेरिए सुभद्रो, अड़िए ते मेरी जात गुआई।
गंगा न्होई लिआँ, जमुना न्होई लेआँ ओ,
न्होई लेआँ मेरया बजीरा, अड़या तैं मेरी जात गुआई।

पंछी बोले (काँगड़ा)

संझाँ बेला होईयाँ पंछी जे बोले,
काबल लगियाँ लड़ाईयाँ।
पंज रुपेयै मैं सोहरे बला दिंदयाँ,
पुत्तरे दी खबर मगायाँ।
पंज रुपेयै नुहें अप्पू बल रखेयाँ,
दुए दा दर्दी नी कोई।
संझाँ बेला होईयाँ पंछी जे बोले।
पंज रुपेयै जेट्ठे बल दिंदियाँ,
बीरे दी खबर मँगायाँ।
पंज रुपेयै नुहें अप्पू बल रखेयाँ,
दुऐ दा दर्दी नी कोई।।
पंज रुपेयै देरे बल दिंदियाँ,
बीरे दी खबर मँगायाँ।
पंज रुपेयै भाभिए अप्पू बल रखेयाँ,

दुए दा दर्दी नी कोई।।
पंज रुपेयै मैं भाईये बल दिंदियाँ,
भाहणोईये दी खबर मँगायाँ।
पंज रुपेयै भैणे अप्पूं बल रखेयाँ,
भहणोए दी खबर मँगाँगा।
संझाँ… ।

—इस गीत में काबुल की लड़ाई में लड़ते पति की खबर मँगवाने के लिए नायिका अपने ससुर, जेठ, देवर को पाँच रुपये देकर आग्रह करती है। दूसरे का दुख-दर्द कोई नहीं जानता, अंततः भाई बिना पाँच रुपये लिए बहनोई की खबर मँगवाने की हामी भरता है।

लच्छी (चंबा)

हाय बो प्यारिए, हाय बो दूलारिए
तेरे कने बोलणे दा चा,
ओ मेरे कने बोल लच्छीए।
गोरे-गोरे मुँहें टिकलू तू लाई लैंदी,
निकी-किकी हाखीं बिच कजल बाई लैंदी।
लच्छी बड़ी सूरताँ वाली,
ओ मेरे कने बोल लच्छीए।
भरिया घड़ोलू गोरी चुकया नि जांदा,
पतली कमर दुखी जांदी।
निक्का घड़ा चुक लच्छीए,
ओ मेरे कने बोल लच्छीए।
चोलियाँ दे टाँके खुली-खुली जांदे,
लोकाँ जो पई जांदे गस्स।
जुआनियाँ सम्हाल लच्छीए,
ओ मेरे कने बोल लच्छीए।

महलाँ रे हेठिए जांदेया ओ जुआना

यह गीत काँगड़ा से लेकर बिलासपुर तक समान रूप से गाया जाता है। राजाओं के समय का गीत ऊँचे महलों से झाँकती एक राजकुमारी के बारे में है जो नीचे एक सजीले जवान को जाते हुए देखती है। कहीं इसमें महलों के नीचे जाते जवान के

बाँकपन पर वर्णन है तो कहीं उसे रावी के किनारे जाते हुए दिखाया गया है :

महलाँ रे हेठिए जांदेया ओ जुआना
जांदेया ओं जुआना
महले तू आई लै जरूर
कालेयाँ कुंडलाँ वालेया ओ नौकरा।
महलाँ ताँ तेरेयाँ गोरिए कियाँ ओआँ
ओ गोरिए कियाँ ओआँ तोता बड़ा चुगलीबाज
सबज दप्पटे वालिए ओ गोरिए।
कीने रंगी तेरी पागड़ी ओ जुआना
कीने रंगेआ एह रूमाल
कालेयाँ कुंडलाँ वालेआ ओ नौकरा।
भाभिए रंगी मेरी पागड़ी ओ गोरिए पागड़ी
नारें रंगेया एह रूमाल
सबज दप्पटे वालिए ओ गोरिए।
केहड़ी ताँ उमरा री जुआना भाबो तेरी
ओ जुआना भाबो तेरी
ओ केहड़ी ताँ बरहे री तेरी नार।
तिजो ते बधिया गोरिए भाबो मेरी
ओ जानी भाबो मेरी
बालड़ी बरेसा री मेरी नार।
भाभिया तेरिया पर बिजली पए ओ जुआना
बिजली पए ओ जुआना
नारा जो डसे काला नाग
कालेयाँ कुंडला वालेया ओ नौकरा।
बिजली ता मेरी ओ गोरिए धरमा री बहण
ओ गोरिए धरमा री बहण
नाग कुले रा प्रोहत
सबज दप्पटे वालिए ओ गोरिए।

निष्कर्ष

लोकगीतों का अपार भंडार है। जितने गीत यहाँ दिए गए हैं उनसे कहीं ज्यादा और गीत विद्यमान हैं। लोकगीतों में लोक की आत्मा बसती है, बोलती है। गीत समाज की सच्ची तस्वीर सामने लाते हैं। ग्रामीणों के दिलों की धड़कन होते हैं लोकगीत जो कभी साज-बाज के साथ, कभी नृत्य के साथ तो कभी अकेले में ही जीवन में नया संचार करते हैं।

विभिन्न अंचलों में अनेक संस्कारगीत प्रचलित हैं जो जन्म से लेकर मृत्यु तक की रस्मों में गाए जाते हैं। पहले के समय महिलाओं का रुदन भी एक सामूहिक क्रिया होता था और सस्वर रोया जाता था। जन्म, यज्ञोपवीत, विवाह संस्कारों में हर क्षेत्र में गीत-परंपरा है। इसी तरह धार्मिक गीतों में भी शिव-स्तुति, माता की भेंटें तथा अन्य भजन अनेक हैं। पहले भजन मंडलियाँ गाँव-गाँव जागरण कर गाया करती थीं जिसे 'महफिल' भी कहा जाता है। यह आयोजन गाँव के किसी घर में या मंदिर में हुआ करता था।

लोकगीत परंपरा थमी नहीं है। नित नए-नए गीत बनते जाते हैं। इनका फलक भी विस्तृत है। साधारण गाँव में हुई प्रेमलीला से लेकर प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी तक पर गीत बने हैं। पानी के बाँध बनने और बिजली तैयार होने के गीत हैं। शहीदों या सताए हुए लोगों पर गीत हैं। साधारण लोगों पर भी गीत हैं। बिलासपुर का 'मोहणा' इसका उदाहरण है।

धर्मू (बिलासपुर), डोलाराम, नैणुलाड़ी, दिलेराम (मंडी), छेशू लोभिया, फूला देई (कुल्लू), चानणू, चरणु, धीवटू निर्मो, चोड़ी राँड, मूर्त वारदा (महासू) आदि गीत लोक में प्रचलित रहे। 'लामण' में तो न जाने कितने ही दोहे हैं जो काव्य की पराकाष्ठा को दर्शाते हैं। रूपीरानी, भ्यार, छूषेण योर, करन बीरबल, सजिराम, राणा दमदम (लाहौल), सोतेजुगङ् गीत (किन्नौर) आदि गीत लोक में प्रचलित हैं। इसके अतिरिक्त छिंज, ऋतुगीत, उत्सव गीत, त्योहार गीत भी बहुतायत में हैं। बहुतेरे प्रचलित गीत जैसे धर्मू सूरमा, कर्मू छैल, ठिंडलू पुहाल, लुड्डी ब्रामणी, मिंजर गीत, घुरैई, सुकरात, मेट संतराम, रूपणू पुहाल, कुंजुआ, जोबणू नणान, भौराँ, सुन्नी भूखूँ (चंबा-भरमौर) भी यहाँ विस्तार के भय से दिए नहीं जा सके।

लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे

(मं. : मंडयाली, चं. : चंबयाली, महा. : महासुवी, कि. : किन्नौरी, सि. : सिरमौरी, बि. : बिलासपुरी। काँगड़ी के आगे कोई चिह्न नहीं दिया है। इसमें काँगड़ा, हमीरपुर व ऊना शामिल हैं। प्रदेश में अधिकांश मुहावरे समान रूप से प्रचलित हैं। केवल स्थानीय बोली का अंतर रहता है।)

अति न भला बोलणा, अति न भली चुप्प।
अति न भला बरसणा, अति न भली धुप्प।
— अति सर्वत्र वर्जयते।
अंधा तबै मानौ जौबे मूँड लागौ पांडा। (महा.)
— अंधा तभी मानता है जब सिर टकराए।
अपणा हाथ जगरनाथ। (मं.)
— अपनी सत्ता होना।
अग्गी दा दाहिया जुगनुए ते डरदा।
— दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है।
अज मोए, कल दूआ धियाड़ा।
— आज मरे कल दूसरा दिन।
अठ पूर्बिये नौ चूल्हे।
— अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग।
अन्हीं देवी टुंडा पजियाला
नकटा धूप धुखाणे आला।
— अंधी देवी, पुजारी के हाथ नहीं, नकटा धूप देने वाला।
अन्हीं माँ पुत्तरे जो नी पछाणदी।
— अंधी माँ बेटे को भी नहीं पहचानती।
अन्हें अग्गैं रोणा ताँ बोले अग्गैं राग।
— अंधे के आगे रोने का और बहरे के आगे गाने का कोई फायदा नहीं।
अपणा घर हग्गी भर, दुए दा घर थुकणे दा डर।

— जो स्वाधीनता अपने घर में है, वह और कहीं नहीं।

अपणियाँ करनियाँ तरना, अपणियाँ करनिया डुबणा।

— अपनी करनी से तैरना, अपनी से डूबना।

अपणी अक्कल कनें बगाना धन सभना जो मता लगदा।

— अपनी बुद्धि, दूसरे का धन अधिक लगता है।

अपणी इज्जत अपणै हत्थै।

— अपना सम्मान अपने हाथ होता है।

अफरो चीज ला कुने मर ना बोलदा। (कि.)

— अपनी चीज को कोई बुरा नहीं बोलता।

अम्ब चूपणे कि पेड़ गिणने।

— आम चूसने से मतलब है या पेड़ गिनने से।

अम्मा अम्मा! ठाणेदार बणगा ताँ तेरियाँ जंघा भनगा।

— माँ! जब थानेदार बनूँगा तो पहले तुम्हारी टाँगें तोड़ूँगा।

आपणी बिगड़ी री होश होरी जो दोष। (मं.)

— अपना बिगड़ा होश, दूसरे को दोष।

आपणे भाँडे ता कुम्हारी भी सराहाँ ही। (मं.)

— अपने दही को कौन खट्टा कहे।

आप्पुँ मलदी पौडर सुर्खी सयाणी मरदी खुरकी खुरकी। (मं.)

— अपना पेट भरना।

आप सराही ठाकर नी हुंदे से जाति ते ही हूआँ हे। (मं.)

— अपने आप मियाँ मिट्ठू बनना।

आई बलाई से होरी रे सिरा पाई। (मं.)

— अन्य के सिर दोष थोपना।

आगी डागी रा पेट खाली चाहिए। (मं.)

— आग और अधम व्यक्ति भरपेट ठीक नहीं लगते।

आपणा सिर आप्पुँ नी सवारदा। (मं.)

— अपनी बात अपने आप नहीं मनाई जाती।

आपणे घरा सब राजे।

— अपने घर सभी राजा।

आँह भी राणें, तू भी राणें, कुण कुटौ ला कावणें धानौ,
कुण भरोला पाणे! (महा.)

— मैं भी रानी तू भी रानी, कौन भरेगा कुएँ से पानी।

आगड़ै हाँडवा मुश्किल, पाछड़ै हाँडवा सान। (महा.)

— आगे चलना कठिन, पीछे चलना आसान।

आपणे मासा नी दाँदे बहँदी। (मं.)

— अपना अपना पराया पराया।

आपणे नाका री बास नी आउँदी।

— अपने दोष नहीं दिखाई देते।

आए गरदश के फेर, मकड़ी के जाल में शेर।

— कुअवसर पड़े सब उलट हो जाता है।

आओंदे जांदे खाई जाओ, घरा रे गाओ गीत।

— अपने से बैर पराए से मित्रता।

आप्पु जो ता फूहड़ भी बाँका बोलाँ ही। (मं.)

— अपना रूप सबको प्यारा।

आसमाना बज्जी ढोलकी प्याला लगेआ ब्याह।

— वर्षा की गर्जन।

इन्हाँ तिल्लाँ तेल किथी।

— इन तिलों में तेल कहाँ।

इल्ला रे आल्हे मास तेसरी कोस जो आस। (मं.)

— कृपण का धन किसलिए?

इसरे घरा नी बसणा इसरी खांदे री दाहड़ी हिलकाँ ही। (मं.)

— बहाना लगाना।

कोय दिन खैर बखैर कोय दिन पक्की दाख कोय दिन न कच्चा बैर।

— समय-समय की बात।

कोय दिन केहड़े कोय दिन केहड़े।

— सब दिन न एक समान।

उम्बरा री गरीबी भी बुरी।

— नित गरीबी भी बुरी है।

उजड़े घरा बिल्ली राणी।

— अंधों में काना राजा।

उनचिद मीयू बोक दू। (कि.)

— माँगने वाले का हलवा गर्म।

उप्परे बखी जे थुकणा सः मुँहे पर ही पौणा।

— आसमान पर थूका अपने ऊपर ही गिरता है।

ऊँटा तेरी कियाड़ी ढेरी, सिद्धी ठाहर कुण हेरी। (चं.)

– ऊँट रे ऊँट तेरी कौन सी कल सीधी।

ऊँटै चढ़ी भिख नीं मगोंदी।

– ऊँट पर सवार होकर भीख नहीं माँगी जाती।

एक दिशिंकी झिंकरी जौ, दूजी दिशिंकी पंद्रह शौ। (सि.)

– एक और पंद्रह सौ का मुकाबला कैसे हो सकता है।

एकी लाकड़ियै चुल्ह नी जलदे। (महा.)

– एक लकड़ी से चूल्हा नहीं जलता।

एकी हाथै रोटी नी पकदी। (महा.)

– एक हाथ से रोटी नहीं पकती।

एह जीभ घोड़ा भी दिंदी, जोड़ा भी दिंदी।

– जीभ का प्रयोग घुड़सवारी भी दे सकती है, जूतों की मार भी।

एक समाना री एक प्याला री।

– इधर-उधर की।

एक पापी सारे बेड़े जो डबोहाँ। (मं.)

– एक पापी पूरे जहाज को डुबो देता है।

एकी कणिया ते सारी हाँडी रा पता चलो।

– एक चावल से पूरी हँडिया का पता चलता है।

एकी दे दो-दो सूझणा।

– और का और ही दिखना।

एस सुहागते रँडेपा खरा।

– सुहाग से वैधव्य भला।

एक ध्याड़ा सासा रा एक बहू रा।

– एक दिन सास का एक बहू का।

एक्की फेरे नत्थ घड़ान दुज्जे फेरे नाक चढ़ान।

– पल में तोला पल में माशा।

एक्की खा तुह दुइया खा दुह।

– बिन सेवा कहाँ मेवा।

ओ कुत्तेआ बले तू देखणा कि तेरा बणई।

– कुत्ते के स्वामी के कारण कुत्ते की इज्जत।

औलिया रे बिल्ला मँझे दाएँ देणा मिक्कू कने नी देणा।

– जाट गन्ना न दे, भेली दे।

कुण लेओ कुण थेओ।

– कौन हिसाब-किताब रखे। कोई लेखा न होना।

कंध न पुछे बातड़ी धण सुहागण नाँ।

– नाम बड़ा, बात न पूछे कोय।

कवारा चलेआ कड़माइया, आपणी करो कि होरी री।

– कुँआरा अपनी अथवा पराई मँगनी करेगा।

केहड़िया खानी रा पत्थरू हा? (मं.)

– किस वंश का है?

कुड़ी पेटा कणक खेता आ जवाइयाँ मांडेआँ खा।

– समय से पूर्व कल्पना।

कुत्तेरा मुँह नी बझदा।

– कुत्ते का मुँह नहीं बाँधा जाता।

कोसी पर लोहे रा मई नी देणा।

– बेईमानी न करना।

कुत्ते जो हाड़के रा स्वाद। (मं.)

– लोभ की बात होना।

का दा रा मास किन्ने खादा।

– कृपण का धन किसके प्रयोजन में।

कांगी कने नी खाओ।

– शोर न करो।

कत कत नी लाओ, कुड़कुड़ नी लाओ।

– शोर न करो।

कीड़े रा खाधी रा डराहाँ करहोली ले।

– दूध का जला छाछ फूँक-फूँककर पीता है।

कधी हरि कृष्ण नी बोल्या।

– कुछ नहीं कहा।

कुछ पीहण गिल्ला कुछ घराट ढिल्ला।

– दोनों ओर की भूलें।

कहाँ कासी कहाँ गुजरात कहाँ की परालब्ध कहाँ जात।

– कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा।

कुत्ते रे फुहँट री बात नी उतरदी।

– कुत्ते की दुम टेढ़ी रहती है।

कंठक विधा, गाँठ का धन।

— कंठस्थ विद्या, गाँठ का धन ही काम आते हैं।

कर गई रह सई मिंजो क्या पई तिज्जो क्या पई।

— उत्तरदाई न होना।

ककरी चोरो चोरो बकरी मारो। (कि.)

— ककड़ी का चोर बकरी तक चुरा लेता है।

कणक पराणी घिऊ नौआँ, घरैं कुलवंती नार।
चौथी मिट्ठ तुरग दी, सुरग नसाणी चार।

— घर में पुराना गेहूँ, ताजा घी हो। कुलवंती स्त्री हो, सवारी के लिए घोड़ा हो, वह घर स्वर्ग समान है।

कणका पर बी, कने माऊ पर धी।

— गेहूँ के अनुसार बीज और माँ के अनुसार पुत्री होगी।

कपाही पर सूत, कने बब्बे पर पूत।

— कपास के अनुसार सूत और पिता के अनुसार पुत्र होगा।

कर मा चास्तड़ जोल चम। (कि.)

— मेमने के नाचने से पहले रानों की ऊन नाचती है।

करा मजूरी खा चूरी।

— मेहनत कर चूरी खाओ।

का, कराड़, कुत्ते रा बसाह नी करना सुत्ते रा। (चं.)

— कौए, कुत्ते और बनिए पर विश्वास न करो, चाहे ये सोए ही क्यों न हों।

कुँआरे री बाराती कुँआरा।

— कुँआरे की बारात में कुँआरा।

कम्म न कार मुए मुड़दे री बगार।

— ढाला बनिया क्या करे, इस कोठे का धान उस कोठे धर।

कालेआँ माहाँ एको रास। (मं.)

— चोर का साथी चोर।

कोली रा किरडू कोली जो।

— जैसी करनी वैसी भरनी।

कुत्ते हल बाहंदे ता बैल केस रखणे थे।

— कुत्ते हल में जोते जाते तो बैल कौन रखता।

कांडे रा मुँह पैहले ते ही पैनाँ हूआँ हा। (मं.)

— होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

केत्थी राम-राम केत्थी जै-जै।

— दिन-रात का अंतर।

कासी-कासी पुल्ला बणाँ हो।

— बूँद-बूँद से घड़ा भरता है।

कित्ती कमाई रा खूहा पाएआ।

— श्रम वृथा करना।

कुफ्‍फू फुलदा डाला कुकु बोलदा धारा।

— समय पर सब कुछ।

काला मुँह रेशमा रा सालू।

— दमड़ी की बुढ़िया धेला सिर मुँड़ाई।

कज्जल ता सभ ही वाहाँ हे पर मटाका कोई ही माराँ हाँ। (मं.)

— काजल तो सभी लगाते हैं, इशारा कोई ही कर पाता है।

कासी-कासी पुल्ला।

— तिनकों के बल रस्सा।

कसूर ओगा रा चुत्थणी फल्यूड़ी।

— दोष किसी का फाँसी किसी को।

करघे देख सुण ता हाऊँ आया हुण, करघे मेक मरोड़ ता चाचड़ करआँ होर।

— दाँव चूक गए तो दुश्मन से जीत गए!

काला ब्राह्मण गोरा डूम भले नी हुंदे। (चं.)

— काले रंग का ब्राह्मण, गोरा शूद्र अच्छा नहीं होता।

कालू भेजेया पत्तराँ जो, न पत्तर न कालू।

— कालू को काम से भेजा गया, न कालू लौटा न काम हुआ।

कितणा ही दुध पिया, सर्प निर्विसिए नी हुंदे।

— साँपों का जहर नहीं जाता चाहे कितना दूध पिलाओ।

किमशु या छोटेस्मा, रिमशु मा खोटेस। (कि.)

— घर का देवता काम नहीं करेगा तो खेत का देवता भी काम नहीं करेगा।

किह्‌ली कुत्ती टुकड़ियाँ गराहे कि भौंकणा जाए।

— अकेली कुतिया भौंकने जाए या रोटी इकट्ठी करे।

कुतकी लाणी, कुतकी बझाणी।

— चुगली करना।

सौहरे घर जुआई कुत्ता, भैण घर भाई कुत्ता।

ओ सब कुत्तेयाँ दा सरदार जेहड़ा रहे जुआई नाल।

– ससुर के घर जवाईं, बहन के घर भाई कुत्ते समान।
वह सब कुत्तों का सरदार जो जवाईं के संग रहे।

कुत्ते री मौत इंदी ताँ मसीती मुतरंदा। (चं.)

– कुत्ते की मौत आती है तो वह मस्जिद पर मूत्र त्याग करता है।

कुम्हारें अपणा ई भाँडा सराहणा।

– कुम्हार अपने बर्तन की सराहना करता है।

कुब्बे ओ मारी लाता री तिसरा कुब्ब सीधा होया। (मं.)

– अंधा क्या माँगे दो आँखें।

खाणा भी गुराणा भी।

– खाए भी गुर्राए भी।

खाई लेणा पी लेणा करी लेणा जग, कल परसुँ मरी जाणा लगी जाणी अग्ग।

– खाओ-पीओ मजा लो।

खरा खाधी रा खरा बोली रा नी भुलदा।

– अच्छा भोजन, बुरा वचन नहीं भूलते।

खरी म्हारी काणी से जे भ्यागा उठी हाक पाणी।

– अपना अपना पराया पराया।

खाणा ता खाओ नहीं ता छुट्टी पाओ।

– खाना है तो खाओ नहीं तो घर जाओ।

खिल उटकी कन्ने भट्टी नी फुकदी। (चं.)

– ओछों से बड़ों के काम नहीं होते हैं।

खाई कने सीत न्होई कने सीत राजदरबारा जाई कने सीत।

– खाकर, नहाकर और दरबार में जाकर, इन समयों पर शीत लगता है।

खसमा रा भाणा जिहाँ दस्सो तिहाँ नभाणा।

– मालिक ए मर्जी।

खाई कने मुखरे नहांदे मुत्रे तेसरे घर केत्थी पुच्छणे।

– जो खाकर मुकर जाए, नहाकर मूत्र कर दे उसके घर का क्या पता पाना है।

नोकरी तो चाकरी क्या, चाकरी तो नोकरी क्या।

– नौकरी में गुलामी।

खेता खाओ बकरी डान भरे खत्री।

– करे कोई भरे कोई।

खरच खाणा पल्ले रा कम करना दल्ले रा।

– मुफ्त की बेगार।

गंगा गए गंगादास जमना गए जमनादास।

– चोरों में चोर, साधों में साध।

गंगा गए हाड़ भल्ला से हटी के आवाँ हे। (मं.)

– गंगा गई हड्डियाँ वापस नहीं आतीं।

गट्ठी नी पाव मनीकरणा रा चाव।

– पल्ले के प्रकार।

गट्ठी नी गोहटे, लौंगा लैची रे डकार। (चं.)

– पास के गोहटे (उपले) नहीं, लौंग-इलाइची की डकार।

गल नी जाणे चज्जे दी, मुँह न जाणे धोए।
डटी कचरिया बही रहे, पैसा जिस बला होए।

– जो ढंग से बात न करना जाने, मुँह तक धोना न जाने, वह पैसा पास होने पर मान पा सकता है।

गल्लाँ ने ढिड नी भरोंदा।

– बातों से पेट नहीं भरता।

गाईं दे गाँई हेठ, म्हईं दे म्हईं हेठ।

– गाय के बछड़े गाय के पास, भैंस के कटड़े भैंस के पास।

गाईं दे म्हईं हेठ, म्हईं दे गाई हेठ।

– गाय के बछड़े भैंस के पास, भैंस के कटड़े गाय के पास। यथास्थान न होना।

गौम्पा ख्या ख्या युनंमिग। (कि.)

– कदम देख-देखकर आगे चलना चाहिए।

गोही जो मिली गोह, जदेही ओह तदेही ओह।

– गोह को मिली गोह अर्थात् दोनों एक-सी।

गोह कोहती पलाहें से उतरघी नवें हे माहें।

– हम्मीर हठ, तिरिया तेल चढ़े न दूजी बार।

गरीबाँ री जोरू सभी री भाभी।

– गरीब की जोरू सब की भाभी।

गट्ठी नी धेला चढ़ना रेला।

– गाँठ में धेला नहीं, चढ़ना रेल में।

गद्दी गुज्जर लबाणा, जित्थी मिलो तेत्थी दलाणा।

— बुराई शुरू में रोको।

गोरी रा मास जाहाँ चिंढूएँ।

— सुंदरी के मुख का दाग सबको दीखता है।

गरीबदास होरी लखपति।

— विपरीत नाम।

गरीबाँ री गाठी हुआँ परमात्मा। (मं.)

— निर्बल के बल राम।

गद्दी मित्र भोला देंदा टोप ते माँगदा चोला।

— गद्दी बुद्धि के धनी होते हैं।

गल्लें बातें मोही लेए।

— बातों-बातों में ठग लिए।

गोही क्या ज्ञान बँदरा क्या दान।

— मूर्ख को क्या नसीहत।

गाये देखाँ ही बच्छे खा, बच्छा देखाँ हाँ जाड़े फाटें।

— माँ की ममता न्यारी।

फूहड़ा मिल्ली गोह, तेहड़ी ओह, तेहड़ी ओह।

— रब्ब ने मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोहड़ी।

घरा नी बच्छी नींद पओ हच्छी।

— घर में नहीं ढोर, नींद आए अच्छी।

घर कने पेट बड़े नी हंगाणे चाहिए
फेरी इन्हाँ दा नड़ेरना मुसकल होआँ।

— घर और पेट आवश्यकता से अधिक नहीं बढ़ाने चाहिए, फिर इन पर नियंत्रण कठिन हो जाता है।

घरे च एका होए ताँ नराड़ डरदा
नराड़े च एका होए ताँ ग्राँ डरदा
ग्राँएँ ये एका होए ताँ लाका डरदा।

— एकता में शक्ति है।

घरे ते चलन भुक्खे ताँ गाँह मिलदे रूक्खे।

— घर से भूखे चलें तो आगे भी रूखी-सूखी मिलती है।

घरे दे गाणे वाले, घरे दे बजाणे वाले।

— आत्मनिर्भर होना।

घरैं नी कुत्ती ताँ गाई दे सौह।

– घर में कुतिया तक नहीं और गाय की कसमें खाते हैं।

घरा नी दाणे बले अम्माँ गई री पिहाणे। (मं.)

– दिल्ली की दिवाली, मुँह चिकना पेट खाली।

घरा री आधी बाहरली सारी।

– घर की दाल मुर्गी बराबर।

घोड़े री लात घोड़ा ही सहाँ हा। (मं.)

– बड़ों की बड़ी बात।

घरा नी भुँगी भाँग नौं लाला।

– विपरीत नाम।

घुग्घी रे बोलें नी मास टुटदा।

– बिल्ली के सरापे छींका नहीं टूटता।

घर बगाना था पेट ता आपणा था।

– माल ए मुफ्त, दिले बेरहम।

घरा नी नाग पुजणा वामी पुजणा जाणा।

– घर का जोगी जोगड़ा परदेसी जोगी सिद्ध।

चाचें हाथ रंगे, भतीजे भुगते पंगे।

– करे कोई भरे कोई।

चाँदर चलाया मकोड़िए।

– अद्‌भुत बात होना।

बणी रा कम्म फेटा पाणा।

– विघ्न डालना।

चलदे घराटा गट्टा पाणा।

– विघ्न डालना।

चोरा ओ बोला हा पसर पैहरी जो बोलोहँ जाग।

– दोनों ओर आग लगाना।

चतराँ चानणी दसणी।

– नानी को ननिहाल।

चोरा रा मन पैहले ही काहला हुआँ।

– सच्चे का बोलबाला, झूठे का मुँह काला।

चुखड़िएँ नी मुख जांदी।

– तिनकों के बल सागर नहीं लाँघे जाते।

चिणदेआँ बेर लगाँ ही, ढलयारूआँ बेरनी।

— किसी काम को बनाना कठिन और बिगाड़ना सुगम होता है।

चोर कधी बोलाँ हा भई हाऊँ चोर हा। (मं.)

— पापी पाप नहीं मानता।

चलदे चोरा रा चूला बुहार ही सही।

— (बेहले से बगार ही सही) कुछ अवश्य कमाओ।

चोराँ रा कपड़ा डाँगा रे गज।

— पानी की कमाई पानी में गँवाई।

चटंड गसाँई गंडियाँ दी माला।

— लंपट योगी के गले प्याज की माला।

चढ़दी जवानी दलदा पेट
किछ नी आऊँदा नजरी हेठ। (महा.)

— युवावस्था में शरीर हृष्टपुष्ट, पेट अंदर को रहता है। युवावस्था में कुछ नजर नहीं आता।

चणा चैत घणा, कणक घणी बसाख।
नार घणी ताँ जागिए, जाँ जातक चुक्के ढाक।

— चने चैत्र में और कणक बैसाख में होती है। स्त्री तब युवती जानिए जब गोदी में पुत्र हो।

चलदा पाणी रमदा जोगी दोष न लाए कोय।

— बहता पानी, रमता जोगी कभी दोषी नहीं होते।

चली नी हो आपू ते ताँ फिटे मुँह गोडियाँ दा।

— चला स्वयं न जाए, घुटनों को फटकार।

चामङ् डागी लोन्मू लो सुखङ्। (कि.)

— दूसरे को डागी, चमार कहना आसान है।

चिकड़े च बट्टा मारिए ताँ अपणे कपड़े बगाड़िए।

— कीचड़ में पत्थर मारने से खुद को ही छींटे लगेंगे।

चिड़िया रा दूध नी याँ होर सब कुछ हाँ। (बघाटी)

— सब कुछ होना।

चूहे रे त्रपड़िए नगाड़ा नी मढ़ी हिंदा। (चं.)

— चूहे की खाल से नगाड़ा नहीं मढ़ा जाता।

चूहे जो मिल्ली हलदरा री गट्ठी से पनसारी ही बणी बैठा।

— कुत्ते को घी हजम नहीं होता है।

चाचड़ भी मरद सुणियाँ हा।

— क्या पिद्दी क्या पिद्दी का शोरबा।

छाही पिच्छें मुच्छा नी मुडाणी।

— थोड़ी कमाई के लिए अधिक हानि न करना।

चोराँ रे गवाही मोर।

— वरुण के साक्षी जलचर।

चड़ेला रा मुँह नखरे परी आले।

— कुरूपा के नाज-नखरे भी अशोभनीय होते हैं।

चाम बाँकी नी देखणी काम बाँकी देखणी।

— रूप का मूल्य नहीं होता, काम का होता है।

चिणदे नी गए सुरगा खणदे नी गए प्याला ओ।

— अंत किसी कार्य का नहीं।

चोराँ मोर पउंदे आए।

— चोरी का माल मोरी में।

छेकी रे जूटे छेड़ बड्डी, मजाजी माहणू कड्डे बड्डी।

— टूटा जूता और छूँछा मनुष्य आडंबरमय होते हैं।

छोहरूआँ नी छाह जबरी पनीर माँगा ही। (मं.)

— गाँठ में खाने को नहीं, पनीर की माँग।

छंदो गई बलाको आई।

— तबेले की बला बंदर के सिर।

चड़ी रे कवाल चढ़ने।

— पुनः वही काम करना।

छाही ता रौले रते क्या बघाणा।

— लस्सी और लड़ाई थोड़े से अधिक हो जाती है।

छाही पिच्छे मुच्छा मुँड़ाई न छाह न मुच्छाँ।

— किसी प्रयत्न का निष्फल होना।

छोलेआँ ता छोहरूआँ कने मुँह नी लाणा।

— चनों और बच्चों को मुँह मत लगाओ।

छोहरे जलीरे तमाखू नी पींदे मरणी रे।

— अभिमानी होना।

छुट भलयाइयाँ सारे ही गुण।

— भलाई के अलावा सभी गुण होना।

छुहीं री हल्लाँ, सिमला रे जुंगड़े, जिउँदेआँ नी तिल मुईइयें सलुए।

— का वर्षा जब कृषि सुखाने।

जेसरा लुण पुण खाणा तेसरा गुण गाणा।

— जिसका खाना उसका यश गाना।

जण-जण दाई, गाभा गई गवाई।

— बहुत जोगी मठ उजाड़ा।

जण-जण काजी जण-जण मौले।

— अनेक मत।

जेसरा लुण पाणी-खाणा तेसरा जस गाणा।

— खाई प्यारी है, माई नहीं।

जेत्थी जे कुकड़्ड़ नी हुंदे तेत्थी भी विहाग हुआँ हे हा। (मं.)

— किसी के बिना सृष्टि का काम नहीं रुकता।

जोराँ वरांरा पत्थरू चढ़ा हाँ कवालिया।

— जिसकी लाठी उसकी भैंस।

जे बोलदा नी ता बाब कुत्ता खाहाँ जे बोलाहाँ ता माओ मारी जाँहीं।

— बोलने में भी गुनाह, चुप्प में भी बुराई, खड़ा हूँ ऐसी जगह इधर कुआँ उधर खाई।

जिन्हां नी कुट्टणी से देहाँ हे कात्ती कोलाँ जो पसाके।

— नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

जेस पातरा खाणी तेस ही छिंडा पाणा।

— विश्वासघाती होना।

जे कोल्हू तेल मता होआँ से पत्थराँ नी चोपड़दा।

— सदुपयोग करना।

जिन्हां केत्थी नी ढोई से राजे री रसोई। (मं.)

— निकम्मे मनुष्य को मान्यता।

जेस बगानियाँ बसणा तेस सुणने निकम्मे बोल। (मं.)

— जो बेगानी में बसेगा, वह बोल सुनेगा।

जिंदेआँ नी तिल्ल मुएआँ जो तलोए।

— मृत्यु के पश्चात् आदर।

जितना छोड़ उतणा मँघोल।

— जल्दी में गड़बड़।

जट्ट क्या जाणें लौंगा दा भा।

टके दे लौंग ता चादर बछा।

— बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

जट्टा ओ जट्टा तेरे सिर पर बट्टा।
तेली ओ तेली तेरे सिर पर कोल्हू।

— जाट रे जाट तेरे सिर पर बट्टा,
तेली रे तेली तेरे सिर पर कोल्हू।

जणासा दी मत खुरियाँ पचाँह हुँदी।

—स्त्री की बुद्धि एड़ी के पीछे होती है।

जणासा दी सनून कनें मरदा दी पतलून रोज ही बदलोंदे रँहदे।

— स्त्रियों के वस्त्र और मर्दों की पतलून का फैशन नित बदलता रहता है।

जदेहा देस तदेहा भेस।

— जैसा देस वैसा भेस।

जाणा अपणे बोलैं औणा बगाने बोलैं।

— जाना अपनी इच्छा से, आना मेजबान की इच्छा से।

जाँ बरहे ताँ सीत।

— वर्षा होने पर ठंड अवश्य होगी।

जित कुक्कड़ नी तित भ्याग नीं?

— जहाँ मुर्गा नहीं होता, वहाँ क्या सवेरा नहीं होता?

जितणियाँ खाँखा, तितणियाँ भाखाँ।

— जितने मुँह उतनी बातें।

जदेहा बाहणा, तदेहा लुणना।

— जैसा बीजोगे वैसा काटोगे।

जम्मेयाँ पुत्राँ औतरी, कने बिन बड्डेयाँ सराध नी हुंदे।

— पुत्रों के होते कोई औतर नहीं कहलाता, बड़े-बुजुर्गों के बिना कोई श्राद्ध नहीं करता।

जन ताङ् ताङ् चोरस। (कि.)

— फटे-पुराने कपड़ों वाले चोर ही दिखते हैं।

जलदी जबरी जली मरे, मैं पैर घसाके ही जाणा।

— अपने ही मन की करना, चाहे कोई कुछ कहता रहे।

जितने त्रपड़ उतना पाला, जितणा टब्बर उतणा जाला।

— जितने कपड़े पहनो उतनी ठंड, जितना बड़ा परिवार उतने झंझट।

जितने फुल लगदे तितिने फल नी टिकदे।

— जितने फूल लगते हैं, उतने फल नहीं टिकते।

जिसने लाए गल्ला, तिसने उठी चल्लाँ।

— जिसने प्रेम से दो बातें कीं, उसी के साथ हो लिए।

जिसा पतली खाणा, तिसा ही छींडा पाणा।

— जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना।

जित्थी जे पुज्जी गए कधी भद्रकी नी होई।

— जहाँ गए कदमे शरीफ न रबी रहे न खरीफ।

जनाना री अकल कने मैहँसी रे सिंग पिच्छे बखाओ ही जाहें।

— स्त्री की बुद्धि और भैंस के सींग पिछली ओर ही मुड़ते हैं, आगे नहीं आते।

जम्मी कने माँजे पर नी सुत्तेआ कने नौं रा सुखिया।

— गुण के प्रतिकूल नाम।

जवाँ तक सास तवाँ तक आस।

— जब तक साँस चलती है, जीवन की आशा बनी रहती है।

झाँट भर झोंपड़ी ठाकुरद्वारा नाँ।

— नाम बड़े पर दर्शन छोटे।

झीर सींह्मला मच्छियाँ सुआद।

— धीवर की नाक गंदी, मछलियाँ स्वादिष्ट।

टोली-टोली खसम कित्ता से भी इल्लें कावें नींता।

— बंदा जोड़े पली-पली, देव लुटाए कुप्पा।

टकेरा हाँडू गवाया आदमी रा पता पाया।

— थोड़े नुकसान में परखना।

टका करे टकटकाट रुपैया करे उल्कापात।

— रुपया उल्कापात करता है।

टकेरी बुढ़िया आना सिर मुँडाई।

— नगण्य वस्तु पर अपव्यय।

टटीहरिया दे भाएँ, अंबर मैं ही थम्मिया।

— टिटिहरी समझती है, आकाश उसी ने थामा है।

टुंडे टीरे काचरे ताँ मुच्छाँ वाली रन।
मत करा तबार इन्हाँ पर, खोटा इन्हाँ दा मन।

— एक हाथ वाला, काना, लँगड़ा और मूँछों वाली स्त्री पर कभी विश्वास न करें।

डंडा पीर मसटंडेया दा।

– मुश्टंडे डंडों से ही मानते हैं।

डाहिया दी मार बुरी।

– डाह की मार बुरी होती है।

डूमणे दा क्या चूमणा, दराहटू चुक्किया ता पठियार।

– डूमणा (निर्धन) क्या तैयारी करे। दराट उठाया और चल दिए।

ढाई टट्टू मियाँ बागें।

– दो-तीन टट्टू पाकर अपने को फौजदार समझना।

ढिडे च सिखी के कुण औंदा।

– पेट से सीखकर कौन आता है।

ध्याड़िया धूण मधूणी राती चरखे पूणी।

– कुअवसर पर श्रम करना।

ध्याड़िया दिब्बा नहेरा।

– छल-कपट।

ध्याड़िया दिब्बा तारे दसणे।

– चमत्कार करना।

धुआई बैठी की ध्यालू बख।

– शीघ्रता होना। बोलते ही आशनाई।

ध्याड़िया दिब्बा तारे सूझणे।

– चमत्कार दीखना।

धेला हाथा आई जाहाँ बेला नी आउँदा।

– अवसर चूकि का पछिताने।

धरत फूटे ताँ ओरे परे होई जाहाँ हे आंबर फटे ता कित्थी जाणा।

– धरती के फटते इधर-उधर किंतु आपत्ति सर्वव्यापी हो तो फिर क्या उपाय।

नवाँरी धौली रंग तवे साही।

– नाम बड़े पर दर्शन छोटे।

न गाय न बच्छी नींद पओ अच्छी।

– छप्पर वाला सोए कोठी वाला रोए।

न बेह्ड़ू न बच्छू मजे मँझ हा लच्छू।

– कोठी वाला रोए छप्पर वाला सोए।

न मड़ा मरे न मंजा छुटे।

– न मरे, न चारपाई छोड़े।

न माही री मँधिया न महैंसी रे थणे।

– न बचत न ही किसी के अर्थ का।

न धरती न धामा क्या हूँगा जाणे रामा।

– न धरती पर, न आकाश में, क्या होगा, जाने राम।

न पन्ने मँझ न पोथी मँझ सब कुछ दो रोटी मँझ।

– रोटी सबकी प्यारी।

नरेला री बेलि बिबड़ू।

– नारियल पर तूंबा।

नाइया बाल केड़े, केड़े भाइया बल्ले मुहाँ नेड़े।

– हाथ कंगन को आरसी क्या।

पंज्जेया उँगलियाँ इक बराबर नी हुंदियाँ।

– पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं।

पकड़दी है ताँ खांदी है, छडदी है ताँ जांदी है।

– पकड़ूँ तो खाएगी, छोड़ूँ तो भाग जाएगी।

पक्की संझ ताँ निंबल पंज।

– यदि शाम को बादल लाल हो जाए तो कुछ दिन आकाश साफ रहेगा।

पंडत बैद मसालची तीनों चतर महान।
लोकां जो दस्सण चानणा, अप्पू निहारे जान।

– पंडित, वैद्य, मशालची चतुर कहे जाते हैं। औरों को रोशनी दिखाते हैं, खुद अँधेरे में रहते हैं।

पढ़ोरा नी फुटा आखर, नाँ विद्या सागर। (कहलूरी)

– पढ़ा नहीं एक अक्षर, नाम विद्यासागर।

पत्थरा तू गोल कैहँ? अखैं रिड़की-रिड़की।

– पत्थर तुम गोल कैसे हुए? गिर-गिरकर।

परमेसर भी रजियाँ जो रजेरदा।

– ईश्वर भी तृप्त को ही तृप्त करता है।

पल्लैं नी तूह कने कड़ाहे जो रूह।

– पास में धान का छिलका नहीं, मन करे हलुवा खाने को।

परोखा तेसरी खोखा।

– परोक्ष का पाप पापी को।

पाप तेसरा बाप।

– पाप उसी के सिर।

परोहता ढभेआँ कने लाहा, जिजमान कोसी जो ब्याहा। (मं.)

— आम खाओ पेड़ न गिनो।

पैंद ढखिए ता सराणा नाँगा जे सराणा ढखिए ता पैंद नाँगा।

— दो जून की रोटी महँगी।

पेठ्ठू बड्डा नी हो ता धुड़ले भी नी हूँणा।

— लक्षण प्रत्येक स्थिति में स्पष्ट होता है।

पापा धर्म बैर हूँआ। (मं.)

— पाप और धर्म में वैर होता है।

फूकी री बड़िएँ क्या तुड़का।

— का वर्षा जब कृषि सुखाने।

फल्यूड़ी ढिलकदी चुत्थणा ओग।

— नानी खसम करे, दोहता चट्टी भरे।

पूर्ण चंद नौं काम सारे आधे।

— नाम के विपरीत काम।

पर केआँ मुइरेआँ रोणा।

— गड़े मुर्दे उखाड़ना।

पांजे भी परौहणा पंजाहें भी परौहणा।

— मान न मान।

पहाड़ बासा कुल नाश। (चं.)

— पहाड़ पर रहने वाले का कुल नष्ट हो जाता है। (कठिन जीवन)

पाणी पीणा पुणी ने, ताँ गुरु बणाणा चुणी नै।

— पानी छानकर पीजिए, गुरु चुनकर बनाइए।

पापिए दे मारने जो पाप बली।

— पापी को पाप ही मारता है।

पिठौरा क्या पीहणा? (चं.)

— पिसे हुए को क्या पीसना।

पिंड बसे ही नीं मँगते चली पै।

— गाँव अभी बसे नहीं, भिखारी आ पहुँचे। (प्रसिद्धि होना)

पीर परोहणा देवता, मनदेयाँ जो खाए।

— पीर, पैगंबर, मेहमान उन्हीं को तंग करते हैं जो उन्हें मानते हैं।

पुत्र कपुत्र कनें खोटा पैसा, वगता पर कम्मैं ईंदे। (चं.)

— कपूत और खोटा पैसा भी समय पर काम आता है।

पेटिड़ ताड़ेस ज्वापरिड़। (कि.)

— पेट की खातिर मौत के मुँह में भी जाना पड़ता है।

पैर गर्म पेट नर्म सिर ठंडा।
आए वैद ताँ मारी डंडा।

— यदि पैर गर्म रहे, पेट नर्म रहे, सिर ठंडा रहे, तो वैद-डाक्टर की आवश्यकता नहीं।

पैरा खा नी देखिए, दूरा खा देखणा चाहिंदा। (कलहूरी)

— अपने पाँव तक नहीं, दूर तक देखना चाहिए।

पैसा हत्था दा मैल।

— पैसा हाथों का मैल होता है।

पहले पहर ताँ हर कोई जागे, दूए जागे भोगी।
त्रीए पहर कोई रोगी जागे, चौथे जागे जोगी।

— रात्रि के प्रथम पहर में सभी जागते हैं, दूसरे में भोग-विलासी, तीसरे में रोगी और चौथे में योगी जागते हैं।

फगड़ी मुंडो दी लागो जानू दी नाई। (मं.)

— पगड़ी सिर पर ही बाँधी जाती है, जानू पर नहीं।

फरडू अपणियाँ बि ही मींगणा ते बतरैंहदा। (चं.)

— खरगोश अपनी मेगनी को देख बिदक जाता है।

फसिया दे नाएँ फड़क।

— मरता क्या न करता।

फटगा ताँ मालके दा धोबिए दा क्या जाणा।

— फटेगा तो मालिक का, धोबी का क्या जाएगा।

फाहल्डुआँ दे बिगड़यो घट ही सुधरदे।

— पोतड़ों के बिगड़े (बचपन) कम ही सुधरते हैं।

फिर भड्डुए दी अक्कल गई, म्है बेची घोड़ी लई।
दुध पीणा छुट्टिया, लिद चुकणा पई।

— मूर्ख की अकल को धिक्कार है। भैंस बेचकर घोड़ी खरीदी। दूध पीने से गए, लीद उठानी पड़ी।

फोचू कानड़ो जड़। (कि.)

— मूर्ख को अच्छे-बुरे का भेद नहीं होता।

बकरी दुध ताँ दिंदी पर मींगणा पाई।

— बकरी दूध तो देती है पर मेगनी डालकर।

बगत निकली जांदा गल्ल याद रेंहदी।

— समय तो निकल जाता है, बात याद रह जाती है।

बालक कनें बांदर निचले बैहण ताँ बुज्झा माँदे हन।

— बालक और बंदर चुपचाप बैठें तो समझो अस्वस्थ हैं।

बट्टे-सट्टे दी कड़माई, नंदो गई कलासो आई।

— बट्टे-सट्टे की कुड़माई में एक घर की बेटी दूसरे की बहू बनती है और उस घर की बेटी पहले की बहू।

बणाई करी ताँ मकौड़िया ने भी खरी।

— सबसे बनाकर रखना चाहिए।

बतकाँ दे बच्चे जमदे ही तारू हुंदे।

— बत्तख के बच्चे जन्म से ही तैरना जानते हैं।

बद्दल चल्ले चंबे ताँ खड्डाँ नालू कंबे।

— बादल चंबा की ओर चलें तो खड्ड-नाले काँप उठते हैं अर्थात् बहुत वर्षा होगी।

बद्दल चल्ले कुल्लू ताँ पाणी नी मिलणा चुल्लू।

— बादल कुल्लू की ओर चलें तो चुल्लू-भर पानी भी न मिले।

बंदरस गुदौ नरेल। (कि.)

— बंदर के हाथ नारियल।

ब्रागो दौ बाकरी कोठो छूटी। (महा.)

— बाघ से छूट बकरी कहाँ जाएगी।

बांदरौ खे भाँग। (महा.)

— बंदर को क्या भाँग।

बेह्लयाँ ते बगार भली।

— बेकार से बेगार भली।

बंदा जोड़े पल्ली पल्ली देव लुटाए कुप्पा।

— मनुष्य थोड़ा-थोड़ा करता है, प्रभु एक बार ही लुटा देता है।

बोला हें रूप घाट नी आउँदा जतमत आई जाहाँ ही। (मं.)

— खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

बिल्ली ता काठा री बणाऊँ पर म्याऊँ किहाँ कराऊँ। (मं.)

— चलती को चूड़ियाँ नहीं डाली जाती हैं।

बल्ले अम्मा मिंजो दरवाजे भी डुसके लाहें।

— नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

बाँकी देखी भुल्ले, बुरी चलगी सूले।

– रूप बाकी नहीं गुणवती।

बहुए घर बार तेरा पर छिक्के हाथ देखयाँ लांदी।

– नाम का अधिकार।

बुरे बले कजो जम्मीरा, बुरा सुणने जो।

– बुरा बुराई का पात्र।

बाझीं बरें ब्याह नी हूँदे।

– बिना कारण काज नहीं सँवरते।

भौंदू राजा बुहाणे रा सेही भाव आटे रा सेही भाव दाणेरा।

– अँधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

भेड़ाँ चली पई मक्के जो।

– सीमा से परे जाना।

मोर नाचे चावें आमरैटिएँ तीतर नाचेआँ चावे वाणें तू कजो नाचाँ हीं मुइए घुधिया तेरा फुहंदू खाधी रा कावें।

– किस पर करूँ सिंगार पिया मोरा अंधा।

भैण भणोआ भाणजा भावी भाईचार।

इन्हाँ पंजा जो छड्डी करी करिए बणज वयार।

– बहन, बहनोई, भानजा, भाभी तथा अपने भाईचारे को छोड़कर ही व्यापार करना चाहिए।

भुक्ख नीं तोपदा न्योड़ा, निंदर नी तोपदी बछाण।

– भूख लगी तो सब्जी की आवश्यकता नहीं होती, नींद आ रही हो तो बिस्तर नहीं चाहिए।

भुक्खा नी लाणा रसोई, रज्जिया नी लाणा प्रीहैं।

– भूखे को रसोई में नहीं लगाना चाहिए, रज्जे हुए को परोसने में नहीं लगाना चाहिए।

भूखा ब्राग मेंडकै खाओ। (महा.)

– भूखा बाघ मेंढकों को भी खा जाता है।

भेड क्या जाणदी फफरूए दा सुआद।

– भेड़ फफरू के साग का स्वाद क्या जाने।

भोलेआँ दे सोला, चँदरेआ के पंदरा।

– भोले व्यक्ति के सोलह, चालाक के पंद्रह।

भीतर थेहाँ ता चूहा खाहाँ जे बाहर थेहाँ ता काव नींहा।

– इधर कुआँ उधर खाई।

भादरू रा एक चादरू।

– मात्र एक चिंता।

भूखा बुझाँ हा हाऊँ खाई लेऊँ, रज्जी रा बुझाँहा हाऊ डकारी लेऊँ। (मं.)

– भूखे को भोजन की, संपन्न को प्रयोजन की।

भेड़थी सेह बरैघें मारी जबरी थी से गंगा तारी हाऊँ नी हा तेरी रंडा रा बगारी।

– मेरा कोई दोष नहीं, दोष तुम्हारे होश का।

महैस ढिगा पई गई फुहँटा कजो धीड़दे।

– घर जल गया तो राख से क्या।

माहाँ रे आटे साही नी अकड़ना।

– अत्यधिक अभिमान।

मकोड़ियाँ पचणा आवाँहा ता फाँख लँहागे। (मं.)

– बुरे दिनों बुद्धि भी पलट जाती है।

माओ मुई जोरू सुई फेरी त्रींही रे त्रय।

– ढाक के तीन पात।

मुहल उखल बागरिएँ नीते जबरी रोहाँ ही फाहूआँ। (मं.)

– सर्वनाश पर आस।

मारे रे गए कयाड़िया बाट नी दिसदी ध्याड़िया।

– समय विपरीत होने पर।

मच्छी रे बच्चे पहले ही तारू हुआँ है। (मं.)

– जैंसा काम वैसी आदत।

मूहला क्या म्याण मूढ़ा क्या ज्ञान।

– मूर्ख को ज्ञान क्या मूसल को म्यान क्या?

माघा री गई सोला गद्दिए खोलेआ चोला।

– सोलह माघ शीत कम हो जाता है।

मुहाँ धोई रखेआँ।

– तैयार रहना।

मित्र घाटें घाटें कने डाल बाटें बाटें।

– मित्र स्थान-स्थान पर वृक्ष मार्ग पर।

मकोड़िया जो ठूठा ही दरिया।

– चींटी के लिए छोटा बर्तन ही दरिया है।

मंतर नी जाणदा डंगुए दा, सर्प पटारिया हथ।

— बिच्छू का मंत्र नहीं आता और साँप की पिटारी में हाथ।

मते बिल्ले चूहें नीं मरंदे। (चं.)

— बहुत-से बिल्लों से चूहे नहीं मरते।

मनुखाँ दे भाग, दरयाँ दे फेर कुनीं दिक्खे।

— मनुष्य के भाग्य, दरिया के रुख किसने देखे।

मरणा आया ताँ मकोड़िया जो फंग लग्गे।

— मृत्यु आने पर चींटी के पर निकल आते हैं।

माखी बैठी मखीरे पर, लै फंग लवटा।

— मक्खी शहद पर बैठी तो पंख फँस गए।

तोबा तोबा करदी लोको। लालच बुरी बला।

— लालच बुरी बला है।

माघ औ ब्राघ राति दीओ। (महा.)

— माघ मास में बर्फ और बाघ रात को ही आते हैं।

माम्मे दे कन्नै कोकले भाणजा देबो लेरा। (चं.)

— मामा के कान में बालियाँ, भानजा खुशी से चिल्ला रहा है।

मिल्ली ताँ खाई लई नीं ता हरि इच्छा।

— मिल गया तो खा लिया नहीं तो हरि इच्छा।

मीरें चम प्यारा, गरीबें कम्म प्यारा।

— अमीर को चमड़ी प्यारी, गरीब को काम।

मुँह बछुआँ दे, मार सेराँ दी।

— मुँह बछड़े की तरह भोला, मार शेर की।

रंड तमाकू पींदड़ी ताँ हाकम रिसवतखोर।

त्रीया पुत्तर लाडला ताँ इन्हाँ दी त्रट्टी चौड़।

— तंबाकू पीने वाली विधवा, रिश्वतखोर हाकिम, लाड़ला बेटा—इन तीनों की कभी पूर नहीं पड़ती।

राज गौं, मेघ गौं, चुतड़ गौं न्यारा।

— राजा, मेघ और मुस्टंडे की मर्जी न्यारी।

ये वैदा रे चौल हे इन्हाँ पिच्छ घट घट ही निकलदी। (मं.)

— इन तिलों में तेल कहाँ?

ये मुँह मसराँरी दाल। (मं.)

— छोटा मुँह बड़ी बात।

रस्सा फुकी गया पर तड़ैंग नी गई।

— चोर चोरी से गया, हेरा-फेरी से नहीं गया।

पक्केआँ घड़ेआँ नी बिल लगदे।

— बूढ़े तोते नहीं पढ़ते हैं।

राहा जाँदिए बलाई तूँ माह मँझे जायाँ आई।

— आ बैल मुझे मार।

रंडा रे मारी सेओमुए विण बलधें मुए करसाण कैथू री कवालिया से मुए जिन्हाँ री जाँघाँ नी हा त्राण।

— साधन के बिना मरे ही समझो।

रहे दिल्ली झोकी भाठ।

— नाम बड़े पर दर्शन छोटे।

रिच्छा भी छिच्छा, बाँदरा जो भी टिक्का।

— बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

राजा राज करो, परजा सुखी रहो।

— राजा राज्य करे प्रजा सुखी रहे।

बले मेरी छाई री चुड़दी।

— मैं, मेरे जैसा मैं, एक मैं।

लेटी री कुत्तिया जो मिली जाओ ताँ भौंकणे री क्या जरूरत। (मं.)

— बिन काम मिले तो काम क्यों करें।

लींडू बौलधा जो सौ बमारी।

— ऊँघते को ठीलते का बहाना।

लोकाँ होई रा सोता सोता ता फूहड़ी तवा धोता।

— दीर्घसूत्रता बरतना।

लगिया अग्गी बद्दल नी बरधा।

— लगी हुई आग के समय पानी नहीं बरसता।

लगी गिया ता तीर नी ताँ तुक्का।

— लग गया तो तीर नहीं तो तुक्का ही सही।

लड़न फौजाँ ता नाँ सरदाराँ दे।

— लड़ती तो सेनाएँ हैं, नाम नायक का होता है।

लींडा बलद बारा व्याधीं।

— एक पूँछ बिना बैल, उस पर उसे कई व्याधियाँ।

लेखैं कोड्डी दानैं घोड़ा।

— हिसाब करने पर कौड़ी भी गिनी जाती है, दान में तो घोड़ा भी दिया जा सकता है।

लुच्वा सभना ते उच्चा।

— धूर्त व्यक्ति सबसे बड़ा माना जाता है।

लोकाँ लाहे री फागू फाहे री।

— सब अपनी-अपनी बातें करते हैं।

लोकाँ लाज प्यारी, लाजो छाज प्यारी।

— कोई माल मस्त, कोई हाल मस्त।

लोकाँ लूण तुड़के री लाड़े तड़ागिया री।

— सबको स्वार्थ प्यारा।

लाले कन्ने भी बणी री गोपाले कन्नें भी।

— सबसे बर्ताव होना।

लगना री वेला लाड़ा रूठा।

— विशेष काल आपत्ति आना।

लेटी री कुत्तिया अंबर ढेरा।

— वृथा बकवाद करना।

विषाँ रे पुत्र निर्विष नी हूंदे।

— खून का प्रभाव होता है।

बले घोड़े रे सवारा बले हूंदे चला।

— तैरने को अधीनगी, डूबने को अभिमान।

बगताँ रे चली रे पुजाँ हे ठकाणे।

— समय पर कार्य प्रारंभ करते, समय पर चलते हैं।

शक्ति चंद नौं जिस्म लकड़िया साही।

— नाम शक्ति वाला पर शक्तिहीन।

सुखदेव नौं सुखी केसी जो नी देखी सकदे।

— सुखदेव नाम, सुख किसी को देता नहीं।

सौण कट्टा माघ बच्छा भादों बेटा।

— सावन के भैंस के ब्याने और माघ गाय के बच्चे देने और भादों पुत्रोत्पत्ति उचित मानी जाती है।

से जे लगे बगाने बोलें से जाओ बजदें ढोलें।

— अपनी बुद्धि से काज।

सन्यारा री टको टई लुहारा रा एको घस्सा।

— सौ सुनार की, एक लुहार की।

सरीक बेटी नी व्याहंदे होर सभ कुछ कराँ हे।

— कुत्ते का बैरी कुत्ता।

सुणनी जनानी री, करनी मना री।

— पत्नी की बात ध्यान से सुनो, करो अपनी।

संढ क्या जाणे पुत्तर बजोग।

— बाँझ क्या जाने पुत्र-वियोग।

सकार आया हेड़े ताँ हेड़िए जो छुट्टी घाई।

— शिकारी का शिकार सामने आया तो उसे पाखाना आ गया।

सौज बरहे कात्तक किणेयाँ नब्बे तक गिणेआँ।

— कार्तिक की बूँदें नब्बे दिन तक बरसा का न होना बतलाती हैं। (असूज की वर्षा के बाद तीन मास वर्षा नहीं होती।)

सारी झानी जो खबर होई गई।

— सर्वत्र पता चलना।

सारे चीड़ू पखेरू भी आपणे अवासा बैठाँ हे।

— सब पक्षी घोंसले में बैठते हैं।

होच्छेओ मिलेआ गोच्छा तिन्नी खींजी-खींजी त्रोड़ी ता।

— अधजल गगरी छलकत जाय। बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

कमांदी खाधी झोटें थुम्बर जुरूणा बौल धारा।

— करे कोई भरे कोई।

होरी रे गिल्हड़े घरैं नी हुंदी।

— औरों के धन पूत से क्या लाभ?

हाथा कन्नें देणी दाँदा कने खोलनी।

— स्वयं आपत्ति मोल लेना।

हुणी पुच्छी कनें नी आऊँदी।

— होनहार अचानक होती है।

हुकम चंदा री कोई गल नी मनदा।

— नाम बड़ा, प्रभाव कोई नहीं।

होणहार हिरदे बसे वैसी लगे बुद्धि।

— बुद्धि समय के अनुसार पलट जाती है।

हवालेआँ हियूँ निंबल त्यूँ।

— हिमालय के आसपास हिमपात के बाद आकाश निर्मल हो जाता है।

हेसी रे घरा ढोली जमणा।

— जैसा वंश वैसा पूत।

हाखीं दिक्खी जहर नी नगलौंदा।

— आँख के सामने जहर नहीं खाया जाता।

हुर-हुर जाशँड़। (कि.)

— दाद को खुजलाना।

हाखीं दा अन्हाँ नाँ चरागदीन।

— आँखों का अंधा, नाम चरागदीन।

दोहे

पुराने समय में गाथा, कथा सुनाने से पहले दोहे सुनाने का प्रचलन था। पढ़े-लिखे न होने पर जब किसी से किसी निकट संबंधी को खत लिखवाया जाता, तब भी ऐसे दोहे लिखे जाते थे। पत्र के अंत में 'लिखने वाले की तरफ से पढ़ने वाले को नमस्ते' के साथ कोई न कोई दोहा भी लिखा जाता। इस तरह खत लिखने और दूसरे को पढ़कर सुनाने वाले के बीच भी एक संवाद चलता।

इन दोहों को फैकड़े या फ्याड़े भी कहा जाता है।

गर्मागर्म फुलके उपरा ते पाई खंड
जो चिट्ठी आई थारी दिला गई ठंड।

तुम तो बसे काँगड़े हम बसे कहलूर
बहुत दिन का मिलणा क्यों बैठे इतणे दूर।

पहाड़ा ते उड्ड़ेया पंछी जाई बैठेया कश्मीर
दिल मिलणा चाहँदा मिलणा देंदी ना तकदीर।

खाणे-पीणे री सुख-सैहल नमो नारायण सस्ते
दोस्ताँ जो मेज-कुर्सियाँ पढ़ने आले जो नमस्ते।

कोरे कागद बीच में लिखणा मोर
गल्लाँ तम्हारी लटपटी मन में चोर।

चल-चल लफाफे कबूतर की चाल
होगी मुहब्बत मिलेगा जवाब

न होगी मुहब्बत
मेरे खत को न करना बरबाद।

सोने री कलम चाँदी की दवात
है मैं यहाँ दिल तुम्हारे पास।

शिमले से गई रेल जा पहुँची कश्मीर
मिलना था जरूर मिलना न देंदी तकदीर।

समुद्र में पानी बहुत है घड़े में भरा नहीं जाता
दिल में तो बहुत था खत में लिखा नहीं जाता।

कोठड़ी पर कोठड़ी, कोठड़ी पर खजूर
दस पैसे खर्च करना पत्र भेजना जरूर।

चीठी लिखी है खून से स्याही न समझना
मरता हूँ याद से जीता न समझना।

सीसी भरी सराब की पत्थर के ऊपर तोड़ दूँ
जब याद तुम्हारी आती खाना-पीना छोड़ दूँ।

सीसी भरी सराब की जो लौंगे भरी परात
मिलणा जुलणा कठिन है ये परालब्ध की बात।

सीसी भरी सेंट की बिच में डाला सराब
तेरी-मेरी दोस्ती किसने की खराब।

तेज बिना तजो तुरंगा, तजो राज अनाचारी
तजो देव फलहीना, तजो भोंडी नारी।

तजो सुहावणे देस जित्थी पए न कुछ पल्ले
तज दो उस परिवार को, जित्थी कुछ कहा न पल्ले।

मित्र तजो जीजान ते, जेहड़ा मन बिच रखे मंतरा
सैह सभा त्याग दे पंडता, जित्थी भले बुरा न अंतरा।

धन वाले दी दुनिया, बिन धन वाले दा न कोय
फूल-फला इस बाग में जब ढूँढू तब नाहीं।

तेरे बागाँ आम पाके होर पाकी दाख
खाणे वाले कोय-कोय देखने वाले लाख।

उड़कर पंछी मिल आते, उड़ा न हमसे जाता
धागा होता तोड़ देते दिल न तोड़ा जाता।

तू कली है फुल्ल गुलाब की हिमाचल प्रदेश में
ले जाणी है किसी रोज सीता जैसी रावण के भेष में।

नैण झुलारा मैं सई, पौण झुलारा रूख
जिन्हाँ दिनाँ रे बिछड़े सजणा, न नैणे नींद न पेटा भूख।

आम लगे अमरूद लगे होर लगे गुलदस्ते
तुसाँ छडेया औणा जाणा म्हारी तरफ ते नमस्ते।

आग लगी इस बण को जली गए सब पात
पहले बिठाया गोद में फेरी मारी लात।

लोककथा की यात्रा

यह धारणा गलत है कि लोककथा बच्चों के लिए है। या उसमें किसी तरह का बचपना होता है। लोककथाओं को ज्यादातर नानी, दादी की कहानियाँ कहकर टाल दिया जाता है। वास्तविकता यह नहीं है। लोककथाएँ एक गहन अध्ययन, बारीक मनोविश्लेषण और गहरी समीक्षा की माँग करती हैं।

लोककथा एक पूरी संस्कृति की यात्रा को वहन करती है। इसमें जनमानस की आत्मा, विश्वास, आदर्श परिलक्षित होते हैं। समूचे समाज की भावना, आकांक्षा और मंगलकामना कथाओं में छिपी रहती है। जब सर्दियों में अलाव के पास एक कथा सुनाई जाती है तो वहाँ बच्चे, बूढ़े, युवा महिला-पुरुष सब लोग एक साथ उपस्थित होते हैं और कथा की घटनाओं पर टिप्पणियाँ करते हैं। कथा तो पुराने युग की है, उसे आज के संदर्भ में देखते-परखते हैं। कथा सुनने वाले चाहे अशिक्षित हों, निरक्षर हों किंतु उनकी समझ विकसित होती है और वे अपनी बुद्धि और विवेक से कथा के बारीक तंतुओं का विश्लेषण करते हैं।

लोककथा का जन्म मानव सभ्यता के साथ हुआ। लोककथा का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव जाति का आदि। हमारे वेद-उपनिषदों में जो उपदेशात्मक कथाएँ मिलती हैं, वे लोककथाओं का ही प्रतिरूप हैं। पंचतंत्र की कथाएँ संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध हैं। जंगली जानवरों के माध्यम से ये कथाएँ जिस जिज्ञासा व बालसुलभ उत्सुकता को जन्म देती हैं, उनके पीछे रचनाकार के नीति-वाक्य व उपदेश-सार भी छिपे हैं। इन्हीं कथाओं ने आगे चलकर लोककथाओं का रूप धारण किया।

लोककथा का श्रुत साहित्य है, जो वैदिक मंत्रों की तरह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक यात्रा करता रहा। न जाने कितने वर्ष पहले इन कथाओं का जन्म हुआ होगा। कौन होंगे इनके रचयिता। किंतु यह सरिता अविरल बहती रही।

माँ के दूध के साथ जो बालक को मिला है वह लोककथा है। जो जन्मघुट्टी के साथ पिलाया जाता है, वह लोककथा है। बालक के जन्म के साथ ही लोककथाओं का जन्म होता है। लोरी के साथ सुलाने के बाद एक स्थिति ऐसी आती है कि मीठी

लोरी अपना काम नहीं करती। उस समय लोककथाएँ व परी-कथाएँ अपनी भूमिका निभाती हैं। नानी, दादी, बड़ी-बूढ़ियाँ अपनी कथाओं के खज़ाने लुटाती जाती हैं क्योंकि रोज एक न एक कथा अवश्य चाहिए।

कथाएँ केवल बालकों के लिए हों, ऐसी बात नहीं है। लोककथा बालक की है, युवक की है, वृद्ध की है। लोककथा वह, जो बूढ़े ने बालक को सुनाई। बूढ़े ने युवक को सुनाई। यह आयु-सीमा का विषय नहीं है। कथा एक वृद्ध भी उतनी तन्यमता से सुनता है जितना कि एक बालक।

सृष्टि का पहला साहित्यकार लोककथाकार ही रहा होगा। नानी, दादी की थाती और सर्दियों की लंबी रात में जलते अलाव ने इसे बहुत समय तक जिंदा रखा।

हमारी अधिकांश लोककथाएँ 'और अंत में सब सुखपूर्वक रहने लगे' के आदर्श पर आधारित हैं। कथानायक द्वारा संघर्ष और अंत में विजय—यही मूल मंत्र रहा है हमारी लोककथाओं का। हमारी ही नहीं, विश्व की समस्त लोककथाओं में यही तत्त्व मिलते हैं। असत्य की सत्य पर विजय, सरलता-सहृदयता की छल-प्रपंच पर विजय सहज दिखने को मिलती है। सभी कथाएँ अंत में एक सत्य को उद्‌घाटित करती हैं। यह सत्य चाहे नीति-वाक्य के रूप में हो, चाहे सूक्ति-रूप में हो, एक आदर्श या नीति-सूक्ति या निचोड़ रूप में सामने आता है। अल्योनुश्का और इवानुश्का की रूसी कथा, चुड़ैल के अंत की रूसी कथा, कामधेनु चक्की की जापानी कथा आदि इसके उदाहरण हैं। स्नो व्हाइट भी एक ऐसी ही कथा है जिसमें अपने को सबसे सुंदर समझने वाली दंभी महिला का अंत होता है। विदेशों में ऐसी लोककथाओं व परी-कथाओं पर फिल्में बनी हुई हैं जो आज के युग में इन्हें जीवित रखने का सशक्त व उपयुक्त माध्यम हैं।

हिमाचल प्रदेश में ऐसी लोककथाओं की गिनती करना संभव नहीं है। प्रदेश के प्रत्येक अंचल में अपनी-अपनी तरह की, अपने-अपने परिवेश की कथाएँ प्रचलित हैं। अलग-अलग भौगोलिक परिस्थितियों तथा विभिन्न सभ्यता के बहुरंगी रंगों ने अलग परिवेश की कथाओं को जन्म दिया। किन्नौर की ओर के जनजातीय क्षेत्र में लाटी शंरजंग और हिनाडुंडव कथा, चंबा के जनजातीय क्षेत्र में सुन्नी-भुंकू कथा अपनी-अपनी विशिष्टता के कारण प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार नन्हा राजकुमार और राक्षस, होशियार बालक, चोर का सच तथा राजा विक्रमादित्य से संबंधित अनेकानेक कथाएँ प्रदेश के निचले क्षेत्रों में प्रचलित हैं। किस्सा तोता-मैना, राजा रसालू, राजा भरथरी की कथाएँ भी लगातार तथा अंश रूप में सुनाई जाती हैं।

इन कथाओं के अलग-अलग रूप हैं। संक्षिप्त रूप में ये नानी, दादी द्वारा घर

के भीतर सोने के समय बच्चों को सुनाई जाती हैं। विस्तृत रूप में सर्दियों में अलाव के पास बैठकर 'काथू' इन कथाओं को सुनाते हैं। एक-एक कथा कई महीने तक चलती है। यदि 'काथू' गाकर सुनाने लग जाए तो और भी ज्यादा समय लगता है।

इन कथाओं का लिखित साहित्य बहुत कम है। यदि कुछ आया भी है तो कुछ ही समय पूर्व। ये कथाएँ ऐसे ही एक से दूसरे को स्थानांतरित होती रहीं और आगे से आगे चलती रहीं।

अधिकांश कथाएँ ऐसी भी हैं जो एक पूरे भू-भाग में प्रचलित हैं, थोड़े-थोड़े रूपांतर के बाद। उदाहरणतः 'लाटी शंरजंग और हिनाडुंडव' की कथा किन्नौर तथा लाहौल-स्पिति में एक-सी ही प्रचलित है। कुल्लू में आकर इसका रूपांतर हुआ। कथा लगभग वही है, कुल्लू की भौगोलिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का इस पर असर हुआ और उसी प्रकार का परिवर्तन हुआ। इसी तरह 'स्याह परी' की कथा प्रदेश के निचले क्षेत्र में प्रचलित है जिसमें रात के समय इंद्रलोक से परियाँ एक तालाब में नहाने आती हैं। एक बार एक राजकुमार द्वारा स्याह परी के वस्त्र तथा पंख छिपाए जाने के कारण वह धरती पर रहने को विवश हो जाती है। इस कथा के रूपांतर पूरे निचले क्षेत्र में प्रचलित हैं। राजा विक्रमादित्य की कई कथाएँ प्रचलित हैं। इन सभी कथाओं में अपने-अपने भाव और अपनी-अपनी इच्छा व परिवेशजन्य परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन पाए जाते हैं।

वास्तव में कथा की यात्रा संस्कृति की यात्रा है। कथा, भाषा, बोली, रहन-सहन, रीति-रिवाज के अनुसार बदलती है। कथा-नायक वही बोली बोलता है जो उस क्षेत्र की है। उसका पहरावा भी वही है। उसी रीति-रिवाज तथा परंपरा के अनुसार चलता है। कथा की कथावस्तु एक होते हुए भी भाषा-शैली, देश-काल का परिवर्तन एक कथा को अपने परिवेश से जोड़ उसी अंचल की कथा बनाता है।

'नन्हा राजकुमार और राक्षस' कथा में नन्हे राजकुमार द्वारा अपनी रानी माँ के राजा द्वारा निष्कासन के कारण भाँति-भाँति के कष्ट उठाने की कथा है। राजा को एक राक्षसी वेश बदलकर मोह लेती है जिस कारण नन्हा राजकुमार उसके भाई-बांधव राक्षसों से टक्कर लेता है। किंतु राजकुमार की सरलता, सहृदयता और अबोध भाव के आगे सभी कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं। अंत में वह राक्षसी को मारकर अपने पिता को सही राह पर लाने में कामयाब हो जाता है। राजकुमार के धैर्य और साहस के आगे सारी कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं और वह अपनी माँ सहित सुखपूर्वक रहने लगता है। यह कथा अंत में राजकुमार की विजय का ध्वज फहराकर एक सुखांत के साथ आदर्श भी स्थापित करती है।

एक कथा है होशियार बालक की। यह होशियार बालक भी नन्हे राजकुमार की भाँति अपने भाई-बिरादरों की कूटनीतियों से बच निकलता है। इसका परिवेश गाँव का है और अपने गाँव में रहते हुए वह बार-बार चचेरे भाइयों तथा ताए-चाचों के चंगुल से बच निकलता है। अंत में उसके सभी विरोधी समाप्त हो जाते हैं। उक्त कथा की भाँति इसमें भी बालक सरल और भोला है। इसी कारण उसके लिए बिछाए गए जाल भी उसकी उन्नति के साधन बन जाते हैं।

बुरे व्यक्ति भी कभी-कभी एकाध अच्छाई का सहारा लेकर महान् बन जाते हैं, यही दीक्षा है 'चोर का सच' कहानी में। चोर चोरी तो करता है किंतु उसने कभी झूठ न बोलने का व्रत ले रखा है। इसी अच्छाई से वह राजा का वजीर बन जाता है और राजा के भ्रष्ट वजीर निकाल दिए जाते हैं। एक कथा 'किस्मत कहाँ हैं?' बहुत ही प्रेरणादायक है। एक आलसी व्यक्ति अपनी किस्मत ढूँढ़ने निकलता है तो उसे एक साधु उसकी किस्मत समुद्र-पार होने के बारे में बताता है। समुद्र-पार जाने की राह में उसे युवती, खजाना और घोड़ा मिलते हैं जिन्हें वह वापसी में ले आता है। वास्तव में समुद्र-पार कुछ नहीं होता। किस्मत ढूँढने के श्रम में आलसी व्यक्ति चुस्त बन जाता है और काम करता है जिसके कारण उसकी किस्मत स्वयं उसके पास आती है।

एक कथा जाने-अनजाने में बहुत-कुछ कह जाती है। सीधे-सीधे न कहकर कथा परोक्ष रूप से बड़ी से बड़ी बात कह जाती है। जाने-अनजाने संदेश भी दे जाती है। एक कथा में ब्राह्मण, बढ़ई, सुनार ऐसे मित्र हैं कि एक साथ रहते हैं, एक साथ खाते-पीते हैं, एक साथ सोते हैं। एक ही गाँव में रहते हुए उनमें ऊँच-नीच, छुआछूत का कोई दोष नहीं है। ऐसे ही दूसरी कथा में शेरनी और गाय में मित्रता है। शेरनी का बच्चा और बछड़ा मित्र हैं। साँप, चूहा, शेर और आदमी मित्र हैं और एक साथ रहते हैं। राक्षस मनुष्य की कन्या को बेटी मानते हैं। ऐसी बातें स्पष्टतः नहीं कही जा सकतीं किंतु कथा के माध्यम से परोक्ष रूप से समझाई जा सकती हैं।

लोककथाएँ हमारी संस्कृति की निधि हैं। यह निधि हमारी विरासत में बसी है। इसका संरक्षण आवश्यक है। आज के प्रगतिशील यांत्रिक युग में यदि किसी चीज का ह्रास हुआ है तो वह संस्कृति ही है। आज अलाव की जगह हीटर जगा। नानी-दादी की कथाओं की जगह ट्रांजिस्टर, टेलीविजन बोलने लगे। यह प्रसार पहाड़ी दर पहाड़ी फैल रहा है। पहाड़ी दर पहाड़ी फैल रही है ये सोनरंगी आग जो हमें हमारी वर्षों से रक्षित संस्कृति को राख कर रही है। आज जो 'स्विच-संस्कृति' दैत्याकार होती जा रही है, इसे दबाया नहीं जा सकता। अतः वर्तमान परिस्थिति में इसका संग्रहण

ही संरक्षण है।

विदेशों में लोककथाओं को टेलीविजन की लोकप्रियता के कारण फिल्मी सीरियलों में बदला गया है जो एक अच्छा प्रयास है। समय की दौड़ के साथ चलने के लिए ऐसा करना एक सराहनीय कदम है। जिस युग में जो संप्रेषण का माध्यम बने, उसे अपनाने से ही यह विशिष्ट थाती बच सकती है।

नन्हा राजकुमार और राक्षस

इंद्रसेन नाम का एक राजा था, एक थी रानी।

राजा को शिकार खेलने का बड़ा शौक था, प्रायः वह शिकार खेलने जाया करता था।

एक बार की बात है राजा इंद्रसेन शिकार खेलने गया। शिकार खेलते-खेलते वह बहुत दूर निकल गया। राजा की सेना पीछे रह गई। राजा थककर नदी के किनारे एक पेड़ के नीचे आराम करने बैठ गया। नदी के किनारे उसने एक सुंदर कन्या को टहलते देखा। कन्या अद्वितीय सुंदरी थी। राजा उस पर मोहित हो गया। उसने कन्या के समीप जाकर उसके साथ विवाह का प्रस्ताव रखा। कन्या तो जैसे चाहती ही यही थी। वह झट से मान गई। राजा उसे अपने महल में ले आया।

कुछ समय बीता। राजा की पहली रानी के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इससे नई रानी को बड़ी ईर्ष्या हुई। नियमानुसार राजा का बड़ा बेटा ही राज्य का उत्तराधिकारी बनता था। नई रानी अब बड़ी रानी को महल से निकालने की तरकीब सोचने लगी।

राजा द्वारा जंगल से लाई हुई रानी वास्तव में एक राक्षसी थी। राजा को अपने वश में करने के लिए ही उसने सुंदरी का रूप धारण किया हुआ था। राजा को इस बात का पता न था। वह नई रानी के जाल में फँस चुका था।

राक्षसी ने बड़ी रानी को निकालने का उपाय खोज निकाला। वह बीमारी का बहाना कर लेट गई। राजा ने कई हकीम, वैद्य बुलाए किंतु रानी ठीक न हुई। आखिर राक्षसी ने बताया, 'यदि महारानी की आँखें निकालकर लाई जाएँ और उन्हें यहाँ से दूर भेज दिया जाए तो मैं ठीक हो सकती हूँ।'

राजा महारानी को बिना कसूर इतनी सजा देना तो नहीं चाहता था किंतु राक्षसी के साथ रहने से उसकी बुद्धि भ्रमित हो गई थी। उसने अपने जल्लादों को हुक्म दिया कि महारानी की आँखें निकालकर लाई जाएँ और उसे तथा राजकुमार को जंगल के किनारे एक झोंपड़ी में रखा जाए। जल्लादों ने महारानी की आँखें निकालकर राजा के पास पहुँचा दीं। राक्षसी उन्हें देखकर बहुत खुश हुई और दिनोदिन ठीक होने लगी। महारानी अब अंधी हो गई थी। उसे जंगल के किनारे एक झोंपड़ी में रखा गया था। राजकुमार भी उसके साथ रहने लगा।

राजकुमार बड़ा होने लगा। वह जंगल के किनारे बसे गाँव के लड़कों के साथ खेला करता था। एक बार लड़के एक ऐसा खेल खेलने लगे जिसमें सबको अपने-अपने बाप का नाम बताना होता है। जो लड़का अपने बाप का नाम नहीं बताए, उसे खेल में शामिल नहीं किया जाना था। जब खेल में छलाँग लगाने से पहले राजकुमार से बाप का नाम पूछा गया तो वह चुप रह गया। उसे ज्ञात नहीं था कि उसके पिता राजा हैं। उसे खेल से निकाल दिया गया। वह रोते-रोते अपनी माँ के पास आया और सारा हाल सुनाया। माँ ने रोते हुए बताया, 'बेटा! तुम्हारे पिता का नाम इंद्रसेन है। वे इस इलाके के राजा हैं। कल तू उन बच्चों को बता देना।'

राजकुमार यह जानकर कि उसके पिता राजा हैं, बहुत प्रसन्न हुआ। और साथ ही दुखी भी हुआ कि पता नहीं क्यों राजा ने उन्हें इस तरह छोड़ दिया है। दूसरे दिन खेल में जब उसने बताया कि उसके पिता इस इलाके के राजा हैं, तो सब बच्चे सहम गए और राजकुमार की बड़ी इज्जत करने लगे।

एक दिन राजकुमार ने अपने पिता से मिलने की ठान ली। उसने माँ को नहीं बताया और राजमहल में पहुँच गया। राजा राजकुमार को देख बहुत प्रसन्न हुआ। तभी नई रानी आ गई। राजकुमार को देख वह ईर्ष्या से जल-भुन गई और राजकुमार को मारने के उपाय सोचने लगी। उसने राजकुमार को फिर से माँ के पास भेज दिया।

एक दिन राक्षसी फिर से बीमार पड़ गई। राज्य के सारे हकीम-वैद्य बुलाए गए। कोई आराम न हुआ। रानी पेट-दर्द से पेट पकड़े रोती रहती। राजा बहुत दुखी हो गया। आखिर राक्षसी ने बताया, 'यदि राजकुमार मेरे लिए शेरनी का दूध ले आए तो मैं ठीक हो सकती हूँ।'

राजा ने राजकुमार को बुला भेजा और शेरनी का दूध लाने का आदेश दिया। राजकुमार ने वापस आकर अपनी माँ को बताया कि नई रानी को शेरनी का दूध चाहिए। महारानी समझ गई कि यह सब राजकुमार को मरवाने की योजना है। उसने राजकुमार को समझाया कि वह जंगल न जाए। किंतु राजकुमार नहीं माना और जंगल की ओर हो लिया।

जब राजकुमार शेर की गुफा के पास पहुँचा तो उसने देखा, वहाँ चारों ओर आग लगी हुई थी। शेरनी के बच्चे आग से डरकर चिल्ला रहे थे। राजकुमार आग से बचता हुआ कूदकर गुफा में गया। शेरनी के बच्चे झुलसने वाले थे। शेर, शेरनी वहाँ नहीं थे। राजकुमार ने बारी-बारी शेरनी के दोनों बच्चों को उठाकर गुफा के बाहर फेंका। शेरनी के बच्चे बहुत खुश हुए और राजकुमार के दोस्त बन गए।

राजकुमार ने शेर के बच्चों से कहा, 'तुम्हारी माँ आने वाली है। वह तो मुझे खा जाएगी। अब मैं चलता हूँ।' किंतु शेर के बच्चों ने राजकुमार को नहीं जाने दिया

और कहा कि वे उसे अपनी माँ से बचा लेंगे।

शाम को शेरनी आई तो बच्चों ने उसे राजकुमार से मिलवाया और बताया कि इसी ने उन्हें आज आग से बचाया है, नहीं तो वे जल गए होते। शेरनी ने राजकुमार को बहुत प्यार किया। राजकुमार ने डरते हुए शेरनी को बताया कि उसे अपनी माँ की बीमारी के लिए दूध की जरूरत है। शेरनी राजकुमार के साथ चलने को तैयार हो गई कि जितना दूध चाहिए, वहाँ दूह लेना। राजकुमार शेरनी को साथ ले राजमहल में आ पहुँचा।

जब नई रानी ने शेरनी को अपने बिस्तर के पास देखा तो उसकी चीखें निकल गईं। वह चिल्ला उठी, 'ले जाओ, इसे ले जाओ। मैं ठीक हूँ।'

राजकुमार हँसता हुआ शेरनी को जंगल में छोड़ आया। राजा व प्रजा राजकुमार के साथ कुतिया की भाँति शेरनी को चलता देखकर अचंभित हो गए।

कुछ दिन राक्षसी चुप रही। राजकुमार उसे आँखों में खटकता रहा। एक दिन पुनः वह बीमारी का बहाना कर लेट गई। शाम को राजा महल में लौटा तो वहाँ अँधेरा था। रानी कराह रही थी।

इस बार फिर रानी ने पेट-दर्द का बहाना किया और हाय-हाय करती रही। वैद्य, हकीम बुलाए गए। कोई फायदा न हुआ। आखिर रानी ने कहा, 'मुझे बचपन से ही ऐसा दर्द होता है। मेरे मायके में भूरी भैंसें हैं। उनका दूध पीकर मैं ठीक होती हूँ। यदि राजकुमार मेरे मायके से भूरी भैंसों का दूध ला दे तो मैं ठीक हो सकती हूँ, नहीं तो मर जाऊँगी।'

राजा ने फिर राजकुमार को हुक्म दे दिया कि वह जाए और रानी के मायके से भूरी भैंसों का दूध ले आए।

राजकुमार को उसकी माँ ने जंगल जाने के लिए बहुत रोका क्योंकि नई रानी ने अपना मायका घने जंगल में बताया था किंतु राजकुमार नहीं माना।

राजकुमार घने जंगल में बढ़ता गया। बहुत आगे जाकर उसे एक साधु मिला। साधु के पूछने पर राजकुमार ने बताया कि अपनी नई माँ के लिए उसके मायके से दूध लाने जा रहा है। साधु ने कहा, 'बेटा, उस रानी के भाई, माँ सब राक्षस हैं। वह स्वयं भी राक्षसी है। फिर भी तुम डरो मत। मैं तुम्हें तोता बनाकर भेजता हूँ। तुम जाकर एक भैंस का बाल तोड़ लेना। बस सारी भैंसें तुम्हारे पीछे-पीछे आ जाएँगी।'

साधु ने राजकुमार को तोता बनाकर भेज दिया। उसने वहाँ एक भूरी भैंस का बाल तोड़कर छिपा लिया और वापस आने लगा। बस सारी भैंसें उसके पीछे हो लीं। सब भैंसों के साथ जब राजकुमार राजमहल में पहुँचा तो राक्षसी बहुत हैरान हुई। सारी भैंसें उसके पीछे आ रही थीं। राक्षसी ने दूध पिया और ठीक हो गई।

कुछ दिन और बीते। राक्षसी फिर राजकुमार को खत्म करने का उपाय खोजने लगी। एक दिन फिर वह बहाना बनाकर लेट गई। इस बार उसने राजकुमार को मरवा देने की ठान ली थी। उसने सोचा, एक बार वह फिर उसे अपने मायके भेजेगी। वहाँ उसके राक्षस भाई उसे खा जाएँगे। अतः इस बार उसने राजा को बताया कि उसके मायके में सोने के बरतन हैं। जब तक वह उनमें खाना नहीं खाएगी, ठीक न हो सकेगी। राजा ने फिर राजकुमार को रानी के मायके जाने का हुक्म कर दिया।

राजकुमार ने घने जंगल में उस साधु को पुनः खोज लिया। साधु ने कहा, 'बेटा, तुम्हारी नई माँ के भाई तो राक्षस हैं, वे तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ेंगे। तुम्हारी नानी अंधी है। तुम वहाँ जाकर बोलना, दोहता आया है। वह तुम्हें घर में रख लेगी। उसके बेटे दिन को मार-धाड़ करने गए होते हैं और रात को घर लौटते हैं, दिन में तुम भीतर जाकर संदूक से सोने के बरतन निकाल लेना। बुढ़िया तुम्हें घर के भीतर एक कोठरी में जाने को मना करेगी। तुम उसके भीतर चले जाना। वहाँ चार तोते होंगे। इन चारों राक्षसों व राक्षसियों के प्राण इन तोतों में हैं। जब तुम तोतों को मार दोगे, वे सब भी मर जाएँगे।'

राजकुमार राक्षसों के घर के पास पहुँच गया और बाहर से ही जोर से आवाजें लगाने लगा, 'नानी जी, ओ नानी जी।'

भीतर से बुढ़िया राक्षसी बुदबुदाती हुई निकली, 'पता नहीं यह कौन दोहता आ गया।' राजकुमार ने बुढ़िया के पैर पकड़ लिए और कहा, 'नानी जी, मैं आपका दोहता हूँ। रानी माँ का लड़का।'

'अरे! मेरा दोहता! कब आया तू, मेरी बेटी कैसी है, ठीक तो है न!' बुढ़िया ने सोचा, यह उसकी बेटी का ही लड़का है।

'ठीक है नानी, ठीक है। आपको बुलाया है।'

बुढ़िया ने राजकुमार की खूब सेवा की और कहा, 'अपनी नानी का घर देख ले पर अंदर की कोठरी में मत जाना कभी।'

अंधी बुढ़िया जरा इधर-उधर हुई तो राजकुमार ने संदूक खोल वहाँ से सोने के बरतन निकाल लिए। अब वह भीतर की कोठरी में गया। वहाँ चार तोते थे। एक-एक कर राजकुमार ने चारों तोते पकड़ लिए। जब एक बूढ़ा तोता पकड़ा तो बूढ़ी राक्षसी जोर से चिल्लाई और उसकी ओर भागी। राजकुमार ने उस तोते की एक टाँग तोड़ दी। बुढ़िया की भी एक टाँग टूट गई। वह लँगड़ी-लँगड़ी हो फैलने लगी। राजकुमार ने झट से तोते की गर्दन मरोड़ दी। बुढ़िया वहीं ढेर हो गई।

जब राजकुमार सोने के बरतन लेकर जाने लगा तो साँझ हो चली थी। उतने में उस बुढ़िया के दोनों राक्षस बेटे भी लौट आए। वे राजकुमार को पकड़ने लपके।

राजकुमार ने दो तोतों की टाँगें तोड़ दीं। उन दोनों की भी टाँगें टूट गईं। फिर जल्दी से दोनों तोतों की गर्दनें मरोड़ दीं। वे दोनों राक्षस वहीं ढेर हो गए।

राजकुमार अब चौथे तोते को जेब में छिपाकर राजमहल पहुँचा। वहाँ राक्षसी का दम घुट रहा था। वह चिल्ला रही थी, 'हाय! मेरा दम घुट रहा है। मुझे बाहर निकालो, बाहर निकालो।'

राजकुमार ने सोने की थाली व बरतन वहाँ रख दिए और राजा से कहा, 'महाराज! आप जल्दी से इन्हें सोने के बरतनों में खाना परोसिए। ये ठीक हो जाएँगी।'

रानी ने जब सोने के बरतन देखे तो हैरान रह गई। धीरे-धीरे वह बोली, 'नहीं, मुझे नहीं चाहिए सोने के बरतन। मेरा दम घुट रहा है। मुझे छोड़ दो।' राजकुमार ने जेब में पड़े तोते को दबाया। रानी और चीख उठी, 'मुझे मत दबाओ। मत दबाओ, छोड़ दो।'

राजा की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह समझ रहा था, रानी बहुत बीमार हो गई है। राजकुमार ने दूर जाकर रानी को तोता दिखाया। रानी ने जब अपने प्राण राजकुमार के हाथ में देखे तो एकदम अपने असली रूप में आ गई। राक्षसी बन वह राजकुमार की ओर झपटी। राजकुमार ने उसके झपटने से पहले ही तोते की टाँगें मरोड़ दीं। राक्षसी वहीं गिर गई। राजा हैरान था कि यह क्या हो रहा है। राजकुमार ने तोते की गर्दन मरोड़ी तो राक्षसी भी ढेर हो गई।

राजा को अब सारी बात समझ में आ गई। वह अपने किए पर बहुत पछताया और अपने बेटे को गले लगा लिया। महारानी को इज्जत के साथ महल में लाया गया। आँखों का इलाज करवाया। महारानी की आँखों की ज्योति फिर लौट आई। तीनों अब सुखपूर्वक रहने लगे।

होशियार बालक

एक लड़का था। उसकी एक छोटी बहन थी, वे दोनों अकेले रहते थे। माँ-बाप का देहांत हो चुका था। गाँव में एक छोटा-सा घर था उनका। थोड़ी जमीन थी और कुछ गाय-भैंसें थीं।

दोनों बच्चों के चाचा-ताऊ थे जो हमेशा उनकी जमीन-जायदाद छीनने की ताक में लगे रहते थे।

सबसे पहले इन लोगों ने उनकी सब गाय-भैंसें चुरा लीं और दूर अपनी गौशालाओं में भेज दीं। उनके पास केवल एक कट्टा रहने दिया। दोनों भाई-बहन अपने पशुओं की चोरी से बहुत दुखी हुए। दोनों अभी बालक थे। कर ही क्या सकते थे।

दैवयोग से एक दिन वह कट्टा भी पहाड़ी से गिरकर मर गया। लड़का दुखी हुआ। उसने कट्टे की खाल उतरवाई और सूखने डाल दी। दो-चार दिन में जब वह खाल सूख गई, वह उसे सिर पर उठा घर से चल दिया। जाते समय उसने अपनी बहन को समझा दिया, 'बहन! तू अपने घर के भीतर ही रहना। बाहर न निकलना। क्या पता तुझे ये लोग मार दें।'

चलते-चलते लड़के को जंगल में रात हो गई। जंगल घना और डरावना था। लड़ने ने एक विशाल वट-वृक्ष देखा। उसने उसकी टहनी पर कहीं छिपकर रात बिताने का निश्चय किया। खाल को अपने साथ ऊपर चढ़ाकर वह एक सुरक्षित टहनी पर बैठ गया।

लगभग आधी रात बीती। पेड़ के नीचे चार आदमी आए। पहले उन्होंने पेड़ के नीचे आग जलाई। फिर खाना खाया। अब वे हिसाब-किताब करने बैठ गए। वास्तव में वे चारों चोर थे और चोरी के माल का बँटवारा करने वहाँ आए थे। माल बाँटते-बाँटते उनमें लड़ाई हो गई।

जब उनकी लड़ाई हो रही थी तो लड़के ने ऊपर से खाल नीचे गिरा दी। जब टहनियों और पत्तों की रगड़ के साथ खाल नीचे गिरी तो बहुत खड़खड़ाहट हुई, चोर डर गए कि पता नहीं कौन भूत-प्रेत आ गया। वे भाग खड़े हुए।

थोड़ी देर बाद लड़का नीचे उतरा और चोरों का माल इकट्ठा किया। अँधेरा खुलने से पहले ही वह घर की राह हो लिया।

घर पहुँचते ही उसने अपनी बहन से कहा, 'बहन! जा अपनी ताई से तकड़ी माँग ला। यदि वह पूछे कि क्यों चाहिए तो बता देना सिक्के तौलने हैं। मेरा भाई धन की बोरियाँ लाया है।'

लड़की तराजू माँगने गई। वहाँ उसने सब कुछ ताई को बता दिया। ताई ने सोचा, लड़का झूठ बोलता है। धन की बोरियाँ तो उसके बाप ने भी नहीं देखीं। फिर भी संदेह दूर करने के लिए उसने तकड़ी के छाबों के नीचे बरोजा चिपका दिया।

जब बहन तकड़ी ले आई तो लड़के ने दो-चार सिक्के बरोजे के साथ जानबूझ कर चिपका दिए। सारा धन एक संदूक में डाल दिया।

शाम को जब लड़की ने तकड़ी लौटाई तो ताई ने देखा वहाँ तो सच ही सिक्के चिपके थे। वह हैरान रह गई। उसने यह किस्सा अपने पति को बताया। फिर सब ताऊ-चाचाओं को पता लग गया कि छोकरा तो कहीं से बहुत धन लेकर आया है। उन्होंने सोचा, इसका तो पता करना पड़ेगा। हम तो इससे जमीन-जायदाद हथियाना चाहते थे और यह धनवान हो रहा है।

वे उसके घर चले आए और मीठी-मीठी बातें कर धन लाने का रहस्य पूछा, 'बेटा! तू तो धनवान हो गया। पर यह धन तू लाया कहाँ से?'

लड़के ने बताया, 'धन कमाने का तरीका बहुत आसान है। मेरा कट्टा मर गया। उसकी खाल बेचने मैं बाजार गया। बस एक खाल बेची और इतना धन मिल गया। आजकल खालों की बड़ी माँग है।'

'पर बेटा! खाल बिकी कैसे?' उनकी आँखें आश्चर्य से फटी रह गईं।

'बिकना बड़ा आसान है। बाजार जाओ और ऊँची-ऊँची आवाज लगाओ। खरीदने वाले स्वयं आएँगे। मेरे पास तो एक ही खाल थी। नहीं तो धन तो मैं खच्चरों पर लादकर लाता। आपके पास तो पशुओं की कमी नहीं है। जितनी मर्जी खालें बेच सकते हैं।'

धन के लालच में उसके ताऊ-चाचाओं ने सब पशुओं को मार डाला और खालें सुखाने लगे। जब खालें सूख गईं तो वे उन्हें सिर पर उठा नगर की ओर ले चले। नगर में जाते ही उन्होंने ऊँची-ऊँची आवाजें लगानी शुरू कर दीं, 'खालें ले लो। खालें ले लो।'

बाजार में सब लोग उन्हें हैरानी से देखने लगे, पागल हो गए हैं शायद ये। जब उन्होंने बार-बार आवाजें लगानी शुरू कीं तो कुछ लोग डंडे ले आए और उन्हें कहा, 'इन बदबूदार खालों सहित एकदम नगर से बाहर हो जाओ, नहीं तो डंडों से मार-मारकर तुम्हारी खालें भी निकाल देंगे।'

जब वे पैसे के लालच में नहीं माने तो लोगों ने मार-मारकर उनकी शक्लें बिगाड़

दीं। खालें रास्तें में ही फेंक वे गुस्से में घर लौटे।

घर आते ही उन्होंने लड़के के घर में आग लगा दी। भाई-बहन किसी तरह बच निकले किंतु उनका सारा सामान जलकर राख हो गया।

अगले दिन लड़के ने गाँव वालों से बोरियाँ माँगीं। बोरियों में उसने जले हुए घर की राख भरी और उन्हें लेकर बहन सहित गाँव से निकल गया।

एक रात रास्ते में काटकर वे दूसरी रात एक सराय में ठहरे। उस सराय में एक साहूकार अपने नौकरों सहित ठहरा हुआ था।

प्रातः ही साहूकार अपने माल-असबाब सहित आगे रवाना होने लगा तो लड़का भी बहन के साथ उसके साथ हो लिया। रास्ते में लड़के ने साहूकार की धन की बोरियों के साथ अपनी बोरियाँ बदल लीं और दाँव लगाकर दोनों भाई-बहन खिसक लिए।

धन की बोरियाँ लेकर वे अपने गाँव लौट आए। फिर से झोंपड़ तैयार किया और पहले की तरह ताई से तकड़ी लाने के लिए बहन को समझाकर भेज दिया। धन तौलने की बात पर ताऊ-चाचा फिर से हैरान हुए। अब यह छोकरा धन कहाँ से लाया होगा?

फिर से वे सब उसके घर आ गए और चिकनी-चुपड़ी बातें करने लगे। अंत में उन्होंने धन के बारे में पूछ ही लिया। लड़के ने बताया, 'मैं क्या बताऊँ। आपने तो हमें जला डाला था किंतु हम बच निकले। फिर भी आपने हमारा घर स्वाहा कर दिया इसलिए मैं आपको कुछ नहीं बताता।'

'तुम्हारा घर तो हमने गुस्से में जलाया है बेटे। तुम्हारे कारण हमने पशु मारे। फिर खुद मार खाई।'

'आप लोग किसी और बाजार में चले गए होंगे। आपको उस बाजार में जाना चाहिए था जहाँ खालें बिकती हैं। गलती आपने स्वयं की और दंड मुझे दिया।'

'किंतु बेटा! तुझे तो इससे लाभ ही हुआ। धन लेकर आ गया। अब हमें भी तो बता दे धन कमाने का तरीका।'

लड़का तरीका बताने को राजी न हुआ तो वे उसे धमकाने लगे।

लड़के ने फिर बता दिया, 'आप नहीं मानते तो मैं बताता हूँ। आप अपना घर जलाकर उसकी राख बोरियों में इकट्ठी करो। बोरियों को नगर में ले जाओ। वहाँ पुकार-पुकारकर कहना— भाइयो, राख खरीद लो। राख खरीद लो। किंतु इस बात की खोज कर लेना कि राख कौन-से बाजार में बिकती है।'

उन्होंने वैसा ही किया। अपना घर स्वाहा कर दिया। राख इकट्ठी कर बोरियों में भरी और बाजार के लिए रवाना हो गए। बाजार में उन्होंने एक आदमी को राख

बिकने वाले बाजार की खबर लेने भेजा। किंतु ऐसा बाजार था ही कहाँ जो मिलता।

मायूस हो वे वापस लौट आए। लड़के के कहने पर उन्होंने पहले पशु मारे और अब घर से भी हाथ धोने पड़े।

दूसरे ही दिन उन्होंने एक पालकी ली। लड़के के हाथ-पाँव, मुँह बाँध और पालकी में बिठा नदी में फेंकने चल दिए।

रास्ते में उनको शौच आया। निवृत्त होने के लिए वे नदी की ओर चल दिए। उनके जाने के कुछ देर बाद एक गड़रिया भेड़-बकरियाँ हाँकता वहाँ आया और पालकी के अंदर देखने लगा। उसने देखा भीतर एक लड़का है जिसके हाथ-पाँव बँधे हैं। लड़के ने इशारे से अपने बंधन खोलने के लिए कहा। गड़रिए ने उसे खोल दिया। गड़रिए ने उससे पूछा, 'तुझे क्यों बाँधा है और कहाँ ले जा रहे हैं?'

लड़के ने बताया, 'अरे, तू तो देख रहा है, मैं अभी छोटा हूँ। मेरे घर वाले इसी उम्र में मेरा ब्याह कर देना चाहते हैं। लड़की भी मुझसे बड़ी है। मैं इंकार करता रहा। अब ये मुझे ब्याहने जबरदस्ती ले जा रहे हैं।'

गड़रिए ने कहा, 'मेरे घर वाले मेरा ब्याह ही नहीं करते और तेरा जबरदस्ती हो रहा है। मैं तो जवान भी हो गया हूँ। यदि तू मान जाए तो मैं तेरी जगह चला जाता हूँ। तू मेरे बदले भेड़-बकरियाँ देखता रह। वापस आकर मैं इन्हें सँभाल लूँगा।'

'ठीक है। तू मेरी जगह पालकी में बँध जा। तुझे बँधा-बँधाया ही जाना पड़ेगा। यदि मेरे घर वालों को इस बात का पता लगा तो गड़बड़ हो जाएगी।' लड़के ने कहा।

उन्होंने जल्दी-जल्दी आपस में कपड़े बदले और गड़रिए को वैसे ही बाँधकर बिठा दिया। लड़का भेड़-बकरियाँ चराता हुआ घर की ओर हो लिया।

शौच से निपट उन्होंने पालकी उठाई और नदी के ऊँचे किनारे पहुँच गए। पालकी से उसे निकाला और नदी में फेंक दिया। अब निश्चिंत हो वे घर लौटे।

शाम को भेड़-बकरियाँ हाँकता वह लड़का घर आ पहुँचा। अब उनके आश्चर्य की सीमा न रही। वे तो स्वयं उसे नदी में फेंक आए थे। ये तो अपने साथ भेड़-बकरियों का रेवड़ लिए लौटा। उन्हें फिर से उसकी भेड़-बकरियों का लालच हो आया। वे फिर उससे पूछने आ गए।

'बेटा! तू हमसे असली बात नहीं बताता है। पहले धन लाता रहा। अब इतनी भेड़-बकरियाँ ले आया। हमें हर बार हानि हुई। तभी हमने गुस्से की हालत में तुझे नदी में फेंक दिया था। हमें पता था तू मरेगा नहीं और कुछ न कुछ लेकर ही आएगा। हमने सब तेरी भलाई के लिए किया। अब बता दे ये भेड़-बकरियाँ कैसे मिलीं?'

'मैं तुम्हें अब कुछ नहीं बताता। आप लोग मुझ पर विश्वास करते नहीं और मेरे पीछे पड़े हो। मुझे अपनी जान प्यारी है।'

ताऊ-चाचाओं ने बहुत मिन्नत की तो लड़के ने बताया, 'आप लोग फिर मेरी बात का विश्वास नहीं करेंगे। उस दिन नदी से इतनी भेड़-बकरियाँ लाते-लाते मैं थक गया किंतु भेड़-बकरियाँ खतम नहीं हो रही थीं। पहले तुम ऐसा करना दादी जी को नदी के किनारे पानी में भेज देना। धीरे-धीरे जब वे नदी में गहरे तक पहुँचेंगी तो उन्हें भेड़-बकरियों के रेवड़ दिखाई देंगे। तब वे आपको पुकारेंगी। जितने अधिक गहरे पानी में दादी जाएँगी, उतनी ही ज्यादा भेड़-बकरियाँ दिखाई देंगी। वे बहुत बूढ़ी हैं। हो सकता है पानी की आवाज के कारण आपको उनकी आवाजें सुनाई ही न दें। यह भी हो सकता है कि आपको वे इशारा भी न कर सकें। अतः उनके हाथ में सूप दे देना। जब वे सूप को हिला-हिलाकर इशारे करें तो समझ लेना उन्हें बड़े-बड़े रेवड़ नजर आ रहे हैं। भेड़-बकरियों से आगे गाय-भैंसें मिलेंगी। आप चाहे मेरे कहे पर विश्वास न करना किंतु दादी का कहा न टालना।'

अगले ही दिन वे सब इस बात पर विचार करते रहे। अंततः सारा परिवार बुढ़िया को ले नदी की ओर चल दिया। किनारे जाकर बुढ़िया के हाथ में सूप देकर कहा, 'तू धीरे-धीरे पानी में उतरती जा। जब भेड़-बकरियाँ नजर आने लगें तो सूप हिला-हिलाकर हमें बुला लेना। हम सब आ जाएँगे।'

बुढ़िया धीरे-धीरे पानी में उतरने लगी। पानी गहरा होता गया और बहाव तेज। एक जोर की लहर से बुढ़िया के पाँव उखड़ गए। वह नीचे की ओर बहने लगी। जब उसे डुबकियाँ लगने लगीं तो वह जोर-जोर से बचाव के लिए सूप हिलाने लगी। जब परिवार वालों ने सूप हिलते देखा तो सोचा कि बुढ़िया को भेड़-बकरियाँ नजर आ रही हैं। वे एकदम पानी में कूदते गए और डूबते गए।

इस प्रकार होशियार लड़के ने अपनी जान बचाई और बहन के साथ आराम से रहने लगा।

नीति-कथा

एक समय की बात है, काशी से एक पंडित शिक्षा पाकर लौटा। घर आने पर उसने एक चिट अपने नौकर के पास पाँच हजार मुद्राओं में बेचने को दी और कहा कि जो इसकी पूरी कीमत देगा, उसे ही बेचना।

नौकर चिट को लेकर बाजार जा पहुँचा। बाजार में दुकान-दुकान जाकर वह चिट दिखाने लगा। सबने चिट को देख उसकी हँसी उड़ाई और कहा, 'भाई, इसे इतने महँगे दाम में कौन खरीदेगा। इसमें है ही क्या!'

अंत में वह एक दुकान में जा पहुँचा। उस समय वहाँ साहूकार का लड़का बैठा था। साहूकार घर में खाना खाने गया था। नौकर ने चिट उसे पकड़ाई और कीमत बताई। साहूकार के लड़के ने चिट ध्यान से पढ़ी। उसमें लिखा था :

'होते का बाप, अणहोते की मैया
होते की भैण, अणहोते का भैया
नजर की जोरू, गाँठ का रुपैया
जागे सो पाए, सोए सो खोए।'

साहूकार के लड़के ने झट चिट जेब में डाली और उसे पाँच हजार मुद्राएँ निकाल कर दे दीं।

जब दोपहर ढले साहूकार लौटा तो उसने देखा संदूक से मुद्राएँ गायब हैं। उसने बेटे से पूछा कि क्या कोई माल लिया है या किसी आढ़ती को राशि दी है? लड़के ने बताया, 'पिता जी, मैंने पाँच हजार मुद्राओं में यह चिट खरीद ली है। देखिए इसमें क्या पते की बातें लिखी हैं।'

जब साहूकार ने यह सुना तो चिट देखी। उसमें कुछ विशेष न पाकर वह आग-बबूला हो गया और उसी समय कोड़ों से बेटे की पिटाई कर दी। उसे फौरन दुकान से दफा हो जाने का हुक्म दिया।

लड़के ने सिसकते हुए चिट पुनः पढ़ी…क्या मुझसे वास्तव में ही भूल हुई। चिट की पहली पंक्ति थी, 'होते का बाप…'

'वाह रे लिखने वाले, तूने तो बिलकुल सच्चाई लिख दी है। यदि मैं कुछ कमाता

तो पिताजी कितने खुश होते। खोने पर मुझे निकाल दिया। चलो ठीक है। अब दूसरी पंक्ति परखते हैं।'

वह माँ के पास घर में गया और सारी बात बताई, 'मैं जा रहा हूँ माँ। पिताजी आते ही होंगे। मुझे और मारेंगे।'

माँ ने बेटे को सीने से लगा लिया और रोने लगी। फिर भीतर जाकर दो लाल छिपाकर लाई और उसे देते हुए कहा, 'इन्हें रख ले बेटा। मुसीबत के समय काम आएँगे।'

माँ से विदा लेकर वह चल दिया। उसने साधु का वेश धारण कर रखा था। राह चलते-चलते उसने सोचा, चलो लिखने वाले ने लिखा है, 'होते की भैण...' अब बहन को परखते हैं। ऐसे जब वह खूब भेंटें लेकर बहन के यहाँ जाता था तो उसकी खूब खातिर होती थी। बहन 'भैया-भैया!' कहकर न थकती थी।

बहन की हवेली समीप आ गई। उसे हवेली में घुसते झिझक-सी हुई। फिर सोचा, बहन तो पहचान ही लेगी। वह अंदर चला गया। बहन घर में ही थी। उसने उसे देखकर अनदेखा कर दिया। भीतर से बाजरे का आटा भिक्षा के लिए ले आई और झोली में डाल दिया। वह बहन को देखता ही रह गया, मन ही मन लिखने वाले को सराहा।

'मुझे रात काटनी थी बहन...' उसने कहा। 'तो यहीं आँगन में पड़े रहो।' बहन ने कहा। भीतर से आवाज लगाकर उसकी सास ने पूछा तो बहन ने कहा, 'ऐसे ही कंगाल चले आते हैं पता नहीं कहाँ से।'

उसने आँगन में डेरा डाल दिया। आग जलाई और बाजरे की रोटियाँ पकाकर आँगन में एक पत्थर हटा दबा दीं। सुबह उजाला होने से पहले ही वह आगे निकल गया।

अब उसने सोचा, चलो अपने भैया अर्थात् दोस्त की परीक्षा भी ले लें। वह क्या करता है।

अगले नगर में उसका एक दोस्त रहता था, जो साहूकार था। शाम को उसने उसका दरवाजा खटखटा दिया।

दोस्त उसे इस हालत में देख बहुत हैरान हुआ। उसने आदर से उसे अंदर बिठाया और सारे हालात जान ढाढ़स बँधाया। खाना खाने के बाद उसके दोस्त ने कहा, 'भैया! मुसीबतें तो आती ही रहती हैं, तुम मुझसे कुछ पैसा ले लो और अपना कारोबार शुरू करो।' उसने कहा, 'ठीक है भाई, आज तो मैं बहुत थक गया हूँ। अब सुबह सलाह-मशविरा करेंगे।'

रात वह सो गया, लेकिन नींद न आई। सामने दीवार पर दोस्त की पत्नी का

नौलखा हार टँगा था। उसके साथ ही एक चित्रलिखित मोर था। उसके देखतें-देखते वह चित्रलिखित मोर उस हार को निगलने लगा। वह बहुत घबराया। हार को ये मोर निगल जाएगा और नाम मेरा लगेगा। रात को ही वह अपनी झोली उठा भाग खड़ा हुआ।

उसकी पत्नी मायके में थी। सोचा, वहाँ जाकर भी परख लिया जाए कि क्या नजर से बाहर रहकर पत्नी ठीक रहती है या नहीं।

ससुराल की हवेली के बाहर उसने डेरा लगा दिया। जब आधी रात बीत गई तो हवेली का दरवाजा खुला और उसकी पत्नी सोलह श्रृंगार किए निकली। जब वह आगे निकल गई तो वह भी दबे पाँव पीछे-पीछे हो लिया। पत्नी एक अन्य धनिक की हवेली में घुस गई। वह वापस आकर वहीं बैठ गया। सुबह होने से पहले वह फिर लौट आई। अंदर जाते-जाते उसने पाँव फँसाकर पत्नी को नीचे गिरा दिया।

'पता नहीं कौन-कौन मुस्टंडे यहाँ पड़े रहते हैं।' वह उसे गालियाँ देते अंदर घुस गई। गिरते समय उसके गले का हार गिर गया। उसने झट से हार उठा वहीं एक पत्थर के नीचे दबा दिया।

सुबह ही वह वहाँ से रफूचक्कर हो गया।

जाते-जाते वह एक ऐसे देश में पहुँच गया जहाँ अकाल पड़ा हुआ था। लोगों को खाने को नहीं मिल रहा था। पैसे के लिए लोग मोहताज थे। उसे भिक्षा वहाँ कहाँ से मिलती। वहाँ उसने माँ के दिए लाल बेचकर पेट पाला और आगे निकला। उसकी गाँठ में लाल थे जो काम आए। वैसे तो उसके घर में भी बहुत धन था पर वह किस काम का जो पास में नहीं है।

एक बार उसे एक रात सराय में पड़ गई। वह बहुत थक चुका था। सोने को मन कर रहा था। किंतु उसे उस उपदेश की अंतिम पंक्ति याद हो आई—'जागे सो पाए, सोए सो खोए।'

अतः उसने निश्चय किया कि वह आज सोएगा नहीं। वह एक कोने में दुबककर लेट गया। जब रात काफी बीत गई तो वहाँ दो चोर आए। दोनों के पास चोरी का माल था। वह दुबका हुआ देखता रहा। चोरों ने एक ओर दीवार से पत्थर हटाया और माल वहाँ रखकर चले गए।

वह धीरे-धीरे उठा और वहीं दीवार का पत्थर हटाया। देखते ही वह दंग रह गया। वहाँ तो हीरे-जवाहरातों से दीवार अटी पड़ी थी। उसने फट से सारा माल झोली में डाला और रातोरात आगे निकल गया।

अब उसने उस धन से बहुत-सा सामान खरीदा। तंबू लग गए। नौकर-चाकर चारों ओर घूमने लगे। उसने पूरा राजसी ठाट-बाट बना लिया। अब उसने वापस जाने

की सोची।

जगह-जगह तंबुओं में ठहरते हुए वह अपने ससुराल में आ पहुँचा। ससुराल वालों ने जब देखा कि उनका दामाद इतने लाव-लश्कर के साथ आ रहा है तो उन्होंने भी अपने आदमी उसे लिवाने के लिए भेजे। किंतु वह अपने सेवकों को वहीं छोड़ अकेला ही हवेली की ओर गया। हवेली के दरवाजे पर वह खड़ा हो गया। पत्नी झट से दौड़ी आई, उसे भीतर बुलाने लगी। वह वहीं खड़ा रहा, उसने कहा, 'मेरी तो यही जगह है।' वहीं उसने पत्थर हटाकर हार निकाला और पत्नी को दिखाया। पत्नी का चेहरा उतर गया। वह समझ गई कि उस रात उसे ठोकर से गिराने वाला साधु यही था।

पत्नी को त्याग वह आगे बढ़ गया।

अब बहन की बारी आई। भाई को इस ठाट-बाट के साथ आया जान वह खुशी-खुशी लेने आई। रात खाना खाने के समय वह आँगन में गया और पत्थर हटा रोटी ले आया। बहन शर्म से गड़ गई।

अगला पड़ाव उसने दोस्त के यहाँ डाला। दोस्त ने पहले की ही तरह खातिर की। रात को उसे उसी कमरे में सुलाया गया। गई रात को जब वह जागा तो देखा वही चित्रलिखित मोर नौलखा हार मुँह से बाहर निकाल रहा है। उसने उसी समय दोस्त को जगाकर दिखाया कि हार मैंने नहीं चुराया था। दोस्त ने उसे गले लगाकर कहा, 'मैंने तुम्हें कभी कहा कि तुमने हार चुराया है। बुरे दिन आते हैं तो ऐसा ही होता है मेरे दोस्त।'

दोस्त से विदा लेकर वह जगह-जगह डेरे डालता अपने घर के करीब पहुँच गया। जब उसके पिता को उसके आने की खबर मिली तो वे दौड़े आए और बेटे को दूर से पुकारा। भागकर गले लगा लिया। उसने पिता से अच्छी तरह बात न की और सीधा माँ के चरणों में गिर गया।

कथा और कथा

एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी गाँव में रहते थे। दोनों गरीब थे। ब्राह्मण भिक्षा माँगकर गुजारा करता। किंतु उसे हर बार दो सेर भिक्षा मिलती। चाहे वह आसपास के गाँवों में माँगे, चाहे दूर निकल जाए, भिक्षा दो सेर ही इकट्ठी हो पाती। ब्राह्मण की इस कंगाली से ब्राह्मणी दुखी रहती और हर समय ब्राह्मण से झगड़ती रहती।

एक दिन ब्राह्मणी ने उसे जंगल में तरड़ी (जंगली कंद-मूल) उखाड़ने भेजा। तरड़ी की जड़ जमीन में बहुत गहरे होती है। जिस तरड़ी को ब्राह्मण उखाड़ने लगा, वह एक चट्टान के नीचे गहरे घुस गई थी। बहुत खोदने पर चट्टान के नीचे ब्राह्मण को एक गाय और बछड़ा मिले। वह गाय-बछड़े को लेकर घर लौट आया।

ब्राह्मण को खाली हाथ आया देख ब्राह्मणी बहुत क्रोधित हुई। किंतु फिर गाय और बछड़े को देखा तो खुश हो गई।

गाय खूब दूध देती थी। दूध, घी मिलने पर ब्राह्मणी भी अब प्रसन्न रहने लगी। दिन अच्छे कटने लगे।

ब्राह्मणी ने घर के पास खेत में धनिया बो रखा था। एक दिन गाय छूट गई और उसने सारा हरा-हरा धनिया चर लिया। यह देख ब्राह्मणी बहुत क्रोधित हुई। उसने गाय को खूब मारा और बछड़े सहित मार-मारकर घर से निकाल दिया। सायंकाल जब ब्राह्मण भिक्षा माँग घर आया तो गाय-बछड़ा वहाँ न थे। जब उसे वास्तविकता का पता लगा तो वह बहुत दुखी हुआ और उसी समय घर छोड़कर जंगल में कुटिया बनाकर रहने लगा। गाय-बछड़े को उसने बहुत ढूँढ़ा किंतु वे न मिल सके। ब्राह्मण कुटिया में रहने लगा और ब्राह्मणी पुनः भूखों मरने लगी।

उधर गाय और बछड़ा बहुत दूर जंगल में निकल गए। गाय बहुत दूध देती थी। यह उसके बछड़े से भी पिया नहीं जाता था। गाय के दूध से जोहड़-तालाब तक भरने लगे।

इसी जंगल में एक शेरनी रहती थी। उसका एक बच्चा भी था। वह जोहड़-तालाबों में भरे गाय के दूध को पीने लगा। जब उसे पता लगा कि यह गाय का दूध है तो बछड़े से उसकी दोस्ती हो गई। दोनों बच्चे थे, इसलिए बहुत जल्दी दोस्त बन गए। किंतु बछड़े को शेरनी से बड़ा भय बना रहता था। शेरनी का बच्चा कहता, 'मैंने तुम्हें

अपना धर्म-भाई बना लिया है। शेरनी अब तुम्हें या तुम्हारी माँ को कभी नहीं खाएगी।' यह बात शेर के बच्चे ने अपनी माँ को भी बता दी। बछड़े के अधिक डरने पर शेर के बच्चे ने उसके गले में घुंघरू बाँध दिया और कहा कि जब भी तुम्हें मुसीबत आए तो जोर-जोर से उछलकर घुँघरू को बजाना, मैं आ जाऊँगा।

शेरनी ने एक बार मोटी-तगड़ी गाय चरती हुई देखी तो उसके मन में पाप आ गया। वह तुरंत गाय पर झपटी और उसे खा गई। कुछ देर बाद जब बछड़ा वहाँ आया तो देखा गाय मरी पड़ी थी। वह दुखी होकर जोर-जोर से उछलने-कूदने लगा। उसकी उछल-कूद से जंगली जानवर वहाँ आ गए और एक जंगली जानवर ने बछड़े को भी खा लिया।

उधर शेरनी के बच्चे को जब घुँघरू की आवाज सुनाई दी तो वह भी दौड़ा-दौड़ा आया। गाय व बछड़े को मरा देख वह बहुत दुखी हुआ और उसने भी वहीं प्राण छोड़ दिए।

जिस स्थान पर दोनों दोस्त मरे थे, उस स्थान पर कुछ समय बाद दो नन्हे-नन्हे पौधे उगे। पौधे बढ़ते-बढ़ते पेड़ बन गए। उन पर मीठे-मीठे फल लगने लगे।

एक बार उस जंगल में एक राजा शिकार खेलने के लिए आया। थककर वह उन दोनों पेड़ों के नीचे बैठ गया। राजा के सामने ऊपर से दो सुंदर, सुगंधित मीठे फल आ गिरे। राजा ने दोनों फल उठा लिए और महलों में आकर अपनी दोनों रानियों को दे दिए। दोनों रानियों ने एक-एक फल खा लिया।

फल खाने के बाद दोनों रानियों को गर्भ रह गया और समय उपरांत दोनों रानियों ने दो सुंदर बालकों को जन्म दिया। दोनों बालक एक-जैसे थे। बिल्कुल जुड़वाँ भाई लगते थे। जैसे-जैसे दोनों बड़े होते गए, दोनों का प्रेम भी बढ़ता गया।

एक बार दोनों भाइयों में बहस छिड़ गई। एक बोल रहा था कि शेर अच्छा होता है तो दूसरा कह रहा था कि बैल। दोनों बहस में एक-दूसरे को हरा नहीं पा रहे थे। आखिर एक ने कहा कि वह जंगल में जाकर पता करेगा कि शेर अच्छा है या कि बैल। वह जंगल में जाने को तैयार हो गया तो दूसरे को उसने अपनी अँगूठी उतारकर दे दी और कहा कि जब वह अँगूठी काली पड़ जाए तो समझ लेना मैं मुसीबत में हूँ।

राजकुमार जंगल में चला गया। कुछ दूरी पर उसे एक बुढ़िया दिखी। बुढ़िया डंगर चरा रही थी। बुढ़िया ने राजकुमार को बताया कि आगे जंगल में एक अघोरी रहता है जो वहाँ पहुँचने वाले हर आदमी को मार देता है। वह तेल का उबलता कड़ाह रख छोड़ता है और जो भी आए, उसे उस उबलते तेल में डाल देता है।

राजकुमार जंगल में आगे बढ़ता गया। बहुत आगे जाने पर एक साधु की कुटिया

दिखाई दी। कुटिया के बाहर एक बहुत बड़ा तेल का कड़ाह था जिसमें तेल उबल रहा था। साधु राजकुमार को देख बड़ा खुश हुआ, उसने कहा, 'आओ बच्चा! तुम बड़े अच्छे समय पर आए। आज हम यहाँ हवन करेंगे। पूर्ण आहुति होगी।' राजकुमार ने साधु को प्रणाम किया और बैठ गया। साधु ने उसकी बहुत आदर-खातर की। रात को साधु मंत्रोच्चारण के साथ होम करने लगा। अंत में उसने एक खंडा लाकर कड़ाही के पास रख दिया और राजकुमार से कहा, 'आओ बच्चा! परिक्रमा करते हैं।'

राजकुमार ने कहा, 'बाबाजी! हम तो राजकुमार हैं। लोग हमारी परिक्रमा करते हैं। हमें किसी की परिक्रमा करनी नहीं आती, अतः कृपया आप आगे-आगे चलें।'

साधु आगे-आगे चलने लगा। तीन चक्कर पूरे होने पर साधु ने कहा, 'बेटा! अब प्रणाम के लिए सिर झुकाओ।'

राजकुमार ने कहा, 'महाराज! हम राजा लोग किसी के आगे सिर नहीं झुकाते। सब लोग हमारे आगे सिर झुकाते हैं, आप सिर झुकाकर बता दीजिए कि कैसे झुकाते हैं। फिर मैं भी झुका दूँगा।'

साधु ने राजकुमार को बताने के लिए जैसे ही सिर झुकाया, राजकुमार ने झट से खंडा उठा उसका सिर धड़ से अलग कर दिया और उसे उबलते कड़ाहे में डाल दिया। अघोरी के मर जाने पर उसकी सारी माया भी खत्म हो गई।

अघोरी को मार वह आगे चलता गया। जंगल खत्म हो गया और एक नगर आ गया। इस नगर में राजकुमार ने नौकरी कर ली।

इस नगर की राजकुमारी ने यह घोषणा करवाई थी कि जो उसे शतरंज में हरा देगा, वह उसी के साथ शादी करेगी। बहुत-से राजकुमार उससे शादी के लालच में उससे हारकर अपनी जाने गँवा चुके थे। बहुत-से उसकी कैद में थे।

राजकुमार ने सोचा, इसकी जीत का राज कुछ न कुछ तो होगा ही। ऐसे तो यह सबसे जीत नहीं सकती। इसके लिए उसने महल में जाने वाली एक बुढ़िया को मौसी-मौसी कहकर कुछ सोने की मोहरें दीं। बुढ़िया खुश हो गई और बातों-बातों में बुढ़िया ने बता दिया कि राजकुमारी जादूगरनी है। जहाँ राजकुमारी बैठती है, उससे पहले एक जादुई कमरा आता है जिसमें एक चितकबरी बिल्ली रहती है। जहाँ राजकुमारी खेलने बैठती है, वह जगह भी जादू-भरी है। तभी तो राजकुमारी को कोई हरा नहीं पाता।

राजकुमार ने अब उस राजकुमारी से बाजी लगाने की घोषणा कर दी और निश्चित दिन महल में जा पहुँचा। महल में घुसने के लिए वह उस जादुई कमरे से न जाकर दूसरे कमरे से घुसा। भीतर राजकुमारी अपनी सीट पर बैठी थी। राजकुमार

ने सामने बैठने के बाद कहा, 'मुझे इस तरफ बैठकर खेलने का अभ्यास नहीं है। यदि आप बुरा न मानें तो मैं आपकी जगह बैठूँ।' राजकुमारी के आनाकानी करने पर भी वह जोर देकर राजकुमारी की जगह बैठ गया और राजकुमारी को सामने बिठा दिया। फलतः राजकुमारी का जादू न चला और वह हार गई।

राजकुमारी अपनी हार को सहन न कर सकी और उसने सिपाहियों को हुक्म दिया कि इसे बाँधकर दरिया में फेंक दिया जाए।

सिपाहियों ने राजकुमार को बाँधकर दरिया में फेंक दिया।

राजकुमार के दरिया में फेंकने पर दूसरे भाई के हाथ की अँगूठी काली पड़ गई। उसने समझ लिया कि मेरा भाई कहीं मुसीबत में है। अतः वह भी वहाँ से चल दिया।

राजकुमार दरिया में गिरने से मर गया और उसकी लाश एक स्थान पर दरिया के किनारे लग गई। संयोग से वहाँ से शिव-पार्वती गुजर रहे थे। राजकुमार को मरा देख पार्वती को बड़ी दया आई। उन्होंने शिव से कहा कि वे उसे जिंदा कर दें। बहुत अनुनय-विनय के बाद शिव ने उसके ऊपर अमृत फेंका और वह जिंदा हो गया।

उसी दरिया के किनारे शाम को साहूकार के आदमी घूमने आए। उन्होंने राजकुमार को बेहोशी की हालत में देखा तो उठाकर ले गए। साहूकार के घर उसे होश आ गया।

साहूकार के पास सेना भी थी। जब उसे राजकुमार की कहानी का पता चला तो उसने अपनी सेना देकर राजकुमारी पर हमला करने की योजना बनाई। राजकुमार ने सेना लेकर राजकुमारी पर धावा बोल दिया। राजकुमारी हार गई। वहाँ से राजकुमार ने सब कैदी राजकुमारों को छुड़ाया।

इतने में राजकुमार का दूसरा भाई भी ढूँढ़ता-ढूँढ़ता वहाँ आ पहुँचा। दोनों भाई गले मिले। और आराम से रहने लगे।

पति कौन बने

एक गाँव में चार मित्र रहते थे। चारों मित्रों में आपस में बड़ा प्रेम था। जहाँ भी जाते चारों साथ ही जाते।

एक बार उन्होंने सोचा, क्यों न सभी जन कहीं घूमने निकलें। सभी ने रास्ते के लिए आवश्यक सामग्री, खाने-पीने का सामान अपने-अपने झोले में बाँधा और तैयार हो गए। दूर-दूर देशों में घूमने का कार्यक्रम था, अतः सुबह चारों अपने गाँव से निकल पड़े।

सुबह के चले हुए चारों मित्रों को दोपहर हुई, फिर शाम ढलने लगी। रात होने से पहले उन्होंने सुरक्षित जगह पर पड़ाव डालने की सोची। एक साफ-सुथरी जगह पर उन्होंने अपना तंबू गाड़ दिया। खाने के लिए रोटियाँ तो बाँधी थीं। मिल-जुलकर खाईं और सोने की तैयारी करने लग गए।

सोने से पहले उन्हें ख्याल आया, सभी ने लंबे सफर के लिए काफी सामान बाँध रखा है। यदि सभी सो गए तो सुबह तक सारा साफ हो जाएगा। अनजान जगह है। क्या पता यहाँ नजदीक ही डाकू या चोर रहते हों। अतः उन्होंने सोचा, सभी मित्र बारी-बारी पहरा देंगे। पहले एक पहरा देगा तो बाकी तीन सो जाएँगे। इस तरह पहला सोएगा तो दूसरे को पहरे के लिए जगा देगा। अब पहले पहरा कौन दे, यह तय करना कठिन था। किंतु इसका हल भी जल्दी ही निकल आया। चारों मित्रों में एक ब्राह्मण था, एक बढ़ई, एक दर्जी और एक सुनार। ब्राह्मण ने कहा, 'भाई मुझे तो तड़के उठकर पूजा-पाठ करना होता है, इसलिए मेरा पहरा सुबह के पहर में रखो।' इस तरह पहला पहरा बढ़ई का, दूसरा दर्जी का, तीसरा सुनार का और अंतिम ब्राह्मण का तय हुआ।

रात्रि के पहले पहर सभी मित्र सो गए। बढ़ई जागकर पहरा देने लगा। सभी को सोता देखकर बढ़ई को भी नींद आने लगी। वह सोचने लगा कि ऐसा क्या करे जिससे नींद न आए। अपने को जागा हुआ रखने के लिए उसने एक सूखी लकड़ी ढूँढ़ी और अपने औजार निकाल उसे गढ़ने लगा। अपने जागने के पहर में उसने उस लकड़ी से एक सुंदर युवती का शरीर बना डाला। उसे बनाते-बनाते समय भी बीत गया और एक सुंदर कृति भी बन गई। अब पहरा समाप्त होने पर उसने दर्जी को

जगा दिया।

दर्जी जब पहरे के लिए जागा तो उसने सामने लकड़ी की आकर्षक युवती देखी। जैसे साक्षात् कोई युवती सामने खड़ी हो। बढ़ई की कारीगरी पर वह धन्य हो उठा। अब उसे भी समय गुजारना था अतः उसने सोचा क्यों न इस सुंदर युवती की नंगी देह ढाँप दी जाए। दर्जी ने अपने झोले से कपड़ा और सूई-धागा निकाले। अपने जागने के समय में उसने उस युवती के लिए सुंदर कपड़े सी दिए। कपड़े पहनाते-पहनाते उसका समय भी बीत गया और वह युवती भी जँच गई।

जब सुनार अपनी बारी में उठा तो सामने एक सुंदर युवती को पाकर हैरान रह गया। जैसे जीती-जागती सुंदर औरत सामने खड़ी हो। उसने दोनों की कारीगरी की प्रशंसा की और खुद भी कुछ कर दिखाने की सोची। झट उसने अपने झोले से सोना-चाँदी, मोती निकाले और गहने बनाने में लग गया। अपने सोने से पहले उसने युवती की नाक में नथ, माथे पर मान-टिक्का, गले में हार, हाथों में कंगन सजा दिए। मूर्ति अब हार-शृंगार किए एक जीती-जागती दुल्हन लग रही थी।

ब्राह्मण अपने पूजा-पाठ के समय उठ खड़ा हुआ। उठते ही सामने एक अद्वितीय सुंदर स्त्री को देख हैरान रह गया। अनुपम सौंदर्य, उस पर आकर्षक परिधान, फिर हार-शृंगार। आगे जाकर देखा तो यह एक निर्जीव मूर्ति थी। ब्राह्मण ने स्नान-ध्यान, पूजा-पाठ किया और उस मूर्ति में प्राण फूँक दिए। ब्राह्मण की अपनी विद्या और पूजा-पाठ से प्राणवान होने पर वह युवती सजीव हो गई।

इतने में सुबह हो गई। तीनों मित्र भी जाग गए। जब तीनों उठे तो सामने एक सुंदरी को देखा। कहा जाता है कि जर, जोरू और जमीन—ये तीनों लड़ाई की जड़ रही हैं। वे चारों मित्र उस सुंदर युवती के लिए आपस में झगड़ा करने लगे। बढ़ई कहे, मैंने इसे बनाया है। दर्जी कहे, मैंने इसका तन ढाँपा है। सुनार बोले, मैंने इसे सजाया है। ब्राह्मण कहे, मैंने तो जान डाली है। सभी उस युवती को पत्नी बनाने के लिए ललचाने लगे।

आखिर भ्रमण का ख्याल छोड़ चारों राजा के पास पहुँचे। राजा ने अपना न्याय सुनाया—'बढ़ई ने इसे बनाया, पैदा किया है। इसलिए वह इसका पति नहीं हो सकता। बढ़ई तो पिता की तरह है। दर्जी ने इसका तन ढाँपा है। वह भाई की तरह है। ब्राह्मण ने जीवन दान दिया, वह ब्रह्मा के समान है। सुनार ने इसकी नाक में नथ डाली, गहने पहनाए, इसलिए वही इसका पति हो सकता है।'

इस निर्णय से प्रसन्न होकर चारों मित्र अपने गाँव लौट गए।

गुणवती कन्या

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक बूढ़ा अपने बेटे के साथ रहता था। दोनों बाप-बेटा अकेले रहते थे। जब बेटा जवान हुआ तो बूढ़े ने उसका विवाह करने की सोची। बूढ़े की पत्नी बहुत पहले मर चुकी थी इसलिए घर भी सूना-सूना-सा रहता था। बूढ़े ने कुल के पुरोहित को बुलाया और बेटे के लिए योग्य कन्या ढूँढ़ने के लिए कहा।

कुल-पुरोहित ने योग्य कन्या की तलाश शुरू कर दी। वे एक गाँव में जा पहुँचे जहाँ एक बूढ़े के घर में एक कन्या थी। कन्या सुंदर, सुशील और हर काम में प्रवीण थी। पढ़ी-लिखी भी थी। वे भी उस घर में दो ही प्राणी थे। पुरोहित की उन्होंने खूब आवभगत की। पुरोहित ने रात को बूढ़े से कन्या के रिश्ते की बात छेड़ी। वह बूढ़ा भी कन्या के विवाह के लिए दिन-रात चिंता में रहता था। अतः लड़के की प्रशंसा सुनकर उसने हाँ कर दी।

विवाह की तारीख निश्चित हुई और बड़ी धूमधाम से विवाह हो गया। घर में बहू के आने से बूढ़ा प्रसन्न हुआ और उनकी गृहस्थी बड़े सुख से चलने लगी।

एक रात की बात है, सभी आराम से सोए हुए थे। रात को कहीं दूर गीदड़ के रोने की आवाज आई। बहू गीदड़ की आवाज समझ लेती थी। उसके पिता बड़े पढ़े हुए पंडित थे। उन्हीं से उसने यह विद्या सीखी थी। गीदड़ कह रहा था, 'दरिया में एक लाश बह रही है। उस लाश के हाथों में सोने के कंगन हैं। यदि कोई उस लाश को किनारे लगा ले तो उसे सोने के कंगन मिल सकते हैं और मुझे लाश खाने का अवसर मिल जाएगा।' बहू चुपचाप बिस्तर से उठी और दरिया की ओर चल पड़ी। बहू के उठने पर उसका पति जाग गया और उसे बाहर जाते देख वह भी पीछे-पीछे चल दिया।

दोनों दरिया के किनारे पहुँच गए। दरिया में एक लाश बहती हुई आ रही थी। बहू ने उस लाश को किनारे लगाया और कंगन खोलने का प्रयास करने लगी। ठंडे पानी के कारण ठंड के मारे कंगन खोले नहीं जा सके। बहू ने लाश की कलाई में मुँह लगाया और कंगन खोल लिए। पति ने सोचा, ये तो लाश खाने लगी है। यह

तो कोई चुड़ैल है। वह तेजी से घर की ओर भाग गया और बिस्तर में दुबक गया। थोड़ी देर बाद पत्नी भी आकर सो गई।

पति रात की घटना से बहुत घबरा गया। सुबह उठते ही उसने बाप से कहा कि यह स्त्री तो बहुत ही खतरनाक है। इसे घर में नहीं रखा जा सकता। ये तो हम सबको खा जाएगी। बहू ने बहुत मिन्नत की और गलती बताने के लिए बार-बार पूछा। पति ने कुछ नहीं बताया। बाप ने भी बेटे को बहुत कहा कि यह तो अच्छे घर की बेटी है, ऐसी नहीं हो सकती। बेटा बिल्कुल नहीं माना और इस बात पर अड़ गया कि यदि यह औरत इस घर में रहेगी तो वह घर छोड़कर कहीं दूर चला जाएगा। पत्नी को भी शक हो गया कि हो न हो पति ने रात की घटना देख ली है।

आखिर बूढ़े ने उसे मायके छोड़ने का निर्णय लिया। वह पुत्रवधू को लेकर उसके मायके चल दिया। मायका दूर था अतः रास्ते में वे एक जगह थककर बैठ गए। ससुर और बहू दोनों सोच में डूबे हुए थे।

जहाँ वे विश्राम करने बैठे थे, वहाँ वृक्ष पर एक कौआ बैठा था। कौआ उसे बार-बार आवाज लगा रहा था। वह काग-भाषा भी जानती थी। उसने भी काग-भाषा में ही उत्तर दिया–

आराम से सोई थी जब पुकारा गीदड़ ने
हाथ हुए ठंडे तो निकाला दाँत से
बुरा हुआ भला करते
अब क्या कहता है तू कौए!

कौआ बार-बार बोलता रहा। बहू बार-बार उत्तर देती रही। बहू को बार-बार बोलते हुए ससुर ने सुन लिया। ससुर की समझ में कुछ नहीं आ रहा था, इसलिए वह बहू से अर्थ बताने का आग्रह करने लगा। बहू ने सारी बात बता दी कि कैसे रात को गीदड़ ने उसे कंगन वाली लाश के बारे में बताया। जब लाश से कंगन निकालने लगी तो निकल नहीं पाया, इसलिए मुँह से काटा। इस सभी को पति ने देख लिया और समझा कि मैं लाश खा जाती हूँ।

'अब ये कौआ बार-बार क्या कह रहा है?' ससुर ने पूछा।

'कौआ ये बता रहा है कि जहाँ हम बैठे हैं उस जमीन के नीचे बहुत-सा धन दबा है। जो भी इस धन को निकालेगा, वह लखपति बन जाएगा। इसलिए मैंने तो कौए को उत्तर दे दिया है–

आराम से सोई थी जब पुकारा गीदड़ ने
हाथ हुए ठंडे तो निकाला दाँत से
बुरा हुआ भला करते
अब क्या कहता है तू कौए!

ससुर ने बहू को सांत्वना दी और उस जमीन को खोदना आरंभ कर दिया। सच ही वहाँ से बहुत-सा धन निकला।

बूढ़ा पुत्रवधू और धन को लेकर वहीं से वापस आ गया और बेटे को फटकारा, 'इतनी गुणवती कन्या को तू घर से निकाल रहा है। ये तो पशु-पक्षियों की भाषा भी जानती है।'

बेटे को बहुत पश्चात्ताप हुआ। उसने पत्नी को अपने घर में रहने की अनुमति दे दी और सभी सुख-चैन से रहने लगे।

सौभाग्यवती

किसी नगर में एक साहूकार रहता था। साहूकार की गृहस्थी धन-धान्य से भरी हुई थी। किंतु वह निःसंतान था। उसने कई जप-तप किए। दया-धर्म के काम किए, संतान न हुई। जब वह आसपास के घरों में बच्चों की किलकारियाँ सुनता तो मन मसोसकर रह जाता।

साहूकार ने कई धर्मार्थ कार्य किए। स्वयं भी बड़े संयम से रहा। ध्यान, भजन किया। दान-धर्म के कारज किए। अंततः विधिमाता ने उसे एक पुत्र दिया और कहा, 'तुम्हारी विनती पर मैंने तुम्हें पुत्र दे दिया। यह पुत्र केवल बारह वर्ष तक जीवित रहेगा। जिस दिन इसकी आयु बारह वर्ष पूरी होगी, उसी दिन की आधी रात इसकी मृत्यु हो जाएगी।'

साहूकार घबरा गया और बोला, 'यह आप क्या वरदान दे रही हैं! ऐसा अनर्थ न करें।'

'मुझे जो कहना था कह दिया। मेरा कहा टाला नहीं जा सकता।' कहकर विधिमाता अंतर्धान हो गई।

साहूकार ने यह बात पत्नी को बताई। पत्नी ने इतने में ही संतुष्टि जाहिर की कि कम से कम बारह वर्ष तक तो पुत्र उसके साथ रहेगा। वे अब निःसंतान तो नहीं कहे जाएँगे।

साहूकार की पत्नी गर्भवती हुई और समय आने पर उसने एक सुंदर बालक को जन्म दिया।

एकमात्र और प्रिय पुत्र होने के कारण बालक का पालन-पोषण बड़े अच्छे ढंग से हुआ। दस-ग्यारह वर्ष तक होते-होते वह भरा-पूरा युवक दिखने लगा। साहूकारिन को अब उसके विवाह की चिंता सताने लगी। साहूकार विवाह की बात टालता रहा। साहूकारिन ने बहुत जिद्द की तो उसने कहा, 'अपनी संतान का विवाह तो होना चाहिए किंतु जानबूझकर किसी की कन्या का बुरा भी नहीं किया जा सकता। कुछ समय बाद बहू का क्या होगा?'

साहूकार की किसी बात को साहूकारिन ने नहीं माना। अंततः उसने बेटे का विवाह एक अच्छे घर की सुंदर और सुशील कन्या से कर दिया।

विवाह के बाद कुछ समय आनंद से बीता। मन ही मन साहूकार को डर लगा रहा। साहूकार बहू को ज्यादा दिन मायके भेज देता। कुछ दिन अपने यहाँ रखता।

जब बारह वर्ष पूरे होने में तीन-चार महीने शेष रह गए तो साहूकार ने बहू को मायके भेज दिया।

माँ-बाप उदास रहने लगे। एक-एक दिन बीतने पर वे और उदास हो जाते। जैसे-जैसे दिन कटते गए, माँ घबराई-सी रहने लगी और बहू को बुलाने की जिद्द करने लगी। साहूकार कुछ दिन टालता रहा। जब ज्यादा हठ किया तो वह बहू को लाने चल दिया।

बहू को लेकर जब घर की ओर रवाना हुआ तो साहूकार चिंता में डूब गया। बार-बार लंबी साँस लेता हुआ वह कुछ दूर चलने पर ही बैठ जाता। आज वैसे भी अंतिम दिन आ गया था। साहूकार का मन बैठ गया और वह एक जगह बैठ फूट-फूटकर रोने लगा।

बहू की समझ में नहीं आया, ससुर क्यों रो रहे हैं। वह बार-बार पूछने लगी कि उन्हें क्या तकलीफ है, क्या बीमारी है। ससुर ने अंत में कहा, 'बेटी! तुम शायद मुझ पर विश्वास नहीं करोगी। मैं सच-सच बता देना चाहता हूँ। इतने दिन ये बात हमने तुमसे छिपा रखी। हम तुम्हारे गुनहगार हैं।'

'पिता जी! ऐसी क्या बात है। आप निःसंकोच कहिए।'

'मुझसे कहा नहीं जा रहा है बेटी। छिपाकर भी नहीं रख सकता। तुम्हारा पति आज रात बारह बजे मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा। विधिमाता ने उसे हमें बारह वर्ष के लिए ही दिया था।' कहते हुए साहूकार पुनः रो उठा।

'बस इतनी-सी बात के लिए आप परेशान हो रहे हैं!' बहू ने कहा।

'मैं तुम्हें इतनी कम उम्र में विधवा कैसे देख सकता हूँ। हमारे घर किसी चीज की कमी नहीं है पर विधवा जीवन...।'

'पिताजी! आप चिंता न कीजिए। मुझे जो चीज चाहिए, वे आप ला देना।'

'जो चीज चाहिए माँग लो बेटी। कमी तो किसी चीज की नहीं है। कमी है तो बस भाग्य की।'

'बस चार चीजें मुझे ला देना। दीपक, जल का लोटा, थोड़ा अनाज और एक गाय।'

ये चीजें तो घर पहुँचते ही ला दूँगा और कुछ चाहिए तो वह भी ले लेना।'

शाम होने से पहले वे घर पहुँच गए। साहूकार ने तुरंत सभी चीजें मँगवा दीं। बहू ने सास के पैर छूकर आशीर्वाद माँगा और कहा कि रात मेरे कमरे में कोई न आए।

अँधेरा होने पर बहू ने दरवाजे पर दीपक जलाकर रख दिया। साहूकार का बेटा इन सब बातों से बेखबर आराम से सो गया।

रात के पहले पहर विधिमाता के भेजे दो दूत दरवाजे पर आए। ज्यों ही वे भीतर आने लगे दीपक ने उन्हें रोक लिया। दीपक ने कहा, 'यहाँ मेरा पहरा है। कोई भी भीतर नहीं जा सकता। यदि किसी ने मेरी बात नहीं मानी तो मैं चारों ओर आग लगा दूँगा। इस आग में तुम लोग भी जल जाओगे।'

दूत डर के मारे वापस चले गए। विधिमाता ने अब चार दूत भेज दिए। अब बहू ने दरवाजे पर जल से भरा लोटा रख दिया। ज्यों ही चार दूत भीतर आने लगे जल ने उन्हें रोक लिया।

'यदि किसी ने भीतर जाने की हिम्मत की तो मैं एकदम छिप जाऊँगा और सभी लोग प्यासे मर जाएँगे।' जल ने कहा।

चारों दूत वापस गए। अब बहू ने दरवाजे में अनाज रख दिया। विधिमाता ने अब आठ दूत भेजे। अनाज ने उन्हें भीतर नहीं आने दिया। उनके वापस जाने पर विधिमाता ने सोलह दूत भेजे। बहू ने अब दरवाजे पर गाय खड़ी कर दी। गाय ने उन सभी को भगा दिया।

इस तरह रात्रि के चारों पहर बीत गए। जब सभी दूत वापस आ गए तो विधिमाता के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने दूतों को खूब डाँट-फटकार सुनाई और स्वयं उठकर साहूकार के घर पहुँची।

दहलीज लाँघ जैसे ही विधिमाता भीतर आई, बहू ने झुककर उसके पैर छूए। विधिमाता के मुँह से निकला, 'सौभाग्यवती रहो।' बहू ने कहा, 'आप मेरे पति को ले जा सकती हैं किंतु अभी-अभी आपने मुझे सुहागन रहने का आशीर्वाद दिया है। इनके बिना मैं सुहागन कैसे रहूँगी?'

विधिमाता को अब पता चला कि उससे क्या भूल हुई है। साथ ही वह बहू की कुशलता पर प्रसन्न भी हुई। विधिमाता ने आशीर्वाद दिया, 'तुम सदा सुहागन रहोगी। तुम्हारी मृत्यु अपने पति से एक दिन पहले होगी।' यह कहकर विधिमाता अंतर्धान हो गई।

साहूकार तथा उसकी पत्नी ने जब सुबह बेटे को जीवित पाया तो वे बहुत प्रसन्न हुए।

बेईमान आदमी

एक जंगल में साँप, शेर, चूहा, चिड़िया और एक आदमी रहते थे। उस जंगल के बीचोबीच एक गहरा कुआँ था। संयोगवश सभी एक-एक करके उस कुएँ में गिर गए। कुएँ से उनमें से कोई भी बाहर नहीं निकल पाया, अतः सभी विवश होकर उसमें रहने लगे।

उस जंगल में पास के गाँव से रोज एक लकड़हारा आता था। वह जंगल से लकड़ियाँ इकट्ठी करता और शहर में बेचकर गुजारा करता। एक दिन जंगल में लकड़ियाँ काटते-काटते वह थक गया और अपनी प्यास बुझाने के लिए उस कुएँ के पास गया। जब लकड़हारे ने कुएँ में झाँका तो देखकर हैरान रह गया। कुएँ में आदमी, शेर, साँप, चूहा और चिड़िया थे। सभी जीने की उम्मीद छोड़ दुखी हो रहे थे। लकड़हारे ने उन पर तरस खाया और उसने रस्सी नीचे फेंक सभी को बाहर निकाला।

एक बार लकड़हारे को जंगल में वही शेर मिला जिसे उसने निकाला था। शेर ने लकड़हारे का बहुत-बहुत धन्यवाद किया और कहा, 'तुमने हम पर बड़ा उपकार किया है। उस दिन यदि तुम हमें न निकालते तो मर चुके होते। मैं तुम्हारे इस उपकार का बदला चुकाना चाहता हूँ।' ऐसा कहकर शेर गया और किसी जानवर का शिकार ले आया। लकड़हारा शिकार लेकर घर को चला तो आगे उसे चिड़िया मिली। चिड़िया ने कहा, 'मैं तो तुम्हारे उस दिन के उपकार को भुला नहीं पाई। मैं भी तुम्हें कुछ उपहार देना चाहती हूँ। तुम यहीं रुको।'

चिड़िया देर तक जंगल में कुछ ढूँढ़ती रही। उसे कुछ नहीं मिला। अंत में उसने रानी को देखा जो अपने आभूषण उतार सरोवर में नहा रही थी। चिड़िया ने रानी के आभूषण उठा लिए और आकर लकड़हारे को दे दिए।

लकड़हारा जब घर की ओर जा रहा था तो अंत में उसे वह आदमी मिला जिसे उसने कुएँ से निकाला था। आदमी ने उसे पहचान लिया। उसने कहा, 'तुम वही लकड़हारे हो जिसने मुझे कुएँ से बाहर निकाला है। तुम्हारे कारण मैं आज यहाँ हूँ। मैं भी तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ। तुम यहीं ठहरो। मैं अभी आया।'

वह आदमी शहर की ओर गया। वहाँ रानी के आभूषण चोरी होने की खबर फैली थी। राजा की ओर से सूचना देने वाले को पुरस्कार की घोषणा हो चुकी थी। पुरस्कार की घोषणा सुनने पर वह आदमी लकड़हारे के सारे उपकार भूल गया। उसने लकड़हारे के पास आभूषण देखे थे। अतः उसने राजा को यह सूचना दे दी कि वे आभूषण लकड़हारे ने चुराए हैं और इस समय वह जंगल में छिपा बैठा है।

राजा के सिपाही जंगल में गए और लकड़हारे को पकड़कर जेल में डाल दिया। उस आदमी को अच्छा पुरस्कार मिला।

जब लकड़हारे के जेल जाने की बात चूहे को मालूम हुई तो वह बड़ा दुखी हुआ। जेल में लकड़हारे को भरपेट भोजन भी नहीं मिलता है, यह बात भी उसे पता चली। उसने राजा के रसोईघर से जेल तक सुरंग खोदनी आरंभ की। कई दिन तक खोदते रहने के बाद वह जेल के उस कमरे तक पहुँच गया जहाँ लकड़हारा कैद था। चूहा रसोई से तरह-तरह के व्यंजन ढोकर लकड़हारे को देने लगा। वह उतनी सामग्री ढो नहीं पाता था जिससे लकड़हारे का पेट भरे। फिर भी नन्हा चूहा भूखा रहकर भी खाने की चीजें उसे पहुँचाने में व्यस्त रहा।

अंत में हारकर चूहे ने उस साँप को खोज निकाला जिसे लकड़हारे ने कुएँ से निकाला था। चूहे ने साँप से कहा, 'मित्र! क्या तुम्हें पता है हमारा मित्र लकड़हारा आजकल जेल में है जिसने हमें कुएँ से निकाला था। उस पर रानी के गहने चुराने का झूठा आरोप लगा है। हमें उसकी सहायता करनी चाहिए।' साँप ने कहा, 'मित्र! जेल में लकड़हारे से तो मिलना भी कठिन है। वहाँ तो कड़ा पहरा है। कोई उपाय हो तो बताओ।'

चूहे ने साँप को अपना बनाया गुप्त रास्ता बताया। दोनों सुरंग के रास्ते लकड़हारे के पास पहुँच गए।

साँप ने उसे जेल से निकालने की योजना बताई, 'रात को मैं सोए हुए राजा को गले में डंक मारूँगा। इससे राजा का गला सूज जाएगा। वह कुछ भी खा नहीं पाएगा। अंत में वह ज्योतिषी से पूछेगा। ज्योतिषी उसे ठीक होने के लिए तुम्हें बुलाने को कहेगा। जब राजा तुम्हें बुलाए तब तुम मुझे बुलाना। राजा के सामने तुम मुझे गालियाँ देते हुए जहर चूसने को कहना। मैं जहर चूस राजा को ठीक कर दूँगा। तुम्हें राजा जेल से छोड़ देगा।'

साँप ने चूहे से राजा के सोने के कमरे में जाने का रास्ता पूछा तो उसने राजा के शयनकक्ष तक सुरंग खोद दी। उस सुरंग के रास्ते भीतर जाकर साँप ने राजा को गले में डसा और सुरंग के रास्ते ही भाग खड़ा हुआ।

राजा का गला सूज गया। खाना-पीना छूट गया। कई वैद्य बुलाए गए। कोई उपचार काम न आया। अंत में ज्योतिषी को बुलाया गया। ज्योतिषी ने कहा, 'महाराज! आपकी जेल में एक कैदी है। वही आपका उपचार कर सकता है।'

राजा ने लकड़हारे को राजदरबार में बुलाया। लकड़हारे ने साँप को बुलाया। आह्वान करते हुए साँप आ पहुँचा। लकड़हारे ने साँप को दुत्कारते हुए जहर चूसने की आज्ञा दी। साँप द्वारा जहर चूसते ही राजा स्वस्थ हो गया।

राजा के स्वस्थ होने पर राजदरबार में खुशियाँ मनाई जाने लगीं। लकड़हारे को सम्मान के साथ रिहा कर पुरस्कार दिए गए।

साँप और चूहा भी मित्र को खुश देख प्रसन्न हुए।

सूनकेसी

किसी नगर में एक साहूकार रहता था। उसके चार बेटे थे। तीन बड़े बेटे बड़ा काम करते थे। व्यापार में पिता का हाथ बटाते। छोटा बेटा कुछ काम नहीं करता। साहूकार छोटे बेटे से नाराज रहता। साहूकार की पत्नी छोटे बेटे को बहुत चाहती थी। जब साहूकार छोटे बेटे को बहुत तंग करने लगा तो माँ ने उसे एक लाल दिया कि वह उससे कोई कामकाज आरंभ करे।

वह उस लाल से एक चूहा खरीद लाया। उसने चूहे को अनाज के गोदाम में छोड़ दिया। चूहा बड़ा खुश हुआ। उसे खाने को मिल गया। चूहे ने उससे प्रसन्न होकर कहा, 'जब भी तुम्हें कोई संकट पड़े, मुझे बुलाना।'

माँ छोटे बेटे के इस काम से बहुत दुखी हुई। माँ ने एक लाल और दिया कि बेटा कुछ कामकाज शुरू करेगा। दूसरी बार उसने एक बिल्ली खरीद ली। बिल्ली को छोड़ने पर बिल्ली ने उससे कहा, 'जब भी संकट पड़े, मुझे बुला लेना।'

तीसरी बार माँ ने एक लाल और दिया। अब बेटा तोता खरीद लाया। तोते को छोड़ने पर तोते ने वही कहा, 'जब भी तुम्हें संकट पड़े, मुझे बुला लेना।'

माँ बहुत दुखी थी। फिर भी माँ का दिल तो माँ का ही होता है। माँ के चौथी बार लाल देने पर वह सँपेरे से एक बूढ़ा साँप ले आया। माँ बहुत नाराज हुई और साँप को जंगल में छोड़ने के लिए कहा। बेटा साँप को जब जंगल में छोड़ने लगा तो साँप ने कहा, 'मुझे ऐसे मत छोड़ो। मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मुझसे भागा नहीं जाएगा और जंगली पक्षी मुझे नोच-नोचकर खा जाएँगे। इसलिए मुझे आगे ले चलो।'

वह उस साँप को लेकर आगे गया तो रास्ते में एक बाँबी दिखाई दी। साँप बाँबी को देखकर बोला, 'मुझे इस बाँबी के पास छोड़ दो। तुम मेरी पूँछ पकड़े रखो।'

साँप बाँबी की गुफा में घुस गया तो वह भी पूँछ पकड़े-पकड़े उस गुफा में उतरता गया।

गुफा में जाते-जाते वे एक अनोखे नगर में जा पहुँचे। उस नगर में ऊँचे-ऊँचे भवन थे। सुंदर बाग-बागीचे थे। सरोवर थे। साँप ने एकदम अपनी केंचुली उतार दी और एक सुंदर मनुष्य का रूप धारण कर लिया। वह सेठ के बेटे को वहाँ के

राजा के पास ले गया। बहुत बड़े महल के भीतर सिंहासन पर राजा विराजमान था, जिसके लंबी-लंबी मूँछें थीं।

उसने राजा को प्रणाम किया। राजा उसे देख प्रसन्न हुआ। उसने कहा, 'महाराज! वहाँ तो मैं सँपेरे के हाथ चढ़ गया था। मेरा तो बहुत बुरा हाल हुआ। इस सेठ के बेटे ने मुझे न छुड़ाया होता तो मैं अब तक वहीं सड़ता। इसी ने मुझे सँपेरे से खरीदकर मेरी जान बचाई।'

राजा ने सेठ के बेटे का बड़ा मान-सम्मान किया और वह महल में ही रहने लगा।

राजा को उस सेठ-पुत्र का स्वभाव और सद्गुण भा गए। उसने सेठ-पुत्र से अपनी इकलौती राजकुमारी का विवाह करने का मन ही मन संकल्प ले लिया। अपने दरबारियों और मंत्रियों से परामर्श कर राजा ने शुभ मुहूर्त निकाल अपनी पुत्री का विवाह सेठ-पुत्र से कर दिया। सेठ-पुत्र उस राजकुमारी के साथ आराम से महल में रहने लगा।

उस राजकुमारी के सिर के बाल सोने के थे। इसलिए उसका नाम सूनकेसी था।

जब उसे राजमहल में रहते हुए बहुत दिन हो गए तो उसे माँ की याद सताने लगी। वह पत्नी से बोला कि तुम्हें अब अपने घर जाना चाहिए। सूनकेसी ने कहा कि पिताजी से पूछ लो फिर चल पड़ेंगे। सूनकेसी ने यह भी बताया कि यदि पिताजी भेजने के लिए मान जाएँ और चलती बार तुमसे कुछ माँगने को कहें तो पहले वचन लेकर उनके हाथ की अँगूठी माँग लेना।

जब सेठ के पुत्र ने घर जाने की इजाजत चाही तो राजा ने सहर्ष दे दी। जाती बार विदाई के समय राजा ने कहा, 'बेटा! मैंने अपनी जान से कीमती पुत्री दी है। तुम सुख से रहो। अब तुम जो माँगना चाहते हो माँगो।'

सेठ-पुत्र ने कहा, 'पहले वचन दीजिए। जो मैं माँगूँगा, वह मिलेगा।' राजा ने वचन दिया तो उसने राजा की अँगूठी माँग ली। राजा ने उसे अपनी अँगूठी उतारकर दे दी।

धरती पर पहुँचने पर जब सेठ का पुत्र सूनकेसी को अपने घर ले जाने लगा तो वह उस घर में जाने के लिए आनाकानी करने लगी। सेठ का पुत्र चिंतित हो गया। सूनकेसी ने कहा, 'चिंता की कोई बात नहीं।' उसने अँगूठी सामने रखकर धूप-बाती की और प्रार्थना करने लगी, 'हे देवी! हमें एक ऐसा महल चाहिए, जिसमें सारी सुख-सुविधाएँ हों।'

उसी समय एक भव्य महल बन गया। सेवक इधर से उधर घूम रहे थे। सारी सुविधाएँ मौजूद थीं। वे दोनों उस महल में बड़े आराम से रहने लगे।

एक बार की बात है। सूनकेसी महल के चौबारे पर खड़ी कंघी से बाल बना रही थी। कंघी करते हुए उसके दो-तीन सोने के बाल झड़कर नदी में जा गिरे। उन बालों को एक मछली ने खा लिया। वह मछली दरबारी मछुआरों ने पकड़ी और राजा को दी। जब राजा के रसोइए मछलियाँ बनाने लगे तो उस मछली के पेट से सोने के बाल निकले। उन्होंने वे बाल राजा को दिखाए। राजा हैरान रह गया। जिस स्त्री के बाल सोने के हों, वह कितनी सुंदर होगी।

राजा ने अपने नगर के सभी ज्योतिषी, जासूस बुलवाए। सभी को बाल दिखाए और कहा कि जिस स्त्री के बाल सोने के हों वह कितनी सुंदर होगी। वह तो मेरे राजमहल में होनी चाहिए।

अंत में दो बूढ़ी महिलाएँ राजा के दरबार में आईं। उनमें एक बोली, 'मैं तो स्वर्ग में छेद कर देती हूँ।' दूसरी ने कहा, 'मैं अंबर में पैबंद लगा सकती हूँ।'

राजा ने पहली बुढ़िया को सारा किस्सा समझाया। उसने कहा, 'महाराज! सोने के बालों वाली केवल एक स्त्री है और वह है पाताल के सर्पराज की पुत्री। वह धरती पर कैसे आ सकती है। आप मुझे कुछ धन और सेवक दें तो मैं पता लगा सकती हूँ।'

उस बुढ़िया ने मछुआरों से पता लगाया कि मछली कहाँ से आई थी। एक नौका तैयार कर वह नदी में ऊपर की ओर जाने लगी। एक-दो दिन के सफर के बाद उसे नदी के किनारे एक सुंदर महल दिखा। नौका को नदी किनारे खड़ी कर वह सेवकों को हिदायत देकर चली गई कि जब तक वह न लौटे, वे उसका यहीं इंतजार करें।

बुढ़िया ने महल के आसपास जाकर पता किया कि वहाँ कौन-कौन रहते हैं। आसपास के लोगों से उसे पता चल गया कि महल में बहुत सुंदर स्त्री रहती है। उसे विश्वास हो गया कि ये सूनकेसी ही होगी।

एक दिन जब सेठ-पुत्र बाहर चला गया तो बुढ़िया महल में गई। वह भीतर जाते ही सूनकेसी से गले मिली और पूछने लगी, 'अरे, मेरी भानजी, तू यहाँ कैसे!' सूनकेसी हैरान रह गई कि यह मौसी कहाँ से आ गई। उसने कहा, 'मेरी तो कोई मौसी नहीं है, तुम मेरी मौसी कब बन गईं?'

बुढ़िया ने कहा, 'तुम तब बहुत छोटी थीं जब मैं धरती पर आई थी। तुम वहाँ की बातें सुनाओ। क्या हाल है? मुझे तो आए बहुत दिन हो गए हैं।'

सूनकेसी ने जब पाताल की बातें सुनीं तो उसे विश्वास होने लगा कि हो न हो यह बुढ़िया मेरी मौसी ही हो, जो कभी पहले पाताल से आई हो।

शाम को जब सेठ-पुत्र लौटा तो सूनकेसी ने उसे बताया कि यह मौसी है जो पहले पाताल से आई है। बुढ़िया वहाँ आराम से रहने लगी।

बुढ़िया ने उनके साथ रहकर सभी रहस्य पता कर लिए। पाताल से आना, साथ में जादुई अँगूठी के चमत्कार, सोने के बाल, सब कुछ उसने जान लिया। इतना कि सेठ के पुत्र को चूहे, बिल्ली, तोते के वचन भी पता कर लिए।

एक दिन जब सेठ का लड़का घर में नहीं था, बुढ़िया सूनकेसी को सैर करने के बहाने बाहर ले गई। कुछ आगे जाने पर उसने अपनी चप्पलें घर में छूटने का बहाना किया और महल में लौट आई। बुढ़िया ने महल में आकर चप्पलें तो पहन लीं लेकिन अँगूठी भी निकाल ली। अँगूठी छिपाकर वह सूनकेसी को नदी किनारे तक ले गई। वहाँ नौका खड़ी थी। बुढ़िया ने नौका विहार के बहाने सूनकेसी को नौका में बिठा दिया। नौकरों को चुपके से इशारा कर दिया कि नौका को जल्दी से नीचे ले चलो। जब नौका तेजी से नीचे जाने लगी तो सूनकेसी को शक हुआ। जब सूनकेसी ने बुढ़िया को झाड़ा तो वह उसे धमकाने लगी। अब सूनकेसी के पास चुपचाप बैठे रहने के सिवा कोई चारा नहीं था। उसे विश्वास था कि उसके पति के पास अँगूठी है। वह अँगूठी के सहारे उसे वापस ले जाएगा।

बुढ़िया ने सूनकेसी को ले जाकर राजा को सौंप दिया। राजा से उसे मनचाहा धन मिला। किंतु बुढ़िया ने अँगूठी का भेद राजा को भी नहीं दिया।

राजा सूनकेसी पर मोहित तो था पर उससे डर भी रहा था। उसने हौसला कर सूनकेसी से कहा, 'तुम डरो मत। मैं तुम्हें यहाँ रानी बनाकर रखूँगा। जो कहोगी, मैं वही करूँगा।'

सूनकेसी ने कहा, 'राजन! यह बुढ़िया मुझे धोखे से यहाँ लाई है। तुम्हें मेरी एक बात माननी होगी।'

राजा ने कहा, 'मैं तुम्हारी हर शर्त मानने को तैयार हूँ। तुम कहो तो सही।'
सूनकेसी ने कहा, 'तुम छह महीने तक मुझे न छूना। उसके बाद मैं हर बात मानूँगी।'

राजा ने उसकी शर्त मान ली। सूनकेसी को पता था, उसका पति उसे ढूँढ़ ही लेगा।

जब सेठ का पुत्र महल में लौटा तो सूनकेसी को वहाँ न पाकर बहुत दुखी हुआ। उसे शक तो हो गया। जब अँगूठी ढूँढ़ी तो वह भी नहीं मिली।

अचानक उसे अपने मित्रों की याद आई जिन्होंने बुरे समय में उसकी मदद करने की बात कही थी। उन्हें स्मरण करते ही वे सभी वहाँ आ गए।

उसने मित्रों से कहा, 'मित्रो! मेरी सूनकेसी को कोई ले गया है। तुम सब उसे ढूँढ़ो। या मेरी अँगूठी ढूँढ़ दो। नहीं तो मैं मर जाऊँगा।'

वे तीनों मित्र आपस में सलाह करने लगे। तीनों ने यह निर्णय लिया कि तोता

उड़ सकता है। वह दूर तक उड़कर खोज-खबर ले। फिर अपना काम होगा।

तोते ने उड़कर चारों ओर पता किया। उसने सूनकेसी को ढूँढ़ लिया और मित्रों को बताया कि सूनकेसी तो फलाँ राजा के महल में है किंतु अँगूठी उसके हाथ में नहीं है। अब चूहा और बिल्ली उस बुढ़िया को ढूँढ़ने गए। वे दोनों बुढ़िया के घर पहुँच गए। तोता बाहर बैठा रहा। वे दोनों घर के भीतर जाकर प्रतीक्षा करने लगे। बुढ़िया घर आ गई। उसने अँगूठी उँगली में डाल रखी थी। जब रात को वह सोने लगी तो उसने अँगूठी मुँह में डाल ली और सो गई। चूहे ने अपनी पूँछ सोई हुई बुढ़िया की नाक में घुसेड़ दी। बुढ़िया को छींक आ गई और अँगूठी धरती पर गिर गई। बिल्ली ने झट अँगूठी को उठाया और बाहर भागी। चूहा भी बाहर भागा। इन दोनों को देख तोता भी आ गया। तोते ने अँगूठी मुँह में डाली और ऊपर उड़ने लगा। इतने में सबेरा हो गया। दूसरी ओर से तोतों का झुंड टें-टें करता आया तो इस तोते से भी रहा न गया। जैसे ही उसने टें-टें के लिए मुँह खोला, अँगूठी नदी में गिर गई।

तोता अब पुनः साथियों के इंतजार में बैठ गया।

जब चूहा और बिल्ली आए तो तोते ने बताया कि अँगूठी तो नदी में गिर गई।

चूहे ने बहुत-से चूहे बुलाए और धरती खोद-खोदकर नदी का बहाव मोड़ दिया। नदी सूख गई और बिल्ली अँगूठी ढूँढ़ने के लिए मछलियों के पेट काटने लगी। इससे मछलियाँ इकट्ठी हो गईं और बिल्ली से विनती करने लगीं। उन्होंने एक मछली को बिल्ली के हवाले कर दिया, जिसने अँगूठी निगली थी। बिल्ली ने उसका पेट फाड़ अँगूठी निकाल ली और तोते को दे दी।

तोता पुनः आकाश में उड़ा। चूहा और बिल्ली दोनों पैदल चले। तीनों सेठ के बेटे के पास आए और अँगूठी दे दी। सेठ के पुत्र ने अँगूठी को धूप-बाती दी और कहा, 'सूनकेसी, यहाँ आ गए।'

उसी समय सूनकेसी वहाँ आ पहुँची। दोनों ने अब अपने तीनों मित्रों की खूब सेवा की। उन्हें धन्यवाद देकर विदा किया और सूखपूर्वक रहने लगे।

पत्थर के सैनिक

(किन्नौर क्षेत्र)

किन्नौर में बास्पा और सतलुज के संगम कड़छम के दाईं ओर सुरम्य सांगला घाटी है। सांगला किन्नर कैलास के ठीक दूसरी ओर है। सांगला घाटी में प्रसिद्ध कामरू गाँव है जहाँ बुशहर के राजाओं का राजतिलक होता था। कामरू के आगे रॉकछम्म और अंत में छितकुल आता है।

छितकुल फिल्मिस्तान-सा अद्भुत गाँव है। 3450 मीटर की ऊँचाई पर बसे इस छोटे-से गाँव में एक देवी का मंदिर, एक बौद्ध मंदिर और एक छोटा-सा किला है। किला, कामरू किले की शैली का छोटा प्रतिरूप है। गाँव में शिव, देवी, बुद्ध सबकी समान रूप से पूजा होती है। यहाँ बास्पा नदी एक धारा के रूप में बहती है जो आगे गुंडार ग्लेशियर से निकलती है। यहाँ से बद्रीनारायण, रोहड़ू (जिला शिमला) तथा तिब्बत तीनों स्थानों को जाने के लिए मार्ग हैं।

छितकुल के आगे तिब्बत की सीमा है। तिब्बत के शासक छितकुल पर आक्रमण करते रहते थे। छितकुलवासी इनका डटकर मुकाबला करते थे। बार-बार आक्रमण होते किंतु तिब्बतवासी इस ओर नहीं आ पाते।

एक बार की बात है, तिब्बत की एक बड़ी सेना छितकुल और सांगला घाटी जीतने के उद्देश्य से तिब्बत से चल पड़ी। यद्यपि दोनों ओर से व्यापार भी होता था किंतु सीमावर्ती होने से आक्रमण भी होते रहते।

आक्रमण की खबर सुन छितकुलवासी चिंता में डूब गए। एक तो छोटा-सा गाँव। थोड़े-से लोग। विशाल सेना का मुकाबला कैसे कर पाते। गाँव के छोटे-से किले में कैसे सुरक्षा होगी।

ग्रामवासियों ने आपस में सलाह-मशविरा किया। आखिर में उपाय ढूँढ़ लिया गया। सभी ग्रामवासी तिब्बत जाने वाले मार्ग की ओर भागे। वृद्ध, युवक, युवतियाँ बच्चे सभी उस ओर भागे। सभी लोगों ने घाटी से लंबे-लंबे पत्थर उठाकर एक ऊँचे टीले पर जमा कर लिए जहाँ से तिब्बती आक्रमणकारी आने वाले थे। टीले पर पत्थर ऐसे खड़े कर दिए जैसे बहुत-से सैनिक खड़े हों। जब तिब्बती सैनिक टीले के पास

पहुँचे तो उन्होंने देखा अनगिनत सैनिक मोर्चा जमाए खड़े हैं। तिब्बती इतनी सेना देख घबरा गए और भाग गए। पूरी सांगला घाटी में यह खबर फैल गई कि छितकुलवासियों ने तिब्बती सेना को भगा दिया।

छितकुल में देवी की बड़ी मान्यता है। लोक-विश्वास है कि देवी ने ही पत्थर के सैनिकों में जान फूँक दी। यह भी कहा जाता है कि जिस कन्या के मन में यह तरकीब आई थी उसे ही देवी के रूप में पूजा गया।

त्रिलोकीनाथ की कथा

'लाहौल क्षेत्र)

त्रैलोकीनाथ मंदिर जिला लाहौल-स्पिति में है। मंदिर में स्थित प्रतिमा को स्थानीय भाषा में 'भ्यार' कहा जाता है। भ्यार के विषय में एक रोचक लोककथा प्रचलित है।

कहा जाता है कि पट्टन घाटी में एक जमींदार रहता था जिसने बहुत-सी गायें पाल रखी थीं। गौएँ चराने के लिए रखा ग्वाला रोज गौओं को जंगल ले जाता था। एक बार दूसरे ग्वाले ने जमींदार से शिकायत की कि ग्वाला गाय को जंगल में ही दूह लेता है क्योंकि गाय घर आकर दूध नहीं देती। जमींदार ने ग्वाले को चेतावनी देकर छोड़ दिया। दूसरे दिन वह गौएँ लेकर गया किंतु दूध दूहने की बात भूल गया। अतः शाम को फिर वही शिकायत सुनने को मिली। इस तरह रोज-रोज शिकायत होती और ग्वाला भूल जाता। अंत में जमींदार ने कह दिया कि ग्वाले को खाना नहीं दिया जाएगा।

खाना न मिलने पर ग्वाला चिंता में डूब गया कि अब तो उसे कारण ढूँढ़ना ही पड़ेगा कि आखिर दूध पीता कौन है।

उसने गाय की पूँछ से एक पत्थर बाँध दिया ताकि उसे इस पत्थर से पता रहे कि उसे आज चौकन्ने रहना है। गाय चरते-चरते आगे निकल गई। वह भूल गया कि उसे सतर्क रहना है। फलतः गाय ने आज भी दूध नहीं दिया और ग्वाले को फिर खाना नहीं मिला।

दूसरे दिन अपनी चोटी से उसने पत्थर बाँध लिया ताकि हिलने पर उसे याद रहे कि सतर्क रहना है। दोपहर तक कुछ नहीं हुआ। पत्थर हिलने से वह एकदम सतर्क हो जाता। दोपहर बाद वह पशुओं को पानी पिलाने के लिए ले गया। उसे नींद आ रही थी किंतु चोटी से बँधा पत्थर उसे सोने नहीं दे रहा था। थोड़ी देर बाद वह क्या देखता है कि एक चार-पाँच वर्ष का सुंदर बालक गउओं की ओर छुपता-छुपता चला आ रहा है। ग्वाले ने अनजान बन आँखें बंद कर लीं किंतु चोरी-छिपे देखता रहा। बालक गउओं के पास आ गया और दूध दूहने लगा। गउएँ उसे चुपचाप दूध देती रहीं। बालक ने चार-पाँच गउओं का दूध देखते-देखते पी लिया। ग्वाले को

गुस्सा आया और उसने दौड़कर उस बालक को पकड़ लिया। बालक ने छूटने की बहुत कोशिश की, ग्वाले ने उसे नहीं छोड़ा।

बालक ने जब देखा कि ग्वाले से छूटने का कोई साधन नहीं है तो उसने कहा, 'तुम मुझे छोड़ोगे तो नहीं। जहाँ चाहो ले चलो। एक बात का ध्यान रखना। जब हम जा रहे होंगे तो तुम्हें लगेगा कि कोई पीछे से आवाज दे रहा है। तुम पीछे कभी मत देखना।'

जब ग्वाले को चले हुए कुछ समय हो गया तो उसे लगने लगा कि कोई पीछे चला आ रहा है या आवाज दे रहा है। ग्वाला डर गया। उसने पीछे नहीं देखा। जब वे गाँव के निकट पहुँचे तो फिर लगा कि कोई पीछे से आवाज दे रहा है। गाँव नजदीक था इसलिए ग्वाले का डर अब कम हो गया। उसने पलटकर देखना चाहा। ज्यों ही उसने मुड़कर देखा वह एक पत्थर का बुत बन गया। वह बालक संगमरमर की प्रतिमा बन गया।

कहा जाता है कि उस बालक की संगमरमर की प्रतिमा ही त्रिलोकीनाथ की प्रतिमा है। ग्वाले का बुत अब भी ग्वाला कहा जाता है।

त्रिलोकीनाथ प्रसिद्ध चार धामों में एक माना जाता है जो लाहौल की पट्टन घाटी में लगभग 2760 मीटर की ऊँचाई पर त्रिलोकीनाथ गाँव में स्थित है। चंद्रभागा घाटी में यह शिखर शैली का एकमात्र मंदिर है। मंदिर के भीतर नब्बे सेंटीमीटर ऊँची प्रतिमा है जिसे शिव माना जाता है। पुरातत्त्ववेत्ता उसे अवलोकीतेश्वर की प्रतिमा मानते हैं क्योंकि मूर्ति के सिर पर अमिताभ की छोटी मूर्ति है। छह भुजाओं वाली इस आकर्षक मूर्ति को श्रद्धालु बोधसत्व और शिव दोनों ही मानते हैं।

राख का आदमी

(जनजातीय लोककथा)

कहते हैं इस धरती पर पहले कोई आदमी न था। यहाँ बस पहाड़, मैदान, जंगल, नदियाँ और सागर थे। पर्वत बड़े ही ऊँचे-ऊँचे थे। जहाँ पानी था वहाँ दूर-दूर तक पानी ही दिखाई देता था।

सब पर्वतों में कैलास पर्वत सबसे ऊँचा था। यह पर्वत सभी पर्वतों का राजा कहलाता था। इस पर्वत के ऊपर तो बर्फ रहती ही थी, आसपास और नीचे भी बर्फ रहती थी। अब तो कैलास पर्वत के नीचे के इलाकों में बस चार महीने ही बर्फ रहती है, उस समय बारह महीने बर्फ रहती थी। बारह महीने बर्फ होने से कोई प्राणी यहाँ रह नहीं सकता था। कैलास की चोटी आकाश को छूती थी और नीचे बर्फ ही बर्फ।

कैलास पर्वत की चोटी पर महादेव निवास करते थे। महादेव जी की लंबी-लंबी जटाएँ थीं। महादेव के पास सदा धूणा जगा रहता था, जिससे गुग्गल धूप का धुआँ निकलता रहता। धूप का धुआँ खंबे-सा प्रतीत होता।

महादेव सदियों कैलास पर्वत पर तपस्या करते रहे। उन्होंने अपने सामने इस पृथ्वी पर पर्वत बनते देखे। झील, नदियाँ और सागर बनते देखे। फिर पेड़-पौधे उगे। पृथ्वी पर तरह-तरह के जीव पैदा हुए।

एक दिन जब वे तपस्या से जागे तो क्या देखते हैं कि वन, पर्वत और नदियों से भरी यह पृथ्वी सूनी-सूनी-सी है। उन्होंने सोचा, ये सारी पृथ्वी किसके लिए है? सोने की धरती, नीलम का सागर और चाँदी के पर्वत बने हैं पर किसके लिए?

यह सोचकर महादेव पुनः तपस्या में ध्यानमग्न हो गए। बारह वर्ष तक तपस्या में रहे। बारह वर्ष बाद तपस्या से जागकर उन्होंने एक सोने की डली पिघलाई। इसे ठंडा करने के बाद इसमें आँख, नाक, कान, मुँह, धड़, टाँगें, पैर सभी अंग लगाए। मूर्ति ने आदमी का रूप ले लिया। महादेव बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने मूर्ति को दूर एक स्थान पर रखा और जोंर से आवाज दी। मूर्ति कुछ न बोली। महादेव ने पुनः पुकारा। मूर्ति ने कोई उत्तर नहीं दिया।

महादेव ने सोच लिया कि सोने की मूर्ति बेजान है। वे पुनः तपस्या में लीन हो

गए। बारह वर्ष बाद जागकर उन्होंने उसी प्रकार चाँदी पिघलाई और आदमी की मूर्ति बनाई। इस मूर्ति को दूर रखकर आवाज दी। किंतु इस मूर्ति ने भी कोई उत्तर नहीं दिया, कोई आवाज नहीं दी।

महादेव जी तपस्या में मग्न हो गए। बारह वर्ष बाद पुनः जागकर उन्होंने ताँबे का आदमी बनाया। वह भी नहीं बोला। फिर लोहे का बनाया, वह भी महादेव जी की आवाज सुनकर कुछ नहीं बोल पाया।

आदमी बनाने के कई उपाय करने पर भी सफल न होने पर महादेव पुनः तपस्या में बैठ गए। बारह वर्ष बाद जागे और उठकर गोबर ढूँढ़ लाए। इस बार उन्होंने अपने धूणे में गोबर जलाया। गोबर की राख हुई। इस राख में पानी मिलाकर उन्होंने बड़ी लगन से राख का आदमी बनाया। राख के आदमी को उन्होंने उठाकर नदी के पार रखा। खुद वापस आ गए और फिर जोर से आवाज लगाई, 'नदी के पार तुम कौन हो?'

'मैं आदमी हूँ, महादेव!' राख के आदमी ने उत्तर दिया।

महादेव आनंदित हो उठे। राख का आदमी बोल उठा था। महादेव संतुष्ट होकर तपस्या में लीन हो गए।

(लोककथाओं का सागर अनंत है। हर कथा कुछ न कुछ संदेश देती है। कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण कथाएँ हैं जो यहाँ दी नहीं जा सकीं। इनमें धार्मिक कथाएँ जैसे नाग उत्पत्ति कथा, राजा विहंग मणिपाल कथा तथा कई देवकथाएँ (कुल्लू, महासू व सिरमौर), कमल का फूल, चार भाई, नीति कथाएँ, तोता-मैना, देव-कथा लारा, लाटी शंरजंग हिनाडुंडव (लाहौल) तथा किन्नौर की कई कथाएँ।)

हिम अनंत हिम-कथा अनंता

हिमाचल प्रदेश में अनंत गाथाएँ हैं। जितनी नदियाँ इस प्रदेश के हिम से निकलती हैं, उतनी ही गाथाएँ हैं। कोई गाथा रावी जितनी लंबी है, कोई व्यास, तो कोई सतलुज जितनी। कोई यमुना की तरह शांत बहती है तो कोई तौंस-सी तीव्र। छोटी-छोटी नदियों, खड्डों और नालों का तो अंत ही नहीं। यह गेय गाथाएँ महीनों चलती हैं। सर्दियों की लंबी रातों, विशेष पर्व-उत्सवों पर, विशेष तिथि-मासों में यह गाथाएँ गाई जाती हैं। इन्हें गाने वाले भी विशेष लोग हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी कंठस्थ कर गाथा गायन करते हैं। गुग्गा गाथा हो या ऐंचली, धार देशू हो या सामा दौलतू, राजा रसालू हो या राजा भरथरी, सरबण गाथा हो या बरलाज, राजा जगता हो या मादेव युकुंतरस, मियाँ होकू रावत हो या नेगी दयारी, ये गाथाएँ एक विरासत और एक पूरी संस्कृति को वहन करती हैं।

आज के बदलते युग में न गाथा गायन करने वाले रहे, न महीनों एक जगह धैर्य से बैठ सुनने वाले। यह सांस्कृतिक संपदा लुप्त होने के कगार पर है। तथापि दुर्लभ प्रजाति की तरह गिने-चुने बुजुर्ग आज भी इसे सँजोए हैं और अपनी भ्रमित होती जा रही स्मृति से याद करने की कोशिश करते हैं। कुछ धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाने वाला गायन अभी बचा हुआ है, जो आधा-पौना गाकर समाप्त कर दिया जाता है। लोकवार्ताएँ धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं। कोई इन्हें स्मरण रखने की आवश्यकता नहीं समझता क्योंकि सुनने वाले भी नहीं रहे, समझने वाले भी नहीं रहे।

जिस तरह चैत्र मास में ढोलरू गाए जाते थे, जिस तरह माघ मास में सरबण गाथा सुनाई जाती थी, उसी तरह चंबा, काँगड़ा, मंडी से लेकर बिलासपुर और सोलन तक थोड़े-बहुत रूपांतर के साथ गुग्गा गाथा गाई जाती थी। यह एक बहुत ही लंबी गाथा है जिसमें गुगमल, गुगा जाहरपीर या गुगा छत्री की गाथा का वर्णन है। राजाओं की अन्य गाथाओं की तरह इसे 'झेड़ा' या 'बार' भी कहा जाता है। यह गाथा रक्षाबंधन से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक 'मंडली' द्वारा गाई जाती थी।

गुगा गाथा में गुरु गोरख का मारू देश में आगमन, घनेरिया सिद्ध की परीक्षा, माई बाछला के सतीत्व की परीक्षा, बाछला को पुत्र वरदान, बाछला का मायके जाना,

बच्चे (गुगे) का स्नान, गुगे का बाल्यकाल, सूँकुए नाग से युद्ध, नागों से युद्ध, पछ्याण की लड़ाई, मंगलेरी और गुगड़ी का युद्ध, गुगमल राणा का नागों से दूसरा युद्ध, गुगमल राणा का विवाह, काह्नी चेले का शक्ति चमत्कार, काह्नी चेले का नाग-लोक को जाना, अंतिम युद्ध आदि अनेक प्रसंग हैं जो इसे एक बहुत लंबी गाथा का रूप प्रदान करते हैं।

सभी गाथाओं की तरह इस गाथा में भी क्षेत्रबार भिन्नता पाई जाती है। इस भिन्नता में भाषा, काव्य तो हैं ही, कथ्य और घटनाओं में भी अंतर है।

हमीरपुर क्षेत्र में गुगमल राणा का ब्याह गाथा में इस प्रकार दिया गया है :

गुगमल राणे दा ब्याह

बज्जे ढोल घुले नगारे, घर-घर लए सबी सजाई।
गुगे ब्याह एढ़ा रचाया, सारे लोक खुसियाँ मनाए।
पहली न्यूंद्र नानकियाँ जो भेजी, स्यूने दा मुकुट ल्यौणा।
दूजी न्यूंद्र सूरज चंदा जो, मुकुटाँ बिच आई ने लगी जाणा।
तीजी न्यूंद्र गुगड़ी बहणी जो, केसरी बगा बह्णी ल्यौणा।
चौथी न्यूंद्र अर्जुण सुर्जना जो, जनेती तुसाँ भाई जाणा।
अर्जुन सुर्जन देःन जवाब, असाँ ब्याह जो नी औणा।
देस बंगाला जादुआँ केरा, भेडू बनांदियाँ ओथी जनानाँ।
पंजुवाँ न्यूंद्र पंडवाँ जो, कन्ने जनेती तुसाँ जाणा।
छेवाँ न्यूंदा नर नारायणा, तुसाँ बी जनेती जाणा।
सतुआँ न्यूंद्र सत सणतोखाँ जो, कन्ने तुसाँ जनेती जाणा।
अठुआँ न्यूंद्र अठाँ भौणा जो, तुसाँ भी जनेती जाणा।
नाऊवाँ न्यूंद्र नौआँ नाथाँ जो, तुसाँ भी सौगी चलणा।
दसुआँ न्यूंद्र काँसा राजे जो, जनेती जो तुसाँ जाणा।
ग्यारूआँ ग्यारह गुणियाँ जो, तुसाँ भी जनेती सौगी चलणा।
फेरी न्यूंद्रा गया दुर्गा माइयाँ जो, तू भी माए जनेती जाणा।
फेरी न्यूंद्र भैरों छड़िए जो, तू भी जनेती सौगी चलणा।
चौदुआँ न्यूंदा हडूमाना जो भेजेया, जनेती तू जरूर जाणा।
फेरी न्यूंद्र बूँझा बीराँ जो, तुसाँ भी जनेती जरूर जाणा।
सौलुआँ न्यूंदा चौःट जोगणियाँ जो, तुसाँ भी जनेती जरूर जाणा।
फेरी न्यूंद्र सिद्ध चुरासियाँ जो, तुसाँ भी जनेती सौगी चलणा।
ठारूआँ न्यूंदा नार सिंह बीरा जो, जनेती तू भी जरूर जाणा।

भेजेया न्यूंदा कैलू कुटाला जो, तू भी जनेती सौगी चलणा।
भेजी न्यूंद्र भाई भतीजेयाँ जो, तुसाँ भी जनेती सारेंयाँ जाणा।
भाई भतीजे देन जवाब, असाँ जनेती नी जाणा।
देस बंगाला जादुआँ केरा, लैंदियाँ नारीं भेड़ा बनाई।
सोचाँ सोचदा गुग मल राणा, डरदेयाँ जनेती किसी नी जाणा।
जे ए जनेती कोई नीं गया, ताँ मैं ब्याहणे किआ जाणा।
राणा हुकमा करदा चरूएदारा जो, नीले इक दम जीन कराओ।
तैयार कराया नीला चरूएदारें, हाजर करी दित्ता राणे अग्गे।

मंडी क्षेत्र में गुगमल विवाह का वर्णन इस प्रकार दिया है :

गुगमल विवाह (गुग्गा गाथा का रूपांतर)

किस ब्याहणे औणा मालिणी, कदियाँ रा लगन रखाया?
ऐसा कुण आ राजा तिसरा जे, नौ लख हाथी एथी औणा?
मालण बोलदी—गुरु गोरख नाथ, सुण्याँ तू धियान लगाई।
मारू देसा रा राजा सुणी दा, गुग मला ब्याहणे औणा।
गुरू गोरख तिजो बोलदा—मालिणी, ए बैठी रा सह गुग मल राणा।
असें मंगी थी इस ते भेंट, नी देई होए इस ते दो टके असाँ जो।
मालणी तू करदी एड़ा गुमान, बोलदी जे फौजाँ औणियाँ बेसुमार।
गुगमल राणा कल्ला बैठी रा, कैस जो करदी तू ए एहड़ा गुमान।
इतनी गल्ल सुणी मालणी, फुल्ला री टोकरी धर्ती मारी।
इस ते जे दो टके साधुओं जो नी देई होए, ताँ मिंजो केह्ड़िया मोहराँ देणियाँ?
मजलें-मजलें मालण चलदी, पूजी कछुआँ रे बागाँ जाई।
रौणकाँ थियाँ चौंह पासयाँ ओथी, तिल सटणे जो बी जगह नी थी ओथी।
गुरु गोरख बोलदा, 'काःनी चेले' जो, तू हरे बागाँ रिया सैला जो जा।
तेरा भेज्या गुरुआ जांगा चफेरे, पर इनाँ बागाँ रिया सैला नी जांदा।
बागाँ रिया सैला जो गुरुआ कदी नी जांदा, ओथी सुणी दा जादुए रा जोर।
सेलिया तू मेरिया लेई जा, कन्ने मेरिया सिंगिया लेई जा।
तिजो नी लगदी तत्ती बाव, खुआजे पीराँ रियाँ खड़ावाँ लै।
हुण तू जायाँ काःनी चेलेया, तेरा बींगा नी हुंदा बाल।
पैर खड़ावाँ काःनिये पाइयाँ, मूँह बागाँ जो अपणा मोड़ेया।
मजलें-मजलें काःनी चलदा, खड़ोया जाई फाटका ते बार।
मालणी जो काःनी चेला पुछदा, किस दी खातर ए बैठक बणी?

किस जो होया ए समान, किस रियाँ ए फौजाँ तमाम?
किस रे कारण ए खू बाऊड़ी, किस जो दुआई रे ए ताल?
किस जो बण्या ए साज समान, किसरे खातर ए सारा बाग?
राजयाँ रे खातर ए खू वाऊड़ो, फौजाँ जो दुआए ताल जोगिया।
राजयाँ रे खातर ए बैठक बणी, फौजाँ जो जागी रे ए समान।
किस राजे ब्याणे औणा, किसरे गें औणी जनेत?
कछुए रे राजे ब्याणे औणा, सा:जिए रे औणी जनेत।
का:नी चेला बोलदा–सुण मालणी, दानी राजा सुणीं दा कछुए देसा रा।
हउँ बी ले:गा कुछ दान तिनाँ ते, दे:खगा तिनाँ जो हउँ दिल लाई।
का:नी चेला हुण तिजो बोलदा, बागाँ रे क्वाड़ा खोल फुल मालणी।
आई चुहाणा री जनेत, रहणाँ असाँ बागाँ च आई।
के:ड़े मुलखाँ ते तू चली आया, के:ड़े मुलखाँ जो तू जाणा।
मारू देसा ते असै चली ने आए, सुरियला ब्या:णे जो असे आए।
छोटे मुहआँ बड़े बोल न बोल्याँ, राजा सु:णगा ताँ दें:गा मारी।
जोगियाँ रे कोई घर नी हुंदे, मंगदे खांदे फिरदे रहंदे जोग।
पहली खड़ावाँ का:नी चेले मारी, क्वाड़ाँ रा नी रेआ पता कोई।
दूजी खड़ावाँ का:निये मारी, मालणी रे दंद टुट्टे पूरे चार।
बूटे पट्टे फुल गुलाबी, ठंडे बाग दिते जुआड़ी।
बड़े-बड़े नेतर बदले का:नी चेले, मालणी रा उतर्या सारा खुमार।

इन गाथाओं में सृष्टि-उत्पत्ति की कथा भी आती है। प्रायः गाथा के आरंभ में सृष्टि-उत्पत्ति बखानी जाती है। ऐसा धार्मिक गाथाओं में है। सृष्टि के आरंभ में न धरती थी, न आकाश, न पवन था, न पानी। न स्याही थी, न कागज और न सृजनहार। हाँ, कहीं सागर से अकाल निर्माण पुरुष प्रकट हुआ, कहीं केवल गुरु का अस्तित्व स्वीकारा गया। गुगा गाथा (हमीरपुर) में सृष्टि-उत्पत्ति इस प्रकार की है :

न थी धरती न था कासा, बरसेया धुंधूकारा।
न था चंद्र न था सूरज, न था नौलख तारा।
न थी स्याही न था मसाजन, न था लिखनहारा।
न थे संत न था भेदी, न था ज्ञान बचारा।
न था कटुआ न था बछुआ, न था सरजनहारा।
बिच समुदरा प्रगट होया, अलख पुरख नरवाणा।
बिच समुदरा बड़ी दा बड़ोटू, तिन पत्ते लगदे डाला।
इक्की पत्ता पर आसण लगाया, ता ते वेद बचारा।

बाएँ अंगे बाबा नानक पनपेया, मन में मनसा माई।
तिन्नाँ पत्तेयाँ पर आसण लाए, बैठेया उगत कमाए।

जनजातीय क्षेत्र भरमौर में गाई जाने वाली 'ऐंचली' में भी सृष्टि-उत्पत्ति के साथ-साथ गुरु की महिमा बखानी गई है :

जल थल धरती गुरूए न्यारे, नाज गुरू अवतारे।
नहीं थी धरती नहीं था कास, नहीं था मेरू कैलास।
नहीं थिये पौण, नहीं थिये पाणी, ताँ थिये गुरू न्यारे।
नहीं थिये चंदर, नहीं थिये सूरज, ताँ थिये गुरू न्यारे।
नहीं थिये तारा, नहीं थिये भ्याणू, ताँ थिये गुरू न्यारे।
बुध ताँ गुआई मेरे गुनाजरू ने, गुगले री धूणी धुखाई।
गुगले री धूणी धुखाई गुरूए, से धूणी भसम कराई।
सेइओ धूणी गुरूए भसम कराई, अंगे मली-मली लाई।
अंगे मली-मली मलूणी कराई, तिस मलूणी री मूरत बणाई।
पढ़ी ताँ गुणी दिता जीवा दान, खड़ी होई मनसा देई।
बारह बरहे दी होई मनसा देई, ताँ नदी पर न्हाणा जांदी।
कपड़े उतारे देई करया स्नान, गुरूए दी भृष्टा लगाई।
नाज गुरूए दी भृष्टा लगाई, मनसा होई पैरा भारी।
इक माह गणदे दुआ होर होई जांदा, आया दसवाँ महीना।
पहली आसा दसवें महीने, मनसा जो लगी प्रसूता।
पहली पीड़ा देई अंग मरोड़े, दूजी पीड़ा छाती तरोड़े।
पहली आसा दसवें महीने, जनमया ब्रह्मट कयाला।
सद्दे बहु पंडत रास गणाई, ऐ बेटा अकै इसरा होला।
जनमे रा सूरा करमे रा पूरा, राज इस खटोरा नाहीं।
दूजी आसा दसवें महीने, जनमया बिसनू दुठाई।

हिमाचल की लोक-संस्कृति में रामायण

हिमाचल ही नहीं, पूरे भारतीय मानस में राम शब्द प्रत्येक मनुष्य की रग-रग में समाया है। लोकसंस्कृति में तो राम के बिना कुछ संभव ही नहीं। दुःख में, सुख में, राम का साथ साए की तरह बना रहता है। यदि हम कण-कण में भगवान का वास मानते हैं तो मनुष्य के रोम-रोम में राम है। हिमाचल में भी काँगड़ा से किन्नौर, शिमला से सिरमौर, कुल्लू से भरमौर तक राम का वही महत्त्व है जो यहाँ की हवा का है, यहाँ के पानी का है।

'सिया राम मय सब जग जानी' की उक्ति इस प्रदेश में बिलकुल सटीक बैठती है। बेशक यहाँ हजारों की संख्या में देवी-देवता हों, लोक या ग्राम देवताओं में कितनी ही आस्था हो, राम सबमें समाए हैं। अंततः लोग राम का स्मरण करते हैं।

'हे राम' शब्द एक ऐसा शब्द है जिसका उच्चारण हर मनुष्य चलते, उठते-बैठते करता है। जो नहीं भी करता है, उसके मुँह से भी गाहे-बगाहे हे राम निकल जाता है। खुशी में, गमी में, हास में, परिहास में राम नाम का उच्चारण वैसे ही होता है, जैसे आदमी के मुँह में 'माँ' शब्द का उच्चारण स्वाभाविक और सहज रूप से होता है।

'राम' शब्द की महिमा का गान करते हुए हम संत तुलसीदास को नहीं भुला सकते। यह तुलसीदास का ही प्रताप है कि आज सब लोग राम-राम का जाप करते हैं। तुलसीदास ने अपनी शब्द-शक्ति के बल से पूरे भारत में राम नाम का प्रचार किया। 'रामायण' जैसी कृति देकर उन्होंने राम नाम की महिमा का गान तो किया ही, पूरे भारत में इसका ऐसा प्रचार किया कि यह शब्द जन-जन का मंत्र बन गया। पहले वाल्मीकि ऐसी विभूति थे जिन्होंने राम जैसे सशक्त पात्र का परिचय कराया और फिर तुलसीदास ही ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने राम को जन-जन तक पहुँचाया। इनमें तुलसीदास ने राम को लोक का नायक बना दिया और सभी जन राम-राम मंत्र का जाप करने लगे। हमारे प्रदेश में भी राम-कथा का गायन घर-घर होने लगा और सर्दियों की लंबी रातों में राम-कथा का गायन सुनने आसपास के लोग किसी एक घर में इकट्ठा हो जाते। राम नाम की महिमा ने कई लोगों को सहारा दिया और राम शब्द कइयों का संबल बना। पवित्र ग्रंथ रामचरित मानस घर में रखना एक धार्मिक और पवित्र कृत्य माना जाने लगा।

लोक में राम एक आदर्श पुरुष हैं। उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। एक आदर्श राजा और प्रजापालक होने के साथ-साथ, वे एक आदर्श पुत्र, पति, भाई हैं। रावण जैसे राक्षसों का नाश करने और साधारण जन के संबल राम एक आदर्श मित्र और दुर्बलों के बल हैं।

राम नाम की महिमा भी अपरंपार है। हर बोल में राम बोलने की एक प्रथा है। कभी एक-दूसरे से मिलने पर भी, 'राम-राम' या 'जै राम जी की' बोला जाता था। 'हे राम' जैसे शब्द तो अनायास ही मुँह से निकल जाते हैं। दुःख में, तकलीफ में, आश्चर्य में 'राम', 'हाय राम' नाम ही उच्चरित होता है।

ऊना के एक गीत में सब कुछ राममय होने का सुंदर वर्णन है। गीत में सीता कहती है :

हम बी राम तुम बी राम, चलते राम फिरते राम।
अंदर राम बाहर राम, चक्की राम चूल्हा राम।
राम सुआरे सब के काज, जप लै श्रीराम राम।

काँगड़ा के एक गीत में उल्लेख है :

'राम राम हृदयें बसेया, जीवन जन्म सुधारेया।'

यह भी कम आश्चर्य की बात नहीं है कि सदियों से हमारे लोक में रामलीला का मंचन हो रहा है। रामलीला में वही पात्र, वही घटनाएँ, वही प्रसंग, वही संवाद। बावजूद इसके हर वर्ष उसी तरह का मंचन बार-बार। यह राम-कथा के महत्त्व और लोगों में इसके प्रति अगाध विश्वास को दर्शाता है। कोई लोकनाटक, नौटंकी या अच्छे से अच्छा नाटक या फिल्म कोई व्यक्ति दूसरी बार नहीं देखना चाहता। बार-बार देखने का तो कोई औचित्य ही नहीं। अच्छी से अच्छी फिल्म भी कोई दो बार से अधिक नहीं देखता। किंतु यह बहुत ही हैरानी का विषय है कि वही राम कथा, वही पात्र, वही दृश्य, वही संवाद और लोग बार-बार देखते हैं। आज भी लोग रामलीला उसी चाव से देखते हैं चाहे वह व्यावसायिक कलाकारों द्वारा की जा रही हो, चाहे गाँव के लड़कों द्वारा। यह सदियों से हो रहा है जो राम तथा राम-कथा के प्रति हमारी आस्था को दर्शता है। नवरात्रों में देश और प्रदेश के कई भागों या यूँ कहें कि गाँव-गाँव में रामलीला का मंचन होता है और हर वर्ष उसी चाव से लोग देखते हैं। गाँव तो गाँव शहरों में भी उतनी ही संख्या में लोग आते हैं, बेशक टेलीविजन जैसे दैत्य ने सबको बाँध रखा है। रामलीला में बच्चे, जवान और बूढ़े सभी उत्सुक दर्शक बन जाते हैं, हालाँकि उसमें नया कुछ नहीं होता। अमीर, गरीब, शिक्षित, अशिक्षित सब एक समान और एक जगह बैठकर रामलीला का आनंद लेते हैं। यही

इस कथा की महानता है और महत्त्व है।

राम-कथा के महत्त्व का अनूठा उदाहरण पिछले दिनों देखने को मिला जब रामानंद सागर द्वारा रामायण सीरियल का निर्माण किया गया। पहले ऐसा लगता था कि राम-कथा, जो इतनी बार कही और सुनी गई है, जिसका मंचन हर वर्ष हर जगह होता है, टेलीविजन पर क्या कामयाब होगी। किंतु इस सीरियल ने अच्छे से अच्छे सीरियलों के रिकॉर्ड तोड़ दिए और अद्भुत सफलता प्राप्त की। इसके पात्रों की पूजा होने लगी। जब यह सीरियल चला हुआ था तो आलम यह था कि लंबे रूट की बसों ने अपने स्टॉप ऐसी जगह बनाए जहाँ सभी सवारियाँ रामायण देख सकें। गाँव में उस समय इतने टेलीविजन नहीं थे, तो सभी एक घर में इकट्ठा हो जाते, जहाँ टेलीविजन होता। बहुतों ने उस समय टेलीविजन केवल इसलिए खरीदे कि रामायण देख सकें। रामायण की सफलता को देख उसके बाद भी कई रामायण सीरियल बनाए गए या रामायण के कई प्रतिरूप, वीर हनुमान, रावण आदि सीरियल बने और सफल हुए।

हिमाचल प्रदेश में रामायण या राम-कथा की कई विशेषताएँ रही हैं। इनमें प्रमुख यह है कि यहाँ राम का मानवीकरण किया गया है। राम या किसी भी अन्य दैवी शक्ति को एक साधारण मानव या यूँ कहें अपनी तरह देखने का एक प्रबल भाव यहाँ के लोक-मानस में रहा है। शिव को गद्दी लोग अपनी तरह मूँछों वाला बनाते हैं। उनका शिव या धूडू पहाड़ी दर पहाड़ी भागता फिरता है और गौराँ उसे नालों में ढूँढ़ती है :

'रिढ़ियाँ ताँ रिढ़ियाँ धूडू नचंदा, नाले तो खोहले गौराँ तोपंदी।'

इसी तरह उनके राम और लक्ष्मण चौसर खेलते हैं तो सिया कसीदा काढ़ती है :

'राम ते लछमण चौसर खेलंदे, सिया राणी कढंदी कसीदा हो।'

यहाँ राम न तो भगवान हैं और न ही राजपुत्र, वे साधारण मानव हैं और उसी तरह रहते हैं जैसे स्वयं गद्दी लोग रहते हैं। वही पहनते हैं, वही खाते-पीते हैं। राम को ऐसा अपनी तरह मानव समझने का भाव पूरे प्रदेश में पाया जाता है।

दूसरी प्रमुख विशेषता यह है कि महाभारत हो चाहे रामायण, लोक में उसका गायन, घटनाओं का वर्णन अपने ढंग से किया गया है। यह आवश्यक नहीं है कि जो रामायण में घटनाक्रम का वर्णन है, उसका ज्यों का त्यों वर्णन लोक में भी किया जाए। कथा में अपने पात्र भी हैं। इसी तरह राम-कथाओं में अंतर भी पाया जाता है। किन्नौर में प्रचलित एक लोकगीत में भरत को बड़ा भाई बताया गया है और यह भी कि भरत को राजा बनने के योग्य न होने पर उसे राजा नहीं बनाया गया।

कैकेयी का चरित्र भी बुरा नहीं बताया गया। कैकेयी पर दबाव डालने वाली औरत का नाम फाफा कुटोन है। किन्नौर में राम-कथा का श्रवण श्रद्धा से धूप-दीप आदि जलाकर करने के निर्देश दिए गए हैं। कुल्लू में कैकेयी राक्षसों की धियाण अर्थात् वंशज या बेटी है। काँगड़ा, चंबा में राम-कथा को 'रमैणी' कहा जाता है। इस लोकगीत में बचपन में राम गाँव में मुंडुओं अर्थात् लड़कों के साथ खिन्नू अर्थात् गेंद खेलने लगते हैं। वे गेंद को इतनी जोर से मारते हैं कि गेंद कुएँ में जा गिरती है। गेंद का स्वामी राम पर बहुत गुस्सा करता है। राम ने चमत्कार दिखाया। कुएँ से एक बिल्व का पेड़ उगा जिसकी हर शाख पर गेंदें लटकी थीं। सभी बच्चों ने एक-एक गेंद ली और मजे से खेलने लगे।

निरमंड की ओर राम-कथा में यह उल्लेख आता है कि कैकेयी ने जब भरत को राज्य और राम को बनवास माँगा तो एक शर्त रखी कि वह सोने की एक गेंद आकाश की ओर फेंकेगी। जितनी देर में गेंद वापस आएगी, दशरथ उतने समय में अपना निर्णय कागज पर लिख दें, वह उसे मान जाएगी। कैकेयी ने गेंद उछाली और उसकी बहन कोकई ने पकड़ ली और नीचे ही नहीं आने दी। राजा दशरथ ने कागज पर राम को बनवास और भरत को राजपाट लिख दिया और मुख्य द्वार पर टाँग दिया। राम-लक्ष्मण ने द्वार पर यह लिखा हुआ पढ़ा और निर्णय लिया कि अब इस नगरी में अन्न खाना हमारे लिए घोर पाप है। इसी तरह का प्रसंग काँगड़ा में भी मिलता है। गीत में वर्णन है कि राजा दशरथ राम को बनवास की बात बता नहीं पाए और उन्होंने यह आदेश एक कागज पर लिखा और प्रवेशद्वार पर चिपका दिया। राम खेलने के बाद घर आए तो यह आदेश द्वार पर लिखा हुआ पढ़ा। इसे पढ़ते ही वे ख़ुशी से वन जाने को तैयार हो गए।

लाहौल में 'घुरे' गीत में राम-लक्ष्मण को 'सोदुरू' अर्थात् सगे भाई माना गया है : 'ए रामा ए लछूमाणा दुये सौदुरे भाये। ए राणी ए सीता बरूँ ए मँगाये।' सीता-हरण प्रसंग में राम मायावी हिरण को मारने में सफल हो जाते हैं। कौवा उन्हें हिरण की खाल खींचने की विधि बताता है। राम उस विधि से हिरण की खाल निकाल लेते हैं और सोने के सींग भी निकाल लेते हैं ताकि सीता को दे सकें। हिरण को मारने और खाल निकालने का यह एक लंबा प्रसंग है जिसमें रावण का साधु-वेश में डमरू बजाकर भिक्षा माँगने और अपनी जटा में बाग का फूल लगवाने की कथा है। काँगड़ा में भी राम को खाल उतारने में कठिनाई आती है। राम समझ से काम लेकर जहाँ खाल उतारते हैं, वहाँ कील लगाते जाते हैं। सिरमौर में प्रचलित गीत के अनुसार जब राम वापस कुटिया में आते हैं तो सीता को वहाँ न पाकर अपने भाई लक्ष्मण पर संदेह करते हैं। लक्ष्मण शाम को खाना पकाने के लिए आग जलाने लगते हैं

तो चूल्हे में केवल एक लकड़ी लगाकर ही फूँक मार जलाने का प्रयास करते हैं। राम इस प्रयास को व्यर्थ बताते हैं तो लक्ष्मण कहते हैं कि जिस तरह एक लकड़ी से आग नहीं जल सकती, उसी तरह एक अकेला भाई भी कुछ नहीं कर सकता।

इस तरह अनेक प्रसंग हैं जो राम-कथा में अपने ढंग से बखाने गए हैं और उनमें लोक में व्याप्त देश-काल को ध्यान में रख गया है। राम तथा अन्य पात्र अयोध्या के नहीं, बल्कि उसी क्षेत्र के लगते हैं जहाँ कथा का गायन किया जा रहा है। उनकी वेशभूषा, हाव-भाव, रहन-सहन, बोलचाल तथा क्रियाकलाप सब उसी क्षेत्र के होते हैं।

राम या राम-कथा की एक अन्य विशेषता यह है कि लोकगीत या लोककथा किसी भी देवता की हो, उसमें अंत में 'राम' अवश्य आता है। सभी संस्कार गीतों में बार-बार राम का उच्चारण किया जाता है। और नहीं तो गीत के बोल का अंत राम से किया जाता है, यथा एक विवाह-गीत :

'चार चकूँटे फिरी आया, वर नजरी नी आयो राम
चार चकूँटे च साधु तपस्वी, बैठी धूणियाँ लगाइयाँ राम।'

यदि कृष्ण-गीत गाया जा रहा है तो उसका अंत भी 'राम' से किया जाता है :

संझाँ जे होईयाँ संझैला जे होईयाँ, कृष्ण घरे नहीं आया राम।'

या एक पंक्ति के साथ 'श्याम' लगाया जाता है तो दूसरी के साथ 'राम'।

प्रदेश में राम-कथा के कई रूपांतर प्रचलित हैं। 'हरि अनंत हरि-कथा अनंता' उक्ति यहाँ साकार रूप में देखने को मिलती है। जहाँ बालक के जन्म से संबंधित अधिकांश गीत कृष्ण से जुड़े हैं, वहाँ किन्हीं गीतों में राम का भी उल्लेख मिलता है। बिलासपुर का एक लोकगीत देखिए :

'चैत्र महीने वानणियाँ रातीं, अवधपुरी जन्मेया राम जी
काहे का तेरा पीहड़ा पलंघूड़ा, काहे री तेरी बणी ओ कटोरी
काहे की गुड़ सत्त घोली, मेरे राम जी... चैत्र महीने... ।'

कई लोकगीत, कई लोकगाथाएँ यहाँ प्रचलित हैं जो राम-कथा को प्रदर्शित करती हैं। रामचरित मानस के अतिरिक्त इन कथाओं में राम-कथा अपने-अपने ढंग से बखानी गई है।

हिमाचल प्रदेश में यूँ तो शिव-शक्ति का प्राधान्य है। आदि देव शिव कैलासवासी हैं। एक ओर तो भरमौर में कैलास है तो दूसरी ओर किन्नौर में। उधर काँगड़ा, बिलासपुर, ऊना में प्रसिद्ध शक्तिपीठ हैं। इस सबके बावजूद राम-पूजा का भी कम महत्त्व नहीं है। राम को लक्ष्मी-नारायण के रूप में भी पूजा जाता है। चंबा का लक्ष्मी नारायण मंदिर प्रसिद्ध है।

राम-पूजा के मंडी तथा कुल्लू दो जीवंत उदाहरण है। कुल्लू में राजा जगत सिंह (1637-1662) के समय देव शिरोमणि रघुनाथ जी का आगमन हुआ। इससे पूर्व शैव संप्रदाय के नाथ ही राजाओं के गुरु थे। राजा जगत के समय रघुनाथ जी की मूर्ति अयोध्या से लाई गई। राजा छड़ीबरदार बना और राज्य रघुनाथ जी को सौंपा। प्रसिद्ध कुल्लू दशहरे के साथ-साथ जल-विहार, वन-विहार, वसंत पंचमी व होली के त्योहार मनाए जाने लगे। होली यद्यपि श्रीकृष्ण से संबंधित है, कुल्लू में होली पर भी रघुनाथ के गीत गाए जाते हैं। यहाँ 'रघुनंदन के संग होरी' मनाई जाती है।

इसी तरह लगभग एक ही समय में राजा सूरज सेन के समय (1637) मंडी में भी 'माधोराव' की मान्यता हुई; इससे पूर्व राजा शैव थे और शिवरात्रि का उत्सव मनाया जाता था। कहा जाता है कि राजा सूरज सेन के अठारह पुत्र हुए जिनमें कोई जीवित नहीं बचा। राजा ने उत्तराधिकारी के रूप में माधोराव की प्रतिमा बनाई और कुल्लू की भाँति राज्य उसे सौंप दिया। राज्य के देवता कुल्लू की भाँति शिवरात्रि उत्सव में पहले माधोराव के पास हाजिरी देने लगे। यह प्रतिमा स्वर्णकार भीमा द्वारा इस पर खुदे लेख के अनुसार वि. 1765 की मानी जाती है। इस तरह इन दोनों राज्यों में रघुनाथ से संबंधित पर्व मनाए जाते रहे।

उधर चंबा के राजा भी शैव थे। भरमौर का शिव मंदिर और चौरासी सिद्धों की कथा इसका प्रमाण है। राजा साहिल वर्मन (920-940) द्वारा राजधानी भरमौर या ब्रह्मपुर से बदलकर चंबा में स्थापित की गई। गजेटियर में उल्लेख है कि राजा ने अपने पुत्रों को विष्णु-प्रतिमा बनाने के लिए विंध्याचल भेजा। उन्हें लुटेरों ने मार दिया। अंत में युगाकर वर्मन संन्यासियों की सहायता से लुटेरों को मार संगमरमर लाने में सफल हुआ और राजा साहिल वर्मन ने विष्णु-प्रतिमा बनवाकर लक्ष्मी-नारायण मंदिर बनवाया। यहाँ मिंजर महोत्सव मनाया जाने लगा जिसमें रघुनाथ जी की प्रतिमा पालकी में रखकर शोभायात्रा निकाली जाती है।

इस प्रकार हिमाचल प्रदेश में ऐतिहासिक और लोक दोनों ही प्रकार से राम तथा राम-कथा का महत्त्व है। लोक-मानस में राम उसी तरह समाए हैं जैसे उनके जीवन और जीवन-पद्धति का अभिन्न अंग हों।

प्रदेश के विभिन्न अंचलों में राम-कथा अपने-अपने ढंग से गाई जाती है। उनके पात्र अपने ढंग के हैं। यहाँ राम-गाथा में 'सीता-हरण' के अंश विभिन्न अंचलों से प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

सीता-हरण

बिलासपुरी

राम ते लछमण चले बन में, सीता को छोड़ महलों में।
मँगदा जे मँगदा जोगी जे आया, जोगी ने अलख जगाया।
उच्चे महलाँ ते गोली जे उतरे, मोतिएँ थाल लई खड़ी।
तेरेआँ हथाँ री गोली भिछया न लेओआँ, सीता देओएं ताँ लेओआँ।
महलाँ ते सीता जे निकली बाहर, चानण चौकी ढलाइ।
चौकिआ सीता ने पैर जे धरया, बाँह मरोड़ी रावण ले गया।

कंढे किस्ती तिआर खड़ी सीता को पार लगाने को।
रावण सीता को ले गया, लंका का नास कराने को।
हणुमान जोधा तिआर करो सीता की खबर लाने को।
कंढे किस्ती तिआर खड़ी सीता को पार लगाने को।

चंबयाली

दस रावण चोरी जो आया हो,
तिनी ज़ोगी रा भेस बणाया हो।
राजे इक दंत साथी लियोरा हो,
तिनी दंते रा हरण बणाया हो।
सेइयो सीता रे अग्गे जो आया हो।

मंडयाली

फुलवाड़ी वालीए सीता बोल कीर फकीर जो···
कुटिया देखी तेरे बाल आया।
भोजन दे दे माता।
जाँ मैं जांगलाँ दे बिच आया
भोजन जो तरसाया।

भोजन देई दे मेरी माता।
जाँ जांगलाँ दे बिच आया
कुटिया देखी तरसाया।
जाँ जांगलाँ बिच आया नंगा तरसाया,
कपड़ा देई दे ओ माता।
जाँ मैं जांगलाँ बिच आया, प्यासा तरसाया
पाणी देई दे मेरी माता।
पाणी पिलाइदे भोजन खलादे,
कीर फकीर नो
माता तेरी कुटिया देखी तरसाया।

काँगड़ी

पत्थर गिट्टा जोड़ी वो रामे कुटिया बणायी,
चनणे दी लकड़ी लगाई वो रामा ऐ।
कुटिये दें कंढें-कंढें रामे बाग लुआए,
फुल्लाँ दे लगाए बगीचे वो मेरे रामा ऐ।
इक दिन क्या हुंदा महाराज!
इक दिन राम ते लच्छमण चौपड़ बाजी खेलदे,
सीता-राणी कढ़दी कसीदा मेरे रामा ऐ।
चौपड़ी बाजी खेलदेंआँ जो लगियाँ प्यासाँ,
कुण वो पियाए ठंडा नीर मेरे रामा ऐ।
न वो घर जोरू न वो घरें गोली,
कुण वो पियाए ठंडा पाणी मेरे रामा ऐ।
सीता जो दित्ति रामा सुणौटी, किआँ करी बैठी रैहंदी मेरे रामा,
पत्थ दी सुहागी उमरा दा साथी, इदीं ताँईं बण आई मेरे रामा।
ठुमकुँऐं-ठुमकुँऐं चली वो मेरे रामा,
जाई रही ऐ डुगड़ेयाँ नौणा मेरे रामा।
भरिया घड़ोलु डंगी पर धरया
हत्थ-मुँह धोणा लगी मेरे रामा ए।
हत्थ-मुँह धोई सीता हटी जे पच्छेड़ें,
बिंदला पिया डुग्गे नौणा मेरे रामा।
जली-बली जायाँ ओ रामा डुगड़ेया नौणा।

तुद मेरा रूप छुपाया मेरे रामा।
झिकले मैं देसे दे डोब्बे मँगनियाँ,
बिंदले दी तोप कराणी मेरे रामा ए।
झिकले देसे दे डोब्बे मँगाए न,
बिंदले दी तोप कराई है मेरे रामा।
खोह्ड़ी ने कपड़े डोब्बे पाणिए च उतरे,
बिंदला सैह तारिया आई रिहा मेरे रामा।
हत्थे कने चुकया सीता मत्थे कने लाया,
चली आई है ठुमकुएँ चाल्ली मेरे रामा।
औंदी औंदी सीता बागाँ च आई,
बागें सैह मिरगा आई रिहा मेरे रामा।

महासूवी

जूणजा लाऔला साधटा मेरे दाहिनी गूँठी हाथौ बै
तेरी लागू साखौरी आँव बौह्निौ री बूबी बै
कैंही डेवुए थै तेरै रामणै मिरगौ रै हेड़ै राणियै
संगी चालै लांकै खि न्हींऊ आपणै ताँ बेड़ै राणियै
बौचणौ बौणो रै मिरगौ, भौलै राजै खि बोले देणै म्हारै
बुगचा जेआ थागियौ सातौ नींआ समुद्रौ पारौ
रीखा बोलू बौणे रै मिरगा, मिरगौ माँजी तू वजनीये बौड़ा
धोबी रै जोबै पूजौ लै टीकरै रामौ री जाए कचहरी दा खौड़ा
बोले बचणौ बौणे रै मिरगा, भोलै भीलै आहों जाणदा नी सारौ
फाफरा जेआ हुंदा था माँडणा पूरी माँडू आओं मिणियौ खि खारौ
उगरूवै सुगरूवै बौदरी कदारौ, जसरौथै भागरैथे बिशणू सागरौ
तीन्हौ रै घौरै तुम्है निकलै पुरखौ त्हारै नी जागुवि पौशड़ी दी नारौ।

रामै लाई भाइयौ कौशियौ, पूचौ रीखौ रै मूहै
रीखा बोलू बौणौ रे मिरगा, फाफरा मेरियौ माँडौ लै तहै
हारि कोई दो झांगिलै-काटिलै, हैरौ लै मेरेयौ रेकै री आली
पुनो री लागौ ली जुहणौ, जबै, धारौ लाई ली धारूए टैली
रीख कुण लाओ बौचणौ बौणदो, का हौलो बौचणा जाणै
लौजिया रामा हमौ असौ औरजा, तुम्है नी जाणदै पाथरौ पढ़ाणे
शाहिया बोलू बौणौ रै मिरगा, तौयें दीता बौड़ा विश्वाशौ

नौदी दो हुऔ लो जबै निमलो पाणी सभी खी कौरूला बढ़िया देशौ
मौहतै नही जाणदा रामा साहबा सनू दी लागदी नही नशाणी
सीया न्हीं थी रामौ धौणी री, सौभी रै म्हारै लांका एबै दौहणी
शाही धौनी रा विश्वासीया, रामौ से फेरदै फीरौ
बोलौ शुणियौ बौणौ रै मिरगौ, तुम्हौ कीया गाशुआ रामै बजीरा
शाहीयै बोलो, 'बोणौ रै रीखड़ा पोरा दादिया भाजैला मूँदा
बचणौ बोलूला रामौ खै सभी रा, सारी कौरूला लांकैरी फौजौ ऊँधी
शाही न्हौरै चैंही रामौ रै विश्वासीयै, बांदरौ न्हौरै चैंही निमलै मूहै
जोधौ भारतो लागेगो लाँकै रो, पारै कैने जीतौ लै तूहै
सुखौ तो कौरनौ रामा सुखीयै, दुखी खि पौड़ौ गौंपणै दुखो
जौणौ मेरी मैतानी रा चोड़ौ तो खटड़ू नाजौ नहीं थी पाणी री भूखौ
भूषौ लागा फींचू लाँदा शौ दी चूड़ी शीमौ री जेरौ
सीयै री तोंई शीर कराव तू भौदरौ, रामौ री तौई जाँदि काटनी केरौ
औरजा शणी बै रामा प्रभुआ कैई नहीं हुओ तेरी सीयै रो दुखौ
टेलरू देखौ तौ मेरै कोल्हौ दे, आधा आधा गूला नाजौ रा टुकौ।

कुल्लूवी

मिरग नी होला मेरीए सीते,
छली सा ए लंका रा रावण सीते।

लछमणा तौबे बोला सा हाँऊ कुलछणा
रामा-बे पोई मुसीबत,
तू बेठादा भावी रे लाले। (लालच में)
राम गया था हेड़ा बें,
सो पुहता ढौग-ढँगाले।
तेरे तीर कमान कीझी बे हुए
हाँऊ सा पाए पीर निहासे।

कार लाँगी सीता भूल कर,
जो लछमण खींची रेख।
झट उठाई रावणा गोदी न, छोड़ जोगी रा भेख।

लाहुली : पट्टन घाटी

सोना शींगा हराणी, नवा लक्खे बागे।
सीते रे नदुरे, नवा लक्खे बागे।
सोना शींगा हराणी बागा पे-चाये। (पे छोय)

पेटो पेटो रामा, तेन दुन्ने बागे।
सोना शींगा हराणी, वागा पे-चाये।
रामा ओ बीरा, बाणा सू मुरी।

सू मूला बूटी, ऊ मूला कीती। (बैठी)
ऊ-मूला बूटी, सू-मूला कीती। (बैठी)
ना तोड़ी डाली, ना तोड़ी पाचा।
कँगूरा तोड़ी तोड़ी, खाए नी बाड़ी।

रामा ओ बीरा, बाणा सु मुरी।
आगे आगे दौड़ी, सोना शींगा हराणी।
तेता पीछे दौड़ी, रामा ओ बीरा।

कुंती-नंती

मौने सूँचा देऊ बिशणू नरैणा
'कौरू पांडुवे तै भाणजू मेरे।
जैंणे कामा तौमैं सा तैणे बीना हेरे।
नंती कुंती आ ती बैहाणी मेरी।'
नाई गेओ देऊ हरि माताड़ोगे
शाठे कोरूँ उजुए जाड़ाई।
सारे भाई बीरा उजुए जाड़ाई,
आपणे मामू तै ढाला कौरा ढीला।
हाथा जोड़िया तै कौरा नरयाई।
'बागिरू पाथरू तू मामू किदा आओ?
सूतै लोड़ी मामा पैआरू तेरे।'
बैंणा बोला देऊ बिशणू नरैणा
'राजी लोड़ी तौमें बैहँणा भाणजू मेरे
जैंणे कामा तौमें तैणे बी ना हेरे।'
भीमा सैणा कौरा सूतीआरा ढाला।
बैंणा बोला देऊ बिशणू नरैणा
'चोड़ू भीमा इना जोरा की तेरी,
थोड़ो भीमा तोंदी मदना न लागो।'
चालदौ हूआ देऊ बिशणू नरैणा।
हाथ जोड़िया तै कौरा नरयाई।
'बेशागो मामुआ तू खाई नाँए रसोई।'
बैणा बोला देऊ बिशणू नरैणा
'ऐंड़ी रसोई मेरे भाणिजू ना खाऊ।
आपणे हाथे भीमा धेरिमा देआ।'
'हुऐ मामुआ जो धोरिमा मेरे,
तेरे मामुआ गौ कैआ गोलो घाटौ!'

'मूँता लोड़ी भीमा, साई देवे बूटी।'
चालदो हुआ देऊ बिशणू नरैणा,
नाई गैओ देऊ बिशणू नरैणा।
नाई गैओ देऊ कौंरूए बाड़ै,
ठारा टीकै कौंरू उजुए जाड़ाई।
आपणे मामुए जै पैआरू पौहणा,
हाथा जोड़िया सौ जै कौरा।
'बागिरू पाथरू मामू किदा आओ?
सूतै लोड़ी मामा पैआरू तेरे।
राजी लोड़ी तौंमें बैंहणा भाणजू मेरे,
जैंणे कामै तौंमें तैंणे बी ना हेरे।'
बैणा बोला तैबे ठारा टीके कौंरू
खाए मामुआ एऊ भीमा न लूँगा।
चालदौ हुओ देऊ बिशणू नरैणा।
आई गेओ देऊ पांडवी ए बाड़ै।
बैणाँ बोला सौ अरजण भीमा
'बोल गो मामुआ कैआ गोलो घाटौ।'
'मूँता लोड़ी भीमा साईदेवे बूटी।'
चालदौ हुआ देऊ बिशणू नरैणा।
बातै मैड़ी तेऊए दशुआ री दाई।
बैणा बोला देऊ बिशणू नरैणा।
'किदरा आई मेरिए किदरा लै चाली?'
'उत्तर आई बाता पछिमा लै चाली।'
बैणा बोला सौ दशुआ री दाई
'मूँआ ता चाली देवा कौंरूए बाड़ै।'
'कौंरूए बाड़ै बी ना शाग कड़छी टापा',
तू ता नाए मेरिए पांडवे बाड़ै।
पांडवे बाड़े होआ बाकरे धिआड़ी।
आई गई सौ पांडवीए बाड़ै।
ओरी बेरा भीमा दोतीए उजिया,
तेऊ धियाड़ा तौऊ सूतो सताणा।

बैणा बोला सौ राणी पंजाई–
'तौले भीमा आज दौशा के आई?'
बैणा बोला सौ हरि सैण भीमा–
'मुखा बोटि ए सूपानों धीओ।'
धोओ सूपानों कौरे बोखाना
'शाड़ैणे धीआ छोआ मासा बेटी,
बाले बूँगीरा बाजी बोले दाँदै।
सौए बेटाणी सामे सामे बोला,
बोला याँणदा आऊँ या स्याँणदा?'
बौगे बोला सौ राणी पंजाई
'तैले बोली तू याँणदा आई।
याँणदा आए तू ध्याड़ै पामें गोंपी,
आई स्याँणदा गै गोंपिआ न म्हारे।'
नोंती कुंती शाग चुंगदी नाई।
बैणा बोला सौ हरि कुंता माई
'चाल गै बैंहणिए शागा चुंगदे नाणों,
दूंणू भोगुआ शागा आमें लैई।'
चाली गैई सौ शागा चुगदी लागी।
बैणा बोला सौ हे नोंती चेई–
'चालगै दाइए गो शागा गैओ हूई।'
बैणा बोला सौ हरि कुंता माई
'मेरे बैंहणिए शागा बिना हुऔ।
जेतरे खा तेरे शाठाँ शवीणा,
तेतरो खा मेरे एके बोड़िया भीमा।'
'तेता गाहै तै देउई गाडा,
पोरू जोड़ी तेउए बोलदे ढाडा।'
बोलू-बोलू गाह उजुई लड़ाई।
बैणा बोला सौ हरि कुंता माई
'मेरे भीमा लै तैं गाई कीलै दीणी।'
नंती कुंती ए उजुई लड़ाई।
छाबडू झाबडुए हुई लड़ाई,

कुंती नोंतिए उजुए लड़ाई।
नंती चेईए काना थोसो काना,
कुंता माइए गोड़ा थोसो गोड़ा।
ओरी बेरा मारा कुंती तेआ नोंती,
तेऊ ध्याड़े मारी नोंतिए कुंती।
जोपदी चोड़दी सौ घौरा लै आई,
भीमा सैणा आओ हेड़ै आँणा हेड़ौ,
तेऊ ध्याड़ै तेऊ के हेड़ौ बिना लागो।
बैणा बोला सौ हरि सैणा भीमा
'उज माउड़िए आगी बिना बाड़ी
तेरे माउड़िए शोगा कौरो आजा?'
बैणा बोला सौ हरि कुंता माई
'मेरे होआ नंतिओ शोगा।
खूड़े धोंका भीमा मेरी कुकाटी खाई,
मांजकी धोंका मेरे लछुवा बरेड़ी।
धसुए धोंका मेरे बुड़आड़ी माई।
जुरा मुरिए स रैंणा भियाई।
छाडुओ बिडुबे बोडिवारो भीमा,
कानो तैंई तेउए गोदिमा पाई।
काछा पाडे पावों दाँतुओ कटारो।
बैण बोला सौ हरि कुंता माई
'भूखे भीमा गौ भूखो ना जाई,
कौंरूए बाड़ा लै तू माँता नाए खाई।'
बणा बोला सौ हरि सैण भीमा
शागे शाड़ सारी खाणी मेरे,
शागे शाड़ी स तीनै कै मारी?
नाई गैओ भीमा कौंरूए बाड़े।
पाटा चौउरी का हाका मारा हाका—
बिड़गै निखुओ सौ दारजोधना।
'भाईया भीमा तू बोलणी कै बोले?'
'थारी राँडिए गो मेरी माउड़ी मारी।'

तेथा गाए गो बोला दारजोधना
'बुरूऔ बैणा भाइया भीमा न बोली,
तेरी बी माउड़ी म्हारी बी माउड़ी।
छेउड़ी छोटुए जाँणे बी लागे?'
बेणा बोला सौ हरि सैण भीमा
'शागे शाड़ी गौ हरि खाँणी दीणी।
एथे भाइयो जूए पाणें पासे,
शागे शाड़ी गो म्हारी कै त्हारी।'

सरबण गाथा

माघ मास में नाथ या जोगी लोग घर-घर जाकर श्रवण कुमार की गाथा सुनाते हैं। सारंगी, डमरू, ढोलक, थाली, घंटी जैसे वाद्यों के साथ सरबण की हृदयग्राही गाथा सुनाई जाती है। अब प्रायः ढोलक और घंटी या केवल घंटी के साथ गाथा का गायन चलता है। यह गाथा काँगड़ा, हमीरपुर, मंडी आदि क्षेत्रों में कुछ भाषायी रूपांतर के साथ प्रचलित है।

'हर गंगे हर बासदेवा, नमो नारायणा राम राम' के साथ आरंभ होकर काँगड़ा क्षेत्र में राजा दशरथ इस तरह प्रकट होते हैं :

'पाणी पियो अम्मा, पाणी पियो बापू।'

सरबण के अंधे माँ-बाप शंका करते हैं :

'धमक धमक तेरे बजदे पैर
तू है कोई जम कोई भूत
तू नहीं म्हारा सरबण पूत।'

यहाँ मंडी क्षेत्र की गाथा प्रस्तुत है :

जागो-चेतो धरमीयो, नींद न करो प्यारी
जैसा सुपणा रैण दा, ऐसे भई संसारी
माता तीरथ, पिता तीरथ, तीरथ भाई दस बंध भाई
बचने बचने गुरू तीरथ, कुंजी रहे गुरू रे हाथा ई,
हेओड़ेया मन लोभीया, कीतना खट्या पाया
एक धरम मैं खट्या, कीता लँगड़ा पार
अंधा अँछली झूले कदार, धरतरी माता से माँगे उधार
पौण-पाणी से माँगे उधार, धौले बैल से माँगे उधार,
गती-सती से माँगे उधार, वासकी नाग से माँगे उधार,
सभी देवियों से माँगे उधार, सभी देवताओं से माँगे उधार
सोना नहीं पजे हल बाईके, मोती न लगदे डाला,
करम न मिलदे माँगके, पुत्र न मिलदे उधारा,

मिलता नहीं कोई जुलता सोता, अंधे रिखी दे घर दे दिया पुता,
एकी माई को अंचल नीर, दुजे माई को पनपा खीर,
तीजे माई को डोलदे कान, चौथे माई को बुझया माए,
पाँचवे माई को पांज अँगलियाँ, छठे माई को नहशा केशा,
सातवें माई को रक्त का बिंदा, आठवें माई को सरबण पींड़ा,
नौवें माई को लागे हुंकार, दसवें माई को हुआ सरबण कुमार,
पढ़ीए-गुणीए वेदा चारी, ब्याही के लाई थी सांबली नारी,
अगे बखा देखया सौरा भी अंधा, पीछे बख देखया सास भी अंधी,
सुन-सुन कंता मेरे बोल, कर दे पूरा तराकड़ा दा तोल,
अंधी सासा वन में छोड़, अंधे सौरे कुएँ में डोल,
हट-हट नकरमीये, तेरा मुख कभी न देखिए,
जे पर छोड़ू अंधी माया, हुई जांग सरबण धौली काया,
जे पर छोड़ूँ अंधे बापू, श्रीकृष्ण भगवाने देणा सरापु,
लेगर सासे आपणा बांदा, सास निकली दड़दड़ाई, के गुणा कीता मेरीये धीये,
तेरीये धीये कहे मंदे बोल, मात-पिता का न रखया तोल,
सुण-सुण मात-पिता मेरे बोल, करीदिता तराकड़ दा पूरा तोल,
सरबण बेटे बुद्ध कमाई, आगे किता बापू पीछे कीती माई, चला गया गंग केदार नूँ,
बारह बरस की उजड़ भई, पजदा अन्न न बगदा पाणी,
सुन-सुन बेटा सरबणा, इसे मधुवन में प्यास लगी,
एक, दो, तीन, चार पांज बण ढूँढे पाणी न मिले माई न बाप,
जिस बण में बेटा दाड़-दडुके, उस बण में पाणी कभी न सुक्के,
जिस बण में कोई सेंऊरी डाली, उस बण में बेटा पाणीयो की नाली,
जिस बण में बेटा गरडा बोल, उस बण में कभी अंत न तोल,
काजली-बिजली बणे तालाब, धोते कंगन धोते पाँव,
डोल-डालके भरया नीर, दशरथ सरबण को मारया तीर,
मैं नी बुझया सक्का भाणजा, मैं बुझया नहारेया चोर,
पीठी लया सका भाणजा, हाथा लया पाणी दा लोटा,
पाणी पीओ अम्मा, पाणी पीओ बापू,
तू नहीं है बेटा सरबण राओ, तू तो है दशखत्री राओ,
सक्का मारया भाणजा, बहुता-बहुती होया अन्यायो,
जींऊदा है बेटा अणी मिलाओ, मुड़दा है तो दाग दगाओ,
चानण डाल टुकाया, दाएँ हाथे चीखा देणी, बाएँ हाथे देणे दाग।

राजा रसालू

ओ जली-जली जावे राजा तेरा देश, बाब भी ब्याहे,
बेटा बरते ओ जी।
ऐड़ेआँ जुल्मा नी बोला, मेरा बेटा चंदरीये जती जवान जी।
ताहें जे मेरे बेटे रा जत सत टूटणा
बगदे दरियावा लगणी आग जी।
होर ता धियाड़े जलांदी थी दीपकाँ
जा आज मैहलाँ पाया अँधेरा
मैहलें जौ हुंदा जमा त्रास धन्ने स्वामी
से मुलख केहड़ा था चंदरेओ हाड़्डियो
तित्ते मुलखा ते ऐहड़ा स्वामी बगाड़िये-बगाडेआ
चलेआँ चलेआँ म्हारे घरा जी
आसें खाणे देंघी खंड खोआ जी,
पहनणे जो देंगी लट्ठा खासा।
जे जनम भर भी करघी तेरी सेवा
म्हारे सात जमाने रे पाप मुकत जो
हूँगे—पर धन तू स्वामी।
ओ चक्का चक्का ता कुत्था ता आंदा
ऐहड़ा रूहला।
तुसें बगाड़ेआ ऐस घड़े रा पाणी।
तुहाड़े सिरा डबाँघी जूतियाँ रे नाल
चले ता जावो तीनों पणहैरिनाँ जी।
तुसें घरा जांदी ही—
सात जमाने लेंघी सेठाँ रे घरें तवार।
चले जायाँ चौथी पणिहारनी जे घरा भी।
जाँघी मरी-जे सात जमाने लेंघी,
जूहड़े रे घरा तवार-ता सात जमाने

रहँगी सदा राण्ड–ता जाणघी,
जाया मिलेआँ था कोई रूहालाजी।

(हाडी)

ओ सभी दे जन्मा बणादा आया
स्वामिया आसाँ जो भी देयाँ खरा जेहा सराप।
ओ सुणेआ सुणेआँ बूढ़िये माता जी,
ऐ हीरा हिरण असाँ जो बगसणा जी।
खुऐ ते ऊपर आईरा एक स्वामी जी।
तेरे साताँ जन्मा रे पाप ताँ मुच्छत होंगे।
ओ केहड़ा देस था भाईया हाड़ियो।
तित्ते तें क्या बगाड़ेआ स्वामी।
आँसे ऐहड़े पूरे हुंदे–माता जी ता
माता बगसणा हीरा हिरण जी।
तेरे साताँ जमाने रेआँ पाप जाँघें
हूँगे पर धन पर माता
तूँ सेठों रे घरा हूँगी तवार कने
सदा करघी जी सुवाग।
हाथ जोड़ी माता अरजाँ करदी
मेरे ता जन्मा ता देयाँ जलणा।
म्हारे भी राजे रे भी जमी रा टीका।
जे तेस जो लगी रा घोड़े रा सिर
टिक्के बणाओ तेरे भला हो सात जमाने जी।
टीके रा सिर लगी रा घोड़े–
कौरू कौड़ु देस कमक्षया देवी जो लगीरा टीके रा सिर।
जायाँ ता जायाँ बुढ़िए माता जी–
मेरे भी हाँथे भी हुंगा माता जश-राजे रे।
हाथ हूंगे भाग खरे तू जल्दी ली आयाँ।
अपणे राजे रे टिक्के पर धन पर स्वामी।
बारह वर्षा ते लाज भी लगीरा।
बुड्ढी भी पुजदी कचहरीआ।
पीछे होवा विरनो सपाहिओ–

बूढ़िया भी जाणा अंदर जोदेओ आ।
बुढ्ढी भी लयांदी—ऐ ओ पाखंडी किधी जो।
भ्याली रे—ने बारहाँ वर्षा पाठ करदे आँ
पाठाँ करदे होई गए वर्ष बाराँ।
खुए जे ऊपर आइरा कोई स्वामी
जे सेही करघा तेरे टिक्के रा लाज।
बुढ्ढी भी नहांदी धोंदी सुखपाला जे पाई।
सारी कचहरिआ खुआँ पर जांदे आई।
पुजदे खूहाँ पर जाई,
मिंजो ताँ लगी री कालख।
टीके लगी रा घेड़े रा सिर जी।
मेरा जे हाथ पउवाँ राजे रजवाड़ेआँ जी।
पर धन तू स्वामी—एसे कालखी तूँ गँवाया जी।
ओ! पायाँ ता राजा चिटेआँ चादराँ रे।
चिट्टे चादराँ रे पड़दे मिंजो,
इन्हा पड़देआँ अंदर रखेआँ।
इन्हो पड़देआ भीतर मेरे हाथा पैरा भी अंदर
रखी भी देयाँ—ओ जी।
ओ सुणेआँ सुणेआँ कौरू देश कमख्या देवी जी।
माता मेरी लाज माता तेर जा हाथ।
तू पला दे बिच, माता दर्शनाँ जो आयाँ जी।
पर धन तू माता म्हारिए।
कौरू देश कमख्या दैवी सवारी पर भी,
जाई पहुँचदी ओ जी।
चौसर भी खेले-भाण खँडा भी लैया,
और सिर टेक्कैरा टिक्के जो भी लाया—
घोड़े रा सिर भी घोड़े जो भी
लाई वा ओ जी।
घबाड़ेआ ताँ घबाड़ेआँ राजा कमेरेआँ रें
पड़ देआँ—ओ जी।
राजा कैहँदा बैठा राज तेरा मेरे आँ
स्वामीआ—ओ जी।

खड़ा राज स्वामिआ मेरा जी—
तू हुक्म करघा से आसाँ जी।
राजा तू फलघा राजा तेरे टिके जो—
जो सात जमाने अटल रहँघा तेरे राजे रा राज जी,
एक हीराँ हरण बगसणा जी।

नैण भी लैई लए हाथें,
हाड़ी भी पहुँचदे घरा आपणे।
नैण राणिआओं नजरी आए।
गुरू गोरख भी आई उतरे
नौलखा चेले गुरू गोरख दे जांदे।
ओ इते खुआ एहड़ा जुल्म होया जी।
एँ लोटा जे जी महाराज—सवामीआ निकलदा
पर धन्न हो पर से स्वामी।
आले धागे री चौंकली दित्ती
तूँ गोरख नाथा रा भगत हा ता
निकली आओ जी।
छाबड़ी भी रक्खी थी गुरू गोरखनाथें,
जाँ हाथ लगी गए।
मित्र भी होई गए भगत भी होई गया
भिच्छेया रे उँघें जांदी।
भगती तेरी पूर्णा सुक्के बाण हरे होई जांदे
भगती तेरी पूर्णा डोरा बट्टी गले पाणा।
भगती तेरी पूर्णा ओ माता दे पास भिच्छेआ ओणा।

गाथा पूरन भगत

सुण ओ अच्छराँ अरजाँ, ओ सुणेआँ मनलाई मेरी
घरे राणिये औतर भी चलेआ म्हारे राज ओ जी।
गुरू रे डेरे जायाँ राणी गुरू ओ देघाँ वरदान असांजो।
जम्मी भी ता जाघाँ टीका, बसदा हूँगा म्हारा राज जी,
भागुएँ भी सिआई देयाँ राजा कपड़े,
मैं भी गुरू रे डेरे चली फल माँगी के लिआवँगी।
अरजाँ सुणेआँ गुरू आ मेरी हाथाँ जोड़ी
घरा नी जम्मे आ टिक्का न जम्मी देई।
औतर चले आ, मेरे सिआल कोटा रा राज
अरजाँ सुणेआँ राणी अच्छराँ,
बाराँ ता बरसाँ करेआँ गंगा स्नान—
हाथ पर नित लिआवें आँ,
गंगा जला रा लोटा।
गुरू रे डेरे दाखल करेआँ—
बारा साल पूरे होई गए ता,
गुरू एक फल तिज्जो बगसगा—
जिसते राज बसदा होई जाँगा।
अरजाँ मेरी सुण राणी अच्छराँ,
गोदी ता करेआँ आपणी, गुरू होई गए ठूँठमान।
तिज्जो एक फल वगसाँ हौं,
जिसते तेरा सिआल कोट वसदा होई जाहाँ,
आजा ते दसवें महीने तेरे टीका होणा।
नौ रखेआँ तेसरा पूर्ण भक्त जी,
घर वार नी करघा, रहँगा उमरा रा जोगी जी।

अरजाँ सुणेआँ राजा मेरेआ,
आज तेरे टिक्का पैदा होया आपणे बाहमणा सादी बुलायाँ।
एसरे धन भाग जे देखणे,
केहड़े नछत्रें टिक्का जाया।
सादी बुलाया कुलारे पंडता
केहड़े नछत्रे टिक्का जम्मेआ।
केहड़े हुंदे एसरे धन भाग,
अरजाँ ता सुब चौकीदारा मेरे आ।
ढाइयाँ घड़ियाँ मँझ लई जा,
पंडता रे घर ढाइयाँ घड़ियाँ घरा लई जा।
अरजाँ मेरी सुण राजा मेरे आ,
ढाइयाँ घड़ियाँ मँझ कुला रे पंडता बुलाई लैयाँ।

राजा गोपीचंद

सूरे दे बहाने गोपीचंदे कपला जो मारी
जी कपला जो मारी
हत्या लगी कुलें सारै राजा जी।
घरै जे आया गोपीचंद माता जो पुच्छदा जी
माता जो पुच्छदा
कियाँ जाँगी हत्या म्हारी माता जी?
कन्ना ता छेदी पुत्रा मुँदरा जे पायाँ
जी मुँदरा जे पायाँ
भगवाँ वस्त्र लायाँ बेटा जी
दखणे भी जायाँ पुत्रा पछमे भी जायाँ
जी पछमे भी जायाँ
माता दे बेहड़ै मत ओंदा बेटा जी।
पहले दो हँडगा वो माता, माता दे बेहड़े
जी माता बेहड़े
देओ माता मिंजो भिछिया माता जी।
दखणे भी जायाँ पुतरा पछमे भी जायाँ
जी पछेमे भी जायाँ
भैणा दे देसै न जायाँ बेटा जी।
दूजी ता अलख गोपीचंद भैंणी दे बेहड़ै
जी भैंणी दे बेहड़ै
देओ माई असां जो भिछिया, रामा जी
थाल ता भरी छोरी भिछिया लई आई
जी भिछिया लई आई
लियो जोगी तुसाँ भिछिया जी।
तेरी ता भिछिया छोरी असाँ नी लैणी
जी असाँ नी लैणी

राणी देवे ताँ लइये छोरी जो।
कही न सकाँ राणी बोली न सकाँ
जी बोली न सकाँ
इयाँ लगे भाई तुम्हारा राणी जी।
नक्के कटासाँ ओ छोरी, जीभा बढ़ासाँ
जी जीभा बढ़ाँसा
महलाँ ते बाहर नकालाँ छोरी जी।
थाल ता भरेया वो राणी मुंगेयाँ ता मोतियाँ
जी मुँगेया ता मोतिया
भिछिया देणा आई राजा जी।
पैरा बखी दिखदी राणी मुखे बखी दिखदी
भैंणा ता गई लटोई राजा जी।
तू ता था वो भाइया दिल्लिया दा राजा
वो दिल्लिया दा राजा
एह क्या भेस बणया राजा जी?
चनणा कटायाँ वो भाइयाँ चिखा रचायाँ
जी चिखा रचायाँ
अणदागिया ठाहरी दाग लायाँ राजा जी।

—काँगड़ा की इस गाथा में राजा गोपीचंद द्वारा सूअर की जगह गाय के वध का प्रसंग है जिसमें प्रायश्चित्त का भी उल्लेख है।

राजा भरथरी

जनम लेआ राजे भरतरिएँ,
खेलया दायिया गोद।
इक ब:रियाँ होया राजा भरतरी,
खेलया माइया गोद।
दो ब:रियाँ होया राजा भरतरी,
खेलया बहणी गोद।
तिन ब:रियाँ होया राजा भरतरी,
पलघूडे सह झूटे मदान।
चार ब:रियाँ होया राजा भरतरी,
ताँ खेले सह गुआलुआँ साथ।
पंज ब:रियाँ होया राजा भरतरी,
ताँ खेले सह चुगाना जाई।
छः ब:रियाँ होया राजा भरतरी,
ताँ खेले सह मुंडुआँ साथ।
सत्त ब:रियाँ होया राजा भरतरी,
ताँ होया ब्या:णे जोग।
पंडत पुआदे सदाये भरतरी,
लाया साह गनाणे।
बेद बचारी पंडत पुआदे,
टीप मिली प्युंगला कने।
अट्ठ ब:रियाँ रा होया राजा भरतरी,
लाया ब्याह कराणे।
नौ ब:रियाँ दा होया राजा भरतरी,
ताँ प्युंगला राणी महलें आई।
कदी बी नी खेलया सकार।
छत्री धर्म ए बोलदा,

राजा खेलणा चाइंदा सकार।
पंजाँ देयाँ राणी कपड़याँ मेरयाँ,
पंजा देयाँ तू मेरे बाणाँ।
तेरी गल्ल मैं लई सुणी।
मैं सकार खेलणे जाणा।
प्युंगला देंदी पंजाँ कपड़याँ,
बाणां देंदी सजाई
बाणाँ बःन्नी राजा भरतरी,
जंगल गया खेलणे सकार।
पकड़या हत्थें राजें तीर,
चढ़ाई लेआ तिस पर वाण।
हत्थाँ जोड़ी हिरणी बोलदी
'सुण राजा पहलें मेरी बात।'
हिरनी करदी अरज राजे बाल
'हीरे हिरना देख्याँ मारदा,
खाली पौणा मेरा डार।'
हत्था जोड़ी हिरनी बोलदी–
'सुणयां राजा मेरी बात।
हीरे हिरना देख्या मारदा,
हिरनिया मारी ले भौंएँ चार।'
बाण संडेया राजे भरतरिए,
हरनू गया प्याल।
फेरी दूआ बाण संडेयाँ ओ राजें
हरनू गया समाण।
रोषें भरया राजा भरतरी,
कःडे तिनी तिन्न बाण।
तिन्नो बाण बाःए राजें,
हरनू लेआ तिनी मारी।
हत्था जे जोड़ी हिरनी बोलदी–
'सुणी लै राजा मेरी बात।
एःड़ा जे बछोड़ा हाए असाँ जो पेआ,
तेड़ा ही राणी प्युंगला जो पौणा।'

लेई ने हिरनू राजा भरतरी,
महलाँ रे पासे जो मुड़या।
घोड़ा अग्गे अग्गे जांदा था,
पर दिल तिसरा पिच्छे रहंदा था।
महलाँ ते चलया ओ राजा,
राजा भरतरी जांदा दरजिये बाल।
झोली चोला स्याया राजें,
करी लेआ जोगिया भेस तिनी।
मजलें मजलें चलदा बो भरतरी,
जांदा माता दे पास।
राजा भरतरी अलख जगांदा,
'भिच्छा देयाँ जोगिए जो।'
'किधरा देसा ते तूँ आया,
क्या हुंदा तेरा नाँव?'
'दखणा देसा ते आया ओ माता,
भरतरी हुंदा तेरा नाँव।'
'कियाँ त्यागे भरतरिया तैं भोग,
कियाँ त्यागया सारा राज?
कियाँ छोड़ी हे राजा तैं माता,
कियाँ छोड़ी तैं अपणी नार।
इक दिन गया नी माता जंगला,
हिरनिएँ दित्ता मिंजो ग्यान।'
महल मुनारे सुख दुख सारे,
भोग बलास होया दूर आया ग्यान।
पूज्या अपणे महलाँ आई।
'भिच्छा देआँ ओ राणी प्युंगला,
जोगी खड़या तेरे द्वार आई।'
प्युंगला रोंदी, धाड़ाँ मारदी,
'ओ राजा काँह् छड्डी तू नार।'
राजा भरतरी अटल जोगी बणदा,
भिच्छा लैंणा, अग्गे चलदा बणया।
मजलें मजलें भरतरी चलदा,

भरतरी जांदा, सहर बजार।
सारे बणिए कने परजा बोले–
'सुणी लै राजा असाँ री पुकार।
राजा त्यागी जोगी ना बण,
बालक तेरा बरेस हो राजा।'
पर राजा सच्चा साधू बण्या था,
किसी री नी चली थी पेस।
मजलें मजलें ओ चलदा राजा,
भरतरिया जांदा जंगला पास।
खाई बरछाड़ाँ राणी प्युंगलाँ पौंदी,
त्याग तिसें अपणे प्राण।
कमा कमाई करदा गुरू जिया लाल,
'सुण ओ जोगी भरतरिया,
तीजी धूणी खाली पेई री,
तू लै अपना आसण जमाई।'
हत्था जे जोड़ी अरजा जे करदा,
चरणे सीस झुकाया।
तीजिया धूणिया पर आई बैठ्या,
कलेसर भाग जगाया।

–राजा भरथरी की गाथा गुगा-गाथा की तरह है। इसमें भरथरी के जन्म, बड़े होने, पिंगला के साथ विवाह, राजा के शिकार खेलने और हिरन के वध के बाद जोगी होने की कथा कही गई है। यह गाथा काँगड़ा क्षेत्र की है।

बरलाज

पहला नाँव नारायणाँ रा जुणिए धरती पुआणी,
जलथल होई पिरथबी देवी मनसा राखी जगाली।
माणू न होले क्वें रिखी एकेई नारायण राजा होला,
सिद्ध गुरू री झोली फा ढाई दाणा शेरयो रा झाड़ा।
ढाई दाणा शेरयो रा म्हारे श्वाड़िये बीजो,
बीजी-बाजी रो शेरयो जामदे लागे,
जामि रो शेरयो गोड़ने लाए,
गोड़यो शेरयो पाकदे लागे,
पाकि लूणी रो शेरयो कूनुएँ लाए।
गाहि माँडी रो क्या होआ पवाजा?
ढाई दाणा बीजो रा छुरू होआ पवाजा।
छूरू भरी शेरयो रा म्हारे बीजो श्वाड़े,
बीजी रो शेरयो जामदे लागे,
जामि रो शेरयो गोड़ने लाए,
गोड़यो शेरयो पाकदे लागे,
पाकी लूणी रो शेरयो कूनुएँ लाए।
गाहि माँडी रो शेरयो क्या होआ पवाजा?
छूरू भरी बीजो रा पाथा होआ पवाजा।
पाथा भरी शेरयो रा म्हारे बीजो श्वाड़े,
बीजी रो शेरयो जामदे लागे।
जामी रो शेरयो गोड़ने लाए,
गोड़ी रो शेरयो पाकदे लागे,
पाकी लुणी रो शेरयो कूनुएँ लाए।
गाहि माँडी रो शेरयो क्या होआ पवाजा?
पाथा भरी शेरयो रा जूण होआ पवाजा।
जूण भरी शेरयो रा म्हारे बीजो श्वाड़े,

बीजी रो शेरयो जामदे लागे,
जामी रो शेरयो गोड़ने लाए,
गोड़ी रो शेरयो पाकदे लागे,
पाकी लूणी रो शेरयो कूनुएँ लाए।
गाहि माँडी रो शेरयो क्या होआ पवाजा?
जूण भरी बीजो रा खार होआ पवाजा।
खार भरी शेरयो री म्हारे बीजो बलगे सेरी,
बीजी रो शेरयो जामदे लागे,
जामी रो शेरयो गोड़ने लाए,
गोड़ी रो शेरयो पाकदे लागे,
पाकी लूणी रो शेरयो कूनुएँ लाए।
गाहि माँडी रो शेरयो क्या होआ पवाजा,
खार भरी बीजो रा होआ खारशू पूरा।
खारशे शेरशे भाइयो म्हारे मुंदर बाणु।
सिद्ध गुरूए मुंदर बाणा।
ब्यालो कै पहरे आया लूदरू।
ब्यालो कै पहरे लागा लूदरू,
जीमी समानो बाणे मुंदरू,
चांद रो सूरजो बाणे मुंदरू,
तारे रे मंडलो बाणे मुंदरू,
बासू रे नागो बाणे मुंदरू,
साते समुंदरे बाणे मुंदरू,
चौरू रो धूरू बाणे मुंदरू,
रिशी रो मुनी बाणे मुंदरू,
कोटी री पौली बाणे मुंदरू।
राणा रघुबीर चंदो बाणे मुंदरू,
टीके डोठाईयें वाणे मुंदरू,
बेढ़े रो बान्ने वाणे मुंदरू।
देऊ कलायणू बाणे मुंदरू,
देऊ शराँली बाणे मुंदरू,
देऊ रो सीपू बाणे मुंदरू,
देऊ रो धाँदी बाणे मुंदरू,

देऊ कोरगाणू बाणे मुंदरू,
देऊ रो देबी बाणे मुंदरू।
चाकलू री छाओड़ी बाणे मुंदरू,
एस बरलाजो बाणे मुंदरू।
मनो दी उपजी देबी मनसा,
तू ही देबिए रोही जगाली।
सात कलश नारायणे दीते राखणे खे।
इनों देबिए राखी भंडारे।
बारा बरशो खे सूते नारायण जलो बीते।
तू देबिए रोही जगाली,
नौ महिने कलशो राखी भंडारे,
महीने दसवें फोड़ने लाणे।
एक कलश फोड़ा देबिए ब्रह्मा पैदा होवो।
ताँ तो बोलू ब्रह्मयाँ मेरा देणा ब्याहडू करी।
चरजा नी बोली माता देबिए।
तू सतजुगो री धरमो री माता।
क्रोध उपजा देबी दा करो ब्रह्मणे रा भसमा तालो।
दूजा कलश फोड़ा देबिए बिष्णु पैदा कीया।
ताँ बी बोलू बिष्णुआ मेरा देणा ब्याहडू करी।
चरजा नी बोली माता देबिए।
सतजुगो री धरमो री माता।
क्रोध जो उगमा देबी दा करो बिष्णु रा भसमा तालो।
चीया कलश फोड़ा देबिए महादेउ पैदा होआ।
ताँ ही तो बालू महादेबा मेरा देणा ब्याहडू करी।
धरमो दे माता देबिए।
दो भाई झाँगे, माता देबिए तिनों दे तू ज्यूंदे करी।
अमृत छिट्‌ट बाया देबिए ब्रह्मा बिष्णू खड़े कींए।
ब्रह्मे रो बिष्णुएँ देबी आगे अरजो कीई–
ब्याहडू करूमें हटि रो म्हारे लाणे आदमी पवान्नी।
ठारो हाथो रा कींया आदमी तिनों फा धरती ना चली।
सवा हाथो रा कींया आदमी तिनों फा धरती ना चाली।
दूजे सते लोए आदमी पवान्नी।

चाँदी सूइने रा कींया आदमी।
नहीं करो हूँआरो करो।
काँसे ताँबे रा कींया आदमी,
नहीं करो हूँआरो करो।
कामदेव रा कींया आदमी से भरो हूँआरो करो।
हूँकारो रे जामा पुतरो आगे होआ हरीचंद राजा।
हरीचंद राजे रे बखतो सूखे बसो परजा सारी।
हरीचंद राजे रे पोहरे बराघ होला बाकरी रा जगाला।
हरीचंद राजे रे पोहरे बीली होली ढीणचे री जगाली
हरीचंद राजे रे पोहरे मूशा होला नौजौ रा भंडारी।
हरीचंद राजे रे पोहरे गोठू होला पोली रा जगाला।
हरीचंद राजे रे जामा पुतरो,
आगे होआ बलीचंद राजा।
बलीचंद राजे रे बखते
बड़ी होली धागदी लागी।
पढ़े आणो पंडतो महलो रा महूरत देखो।
वारो ओड़ी राजे पौली बारो राखे पोरू जगाले।
पाथरे चीणे राजे महलो,
लोहे रे चेओलो बणावे।
काँसे ताँबे किंये फालटे,
चाँदी रे छतो चढ़ावे।
सुइने रे कलशो कुरड़ो चढ़ावे।
खोड़े आणौ नारदो शादी रो,
चौ धूरे न्योंदा देणा रीखी मुनी सभें बुलाओणे।
बलोओणे देओते चारो धामों,
होरी खे देणा नारदा न्यौंदा।
देखि नरायण राजा सूणो?
ब्राह्मणो रा भेख कीया नरायणे,
आइ गीआ बलीचंदो रे द्वारे।
पौली रे झोटे बैठा ब्राह्मणो,
ना अन्न खाँओं ना पाणी पींदा।
कार जो सिधारे मेरा ब्राह्मणा,

दान देउमा मुँहो रा माँगा।
दानो रे लोए धरमो ब्राह्मणे,
लोहे री बाली समिधा पाणी रा दीउटा जाला।
कारजो सिधारी रो ब्राह्मणा दानों माँगदा लागा,
माँगि लो बाह्मणा रे दान,
माँगि लो बाह्मणा रे दान।
जो तू माँगे से परमाण, जो तू माँगे से परमाण।
पोरिया का राजेया तौटा जेया?
तौटा बोली ना बाह्मणा ई पून्या रा चाँदी।
पोरिया का राजेया तेरे राजेया जेया?
ज्योटा बोली ना बाह्मणा ई बासु रा नागो
माँगि लो बाह्मणा रे दान,
माँगि लो बाह्मणा रे दान।
माँगि बसतो ना हिंकार।
महलो दा का राजेया तेरे सूइने रा जेया चोठडू?
चोठडू बोली ना बाह्मणा ई ओ महलो री छतो?
कारजो सिधारा राजेया तेरा,
दानो खे देखी बदलवी गोआ।
ढाई बीख माँ धरती देणी।
भोला बाह्मण माँगी ना जाणा।
चाँदी सूइना बाह्मण दान,
घोड़ा बागा बाह्मण दान।
खारशे देंदा ताँ बधौवी बलगो री सेर।
एक बीख देओ आधे संसारे।
दूजे बीख देओ सारे संसारे।
आधी बीखो खे थीयाँ ना ठाँई,
बली राजे तेबे कनड़ी डाई।
गाडा सातवें पताले बली राजा अरजो करो—
नाँवाँ ना मेरा गाली,
दो दे राजेया माँ वाँसी, दो दे पड़ेवी।
ऐतणा दान राजेया मेरे दिता नी जांदा,
एक देउमाँ ताँ वाँसी एक देउमाँ पड़ेवी।

आबली दिआलीए कौबे? काती री वाँसी आमे।
कनिए कनिए रे लोभे? छेवड़ी छोहटू रे लोभै।
आवली दिहालीए कोबै? खोड़ो मूड़ी रे लोभै।
चज्जा री छेवड़ी रे लोभै, चज्जा रे गभरू रे लोभै।

—इस गाथा में प्रभु-स्मरण के साथ सरसों उपजाने और इसकी रक्षा के लिए पृथ्वी-आकाश, चाँद-सूरज, ऋषि-मुनि के साथ-साथ राजा रघुबीरचंद, ग्राम देवता, जुणगा, देव-देवियों की रक्षा की बात की गई है। ओंकार से राजा हरिचंद के जन्म, हरिचंद से राजा बलीचंद के जन्म का उल्लेख होने के साथ धरती चमकने की बात कही गई है। राजा बलीचंद के द्वार नारायण ब्राह्मण भेष धारण कर आए। शेष कथा वामन अवतार की है जो स्थानीय पुट लिए हुए है।

मादेव-युकुंतरस

कुनी सोरड़ो मा शीपा शीपा।
मा शीपा शी बागुरा बऊओ।
बागुरा बऊओ शेपो मा जेपा।
शेपो माजे ए काले पिंटू।
पिंटू फाटिग्यो आपू मादेव जोरमो।
मादेव जोरमो एकले खन्खारा।
एकले खंखारा आखी वी नाई।
एकले खंखारे हाथी वी नाई।
बागुरा हाशौ पूरबा बी लेका।
तेवे नीख्यो हाथे वी आखी।
शीरा कुशीयो दो बाई सूरजा।
न्यायो आयार सारे मात लोका।
अंगा फाटिग्यो ब्रह्मा विष्णु।
अंगा फाटिग्यो विष्णु नाराणा।
सीरा ठासिग्यो माथे सोरगे।
पैरा ठासिग्यो आकाश पइताले।
प्याशदो लागो सारा मात लोगे।
अंगा फाटिग्यो विष्णु नाराणा।
छाती कुशीयो अष्ट कोरिङ् देवता।
छाती कुशीयो कालूओ लुहार।
क्या री कोरा विष्णु नाराणा?
एबेगो चाहीं मानुश टुयाणो।
चणदो लागो कालूओ लुहारा।
चरणदो लागो सूने चाँदी रो मानुश।
चाणिओ चणदो दाराटिए पोरू।
शूणू शुणदू नाई सूने चाँदी रो मानुश।

तैबे चाणो त्रोम्बे पीतलो मानुश,
सौबे बेजिग्यो दाराटिए पोरू।
सौबे न शुणा त्रोम्बे-पीतलो मानुश,
सौबे बेजिग्यो दाराटिऐ पोरू।
तैबे चाणो गुओ छारिओ मानुश,
काने लियो गुओछारिओ मानुश।
सौबी बेजिग्यो दाराटिए पोरू,
शुणदो लागे गुओ-छारियो मानुश।
रोशो लागा मादेव मेशुरा,
तैबे बोला जोपरी नाश्पोरू।
जोपरी नाशा कपटी के आगा,
जोपरी नाशा ग्वालाटू जुक्रे।
ग्वालाटू जुक्रे तोले दुंगारो,
क्यार जी कोरा विष्णु नाराणा?
मानुशे माजो गुओ भोरांदो,
गूओ भोरांदो रोडे लाओ वी नामा।
तैबे आणो केदारा वाछू,
केदारो बाछू तोले मास छुंगा।
तोले देऊँ तीन दिनी का छोशा,
क्या जी कोरा विष्णु नाराणा?
ऐबे गो चाही जिमी दुयाणो।
तैबे आणो शुक्लो माटोआ,
सौबी ना टेको लो शुक्लो माटोआ।
तैबे आणे रातो माटोआ,
सौबी ना टेको रातो माटोआ।
तौले देऊँ कालो माटोआ,
तौले देऊँ गोंचा गोबरा।
तैबे टेको कालो माटोओ,
क्या जी कोरा विष्णु नारेणा?
माऊले जुगे मऊल्यानी नाई?
दुईता आसा युकुंतरासो बेटी।
हांडगो बाइया मादेव बोरनी लाओ,

हांडगो बाइया अष्ट कोरिड़ देवता।
हांडगो हांडगो अष्ट कोरिड़ देवता।
अपना बोरनी आगे-आगे निखियू।
मादेव बोरनी बीतेचो राथाक्यू,
क्या जी कोरा विष्णु नारेणा?
तू बी हांडना पांडो पंज राजस,
मादेव बोरनी वीतेचो राथा को,
अपना बोरनी आगे आगे।
क्या जी कोरा विष्णु नारेणा?
हांडगो मोमा तंबी ले नाशूँ।
हांडनो हांडनो मादेव मेशुरा,
हांडनो हांडनो विष्णु नारेणा।
मादेव मेशुर साधु पंडिता,
लुरियो लुरियो युकुंतरासो बेरो।
विष्णु नारेण बीते कोठिके हांडा,
मादेव मेशुरो बेरो बेशांदो।
बेरे बेशो ठंडी पोर बेशो,
बेरे निकलो युकुंतरसो बेटा।
साधु पंडित बीदो क्या चाई?
बीदो ना चाई हाथो दोरोम देओ।
कुनीओ आसा दोरोम गे माँगा?
तेबे बोला युकुंतरसो पेरे।
युकुन बोला-कालो कऊरो डयाया,
कालो कऊरो माते सोरगे हांडा।
सोरगे हांडनो बारा फुट बोरफ लाणी,
आणदो आणदो बारा फुट बोरफ।
बेरे निकलो युकुंतरसू पेरे,
सरणो जीऊणो साधु पंडिता।
मोरणो नाई पानी फुशी नाई,
शंठू लाओ शते प्रोले माजे,
ग्यारा रिया सते प्रोले माजे।
हसदो लागो सादू पंडिता,

क्या हासीग्यो पुरू बंगा राऊला?
बेरे निकलो युकुंतरसा बेटी,
क्या हासिग्यो पुरू बंगा राऊला?
क्या हासिग्यो मेरे बापू के नाशा,
बापू के नाशा ब्याऊ ले दिन माँगा।
ब्याऊ ले दिन आटा दियुसे बाहङ्,
युकुंतरसो बोला-सोबी ले आणो।
सौबी ले आणो, विष्णू मू आणो।
विष्णू मू आणो कंडे फुआल मू आणो,
मानुशे माजे खर खरिङ् चाऊला,
मानुशे माजे टाटी भोरी लूणा।
मानुशे माजे एका एका बागठू,
डांगरे दीणो हाथो घोणाटू।
बिसमंतिग्यो मादेव मेशुरा,
नारेणो बांजा क्या म्याऊँ-म्याऊँ बाशा?
दीरागो मोमा हुन दूरी चाणो,
गोंटो गुशियो हाथे डांगारू।
खाल्टू बेजिग्यो जातारू पाड़ा,
खारिड़ चाऊला नाराणू बोज कोरा।
नाराणू बोज एक एक ग्रास लाणो,
गोड़ा छाडिग्यो युकुंतरसो बागे।
कुकुटो छाडिग्यो युकुंतरसो पेरे,
हिलडो बी नाई तेरे चोबोबा।
युकुंतरसो पेरे गोरे शा गङ्गे,
ईशुरा देऊआ गोरे शा गङ्गे।

—महादेव की उत्पत्ति, ब्रह्मा-विष्णु का उद्भव होने पर विष्णु ने कालू लुहार से सोने-चाँदी, ताँबे-पीतल, राख का आदमी बनाया। गाथा में युकुंतरस की कथा अलग ढंग से बखानी गई है।

धोबन

काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबण पणिए जो गेई-ए तेरी सोह्!
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए
धोअबणी घड़ा रक्खेया, हाय रक्खेया
हो राजा रखदियाँ-आँ गड़बी मैं, तेरी सोह्
हो राजा रखदियाँ आँ गड़बी मैं, तेरी सोह्
काला घग्घरा सिला के, हाय सिला के
हो धोबण पाणिए जो गई-ए, तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
धोबणी घड़ा भरेया, ओ भरेया
हो राजैं भरी लेई-ए गड़बी, तेरी सोह्
हो राजैं भरी लेई-ए गड़बी, तेरी सोह्
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबणा पाणिए जो गई-ए, तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
धोबणी घड़ा चुक्केया, हाय चुक्केया
हो राजै बीणी तैं पकड़ी, तेरी सोह्
हो राजै बीणी तै पकड़ी, तेरी सोह्
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके,
हो धोबण, पाणिए जो गेई-ए, तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
छड़ दे राजेया बीणी, हाय बीणी
हो मेरी जात कमीणी, मैं तेरी सोह्
हो मेरी जात कमीणी, मैं तेरी सोह्
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्

हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
खबर करो मैंहल राणियो, हाय राणियो
वे राजैं धोबण ल्योंदी, तेरी सोह्
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबण पाणिए जो गई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
ल्याण लगा ताँ ल्याण दे, हाय ल्याण दे
हो मैं ताँ बसण नीं दैंणी, तेरी सो
हो मैं ताँ बसण-नीं दैंणी, तेरी सो
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्,
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
पैंहली पिंड्डी बणाई, हाय बणाई
ओ बिच सक्कर मिलाया, मैं तेरी सोह्
ओ बिच सक्कर मिलाया, मैं तेरी सोह्
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
दूजी पिंड्डी बणाई, हाय बणाई
ओ बिच जैहर मलाया, मैं तेरी सोह
ओ बिच जैहर मलाया
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
ना मेरी धोबण जो दब्बेयो, हाय दब्बेयो
हो धोबण मैली-बी-नाँ होए, मैं तेरी सोह्
हो धोबण मैंली-बी-नाँ होए
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
धोबण पाणिए जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
नाँ मेरी धोबण जो फूक्केयो, हाय फूक्केयो

हो धोबण काली-बी नाँ होए, मैं तेरी सोह्
हो धोबण काली बी नाँ होए
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
सोयने दा पिंजरा बणाया, हाय बणाया
हो किसी नदियाँ रूढ़ाई, मैं तेरी सोह्
हो किसी नदिया रूढ़ाई
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबण पाणिए जो गई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
धोबी कपड़ेयाँ धोए, हाय धोए
हो किसी-दी-नार रूढ़दी आई ए, मैं तेरी सोह्
हो किसी-दी-नार रूढ़दी आई-ए
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
धोबिएँ पिंजरा सैह् फड़ेया, फड़ेया
हो धोबण कड्ढी-बो न्हलाई-ए
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए मैं तेरी सोह्
हो धोबण पाणिए जो गेई-ए।
धोबिएँ पिंजरा सैह् खोल्लया, हाय खोल्लया
एह् बच्चेयाँ दी माई-ए, मैं तेरी सोह्
एह् बच्चेयाँ दी माई-ए।
काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
धोबण पाणिए जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्
धोबण पाणिए जो गेई-ए।

—काँगड़ा क्षेत्र की इस गाथा में राजा के धोबिन पर मोहित होने की दास्तान है। राजा उसे महलों में ले आता है किंतु रानी उसे सहन नहीं करती, उसे जहर देकर मरवा देती है। अंत में धोबी द्वारा सोने के पिंजरे में बहती धोबिन की लाश को पकड़ना हृदयग्राही है। सोने के पिंजरे में बच्चों की माँ है।

मियाँ सा'ब

खुना रामपुरो, कुमो दरबारू कुमो,
कुमो दरबारू, तुकुथदेन् महाराज।
गिलमुदेन् शुम्गोर,
मियाँ साबुस लोतोश–
'कोंसस् या कोंसस्,
ई ओरज् लंतोक्।
शिरङ् लंतोया?'
दे लोन्निग् बेरङ् महाराजुस् लोतोश्–
'किन् ठ दुया ओरजी, गली ठू मनोन्चिक्?'
'हेद् ओरजी मानी, ग कनोरिङ् बीतोक्।
कनोरिड़ मुलुक् ख्यामा, नुली मशूरियू मुल्क,
देव-कालियु अस्थान, कैलास् ता दरशन।'
महाराज लोलितोश्–'की कनोरिङ् था देइ,
पोरजाउ तकलिफ रंतिइ।'
प्रेग्नइ मश्कोतिश् जी मियाँ साबा।
'बीतांकी चल्मा ओलिया पालारईं।
भोल्या चूलारइँ।'
बुलबुली सङ्ता हुन् बीमिक् नीयो।
अड् चालिया हम् तोन् चलो चलंदोरा।'
ढाई नीजा असबाब, शुम् नीजा बूगार।
दो रिङ् रिङ् बुन्ना बङ्तू ना जङ्तू।
राजा जड़-छम्देन् फोयनामङ् महाराजू,
वन्याशित् अङ्रेजू।
मियाँ साबिस् लोतोश्–
'मेट मुखिया हम् तोन?
बोरो बाथ करा चवलस् कोनिकङ् बाखोरा।

एक राती बेशी शुपारी ता छीलो,
बुलबुली सङ्ता हुन बीमिक नियो।
'अङ्चलिया हम तोन् चलो चलंदरो?'
ढाई नीजा असबाब शुम नीजा बूगार।
दो रिङ् रिङ् दुन्ना डोकीचु देन् कंबौ।
मिया साबिस् लोतोश्—
'ग कंबा बीतोक्।
दुरिगायू दर्शन द्रोरोमा संताङ्गो,
द्रोरोमा संताङ्गो कम्बा दुरिगा याशौ।'
मिया साबिस् रन्ग्योश्,
ङ् रूपया नजराना।
मिया साबिस् लोतोश्
'मेट-मुखिया हम् तोन्?
अङ् डेरो हम् तोन?'
मेट मुखिया लोतोश्
'जी लो जी महाराजा,
किनू डेरो कै लितोक् डोम्बरी देवराङ्।'
मिया साबिस् लोतोश
'ग माविक देवराङ्,
तन्जूयान् कोठाल, ग्यातोक्।'
डेरो ता चुम् ग्योश् तंजूयानू कोठालो।
तंजूयानु पेरङ् सीमूपोरू मोजरी बिग्योश्।
सोम् मोजरो बेरङ् जी मियाँ साबू।'
गुश्कीची वादो मिया साबिस् लोतोश्
'तंजूयानू नेगानी, तंजूयानू नेगानी।
किन्ना ता चेइतोइँ बंठिन्, हमूबियोश्?'
दो लोन्ना बेरङ्, नेगानी ता लोतोश्
'बोरे ता बीग्याश् कंडे ज़मी पोरी।
दे लोन्यू बेरङ् मुरतु बंठिन् पोच्या।
मुरतु बंठिन् पोच्या सोम् मुजरो बीग्योश्।
मियाँ साबिस् लोतोश्
'या मुरतु बंठिन्।

कशो ओमचू बातङ् मोरजात् हले दुया?'
मोरजात् हले बीशेइं दो गली मानेन्मा।'
'अङ् प्राचू मुंदी।'
मुरतु बांठिन् लोतोश्
'आम्च् बातङ् तामा,
अङू त पोल्याशिम् बीतो।'
मियाँ साबिस् लोतोश्
'हुन् बीमिक् नीयो बुलबुली सङ्ता।'
दे लोन्मू बेरङ् मुरतु बांठिन लोतोश्
'जी मियाँ साब् कीता मुलुक मालिक,
ग ता खोशियाउ चीमे।'
'दो लोन्मू बेरङ् मियाँ साबिस् लोतोश्
दो मनेशिश् अङ् मइ।'
मियाँ साबिस् लोतोश्
'कम्बा ओरस् हम तोन्?
पोलगी बुनारा।'
दे लोन्मू बेरङ् मुरतू बंठिन लोतोश्
'अङ् पोलगी माशर ग खोशिया चीमे
ग पोलगी मा ग्याक् ग ताबा ग्योतोक्।'
'चलो चलंदोरा बुललुली सङ् रङ्।'
हुन् बीमिक हाचे चालो चलंदोरा।
ढाई नीजा असबाब शुम् नीजा बूगार।
दो रिङ् रिङ् बुन्ना बाटीचु उरने,
मियाँ साब् फतेसिंह उरा बड़लो कूमो।
मियाँ साब् लोतोश्
'मेट मुखिया हात् तोश्?'
मेट मुखिया लोन्ना उरा चारसु छाङा।
नामङ् ता लोन्ना बिसिंबर बैयार।
बोरो बात कारोश् चौलश् कोनिकङ् बोखोरा,
एक राती बेशा उरा बड़लायू।
बुलबुली सङ् रङ् हुन बीमिक नीयो।
दो रिङ् रिङ् बुन्ना माता शोवाल्यङ्।

रोश्मालेयु चीने तंबुवा चूक्योश्।
राबायू ओमस्को।
रोशमालेयु चीनेयु हात् तोश्?'
मेट मुखिया लोन्ना सुवारसु छाङ्,
सुखदास बैयार।
शुम् दियारो बैसो भोल्या चुल्यायोश्,
ओलिया पल्यायोश्।
तोंबुवा चुग्चुग् बुनातो तोंबूवा।
राइक बाटे डोरी दो नी तंबुआ कुमो।
मूरतू बंठिन् मुरतू पसम् पनिम् मा नेग्यो।
बुलबुली सङ् रङ् हुन् बीमिक् आए।
बाटी बेगार चल्यो चाल्े चालेयोश्,
हङ रङ् कुमो।
हङ् रङ्, कुमो गुरमेल् बेशायोश्
गुरमेल् बेशायोश् डाईगोल कुमो,
दुम् साचे लन्ग्योश् हड्. रड्. न्यामा।
'हुन् हला लंते बोसेन् मा हन्शो?'
हङ्ो डोमङ् स् लोतोश
'मजत् किना केरइ,
चुम् मिक् गस् चुम् तोक्।'
जब्नाचे चुम् ग्योश् हिलन् चे ब्यड्. ग्योश्।
'अङ् दुश्मन् व्युइदा अङ् किम्-शू हम् तोइं?
अङ् किम्-शूहम् तोइँ मामइ दुरिगा,
मामइ दुरिगा लँगुरा बीरा!
चोरम् जङ् राइँ।'
जङ् ली जङ् ग्योश् पोलाच् रोदङ्,
पोलाच् रोदङ् रनु शोरू जङ् सोरप्।
मियाँ साबस् लोतोश्
धीरो हङ् रङ् न्यूम् छङ्।
देखियो तमासो हुना आड् न्यूपी कानू।'
दो शोङ् शोङ् कायांश, शास्यो देशड्चो।
शास्यो विषूट लोतोश

ने लनशिम् मांश्को।
नो ली मुलुक देवङ्।'
सिक्या खोल्यायोश् विष्ट इनरदासस्।
दो शोङ् शोङ् बुन्ना धारेउ देन पाङ्.।
एक राती बेशो दो शोङ शोङ ब्युन्ना,
खोनाचु उरने।
युचा ला डेना बरन् साबु संत्री।
संत्रिस, लोतोश्
'ने लन्निग् मइके।'

—किन्नौर की यह गाथा मियाँ साहब और 'मुरतू' सुंदरी की है। मुरतू अपने को खशिया की बेटी कहती है किंतु मियाँ साहब उसे पालकी में ले जाते हैं।

चुन्नीलाल

बाट्यो किलिंबा थोरिङ् हसपतालो,
डागडर बाबू हत् तौश्?
बाटी चुशाया किलिंबा,
ओपङ् अङ्रेजो हसपतालो।
ओपङ् अङ्रेजो हसपतालो,
डागडर बाबू हात् तोश्?
डागडर बाबू लोन्ना, हात् द-मीचो छाङ्गे।
हात् दा मीचो छाङ्गा, देसो सेठो छाङ्गा।
देसो सेणे छाड़ा नामड़ छदा दूग्योश्
नामङ् तो लोन्ना चुन्नीलाल डागडर।
चुन्नीलाल डागडरा गुरबाई हात् दुग्योश्?
गुरबाई तो लोन्ना जेलदारो छाङ्गा।
रोङ् जेलदारो छाङ्गा नामङ् वादा दूग्योश्?
नामङ् ता लोन्ना कम्पोटर जेरसिंङ्.।
दो न्योटङ् गुरबाई चो बेन्नङ् बोदी,
नुकरी च ईफङ् किलिंबा हसपतालो।
चुन्नीलाल डागडरू कोनीच हता दूग्योश्?
कोनीच तो लोन्ना फयूलो छे चाचो।
फयूलो छे चाचो हातू जाई।
हात् मानी थङ् गोरो जाई।
थङ् गोरो जाइयू नामङ् छदा दूग्योश्?
नामङ् ता लोन्ना बंठिन् 'जङ्मोपोती।'
बंठिन् जङ्मोपोतीस् लोतोश्
'डागडरा बाइसाई, डागडरा बाइसाई,
ओखी-सोखी बातङ्, बाइसाइयू मोरजात् तारइँ।'
दे लोशिमिगू बेरङ् परनाम् लोशिश् ब्रोलशिग्योश्।

बंठिनू जङ्मोपोतीउ कोनेच्, हात् दूग्योश्?
कोनेच् ता लोन्ना यङ् ठ दू ग्योश्?
नामङ् ता लोन्ना बंठिन 'किशन भगती'।
जङ्.पोतीश् लोतोश्
'कोनीच् या कोनीच्,
पोइं कंडे बीते जमीयू पोरी लांते।
जमीयू पोरी मा लन्मा दो मन् रिड्ज मानर्शू,
दो खाटिये नाशा।'
किशन् भगती लोतोश
'बीते ता रिङ्तोइं विलपुग ठ फीते?'
'शिलपुग ता फीते रोपङ्-जादू पुग।'
'शिलपुग ता फीते फुल-गस ठ फीते?'
'फुल-गस् ता फीते किलूबा ओल्गो तीसङ्.,
ठोकरो रोमशु पैथङ्।'
दो न्योटङ् कोनीच् बीम् लोशिश् बीग्गोश्,
कांडेओ फ़्युल् लो जमीयो पोरी लानो।
जमीयो पोरी लानो टागू ती शेदो ब्रासो चो शालो।
बंठिन जङ्मोपोती खोरग्यु माजन् सरसर।
शुम् द्यारो कुमो जङ्मोपोति पीरङ्,
पीरङ् पोरयातोश् बल् जशङ्
बल् जशङ् पीरङ् डेयड़ो मा-सोकेच् पीरङ्,
मोनाड़ो मा-सोकेच् अपसोच।
चीटी कुमो चेयोश् चुनीलाल् गूदो।
चुनीलालो गुदो बङ्चो कागली।
बङ्चो कागली ब्योरा ठ दूग्योश्?
ब्योरा ता लोन्ना कोनीच् पीरङ् पोरयोश्।
चुनीलाल डागडर कोनीच् पीरङ् थस् थस्,
कोनिच् पीरङ् थासे रङ्,
स्तिङ्. शूलङ् लन्ग्यो।
रांतो-रात कंडे दवाग्योश,
गुदो ललटिन रङ् कंडे शोन्नड़्चु।
बहरेङ् पोश् शम्मु दे टिन्ड्च कुमो ख्यायोश्।

बहरेङ् पोश् शम्भु दे टिन्यङ्च कुमो ख्यायोश्।
बहरेङ् इशारा रनग्योश शङ् पोटङ्स ठीसो।
जङ्मोपोती को नीचू इशारा थसेरङ् पीरङ् घटयाग्योश्।
जङ्मोपोतीस् लोतोश्
'कोनिच या कोनिच!
ठ इशाया लंताइँ कुमो ठ मा ब्युइँ?
कुमों जाइँ कोनिच् खेरपोशी देन् तोशी।'
चुनीलाल बीग्योश् जङ्मोपोतीयु पोशुदेन्।
चुनीलालस् लोतोश्
'कोनिच या कोनिच!
डेयङ् पीरङ् हाल तोश्?'
जङ्मोपोतीस् लोतोश्
'जु पीरङ् गंडु सचक्यु डुवेशे।'
चुनीलालस् लोतोश्
'कोनिच् या कोनिच्।
होने कादर था जाइँ ठिद् मठिद् लान्ते,
शेल् मानू इलाज लांते।
शेल् मानू इलाज लांते पाइँ हसपतालो बीते
हसपतालो वीमुं तागत दुइँ आ मा दुइँ?'
जङ्मोपोतीस् लोतोश्
'कोनिच या कोनिच!
अङ्.ता मादुग् तागोद् हसपतालो बीमु।'
चुनीलालस् लोतोश्
'कित् तागत् मा निमा डंडी टुयाते।'
टुयाम् टुयायोश् पलबरू माजाङ्गो,
राय मिचु डंडी।
दो शोङ् शोङ् बी मा कागे गोरङ् देन्।
चुनीलालस् लोतोश्
'दस पाँचु बैयार!'
पल बर आराम लानिच, पल बर गस् उठायतोक।'
दो शोङ् शोङ् बी मा कातो थोरिङ् बंगलो,
थोरिङ् असपतालो कुमो कुमाराउ चारपाई देन्।

चुनीलालस् लोतोश्
'कम्पोटर जेर सिंङ् नीचलु कोनीच पोचाश्।
इलाज दम् लानी,
इलाज दम् लानी कलथानङ् शुम् जब।
घारकि चु स्तिस् जब्।
जाङ्मोपोतीस् लोतोश्
कोनिच या डागडर!
जो पीरङ् होट्यामा जु छे गोरी वस् क्यङ्?
छिमा चू इमान तातोक्।'
हुनागु बेरङ् जड़मोपोती इमान मा ताता।
छिसाचु इमान बस्क्यङ् जुछेओ मा रख्यायोश्।
हुनागु बेरङ् कोठिस्यानो नम्शा।
जोङ्मोपोतीस् लोतोश्
'अङ् भाव मा बियु,
नो देशी कोचा अङ् भावो मा बियु।'
चुनीलालस् लोतोश्
'गंगाजीतु गुरबाई अङ् सुड़चन् मा,
मुनरिङ्जु ददे था लंराइँ।
इमान हथेरङ् बेमान्।
हेद् लोशिश् दयले इमान मायच रंडिऊ।
अङ् च देऊ काउथङ् अङ् सोनी बितरी।
दुनियाँ ता वेमान् कि बेमान् हाले।
ओमचु बेरङ् शोङ् ठी गोलिस् प्रानु बेन्नङ्,
हुनागु बेरङ् शोङ् पुरइ बेइमानी।'
जङ्मोपोतियु कनुउ जङ् गुंगरू।
मियन् चेन लोतोश् दो पीतलू गुंगरू।
मि मा खुशिश बतङ् जङ् गुंगरू थग् छोत्।
चुनीलाल हिम्मत देन्,
जङ् मो विवग बेरङ् ख्यायो।

—किन्नौर की यह गाथा डॉक्टर चुन्नीलाल और उसकी प्रेमिका की गाथा है। प्रेमिका जङ्मोपती के बीमार होने पर उसे डाँडी में उठाकर गाँव से नीचे ले आए। अंत में वह 'कोठिया' की बहू बन गई।

राजा जगता

सुणा ओ भाई नूरपुरे बिच, होआ राजा 'जगत' पठानिया,
करमा चंदा रा पुत्र, तारे चंदा रा पोता।
पूरियाँ रा था दित्ती रा, पूरियाँ घड़ियाँ।
राजा जगत्ता जम्या, नूरपुरे राज कमाणा।
भागाँ रा है तू बली, पैरें तेरे राजा चक्कर।
मत्थे नागण आई, राजा तेरी बड़ी कमाई।
पूरिया ताकता देखी ने, तेरी चुगली राजा—
लगी नली बाछाह गे, जगता आकिया होया।
लिखे परवाने नली बाछाएँ, देणे राजे जगते ताँई।
इन्हाँ लिखियाँ राजा जगता बाचदा, क्या धल्या फरमाई?
'मैं सुणयाँ पहाड़ाँ च इक, आकिया होया जगता।
जे तू कहिए पहाड़ाँ रा राजा, ताँ मिल्याँ बराबर आई।'
परवाना पढ़या जगतें राजें, लोःऊएँ हाखीं छाइयाँ।
'ओ जी किनी बैरियें चुगली लाई, किने बैरियें धरो कमाया।
ओ जी मरी जायाँ तू मेःगया, नाइयाँ तें मेरी चुगली लाई।
ओ जी तूँ एथी जम्या एथी पल्या, अज्ज मैं कने तें धरो कमाया?'
ओ जी धोगा दोगा कट्ठा कीता, रक्खी फौज बणाई।
ओ जी चारों पासें धम्माँ पाइयाँ, चलो लड़ाइया जो भाई।
ओ जी पट्टे खजाने ताँ जे अपणं, बापुए खट्टी, बागें ढेर लगाए।
ओ जी ढालाँ भरी के ओ खर्चदा, बंडदा, तेगाँ बःनो मेरे भाई।
ओ जी इकना री ताँ प्यारी बुड्ढी माइयाँ, इकनाँ री चंचल नारीं।
'ओ प्यारी जिनाँ जो भाइयो घरा दी- नारी, घरें-ई रहो भाइयो।
ओ जी जिनां प्यारी घरा रियाँ नाराँ, घरें ई रही ओ मेरे भाईयो।
ओ जी जिना प्यारी राजे री नौकरी, संग चलो मेरे भाईयो।'
ओ सूरम्या तेरे राज्जा चढ़दियाँ- लालियाँ, काहले जांदे कमलाई।
जो अंदर पहाड़ाँ ते चले राजा जगता, रण-बण भजदे जावे जी।

ओ जी अंदर पहाड़ाँ ते, सजी बजी ने राजा जगता।
चलया राजा जगत, डेरा दिलया जो आया जी।
ओ छज्जे बैठियाँ मुगलेरियाँ, पहाड़ी फौजा जो देखदियाँ।
इक मुगलेरी बोलदी जी–'पहाड़िया राजा आया जी।'
ओ छज्जे बैठियाँ मुगलेरियाँ, पहाड़ी फौजाँ जो देखदियाँ।
दूजी मुगलेरी बोलदी जी–'आया नौकर म्हारा जी हाँ।'
रोसें आई राजा बोलया–'ओ जी हऊँ जे सई हुंगा।
राजा जगत पठाणियाँ, बीणी रियाँ बःटगा पछाड़ियाँ जी हाँ।'
ओ जी, रोसें आया पठाणियाँ, तिसा ई घड़ियाँ हुकम करदा।
अपणयाँ सूरम्या नौकराँ जो हाँ, 'इक्को-ई पासणा देणा डुआई।'
ओ जी रोसें आया पठाणियाँ, तिसा ई घड़िया हुक्मा करदा।
अपणयाँ सूरम्याँ नौकराँ जो हाँ, 'इक्को-ई पासणा छज्जे देणे डुआई।'
'ओ जी ताँ जे रूप था वंडया करतारे, ताँ तू था गई रा किती?'
'ओ जी ताँ जे रूपा था बंडया करतारे, ताँ हऊँ था गईरा अकल घरा।'
ओ जी चढ़ी घोड़े जाँ लक्का बणदी, नली सलामा राजे जो करदा।
'ओ जी ऐसा सूरमा अपणे मुलखा रहे न, ओ जी अटका ते पार पुजाणा।'
'ढाई घड़ियाँ धना जो लेयाँ, दिल्ली तेरे उहाले करदा।'
ढाई घड़ियाँ दिन-रए, फौजाँ सइरा च गइयाँ।
स्यूना चाँदी कुल मुकाया, होर नी छूया कुछ बी।
लुटदे लुटदे दिन पहर चढ़या, दिलिया च हाए हाए मची जी।
ओ जो अंदर दिलिया ते चलया, नूरपुरे रा जगत पठाणियाँ।
जांदा जांदा काबुल पूज्या, जाई ने काबुल डेरे लाए।
ओ जी हुकमा करमदा अपणेयाँ, सूरम्याँ रजपूत नौकराँ जो।
इक्को ई पासणा देणा डुआई, ओए असाँ जो आण प्यारी भाई।
ओ जी फौंजा लड़दियाँ जोराँ जोर, ओ जी काबली टिक्के लड़दे थे।
ए ताँ दारू ताँ दमूकाँ कने, पर जगत पठाणिए स्यूने रे तीराँ ने।
ओ जी फौजाँ लड़दियाँ जोरों जोर, मुसरमाण दिते सब मुकाई।
ओ जी बाई टिक्के काबला रे मारे, इक बी सामणे नी आया।
जुद्ध मुकाया टिक्के हारे, ओ जी फौजें डेरे लगाए।
उचिया, टिबिया फौजाँ रे गब्बे, जगत पठाणियाँ तंबू लगाए।
हऊँ इंदर आ जगता बोल्या, खढ़ी कुण सकाँह सामणे मेरे।
इंदर कोप्या, हयूएँ बेलणी, जगत फौजाँ मुकाणे लाइयाँ।

ओ जी गर्व कीता तें, ओ गर्वीया राजया पठाणियाँ।
गर्व नी करना चाँइदा, इंदरा जो अरबा चलाया।
हुकमाँ करदा इंदर राजा–'इस दा गर्व जरूर मटाणा।'
ओ जी रोबें भरया इंदर राजा, हयूँआँ री बेलण चलाई।
सपाही बोले चींड़ाँ मारी, 'सुण ओ राजा अर्ज म्हारी।
लसकर तेरा बरफें दब्या, कुण करगा रच्छा म्हारी?'
सपाही बोले सुण ओए राजा–'बरफ तंबुआँ जो ढुकदा आया।'
देखदे देखदे जगत पठाणियें रे, से सब कने अप्पू बी दबोई गया।

–नूरपुर के राजा जगत पठानिया या राजा जगता का झेड़ा एक वीर-गाथा है जिसमें राजा जगता के 'पहाड़ों का राजा' होने की खबर बादशाह (मुगल बादशाह) तक पहुँची। मुगल बादशाह ने राजा को बुलावा भेजा। फलतः राजा जगता अपनी फौज के साथ दिल्ली चल दिया। दिल्ली में छज्जों पर बैठी बेगमों ने उसे नौकर कहा। मुगल बादशाह 'नली' ने अढ़ाई घड़ी के लिए दिल्ली राजा के हवाले की। दिल्ली से राजा काबुल पहुँचा। राजा जगता ने काबुल के बाईस युवराज मार गिराए।

जगत पठानिया जीत के गर्व से चूर हो गया तो अपने को राजा इंद्र समझने लगा। राजा इंद्र ने कुपित हो 'हिमपात' किया जिससे राजा की फौज ठंड से मरने लगी। बर्फ में सारी फौज दब गई और राजा जगता भी बर्फ में दब गया।

मियाँ होकू रावत

घानी गाणी ठाहरी देवी दुरिगा माई,
भूले देणे बिसरे, यादो दिलाई।
बोहुता देणा शारड़ा, पाछड़े पाई,
आखरों देणे होकू रे, दो चारो गाई।
दोलू रूए मोहते, धुणिओं खाई
खुमली थोई, सीणाए चोतरू री मानलो पाई।
खुमली दी बातों थोई ली होकूवे लाई,
जुझ देणो मारे राजा नोइणे खे लाई।
खुमली खे उचले कोटी शा मुगलिया, गनोग शा सुदामा,
रजाणो शा धरता पजवाणा, चौरास शा सामा।
नोहरे शा मागतू, संगड़ाह शा संघड़ई, सेंज शा बाजी,
शोउ शा खेना, घामला शा महाटा, भूटली मानल शा जाबों।
देउठी मुलो थोई, खुमली पाई,
पांची शो नोइयाँ देणे नोइणी भिजाई।
खुमली दी रूणों मरोली गुणों,
ऐका चेई रोआ, पाई लोवे लोटे दो लूणों।
टिका रोआ छुटी राजे रा इयाणा,
नोइणी होई रोवा भीतरा दोलू मोहते रा जाणा।
मोहते लुए दोलूवे, कुशी कुशिए खाई,
मामला लुआ राजो दा दुजा लिए उगाई।
होकू लागी सिगटे तोवे नोइणी री बाई,
हाडों आउणो एंकियो, नोइणी खे जाई।
नोइयाँ देणे गाँव रे मेरे सिते पोठाई,
दोलू देणी मोहते री, गुजों कोटाई।
देव थोआ शिरगुल शाउना लाई,
जुधों देवा मोहते सात देणा जीताई।

जीती जाउ भारती, सीसे मोने पाछु आउ,
खोंडे लिआउ, काने बकरा, देउठी दा आऊ।
ऐथे गाई लागा बुलांदा मियाँ तेरा बारू,
बाईडा पाओ छेवडियों भंडारों रा दारू।
पोख रोओ नोइयाँ रो, घंडोरी ठाहरी दो आई,
एक लोई दुजे खे रामा रूमीणी शाई।
फौउजो चली होकू री कंडारी री धारों,
कंडारों शो मियाँ घुंडोउरी खे हेरो।
भात छुटो जीरी झीझणो रो झूटड़ी रो दूधो,
ठाई छूटी घुंडोउरी री कोलीमों री सेरों।
तेरी वे राउता खाई केमिए बुधों,
चली रूआ जुझों खे, चीते कोरो दूधों।
जांदा लागा बोंदा, जामटे री बाटों,
आदी भेटो घाटी दो टुडे उलिया रो हाटो।
मोनो दे राउतिआ घोडों ला घाटों,
लादे केयू ने हाटियों नोइणी री बातों।
बातों जाणी नोइणी री जाई रोई खोटी,
नोइणी पाकी रोई भीतरी दोलू मोहते री रोटी।
फुली कोरो फुलीटू, डालिटी दाई,
फौउजों रोई राउतों री जामटे आई।
जामटे लोई देवी, मोती शिखो खे शाई,
अरजो थोई देवी खे हाथों जोड़ियों लाई।
देवी थोई जामटे री गरणे लाई,
माता तुए देखिए, हरती ने लाई।
अडखे नोइणी पाडिड़ा चेली,
जीता लिआउवा भारतो, तो देउवा छेली।
जामटे री देविए शुणों ने घुणों,
लोटा ढाला पाणीरा बकरा ने घुणों।
तादी मियाँ रोजपूती आई,
चोडाई जुते राउतिया देवी दी लाई।
से जे कोरे देविए, मुनो भाउले तेरे,
राजे सितो भारीतों जीती लियाउणों मेरे।

फौउजो लागी होकू री शिया पुरी जाई,
शिया पुरी बाईं गाशी सातू लुए खाई।
जुठे निउठे सातू लुए बाई उदे पाई,
बाई एजी राणिरी, भुटीणी लाई।
घोड़ीं तुओं दोलूए मुनो दे घाटों,
उवी लगी फौउजो मियाँ री नोइणी री बाटों।
नोइणी थोई चुगानों दी चोकमी पाई,
चिटा थोआ झंडा सुदामे चौगानों गौडाई।
बातों मियाँ सितीबुला ला ज्वाला,
बीचों कौरणा चुगानों, राउतिया मोहाला।
होकू थोआ बातों सीता भोरभाई।
मानो ने दोलू मेरे मौनो रा जाणा,
राज हुओ चेई राजे शो जु आसों इयाणा।
दोलू दियो मोहतू होकू खे काजी,
तेरे सीते झगड़े खे हा भाजिए भाजी।
दोतिया कोरण मियाँ, मोहलों रा फेरा,
झोगड़ा देणा बोसाए जेशा जी चाउला तेरा।
आजी लोणी मियाँ, भंडारों री रोटी,
बकरा दिते काटणो खे, सुतनो खे कोठी।
आई गिआ मियाँ, दोलू रे फेरो,
गेगो खाई मियाँ, जेरे कुंडो रे फेरो।
खोटा मोहता दोलू, कोरना बेने धिजा,
राजे सीता जुझों, ताँ कोवे ने सीजा।
आगी लोई सासों दी, कालजे दे दागो,
आज की कोटली रातुटी, दुती खुली भागो।
रातो थोई रोइणा, बोड़ी ठाइए काटों,
राती बीयाणा मियाँ जुओं मोइलों री बाटो।
होकू रोवे सिगटे जिशी बरादुवारी दे जाई,
भेट राजे खे मुरो पाई, जयदेवा शाई।
पोड़ी गिआ होकूआ, बिचों दा गेरी,
भेटा पाई होकू मियाँ, पीठ दोलू फेरी।
होकू थीओं सिगटे उडो पुडो हेरो,

जाणी पाई होकू, मियाँ दोलू रे फेरी।
तादी रोई होकू, रोजपूती आई,
खाँडा लोआ चाकरो, गाहे हेराई।
दोलू हेरे चाकरो, बुझोणी जोई लोई बुझाई,
मो शी जोई रोई चाकरो री होकू सींती फेराई।
बुलो ने दोलू मेहतिया, नासुमझी, री बातो,
गाली देइला, काटी मारूवा तेरी जातो।
तिनी तोवे चाकरे थोआ, घेरिणा लाई,
दोले थोई मोते खे, खाडे री पाई।
दोलू होलै मोहते रे बोडिये भागों,
घा तेरा होकूआ, खंभे दा लागों।
खाँडी रोओ चुटी, भानजे सिगटे खे मोत थोई लाई,
भानीजए बाइडा जाईवे, सोवी खे रामा रूमणी मेरी शाई।
खाँडे री लागी गोइरी शाटो, मारो चाकरो लेरो,
बारा गुरजा दुआरी दा, होकू जियाँ दुणी दा शेरो।
होकू थोआ खाँडा, खेलणा लाई,
कोठे गाई थोई इट तेरे माथे दी लाई
कुक्डे छूटे लोहू रे, उवे ओसमानो खे जाई,
होकू थोआ चाकरे धेरों दा पाई।
आइड़ी शा बाघ थोआ, पाछणा लाई,
हेर मेरिया मियाँ, भागणी ने खाई।
जीउँदे साँसे थोआ छेउड़ी देखाई,
भूई दा पोडा धोनिओं, साँसो उड़ाई।

नेगी दयारी

नाहणीये राजे चीठी दीणी लेया,
कुडू बाजारा दी आई।
हाँय बोला हाँय मेरे कुडू कैरे राजेया,
कुडू बाजारा दी आई।
चीठी दीणी लेया बोला नाहणीये राजे।
'जूए पासै तू खैल दा आए।
जै न आँवौं तू जूए पासै खैलदो,
कुडू देॐ तेरो मूँ जलाए।'
कुडुए राजये चीठी लाई बाँचणी,
माँझा माँझी ओठगेओ दौड़ी।
'हाँय बोला हाँय मेरी कुडू कैरी राणिए,
जौ कै आज बीपता पौड़ी?'
घोड़ी बीता छाड़े बोला चाकरा राजयै,
नाई गैए छिवरै दयारै।
'सौहरा का आऔ बोला होकमा 'दयारिया',
ओओ लोड़ी कुडू बाजारै।'
जाँदौ गेयाँ बौंदा नेगी दयारिया
कुडू बाजारा दो आओ।
'मुले बीता कौरे बोला होकमा,
राजेया केऊ कामै मूँ बादाओ?
डौरे बीना डौरे मेरे कुडू केरे राजेया,
पीठी लै मूँ नेगी दयारी।
जैणों बोलू मूँ तैणों कौरे तू राजेया,
विपदा ना पौंदी गो भारी।
छीआ बीता शौआ ईना घोड़े दे,
पालकी नौ शौआ 'डाँगू' सपाही।

ठारह जै भेजा ईनों कुडू केरे कौलशा,
पीठी दैआ गो हिड़मा माई।
कुड़ ये राजये चीठी दीणी लेया,
नाहणी बाजारा दी तोबे आई।
हाँय बोला हाँय मेरे नाहणीये राजेया,
नाहणी बाजारा दी आई।
'ताँबू दी न रौहंदौ चानणी न रौहंदौ,
एहा गृहौड़ी बैड़े बाणाए।
जै ना बाणाय तू बेड़े भौंणा,
तेरी देऊँ नाहणी गो जलाए।'
नाहणीये राजये चीठी लाई बाँचणी,
माँझा माँझी ओठ गेऔ दौड़ी।
'हाँय बोला हाँय मेरी नाहणीयें राणिए
जौ कै आज बीपदा गौ पोड़ी?'
'तौबीए ठाकूती राजेया गो,
शूंणी गोल्ल न पौ धराड़ी।
कौरणी आपणी भगतणीं पौड़दी,
आपणें पैरे पौ लाई खराड़ी।
डौरे बी न डौरे मेरे पती पड़मेशरा,
पीठी लै मूँह होंदी पिआरी।
जैणों मूँ बोलू तैंणो कौरे राजेया,
बिपदा न पौ पौड़दी भारी।
ताँबुए न डाँदी ना डाँदी मैहला,
ना सौ सौ कदै बाड़ाई।
कुड़ रे बाजीरा तेऊ नेगी दयारी
सौंगे मूँ लेंऊँ धौरमा लाई।'
एक बी ना पौड़े बोला नेगी दयारिया,
'तीरथू' बाह्मणे पौ मारे।
जूण बी हारदै जूए-पासे मारे।
जूण बी हारदै जूए-पासे खेलदा,
तैउए कौरदो पौ पतारे।
तीरथू रीबाह मणी लौंका केरी बेसवा,

सारे देशौ पौ तीरथू लूंडा।
ध्याड़ी बीता कौरदौ लिलरी-सिलरी,
बैड़ी काटाॲंदौ पौ मूँडा।
एक बीता बाजी मारी नेगी दयारिये,
घोड़े हेरे पालगी पौ हारी।
दूजी बोला बाजी मारी नेगी दयारिये,
हारी दीणी गो फौजो सारी।
ठारहा कलशा पौ देवतै हारै,
जैबी ची खैलौ बाजी दयारी।
चौथी बाजी लै नेगी दयारिये,
आई गेई मूँडा री पौ बारी।
'कीदी बीता गेए घोड़े बोला पालगी,
कीदी गेई फौजा पौ सारी।
कीदी बोला गेऐ मेरे कुडू कैरे कोलशा,
कीदी गेई हिड़मा पौ माई।'
'दूजी बेरा खेले तू जुऔ नेगिया,
मूँ बी समूरी पौ लाई।'
एक बीता जूओ खेलौ नैगी दयारिये,
घोड़े बोला पालगी आई।
दूजा बोला दाओ मारो नेगी दयारिये,
जीती हेरै डाँगू सापाही।
चीए बोला जूए लै कुडू रे नेगिए,
कौलशा देवते गो आए।

—कुल्लू की इस गाथा में कुल्लू और नाहन के राजा के बीच संघर्ष की कहानी है। नाहन के राजा ने कुल्लू के राजा को जुआ खेलने के लिए बुलाया, नहीं तो कुल्लू को राख करने की धमकी दी। इस संकट से कुल्लू के राजा को उबारने दयार के नेगी ने अपने को प्रस्तुत किया। दयार का नेगी पहले जुए में हार गया, बाद में जीत गया।

नोतराम नेगी

दूणी लोई पाँवटे री मुगीले खाई,
बाई उदे पाई लोई मोहिशी दे गाई।
नागी तोरवार राजे मुजीरे पाई,
तिआ भी कुए चाकरो दियो मीयानो भोराई।
बादे तिनी चाकरो दी धुत बेने आई,
देखी तोरवार थोई तिनिए टाटी नाई।
तेदी बाणा भूपसिंगा राणिए भाई,
मेरी जाणो काजिए मोलोते खे जाई।
छोकरा नोती राम शुणा, वीरो रो शिरो,
सी नी सोको मुगलो ली लिरो।
भूखा होइला नोगिआ, रोटी नोइणी खाए,
मोलोते शा छिटका देशो राती जाणो नोइणी आए।
तेने भूपसिंगे ढिल बेने पाई,
घोड़े दी लोई काठी चोड़ाई।
नोइणी छिटका रोआ मोलोते खे जाई,
नेगी थेई नोत राम खे रामा रूमीणी शाई।
ताँ थोआ नेगिआ शीधड़ा नोइणी बुलाई,
तेने नेगिए ढील बेने पाई, शिंगा लागा जमने गाई जाई।
नाव रे मेरे नावरिआ नाव देणी लाई,
इयों देणा घोड़िए जमना पाडा कोराई।
जमना शा छुटका नोतराम राजे आगे जाई
भेट राजे वि मुरो पाई, जयदेव शाई।
बुलो राजा साइबा मुदी का लागी राई,
किओ थोआ राई दा, मु नोइणी बुलाई?
दुणी लोउ पाउँटे री मुगीले खाई,
बाई उदी पाई लोई मोइशी दे गाई।

बातों लाओ राजा, नेगी ने शुणो,
नेगीणो मेरे नेगट्टू, घाचला कूणो।
केइखे ढोली नोगिआ तेरे टाटी री केरो,
नेगीणो खाले नेगटू भुँडारो रा सेरो।
जु काटी लियाइला मुगलो री शिरी,
कालसी देऊँ तोसलो दी बैठी बोजीरी।
जे लियाइला नेगिआ मुगलो रा ठाना,
खेड़ो देऊ सीया रो, सुमराड़ी रा लाणा।
दुणी खेली पाउँटे, नेगिआ सूरमे री मारो,
चाटे लाए टाटी रे, लोऊ रे घारों।
एजा आया मुगलिया नोतरामो रा शोटाका,
भूटी गिआ दुणो, एजा आया तिंदे रा साटा।
फोउँजो थोई रोहिले रे भागणी खाई,
हेटे मेरा नेगिआ हेट तेरी माई।
काटी लुए बोइरी जिओ दाचीए सागो,
कोइरी पोड़ा भितरी, जियाँ बकरी माजे बोरागो।

सूरमा मदना

पाणी गाणा समुंदरो हीरा उपजो मोती,
चाँदो गाणे सूरजो जीणे धरती ओटी।
सीजा गाण मरदो जू रोहणा जूझो दो मरी,
सीजी गाणी बोईरो जू साँई सीतिया जलो।
दाता गाणा सूरमा नाँव रामा रा लोणा।
एइदा आगे म्हारे ऐबे मदना गाणा।
मदना बोलो चौरे रा छेड़ो ख चाला,
हाथो दी तलवारो काँधोए भाला।
'छेड़ो ख आम्मा शामला देणा शकता बान्ही।'
'बांहदी नी बेटा शामला तेईं देंदी नी जाणी,
छेड़ो ख जाला बेटा तेरे बासो रा कोली।'
'कोलिए रो नालिए डाँड नी चुकदा।'
'छेड़ो ख लाउयें बेटा तेरे 'नाइएँ' भाई।'
'बुरा पाणी आम्मा दूणी रा भाई बधला रोगो।
आपी जाऊँए छेड़ो ख हाँ नोआ जवानो।
लड़दे देखो मी भिड़दे राजा-दवानो।'
'तू चाला साँई छेड़ो ख मेरा का होला हवालो।'
छेड़ो जांदे साँई ख ईशा बोलो नारो।
'दिन कटले ईंदे तो तू रोही ईंदी,
जू ना काटियों तेरे जाई भाई री थोली।'
'शुणीदी नी साँइया भाई भावजो री बोली।'
'नाइयां मेरा भाइया ओरड़ा आई,
आपणे लौला गोदी दे मेरे भोइंदे खल्हाई।
आपणे देला घीऊ-दूधे मेरे शुकिया खलाई।'
घोड़े दी मारी चाबुको उड़ो दूणी दा डाँडा,
डोये लागा मदना पोंहचा बेशी रे घाटो।

बेशी री बाँय ग रोहा मुजरा लागी,
घाटो जायरो बेशी रे लाई तूरिए गीहो।
'गीह लाई तूरीए मेरा कालजा काँबा,
ऑंडा दे ऊदू नेगिया मेरा चोलणा लाँबा।'
छींटो रा घाघरा सुकंबी पागो,
बामी चाणी रो बणा कुकटा चांबी।
हाथो दा लोआ डाँगरा गिया मालो दा पड़ा,
खाँडे री लागी झाँवली बेशी रे गांवो।
'बेणू' जाणी भाटकिए लोऊ बोलणू लाय
'दूणो दी जाणी ढीगो दी रोही बीजली आय।'
बेशी री भाटणी गोई गीह भालणे आई,
इतड़ो का बोलली सी भाटकी बेणू।
'कलासू' रा मदना कुजटा होला भाई?
बेशी रे घाटो रोही खुमली शी लागी।
'गूठी दा जेसरे फोला मुंडो दा धोबा,
कलासू रा मदना इजटा ई होला।'
बेशी री भाटणिए लोआ मदना सराही।
'धन तीयों माई खे जीयें कुखटा जाया,
धन तीयों दाई खे जीयें ऊभा ठवाये।
धन तीयों बहणी खे जीयें गोदी खल्हाये,
धन तेसी बाबे खे जेणीये छेड़ोख लाया।
धन तेसी बाटो खे जीओं चाली रो आया।'
मदने सरदारे लोउ बोलणू लाय
जे भेजी था भाइया हों पीठड़ी सूनी,
'जे भेजी बाबे बुढड़े जाओं लजया आय।
आपी जाउएँ छेड़ोख ओसो नोआ जवानों।'
बेशी री भाटणिए लोउ बोलणु लाय
'बाँठिया शा मरदो जाणा एथिए पाय,
एसी जाणी बदलू देओं साथो दे लाई।'
'ऊदू' बोलो नेगिये लोउ बोलणू लाय
'एसरी बदलू हाँ देशो माँजे नी माँनू।'
बेणू भाटकिए बड़ी पाकड़ी ओड़ी।

साथी जाणा मदने रे मेरे डोले दे चढी,
की लोइजा गोइली की ब्याहयो छाढ़ी।
मदने चौरे लोउ बोलणू लाय
'धावे जांदी नी बोइरो दाँव जुड़दी नी गाव
आज की बारे पाछू ठोलियो जाय,
होटी आउँए छेड़ो दा तेईं जाउँए ब्याही।'
ऊदू जाणी नेगिये लोउ बोलणू लाय
'मेरो शुणे मदनया उरतेईं रो डेओ।'
'हामे ओसो ऊदूआ सूइने री मोरो,
चोरी रो नी न्हीणी हामो बोलले चोरो।'
बेशी रे घाटो मदना लाओं सगाई,
सी चाले छेड़ो खे चालदे ही चाले।
जांदे गोये बोंहदे कल्हूरो रे बाड़ो,
धूरो-कल्हारो दी नजरो फेरो।
सारी सेरो कल्हूरो राखी ताँबुए छाय,
तांबू देखी तुरको रे चूटी मदने री केरो।
ऊदू जाणी नेगी खे मदने बोलणू लाय
'तुरको सीथे लड़ने री ना जाणदे सारो।'
'तुरको लोई मदनया ओटो की ओटो,
हामे लड़ो सामने चोटो की चोटो।'
डोये लागे छड़ायतो 'साँढूरी' नदी।
'देविए मेरी साँढूरीये भौणो दी कीली,
होटे आमे छेड़ो दे देमे धौली छेली,
बोल करी म्हारा ऊपरा झाँडा देवे परहाई'
साँढूरी देवी खे लोई मानता मनाई,
मदने लाई जाय रो तांबू दी आगो।
आगो लाई तांबू दी उड़ा धुँए रा डाँडा।
'केहर सिंग' बुगलो दिया तांबू दा घेरी।
मदने सरदारे थी खाँडणो बाही,
काट दिया केहर सिंग गयली माँजे री बाँही।
लड़ने-भिड़ने खे ओसो सोंआ मदानो,
लड़दे दीसो भिड़दे राव होरो दिवानो।

काट दिऊ मदने सावणो रा सा घासो,
लहू री लागी गंगा शीरी री साटो।
फेरी राखा मदने बीजली खाँडा,
काट दिए तुरको राखा तीसरा बाँडा।
लड़दे भिड़दे डोए आगे राउले बागो,
बागो घेरा तिने 'पांओडा कशारा।'
हेड़ी लोये तुरको दूणी री ढीगो,
लाशो तुरको री लहुए भीजो।
मुरदे पांदी फेरा ऊदूए आपणा घोड़ा,
मोयले में भीज गोआ पैरो रा जोड़ा।
मुरदे पांदी फेरा नेगिए गूँठो,
लोहू मेझ जुड़ी गोई खाँडणी री मूठो।
होटी आया मदना कल्हूरो रे बाड़ो।
कल्हूरो रे बाड़ो नेगी बोलणू लाई
'अब रोही मदनयाँ पाणी री बाँओं।'
करछे री अणिये लोई मोहिशी खाँची,
पाणी रा बाँधों डोआ बीच शहरो पहुँची।
कुणिए छाड़ा पाणी राव इशी सूँची।
राव जाणी साहिबे लोउ बोलणो लाई।
'आइ रोहा कूई मरदो दाना बजीरो।'

—इस गाथा में सूरमा मदना के 'चौरा' के युद्ध में जाने का वर्णन है। माँ, पत्नी के रोकने पर भी मदना युद्ध के लिए प्रस्थान करता है। मदना सरदार घोड़े पर सवार हो हाथ में डाँगरू लिए चलता है तो रास्ते में स्त्रियाँ उस पर मोहित हो जाती हैं। मदना कलहूर में पहुँचता है। मदना 'केहर सिंह बुगला' से जा भिड़ा। मदना ने तुर्क भगा दिए।

मदना-ऊदू

'जोऊ' कारूका तोएँ 'चौरे' खि जाणा।
'जोऊ' कारूक डीवा 'च्योंटी री धारौ',
जोऊ कारूके जाठा 'मदना भाड़ो'।
जोऊ कारूक जाठो तीतिये शुणो ना कोई,
जोऊ कारूके दीती पीढ़ी री गाली।
तबे मदने भाड़े शुणा कोयली दा खड़े।
'जीसे तोसी आवे मरद कोटी रे ठींगे,
अश्शीये भरूमा राजा रा।
तूसो घाणी घड़ूमा डींगे,
जोऊ कारूक तू बिशिये दा हीला,
वाधे 'चायले' ताँ देओ ना कोयें ठीला।'
'माइली रो 'मलांगणों' रा निकाल धूंआ,
शुणीदा ना पीड़ रा मआ।
'ऊदू' रो 'मदना' दूनो छेड़ी खी शादे।'
राजा साहिबा हामों कधी ना धीजा,
'छेड़ी खी कीशे जाओ हामें चाचा भतीजा।'
'ऐसो छेड़ी खी तूसो जाणिया जाण पड़ो।'
मदना भाड़ो गोआ थर थर कांबी।
'चाली जी ऊदू चाचेया 'चिरमटे' जामी,
'शाडू' चनाल दा हेमीं धोणू बणामीं।'
ऊदू रो मदना दूनो मिरमटे डीवे।
शाडू रे चनालिये शाडू घर की गाँवे?
शाडू चनाल होला भीतरा सूतिया।'
शोड़ चनाल थर-थर काँबा।
'भाड़ो री धणू खी मेरे नाहर नी बणिये लाँबी।'
शाड़ चनाल तबे बोलदा लागा,

ऊदू रो मदना दूनो भूइने दे बेठे।
शाडू ये भाड़ो री धणू कर पाये तैयार,
ऊदू रो मदना दूनो घरो खि आये।
बूढ़ी माँये बाटा तबे आटा,
मदने रो ऊदुये तरकश शाये।
बूढ़ा 'बापू' देओं कानो दे बीड़े।
'तू भाड़ बेटिया जांदा जे पाछडू फिरी।'
ऊदू रो मदना दूनो होये तैयार,
बामुई ऊदूये तबे बीरो ली पागो।
दूईने से मानछो तबे ऊछणे लागो,
बामुई भाड़ो ऊदुये दीते कोयली खी पीगो।
तेतणीये था 'काछिये' छिड़वी छीका,
मदना भाड़ो बिठा-बेठिये दा जाणी।
'माइले री छेड़ो दा कभी ज्यूँदा ना हटो।'
रबाली रो खल्हावी बेटड़े 'केसू'
'छेड़ो खो आइला भलड़े देसे।'
ऊदू रो मदना दूनो जुणगे खी आए,
राजा बीठा नूप सैन बारा दुआरी।
ऊदू रो मदना दूनो जुणगे खी आये।
दितीये जैकारी राजा पूछणे लाए
'ऊदू रो मदना दूनो छेड़ो खी जाओ।'
'राजा साहिबा तू कभी ना धीजो हामों,
छेड़ो खी दूने कीशे लगाये चाचा-भतीजा।
पलाशो री नाली लाणी डींगिये झड़ी।'
जोऊ कारूक डीवा च्यूँटी री धारो,
जोऊ कारूक धारो दा जाठा।
तबे जोऊ कारूक डीवा चौरे रे बेड़ो।
'इसो चाला छेड़ौ खी आपी साहिब राजा,
लाये धीड़िये टूंबौ सोभे जुणगो खी शादे।'
तबे चौरे पलाशू री नाली जुणगे आये,
राजा बीठा नूपसैन बारा दूआरी।
तीसी फौज राजा बोली जै कारी,

'कीशी आई रजेया छेड़ो री म्हारी वारी?'
तबे सारी फौजे राजा अरज करी,
राजा साहिबे से अरज ना मानीं।
राजा लाई साहिबे जोरा रो जोरा,
आपणी फौज तबे भाड़ो खी तैयारी।
तीदू दा भाड़ो डीवा टुंडलो कवाली,
टुंडलो कवाली दा भाड़ा घरे खी जाठो।
'मेरे मोहिशी रो भटाले भीतरो खी वाहनो।'
तीदे दा चाला डीवा भाड़ो टुंडलो री सेरी,
'तेथिए बसो भाड़ा बहिण तेरी साहिबा।'
गदंबरी बहिण ल्याई दूधो रा कटोरा,
'छयोड़ी जाती दी होंदी ना शूँधो।
छेड़ो खी जांदिया ज्याई निमला दूधो।'
गदंबरी बहिणे दीती सारली लेरो,
'गदंबरी बहिणे तू रोई ना पीटी।
आउमाँ जबे हटेरो न्हिउमाँ शादेरो घरो,
शौ दीमाँ मोहिशी गाभणो गाँवी।'
तीदे रा चाला डीवा बेशी री पनीड़ी,
बेशी री बाह्मणी आई पनीड़ी।
बेशी री बाह्मणी भरवे ताँगो।
'देखियो छयोड़ियो एस भाड़ो रा रंग।'
इक सी बाह्मणी तबे भाइया बोला-
'एसी जवानी कोए छेड़ो खी चाला।'
'राजा साहिबो माँ धीजा ना एंथी।'
तीसे दूइ बाहिं दे बालटू खोले।
तू पोरा होटे घरे खी तेरे डाँडो खे होले।
एथीं बालटूए मेरे डाँड ना धीजो।
तीदा रा चाला डीवा भाड़ सेरी रे घाट,
सेरी रे घाटो तबे लाई रसोई।
सेरी रे घाटो दा उंडा माइले खी देखो,
माइले मलाँगणे निकला धूँआ।
मदने भाड़े हुकम फौजो खी किया।

'माइले मलाँगणे माँ खो दीशिया धूँआ,
बान्हो तूसे कमरो शीघी करो रोटी।'
तीथे खो फौज डीवी माईले री सेरी।
'समझी भाड़ा ताँखी पकनाडू आये।
पहली ईणी खी तीने पाकड़ी तलवारो,
पहली फौज काटी धरणी बिछावी।'
'समझी भाड़ा मदना दूजी ईणी।
दूसरी फौजो खी सँभाली धणुओ,
काटी रो फौज धरणी बिछावी।'
'तू समझी भाड़ा मदना छीजरी ईणी।'
छीजरी फौजो खी भाड़े पकड़ा डगासा,
छीज्री भाड़े फौज धरणी रूलावे।
'समझी भाड़ मदना चौथी आई ईणी।'
चौथी भाड़े ईणी खी पाकड़ी बंदूको,
बंदूको री गोलिये घाये फौज ढाई।
समझी भाड़ा मदना पांजवी ईणी,
पाँजवी पाखड़ी खी डाँगरो सँभाला।
काटी रो पाखड़ी धरणी रूलाबी,
छेई ईणी खी पाकड़ी रांबी।
छेई ईणी भाड़े घरणी रूलाबी।
'तू समझी मदना सातवी ईणी साहिबा।'
'ऊदुआ चाचेया मेरे हाथ ना रोहा केई,'
सखणे हाथ बैरिए एबे मारा चाचेया।
पोरो दा बोलो ला क्हल्हूरीया साहो–
'किबे बाँधी चाली भाड़ा किबे बरछा बाँहू।'
'सारी कल्हूरो तेरे बाँधी ना जाओ।'
कल्हूरिये साह ये घाया बरछा बाही।
छाती बाहया बरछा पीठी दा पारा।
'ओह ऊदू चाचेया एबे बयरी मारा।
घर बानती ना मेरे लहूतले ल्हीवा,
आमा बोले बापू आगे बाहरे चाकरी खी डेवा।'
ऊदे चाचे कमरो कशो तेई री,

कमरो कशी रो डोली दा चुका।
तीदो रे चाले आये बेशी रे पानीड़े,
बेशी री बाह्मणी आई तबे पनीड़े।
'कल का गभरू जू आज चूकी रो आणा।'
बेशी री बाह्मणी ल्याई दूधो रा कटोरा,
तेतीए तबे छाड़ि पाये भाड़े मदने प्राण।
'मथरूआ' तूरिया एबे बेओ रा करीं बाजा,
एथे रा बाजणा जो शुणो जुणगा राजा।
हटि आया मदना जाय गोआ इन्हाँ रा।
तीदे रे चाले आये चौरे रे बेड़ो,
बूढा रो बुढड़ी दीली सारली लेरो।
'राजा साहिबा हामों कदी ना धीजा,
छेड़ो खी दो लाये थे चाचा रो भतीजा।'
केबरू री सेरी दी लोई चीता बणावी,
ऊदे चाचे तीने दीते भाड़ो दे दागो।

—यह गाथा मदना और ऊदू (चाचा-भतीजा) की है, जिन्हें राजा जुणगा ने युद्ध के लिए बुलाया। दोनों योद्धा राजा के आदेश पर लड़े और फौजें धरती पर सुला दीं। लड़ते-लड़ते निहत्था होने पर मदना कलहूर के राजा के हाथों मारा गया। इस गाथा में दोनों योद्धाओं द्वारा राजा के हाथों न बख्शे जाने की बात भी बार-बार कही गई है।

सामा 'सैण' का

'सामा' सोयणी रा बणी गोआ मवाबी।
काढ़ा मुआमला राजा रा खाइ गोआ गराही।
गावे-मोहिशे परजा री गाहि करे मजियाणी।
तोबे दुबे जणे रिगडू ए गल्लो पाई लाई,
राजा नरपत पागिए दी शूणो।
'साच बोलो मेरे रेगडू का रे जोपा तूसी?'
'के नि जोपा साहिबा दुखा-सुखी लाई।'
'तूसी साच बोलो मेरे रेगडू राजा कूल्हू दे पिलो।'
हामें लाई राजा साहिबा मवाबी री गल्लो।
माँझ देशो दा राजिया 'सामा' बणा मबावी।
महिलो रे भंडारी खो माँगी चाँबी री वही।
चाँबी री बही दा करो राजा देखा।
'सात होए रजावली करो बिना दीत्ता।
कोरा आणो मेरा कागत कलम रो दवातो।
पोहिली लिखे चिट्ठी दा राम मेरी सलाम,
दूजी लिखे चिट्ठी दा पिउंलिए नाम।
किबे आवी मेरी नोहिणी खो,
किबे रोव्हे ना मेरे देशो।'
तोबे दू राजा रे चाकरो 'सोयणी' खे डिवे,
सोयणी जायरो गोए चाउड़े बैठी।
सामे री राँगड़ी मोरी माँझी देखी।
सामे री राँगड़ी भरी ल्याई नरेलू।
चाउड़े खी आइ हाथे दित्ता नरेलू।
सामे री राँगड़ी बाँबवें पैरो बोंदो।
'सामा मवावी घरे होले के गाँवें?'

'सामा सुत्ति रोहे 'जैया' बांगले री दाफी।'
'तिशा बि हों कोंहिं आदमी जु सामे देवो जगावे?'
तोबे तूलिए लाया बेटीए थाली दा चणाका।
सुत्ता हुँदा सेह सामा झुमी रो जागा।
'ऊभा उठी बापुआ गोए रावले आवे।'
'कींने खाई ना बेटीए रावले री खाटी।'
आगे निकलो बाहरो खी सौरी रो दलीचे।
माँझी रोहणे सोयणो रे बिछि गोई सतरंजी।
सामा दूइनो जैया तोबे बाहिरो खी आए।
चिलके सेह ला गोए तोबे कचहरी दे बीठे।
पागी दा खोले तिने कागत दित्ते सामारे हाथा।
तोबे सामा तिने जैये बांचने लाये।
बाँची-बाँची रो कागत पाये गीठी दे फूकी।
'तुसी दूने आवी बोली चढ़िआओ राजा रो राणी।
राजे दीमा गाँवटू राणी भरली पाणी।
काले करे इन रे मुंटू लांबे देओ धाके।
पाथा दीत्ता शेरशो गाँठड़ी दा बान्ही।
ईन्हो राजा गिणी रो ऐणी एतणी आवी।'
तिनो राजे रे चाकरो दे लाँबे दित्ते धाके।
सोयणी सैह चाकरो पोरे नोहिणो खी हटे।
राजा बीठा था नरपत बारा रे दवारी।
तोबे रिगडू ए राजा बोली जैकारी।
'बोलो मेरेयो रिगडू ओ तेनी सामा रे बारे।'
'पाथा दित्ता साहिबा शेरशो गठड़ी दा बान्ही।
ईन्हो राजा गिणी रो मी खे एतणी फौज लेवी।'
'मेरे नेगी तारू गढ़ो रे ओरे लेओ शादे।'
तू तो भारी लैजा फौजो बड़ा समानो,
मेरे बेगी जाय गोआ आकड़ी सोयणो रा मवावी।
तारूआ नेगिया तू तो आ बो सोयणी फूकी।
तारू नेगिये लाई फौउजो जोड़ी,
चाँगे-चाँगे लोए हाजरी चाँगी बंदूको।

शिंके दारू रे बादरे हाथी री बांधे पीठे।
आगे निकला मोहरे दे नेजे रो निशान,
तोबे चढ़ी फौज तारूए री जमटे री घाटी।
घाट तेसी जमटे रे करी घाया मोहाला।
धूँए री बादली गोआ सूरजो झीमा।
सामा बीठा सोयणी तोबे पाँडले शुणो।
'ताँ बे बोलू मेरा घोड़ुआ कूण उघमा राजा!'
'राजा कोई नी उघमा तारू री नीछो।'
तोबे तारू री फौजो आई सोयणी रे बाड़े।
सोयणी रे बाड़ो दी लाई तारूए आगो।
सामा सी सोयणी रा लांबी दिला हाको।
'डींगरू-कींदरू मेरी धाय खी आवी।'
तीन्हो सानों खी सामा हामे कोई ना आमी।
बारा ढोये बरशो दोहची दे भारे,
घर चीणे तोये आपणे तूणी काटे म्हारे।
ईशु, लागी बोलदी सामा री नारो—
'तेरे लड़ो हाजरी मेरे जाय रो डूमणे।'
तोबे ईशु लागा बोलदा सोयणी रा सामा।
'कदी भ्येली रातरी कदी होला दिशे।'
तोबे चढ़े आय रो मोहेरी धागू सामा रा केसू।
'चोड़ुआ कोल्टुआ इनो ध्याड़ी खी पाला।'
भीतरो दा झटला सी बे चोड़ुआ रो कोल्टू
'तारू पाहरा नदरी लाओ साँमा जी गोली।'
तीनों री गल्लो खी सामा हँसनी लागा।
'जे बान्हीं ताँ दी मेरेया चोड़ुआ लाँदा क्यों नी गोली।'
सोयणी री सेरी दा गोआ हामला लागी।
तारू नेगी री फोउजो रा घा काटणा किया।
तारू नेगी सी नोहिणी रा तोबे लागा रूँदा।
'काटी राजा री फउजो हाँ देशो जोगा नी होंदा।'
तोबे लिखी रो तारूए कागत नोहिणी खी दीत्ता।
'सदा काटी तारूआ घैणी रा घा,

तू आजा मवावी खो ओरे लेवी सासो।'
तेस तारू नेगीए दी आए गोई धीरो।
झूरा रो रूलिया हाजरी कालसी खी डीवे।
जोबे जाँदा पड़ी जांदिए रैन रो रात।
तोबे लागे डूबी री कालसी पौली रे घाट।
बाहरो दा झटला रूलिया रो झूरा—
'पौली रा डूबिया तू देई पौल खोली।'
'तू केई रा आदमी कीणे जोगे आया।'
'नोहिणी रा हाँ आदमी कालसी खी आया।'
तू करी एबे झूरेया बागो माँझे डेरा,
तोबे बोरो दीमा बाकरा भलखो रे सबेरा।
आधी गल्लो लाँदिये भ्याई रैन रो रात,
तोबे खुले डूबी री कालसी पौली रे पाट।
तोबे झूरा राजे रा हाजरी भीतरो खी डीवा,
पागी दा खोला कागत दीत्ता डूबी रे हाथो।
हेमचंद डूबी लोआ कागत बाँची,
'म्हारे बेगी जाय गोआ आकड़ी सोयणी रा मवावी।
सात हुई रजावली सामा मामला न दीत्ता।
ताँ खो माँगी डूबिया गढ़ो री जमातो,
चाँगी लीवी हाजरी चाँगी लाहौरी नाली।
बड़ी लीवी फौज भारी लीवी समानो।'
तोबे हेमचंद डूबिए लोई फौउजो जोड़ी।
चढ़ी फौज हेमचंदो री कालसी री धारो।
धारी तिने कालसी री करी पाया मोहाला।
दूजी आया हेमा मंजलिए नोहिणी रे दरबारो।
राजा बीठा था नोहिणी रा बारा दरी।
हेमचंद कालसी रा बोलो जैकारी-
तोबे देई दूजे जैकारी पूछो राजा ईशु-
'म्हारे गोआ आकड़ी सोयणी रा मवावी।
राजा री फोउजो रा घा काटा कीया।
हेमचंद डूबिया सोयणी खी जाणा।

भारी लईजा फौज भारी समानो।'
चढ़ी डूबी री फौज जमटे रे घाटो।
धाटो तिने जमटे रे करी पाया मोहाला।
जमटे रे घाट थाई जमरे रे बुटे।
साज बान्हें तिने जमरे गोये झूटी दा छूटी।
बिधनिया बाधरिया बीठा का तू हेरे?
दारू बाँधे चाकरो खी ताकड़ी रो सेरे।
दारू बाँधी चाकरे पाई आपणे काँधे।
'पाथा-पाथा दारू आ की खे चाकरो माँगो।'
दारू रे बाधरे दी गोई चमकी आगो।
आधी फौज हेमे री गोई दारूए जली,
आधी फौज हेमचंदो री सोयणी खी चढ़ी।
लिखी डूबीए कागत सामा खी दीत्ता।
'सामा तू ओरा माँ मिलो खी आवी।'
'चूपा रोह तू शरमो खी कालसी रा डूबी।
गाय चारी मोहिशो आज गिरा लोभी।
जपे तू डूबिया काल्ह माँझे रे दीसो?
मोये धाचा था डूबिया छाय रो आलो!'
आधी फौज डूबिए री सोयणी दरबारे।
सोयणी रे बाड़ो दी लाई हेमे आगो।
सोयणी री सेरी दा गोआ अमला लागी।
बेटे निकले सामा रे सींह जाय गुड़ने।
ईशु लागा बोल्दा सोयणी रा सामा—
'तूसे बोलूँ मेरे बेटेयो इनी ध्याड़े खी पाले।
पोड़ि जालो जैया तेरी लाँगड़ी खूटी।'
वाही जैये मूसले आधी जागरो चूटी।
बेटे सामा रे सेरी खी दौड़ि रो पड़े।
सेरी मांझे सोयणी री गोआ होमला लागी।
बीड़ा लागा कमानो रा जौ जिहे पूणा,
बीड़ा लागा बंदूको रा मेघा जिहा गुड़ो।
सेरी माँझे फोउजो रा लेख रोहा ना जोखाँ।

लिखे हेम कागत नोहिणी खी दीत्ते।
'जली गोए राजा करमो जली गोए भागो,
आधी फौज काटी सामे, आधी जली आगो।'
'सदा काटी हेमे घैणी रा घाओ,
तू ओरा आवी नोहिणी खी लेवी आपणी जान।'
हेमचंद हटा नोहिणी खी पाछू।
राजा तिने नोहिणी रे मत पाई कमाई।
जामणू रो सामा साला होले बहणोई।
दू राजे रे रेगडू जामणू खी डेवे।
जामणू बनायक ओरा राजे बुलाया।
राजा बीठा नोहिणी रा बारा रे दरी—
'म्हारे बेगी गोआ आकड़ी सोयणी रा मवावी।
सामा आंदिये सोयणी रे देऊँ निकड़ा गाओं।'
खोटा राजा तू साहिबा ताँ धीजदा नाहीं।
राजा तिने नरपते छू पाया जनेऊ।
'राजा लेई आमे जु सामा काटने ना देऊँ।'
गऊ रे गलो दा राजा चोड़ा तागा,
तोबे जामणू बनायक सोयणी खी डीवा।
सोयणो जाय रो जामणू चाउड़े दा बीठा।
सामा री राँगड़ी मोरी माँझी देखा।
'भाई री न्योहरी चाउड़े दा कोंई बीठा?'
सामा री राँगड़ी मत री थई स्याणी।
भरी ल्याहई नरेलटू लोटड़े दा पाणी।
सामा री राँगड़ी चाउड़े खे आई।
तिसे हाथ दीत्ता नरेलटू तोबे पैरे बोंदे।
'बागो रे फुलडू तू कीदा आया?'
'सामा रो जैया घर होले खी गाँवे?'
'मवावी सुति रोहे सोयणी रे बाँगले दे उच्चे।'
'तिशा बीहो कोई आदमी जू उभे देओ जगावी?'
थूली सामा री बेटी बाँगले खी डीवी।
थूली बेटीए सामा पाया जगावी।

'ऊभा उठे बापुआ मामा रोहा आवी।'
तोबे सामा रो जैया बाहिरो खी आए,
सामा मिलो जामणू प्यारिये काँधे।
'तोबे जामणुआ साला कीने जोगा आया?'
राजा तिने नोहिणीए तेईं जोगा लाया।
किशी बणी सामा तोएँ राजा खी ताँ?
राजा साथी सामा नाईं चाकले माण।
'राजा साहिबा जामणुआ, बेगी होला खोटा।
राता तेस नरपतो नाईं धीरजा आथी।'
'छूरी मास बराबरी नाईं सामा जो होंदी।'
ईशु लागी बोलदी सामा री नारो–
'बोहिण भाणजे री ताँ खी हत्या लागो।'
राजा तिने नरपते छूँ पाया जणेऊ।
सामा री राँगड़ी मतो री सयाणी।
'सामा न्हींएँ जू नोहिणी खी ओरा सी नी होटो।'
'तावी रांगडीए तू सजरा घीओ।
खोटा राजा नोहिणी रा नाईं ल्योंदा जीओ।'
ईशु लागे बोलदे धागू सामा रा केसू।
'सात जीते बापू होमले सात कीणी लड़ाई,
एबे बापुआ नोहिणी खी आपी हांडि रो चाला?
जोबे डे गोआ नोहिणी चाली म्हारा ना बोसो।'
सामा री राँगड़ी भुलभुलुए रूँओ।
'बीठी रोह राँगड़िए जू जामा हटी रो आवी।'
तोबे जामणू रो सामा नोहिणी खी डीवी।
राजा बीठा नोहिणी रा बारा दवारी।
सामाए नोहिणी रे राजे दी जैकारी।
दींदिए जैकारी राजाए पीठड़ी फेरो।
'हेकड़ी राजा पीठड़ी इनी साहिबा तेरी।'
सामा लाई हादरी राजा चुप्पा शुणो।
'तेरे शुणे सामया सूइने रे मोरो?'
'मोरो मेरे सूइने रे साहिबा थे,

बहू रो बेटे खेलणे खी न्हीए।'
'बहू तेरी थी शोभटी राजा बेहड़े खी था माँगो।
खशिए खी हो खशटी साहिबो खी राणी।'
'जोरू रो जमीनों खी सदा रीढ़ो साहिबा सिरो।'
'सीधू मेरे ठाकरा मत्त दे कमाई,
बड़ा कुड़मा सामा रा दे नोहिणी आणी।'
सामा करि पाया जैया चाकरो रे हवाले।
हाथ पाई हथकोड़ी पैरो दी बेड़ी,
सात कंपनी राजे री सोयंणी खी डेवी।
बड़ा कुड़मा सामे रा पाया नोहिणी आणी।
ईशु लागी बोलदी तोबे राजा री राणी–
'बहू आणी पाई सामा री कोस मोहले पाणी?'
तोबे सामे मवावी रा फाटी गोआ कलेजा।
'ओरे लहेवी राँगड़ी माँखी पाणी री आलो।'
सात बेटे सामा रे बंदी खाने दे पाए।
ईशु लागी बोलदी तोबे राजा री राणी-
'सामा गुड़वाणे खी ताता करो पाणी।'
'तोबे ताते पाणी राणिए सामा ना गूड़ो।'
ईशु लागा बोलदा नोहिणी रा राजा–
'सामा काटणे जैया जमना रे काच्छो।
जू रज्जो रकते ईनों रे जमना रे माछो।'
सामा न्हीए जैया जमना रे काच्छो।
फोट्ट बाह्र या डाँगरी रो चीणा चमारे।
रज्जे रकते तिनो रे जमना रे माछे।
सात बेटड़े बीचू एक भागी रो डीवा।
सी सामा रा सुंदरू गोआ भागी रो डीवा।
जमटे रे घाटो दा लांबी दे गोआ हाको।
'सींहैं डीवा भागी रो घेरी चाकरो शीली।
तोबे जाणी माँ सामा रे लामा नोहिणी आग।'
सामा रा सुंदरू जाया डीवा घड़वाले।
घड़वालो जाई रो भरा बेहड़े दा पाणी।

छाः महिने सुंदरे भरा तिथे पाणी।
छाः महिने पाछू राणी बाहिरो खी आई।
घड़वालो री राणी पाया सुंदरो पूछी।
'कोय रा भूमि होला कोस रा जाया?'
'राणी, सोयणी ए भूमिया सामा रा जाया।'
'तिथ जाया सुइने दा इथ कीनी जोगा आया?'
'राणी, राजा तिने नोहिणी रे कीया सत्यानाशो।
सात-आठ काटे घरो रे राखी ख्वासी।'
सुंदरू री अरज बेगी राणिये सुणी।
राणी सी घड़वालो री राजा आगे डीवी।
राजा आगे राणी तोबे अरज करी—
बेटा सामा रा सुंदरू तोबे भीतरा शादा।
'राजा तिने नोहिणी रे का कीया तेरा?'
'राजे बाढा कठ्ठा मेरा कुड़मा जोरू राखी ख्वासो।'
राजा तोबे घड़वालो रा हिरखे भरा।
तोबे राजा घड़वालो पाई मजत जोड़ा।
चढ़ी फौज राजा री न्हीओ बिना लेखा।
आगे निकले मोहरे दे नेजे रो निशान।
सींके दारू रे बादरे हाथी री पीठे।
आई फोउजो राजा री नोहिणी रे नीड़े।
राजा नोहिणी रा बीठा हूँदा शुणो।
धारी गूड़ो कालसी रावली दू आगे।
'साच बोलो मेरे रेगडू कूण उगमा राजा?
हामें खाया नी रेगडुओ तेसी राजे रा कीयें।'
'राजा ल्याया घड़वालिये सामा रा बेटा,
जू जाँदा डीवा जांदिए घड़वालो रे दरबारे।'
चढ़ी फौज राजे री नौहिणी दरबारे।
सामा रा सुंदरू तोबे देओ हाको
'आजा राजा नोहिणी लाइ पाणी आग।
जोबे डीवा था भागेयो गोआ था बोली।
राजा सीजला बदला मेरा आज गोआ छीजी।'

राजा डीवा मिलियो खी मूँह लेवी हथियार।
'राजा मेरी छाड़ी जानड़ी जू बोले माँ कबूल।'
छाड़ि पाई राजा नोहिणिये सुंदरो री जोड़ी।
राजा घड़वालो रा पोरा घड़वालो हाटा,
राँगड़ी लोयो आपणी सुंदरू घरो डीवा।

—सिरमौर की इस गाथा में सैण के सामा द्वारा मुआमला और उगाही खा जाने के कारण नाहन के राजा द्वारा स्पष्टीकरण लिए जाने का वर्णन है। सैण के सामा द्वारा राजा को चुनौती देने पर राजा ने नेगी 'तारू' को फौज के साथ हमला करने भेजा। तारू ने सैण के गढ़ में आग लगा दी। तारू नेगी की फौज घास-सी काट दी गई। तब राजा ने हेमचंद को सैण भेजा। युद्ध में सामा के बेटे भी लड़े। सामा ने फौज हरा दी। फिर राजा ने जामणू बनायक को भेजा। जामणू के कहने पर सामा नाहन गया। राजा ने सामा और बेटे जैमा को जेल में डाल दिया। सामा और उसके सात बेटों का यमुना-किनारे वध कर दिया गया। एक बेटा भागने में सफल हुआ जो गढ़वाल चला गया। उसने गढ़वाल-नरेश की मदद से नाहन के राजा से बदला लिया।

गढ़ मलौण

क:लाँ छेड़ियाँ अंदर हंडूरे,
लाया गढ़ मलौण चनाणें।
गढ़ तैयार होई गया था,
कली-चूना गढ़ा पर ढालया।
तारा जेया आई चमकया,
ताँ जे सूरजा री रेसम चढ़ी।
ताँ गढ़ा रा चमकारा,
बिलासपुरा पुज्या आई।
राणीं बादला बैठी री छज्जे,
ताँ चमकारा छातिया सामणे आया।
राजा फिरदा बागाँ मंज,
पर दिल किती होर ई लैंदा तारियाँ।
इक बिलासपुरा रा सहर सुहाणा,
गँ सतलुजा रा पाणी आ।
परजा तेरी राजा पाणी पींदीं,
साहबा री फेरदी दुहाई है।
हत्थाँ जोड़ी के राणी बोलदी–
'मेरी अर्ज सुणी ले मन लाई।'
राणी बोलदी 'सुण मेरे राजया–
सूरमा नी जमया कहलूरा कोई?'
'ओ एःड़े बोल न बोल मेरिए राणिएँ,
बोल रेइ जांदे पर सिर जाँदे।
मुड़ी ने सिर न धड़ा ने लगदे।'
पर राणिया जो चैन नी आये।
ए सदाये राजें पंडत पुआदे,

लाया समूत तिनी गनाणे।
ए समूत राजे भाइयो सजे अव्वल,
सराजे पम्मा बजीर बणाये।
राजा बोले—'देख पम्मयाँ,
बजीर तू दित्ता बणाई।
हंडूरा रे सारे बन्ने पर चिणे-
गढ़ से देखणे तू सारे जाई।'
पम्मा बोले न्यूँआ होई—
'सुण ओ राजा ध्यान लगाई।
बाँका मिलो स्तर, बग्गा मिलो घोड़ा,
नामी नामी मिली जाओ स्याःई।
जे राजा ए सब मिलो,
ताँ अस्त जाणियो हंडूरा रा।
कने गढ़ाँ रियाँ सारियाँ ईटाँ,
बिलासपुर हऊँ पुजाऊँ जरूर।'
हुकम होया था राजे रा,
पम्मे छाँटे स्याःई, निक्कू, नोगलू,
अमरू सूँघाल, ढाई धड़े चंदेल,
कने लए छत्ती धड़े सूँघाल।
बिलासपुर ते पम्मा नड्डा चलया,
डेरा मदोलड़िया लाया।
ओ भाई फौजें पम्मे रियें,
मंदोलड़िया डेरा लेया लाई।
इक जवान बोलें—'देख वजीरा,
रात असाँ जो एथी पई
तू बैठया ढूण मटूणा,
पर असे ताँ आई रे लड़ने।
ओ आई रे पम्मे बजीरा,
असाँ नी राती भी बैठणा।
तू करी दे छोड़ हुकमा,
असाँ जाणा हुण लड़ना।

'सुणा ओ मेरे भाइयो,
धुपे पर न छेड़िये सुराड़,
धुपे पर न छेड़िये कराड़,
रणा खातरा नि छूणी तुलार
ए चीजा बुरियाँ हुंदियाँ।'
दूए दिन थ्यागा ही,
नड्डे फौजें कीता चलाणा।
ओ जी इक्को पासणा कीता,
पम्मा, नड्डा पुज्या हंडूरा जाई।
क़हलूरिये कीती चढ़ाई,
इक्को पासणा कीता, अद्धा मुलख फूक्या।
जे कीता इक होर पासणा,
ताँ तिस मइलाँ पूजणा आई।
'अज्ज बालक टिक्का असाँ रा,
राज आ तेरिया गोदा।
हंडूरिया तिजो बोले पम्मया,
सुणया तू दिल लाई।
बणी जायाँ ओ मेरिया
ओखिया घड़िया रे भाइया।
परमेसरे दित्ती बजीरी कहलूरा री,
इंःयाँ ई मिलगी तिजो हंडूरा री।'
'ओ जी असे आए देई जी,
अज्ज तुसाँ रे पावणें।
तू बैठयाँ अंद्रोल करयाँ,
ओ सुणयाँ राणी बसौलिए।'
राणी बोले—'सुण ओ पम्मयाँ,
हक़ुँ कदी भी भट्टाँ, प्रोताँ।
और काँदूआँ कमीणा ते,
अंद्रोल नी करदी आई।'
'तिजो बोलदी बसोःली राणी,
तू सुणया पम्मया ध्यान लगाई।

तू ओ कचहरिया जाणा,
ओथी तू बजीर बनाणा।'
हिम्मत चंद मिंयाँ बोली मारदा—
'पम्मया कुण जेया गढ़ ढलाणा?
इक गढ़ जौंडू, दूआ बधोलू तीजा मलौण,
बोल पम्मया जे, तू कुण ढलाणा?
गढ़ ढलाणा गंभीर चंद राजे,
सह बदला लैंःगा एथी आई।
पर एक बाःमणा जो मारना,
सौआ गऊ री हतया होंई।'
राणी बसोःली थी बड़ी आकल,
नामी तिसें सदया सपाःई।
हत्थे दित्ती कटोरी केसरा री।
बुकला बिच लुकाई तुलार।
लुहोथ आई पूजी मंदोलड़िया,
फौजा रे नामी स्पाइयें देखी।
देखी लुहोथ इक बिद्ध बनाई,
रातों रात बीरिया बजीर लेया सदाई।
बीरिया बोले—सुणे मेरे भाइयो,
बदला लैणा असाँ अज्ज जाई।
कस्सी लेया सारे अपणिया पेटियाँ,
पासणा करो अज्ज हंडूरा जाई।'
कचहरिया बैठे राजा भूप कने हिम्मत,
लगी रे थे सोचणे से दोनों जणे।
निक्कू नोगलू कने सुँघाल,
करा दे ढलाकियाँ अंदर हंडूरा।
राजा बोलया—'चल ओए हिम्मता,
कहलूरिये आए इनाँ री जुगत औंऐ बणाई।'
दोनों भाई होई गए सुआर,
देख्या कहलूरियाँ रा सारा हाल।
तिनें देखया जोस कहलूरियाँ रा,

ओ जी सह होया फेट्टयाँ नसाणे।
हिम्मत चंद ओथी ते नठ्या,
मुंःड़े पर रेइयाँ सोजाँ कमाणा।
ओ जी कांसिये रा लैक बेटड़ा
खींजी खींजी ने बरछियाँ मारे।
लड़ी लड़ी ने सारे हंडूरिये मारे,
ए सुणी ने बिलासपुरा बज्जे नगारे।

—हंडूर में गढ़ 'मलौण' बनाया गया। बिलासपुर में राजा ने अपना वजीर 'पम्मा' बनाया और उसे हंडूर की सीमा के सभी गढ़ देखने को कहा। पम्मा ने अपने चुनिंदा सिपाहियों के साथ गढ़ों पर हमला बोला। हंडूर की बसोहली रानी ने धोखे से वजीर मरवा दिया। बदला लेने के लिए युद्ध छिड़ गया। हंडूर के राजा को इस युद्ध में हराया गया।

मही प्रकाश

बारा बरशो माईं जोड़ी मही राजे क्यूँथलो नराजी।
नोहिणो सी राजा तैनी फौजो पाई जोड़ी।
डेरा आया था राजा रा बलगो री सेरी।
बलगो रे बसतारू गोए भागी रो डेवी।
धरमी ब्राह्मणीए मतो ली कमाई।
'राजा आय गोआ चढ़ी रो डेरे औमे जाई।'
थाली भरी मोती री भेटा राजा खे ल्याहई,
राजा तैनी 'महीये' लोई पीठड़ी फेरी।
'हेकसी राजा साहिबा मूँठू-पीठड़ी तेरी।
जू तू शुणे राजिया बाह्मणी री उजीरी,
तेरी बाहीं लाओ सुनाँगणो तू जा नोहणी फीरी।'
'नहीं सुणदा बाह्मणी छेवड़ी रा जाणा,
मेरी क्यूँथलो नराजखी जाणिया जाणा,
तुसे वाह्‌ नो चाकरो पागड़ी सँजोया।'
तोबे हुकमो राजा रा नागणी खे होआ।
तोबे नागणी रे गढ़ी गोये भागी रो डेवी।
सून्नी छाडि गोये नागणी भागि गोये सारे,
नागणी रे गढ़ी गोये भागी डोरी।
तोबे धेडी एकी पाँजुए गोये नागणी छोडी।
'तुसे बाह्‌ना चाकरो पागड़ी, शींधीं करो रोटी।
आज हुक्म राजा रा 'सैंजुई' खे होआ।
डेरा आए गोआ राजा रा सैंजुई री सेरी।
तोबे बारा जूणी दारूए राजा किया मोहला,
तोबे सारा भाइयो क्यूँथलो रा लांबू जेहरा हाला।
'तुसे वाह्‌नों चाकरो बुगचे, पहरो सँजोया।'

तोबे हुकमो राजे रा देशू धारो खे होआ।
धारो राजे देशू री करी पाया मोहला।
तोबे काथरी रे कोलिए मत पाई कमाई।
'राजा आय गोआ महिया डेरे औमी जाई।'
काथरी रे कोली रा बोरो लेखा दो सेरा।
'जू बसला राजा देशुए तिस री रैयत हामे,
डेरा लो गोआ लूटी रो भाड़ो री दराटी।'
तोबे कोलिए डेवी गोए काथरी जुणगा रे दरबारे।
'कीशा सुत्ता राजिया साहिबा देशू बोयरी आए।'
तोबे राजा जुणगा पागिए दा गिरदा फिरो।
'तुसे 'घीले' आणदेओ 'छिबरू', 'धरता भलेरू'।'
राजा तेनिए 'नूप सैने' पूछणे लोये तेशी–
'तोबें देशू आय गोआ 'महिया' हामें करोमें क्या?'
'तोबे डोला डेवी तू देई रा राखोई 'सैना' राजा।'
देई राजा री 'सीतला' लोंदी ना रसोई।
तोबे 'घीला' जपला 'धरता' मनडू रो धाई।
'जू-जू थी निकरी दूझी तोई दी करजे लाई।
तेरा देश खाया राजिया चाकरे रो घोड़े,
देशू लड़ो धारो दी चाकरो रो घोड़े।
भात खाया तेरे चवाकरे पीछ पीती हामीं।'
'तू बी लड़ी मेरी जू रैयत आधा खरचा होरूँ।'
तेबे 'घीले' तेईने 'छिबरे' मत पाई कमाई।
तोबे महते-मुसद्दी खे कागज पहुँचावे।
तोबे भ्याइयो राती खे कीती फौज कठ्ठी।
तोबे बरशी लोआ था पाणी झूली रोही थी क्यूथ।
छिड़ी फौजो राजा री होए धौलो धारो।
ठारो चढ़े ठाकरो हजार पंदरा चाकरो।
तोबे देशू रे घारो दा गोआ होमला लागी।
देशू रे धारो दी लागी गोई लड़ाई।
तोबे हनुमानी गोसाईं पोगिदा जपे।
'ऐबे धोणुवा छाड़ो भाठड़ी डाँगरे सँभालो।'

काटी काटी रो भर गोए धरती रो नालू।
तोबे घाए लागि गोए मूँडडू रो करेगो रे बाड़ो।
तोबे राजा री फौजो रा घा जेहरा काटा कीया।
तोबे देशू री धारो दी लागी गोई झीड़ी।
तोबे ऊभा आया था राजा पालकी दा हुंदा न्हीया झीड़ी।
राजा सैंजुई जी री सेरी दा सुरती फिरा।
'मेरा ओरा आणी तू मौलूआ सूइनी रा नरेलू।'
तींदा सूइने रे नरेलू दा देबी रा था बोरो।
'तोबे ताँ लागी राजा नरेलू री हाँ ल्याहूऊँ शाह।'
'ऐबे नोहिणी खि मोलुआ कोनि मुँह जामें?'
तोबे ऐशा लागा था बोलदा नोहिणी रा नाथू—
'तोबे लींडे-लींडे ऐबे घोड़वे गाहणा बाठा।'
तोबे पहरू खो बोला नोहिणी रा मीयाँ—
'तू राजा क्यूँथल लो जाय रो ए ल्याया समान।'
तोबे एशू लागी गोई बोलदी राजा री राणी-
'राजा जब था बरजी कस रा ना था मानी।
तूबी क्यूँथल लो जाय रो का रे करी आया?'
'ताँ बी बोंलो साहिबा राणी नाँई मैना देवे,
मेरा देशू धारो रा बदला तेईं राणी देखी।
तूबी राते पाणी राणी देखी करी तमाशा।'
तोबे राजा तेईं नोहिणी करी लोआ तमाशा,
बारा सौ कीया घोड़लू साथी लाख प्यादा,
तोबे चढ़ी फौज राजा री रातेपाणी आया,
ठारा जूणी दारूए राजा कीया मोहाला।
ऊँडे झुमको धतरी ऊभा सुरगो काँबा।
तोबे धोलिए रे गीधिए, कालेया रे कागा।
तेईंने रातेपाणी भाईयो गोआ होमला लागी।
तोबे बीडा लागा बंदूको रा मेघ जेहड़ा गुडा।
बीड़ा लागा कमाने रा जो जेइरा पुणा।
बीड़ा लागा तलवारी रा बिजली जीह् चमको।
तोबे एशू लागा था बोलदा नोहिणी राजा—

'तोयें देशू धारो भाइयो राजा साहिबा थी नोखी की।
ऐबे पाकी बोई, राजेया मेरी 'सीधू' री बजीरी।
दूध शड़दा मेरी नोहिणी एबे लाई देमे खीरो।'
तोबे एशू लगा बोलदा सीधू बजीरो–
'तौंए पीछू राजेया 'नूप सैना' जाण फिरी।'
तोबे 'सीधू' 'कोट' रा ठाकुरा बीठा मैना देई–
'देशू जीता था राजेया आज हारी रो डेवा?'
तोबे राजा गोआ सेह नूप सैनो पिछड़ो हटी।
तोबे राजा सेह महिया बिगड़ी होआ खुश।
नोहिणी जाई रो करी लोई बोहती खुशी।
मदतो होई गलेरनी री महिला गोआ जीती।

—मही राजा ने क्योंथल के खिलाफ फौज इकट्ठी की। राजा नागणी, सैंजूई, देशू की धार में पहुँच गया। गाथा में युद्ध का वर्णन है।

गोरखा बोइरीस्

दुङ गोलयो दङ शङ ठंडा सोरानङ।
जामशो ले दुशा,
तीश खुनाङो छाङा।
जामशीम जामशीमग्योश्
बोली छ शेते?
बोली ता शेत, माइयँ जाम्याते।
माइयस् तो लोतेश्–
'तीश खुनाङों छाङा,
छू ले जाम्मा जेयीङ्.?'
तीश खुनाङों छाङा निश गुद हाथ जोर्‌या–
'जी माइय, देवी, फोई ताले मानी।
बोइरी स् बँअ लोशो,
गोरख बोइरीस्।
बालतोन् थोम्यारइयँ,
बालतोन् राजासू।'
माइयस ता लोतोश्–
'अङ बोलास् मानी,
बालतोन् थोम्यामू।'
बोइरीस् बअ लोशो,
लूहरी जाङ छामोस।
बोकिल् हाले दो लूहरी जाङ छामोस्,
बोकिल् मारो बेसारस।
बोकिल् मा साशो,
गऊ माता नारशो।
तीश खुनाङो छाङा,

दई रिङ रिङ बनमा,
सुड़रेओ दशाङों।
तीश खुनाङस् लोतोश्–
'तोइयँ छ माइयँ शूओ चारास्?
शुम् चू शुन्यारा,
डोम्बोर वोरध्यामू।
डोम्बोर वोरध्यामू,
सुङरयो मेशुरो जोलाङ कोठी व देन्।'
सोम्पोरो बेराङ्,
डोम्बोर वोरध्याग्योश्
डोम्बोरस् लोतोश्–
जो-माजो लाहे हात्,
पोरजास् सारचेङ्?
दे लोन्मो बेराङ्
तीश खुनाङों छाङा निश्
गुद हाथ गोड्या हो।
'जे, डोम्बोर शङकरास्,
फोई ताले मानी बोइरीस् बड़अ लोशो।
बोइरीस् बंअ लोशो,
बालतोन् थोम्यारइयँ।'
डोम्बोरस् लोतोश्-
'अङ बोलास् मानी,
बालतोन् राजास् थोम्यामू।
की भावेयो फ्योयइयँ।'
बालतोन् राजासू।
तीश खुनाङों छाङा।
दई रिङ रिङ बनमा,
भाबेयो खोनाङों कट ग्रामङ देशाङों।
तोइयँ छ माइयँ शूओ चारास्?
शुम चू शुन्यारइयँ,
डोम्बोर बाइरिङ बोरध्याइयँ।

सोम्पोरो बेराङ डोम्बोर,
वोरध्याग्योश् बाहरे संघाँङो।
डोम्बोरस् लोतोश–
छू ले जाम्या जेयीङ
दे लोन्मो बेरङ तीश खुनांङो छाङा,
निश गुद हाथ जोड़या हो।
'जे डोम्बोर शङ्करास्,
फोई ताले मानी।
बोइरीस बङ्अ लोशो,
बालतोन् राजास् थोम्यारइयँ।'
'अङ बोलास् मानी,
बालतोन् थोम्यामू।
की चगाँव फ्योरइयँ,
चगाँव देशाड़ो।
तीश खुनाङों छाङा,
दई लो लो बनमा,
रोशोले खागोशूपाटी छेली।
दई शोङ् शोङ् बनमा,
चगाँव देशाङो।
चगाँव देशाङों द्रमल्यो संथाड़ों।
तीश खुनाड़स् लोतोश–
'तोइयँ छ माइयँ शूओ चारस्?'
शुम् चू बशुन्यारइइ,
डोम्बोर बाइरिङ बोरध्याइयँ।
सोम्पोरो बेरङ्,
डोम्बोर वोरध्याग्योश्।
बाइरे संथाङों परवेशी लानो।
डोम्बोरस् लोतोश्
छू लो जाम्या जेयीङ्?
दे लोन्मो बेरङ्. तीश् खुनांड़ो छांङा,
निशु गुद हाथ जोड़या हो।

'फोइले मानी,
बोइरीस बङअ, लोशो, गोरखा बोइरीस्।
बालतोन् थोम्यारइयँ।'
'अङ् बोलास् मानी,
बालतोन् थोम्यामू।'
'किन् बोलास् माइमा नीतो,
हातू बोलास्?'
'बालतोन् थोम्याग्योश् चगाँव मेशुरस्।'
'थोम्या तो थोम्या,
बासो हम रानूते?'
मेशुरस् लोतोश्–
'बासो ता लोन्मा,
सीलाचो याशङ् दामेसू गोरे।'
'बासो ता रानोई,
खजाना हम रानूते?'
'खजाना ता रानूतोक्
माजो दरमालिङ. बाटू लो गोरे।'
'खजाना ता रानोइयँ,
शिरकोट हम रानूते?'
'शिरकोट ता रानोइयँ, घोड़ा हम रॉंते?'
'घोड़ा ता रानूतोक्,
दोरो चामरालिङ छारो चामाङों गोरे।
बदाया लोशो गोरख बोइरीस्।
गोरखा बोइरीस् छोल्टू बाल्याड़ों।
जाङ कोचङ् ख्यामा,
चगाँव मेशुरानेस् मालो हालादे।
फोचू देन धोगशिस् ठायाया–
लोशो चगाँव मेशुरस्।
ठायास् लोशो,
दूलिङ खाडस् कोमो।

–किन्नौर (बुशहर) में गोरखों के आगमन पर नाबालिग राजा को सँभालने के लिए सात परगनों के लोग इकट्ठा हुए। लोगों ने भगवती, सुंगरा महेश्वर आदि को गुहार की।

संदर्भ ग्रंथ

1. हांडा ओमचंद : पहाड़ी लोकगीत (1981), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. ठाकुर एम.आर. (सं.) : संस्कार गीत (1982), हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला
3. व्यथित गौतम : काँगड़ा के लोकगीत (1984), जयश्री प्रकाशन, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली
4. वशिष्ठ सुदर्शन : पर्वत से पर्वत तक (1996), रियालेंस पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
5. वशिष्ठ सुदर्शन : कथा और कथा (1995), भावना प्रकाशन, पटपड़गंज, दिल्ली-91
6. वशिष्ठ सुदर्शन : हिमाचल प्रदेश की लोककथाएँ (1998), सतलुज प्रकाशन, पंचकूला (हरि.)
7. वशिष्ठ सुदर्शन : रंग बदलते पर्वत (1996), सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
8. लोप्पा सतीश कुमार : गीत-अगीत, रिचेन जंगपो सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सभा, केलंग
9. शर्मा रमन : ऊना के लोकगीत (1996)
10. वशिष्ठ सुदर्शन, डॉ. विद्याचंद : रामकथा के लोक प्रसंग, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला

□□